पुस्तक :

ऐतिहासिक काव्य संग्रह

प्राप्तिस्थान :

मुनि श्री हजारीमल स्मृति प्रकाशन

पीपलिया बाजार

ब्यावर (राजस्थान)

संस्करण : प्रथम

सन् : १९६६

मूल्य : तीन रुपया

मुद्रक :

श्री महावीर प्रि० प्रेस,

ब्यावर

卐 अनुक्रमणिका 卐



संस्था की ओर से:-

स्थानकवासी सम्प्रदाय का इतिहास आज तक अन्धकार से आच्छन्न है। यद्यपि इस विषय में कुछ प्रयत्न हुए हैं, किन्तु जिन आधारों पर वे प्रयत्न हुए, प्रथम तो वे ऐतिहासिक दृष्टिकोण से इतने विश्वस्त नहीं हैं कि उनसे सच्चा इतिहास-निर्माण हो सके; दूसरे वे पर्याप्त भी नहीं हैं। अतएव सभी विचारशील विद्वान् ऐसी सामग्री की आवश्यकता अनुभव कर रहे हैं जो इतिहासनिर्माण में सहायक हों।

प्रस्तुत पुस्तक में ऐसी सामग्री संकलित की गई है जो स्थानकवासी सम्प्रदाय के अतीत पर महत्त्वपूर्ण प्रकाश डाल सकती है। इस दृष्टि से इसका महत्त्व निर्विवाद है। प्रत्येक ग्रन्थालय और पुस्तक-संग्रह में यह रहना चाहिए।

प्रस्तुत मूल्यवान् संकलन का श्रेय श्री अगरचन्दजी नाहटा को प्राप्त है। प्रकाशन उनका आभारी है। आशा है इतिहास के खोजी इसका पूरा-पूरा उपयोग करेंगे।

—चिम्मनसिंह लोढ़ा

उपाध्यक्ष,

मुनि श्री हजारीमल स्मृतिप्रकाशन

भूमिका . . .

काल अनंत है । समस्त विश्व की स्थिति मे जो परिवर्तन आता है वह काल का ही माहात्म्य है । इसलिये काल को अनंत-शक्तिसम्पन्न और विराट-स्वरूप वाला बतलाया गया है । जैनेतर ग्रन्थो मे 'महाकाल' शब्द से संबोधित किया गया है । जैन धर्म मे तो विश्व के मूलाधार षट-द्रव्यो मे 'काल' को एक स्वतन्त्र द्रव्य माना गया है । काल का प्रवाह एक रूप से निरन्तर बहता आया है और आगे भी बहता रहेगा । उसकी व्यावहारिक और बुद्धिगम्य व्याख्या या भेद के रूप मे तीन भेद किये गये है-भूत भविष्यत् और वर्तमान । भूत को अतीत और भविष्य को अनागत भी कहा जाता है । इन तीनों का वैसे अविच्छेद्य संबंध है । अतीत का वर्तमान पर और वर्तमान का अनागत पर प्रभाव-है ही । इसीलिये इसे एक लम्बी जंजीर-शृंखला की उपमा दे सकते है जिसका एक छोर 'अतीत' है, मध्यम कडी-वर्तमान है और उसके बाद का अन्तिम छोर-'भविष्य या अनागत' है । इनमे से अतीत को 'इतिहास' की संज्ञा दी जाती है । जो बीत चुका उसका सम्यक् आकलन या जानकारी ही इतिहास है ।

जैन धर्म मे विश्व की परिवर्तित स्थिति को बतलाने वाला एक 'कालचक्र' है । मानव लोक मे इसे उत्कर्ष और अपकर्ष का सम्मिलित चक्र कह सकते हैं । कालचक्र के १२ आरे हैं जिनमे से ६ में क्रमश· उत्कर्ष होता है और ६ मे उसी क्रम से अपकर्ष । जिनको 'उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी काल कहा जाता है । इस एक-एक काल के ६-६ आरे हैं जिनको सुखम्, दुखम् आदि संज्ञायें प्राप्त है ।

वर्तमान भारतीय सभ्यता का विकास प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव से हुआ जो तीसरे आरे में हुए एवं शेष २३ तीर्थंकर चौथे आरे मे हुये हैं । भगवान महावीर के निर्वाण के तीन वर्ष साढे आठ महीने बाद पाचवां आरा प्रारम्भ हुआ । जिसका समय २१ हजार वर्षों का है और वर्त्तमान मे चल रहा है । महावीर निर्वाण का २४९६ वां वर्ष अभी चल रहा है ।

भगवान् महावीर के शासन या सघ-परम्परा मे २५०० वर्षो मे अनेक आचार्य, साधु, साध्वी, एवं श्रावक-श्राविका हुए । उनमे से जो विशिष्ट एवं प्रभावक पुरुष हुए

या युगप्रधान एवं शिष्य रूप पट्ट-परम्परा मे जो आचार्य हुये उनका जीवनवृत्त या परम्परा-नामावली सुरक्षित रखने का प्रयास किया जाता रहा है। यद्यपि प्राचीन समय मे इतिहासलेखन वर्तमान की तरह नही होता था। और महाभारत को 'इतिहास' का आदि-ग्रन्थ व पंचम वेद माना गया। इससे हम इतिहास की तत्कालीन परिभाषा एवं विधा की कुछ झाकी पा सकते है। इसके बाद पुराणों में अनेक राजाओ और राजवंशो संबंधी विवरण पाया जाता है। तदनन्तर ऐतिहासिक काव्य और चरित ग्रन्थ लिखे गये। उनसे मध्यकालीन इतिहासलेखन की परम्परा एवं शैली का कुछ आभास मिल जाता है। भारतीय समाज में इतिहासबोध की मात्रा काफी अधिक रही है। अतः जनश्रुति, प्रवाद, लोकगाथा, लोकगीत, आदि सामग्री प्रचुर परिमाण मे पायी जाती है। जैन इतिहास के भी अनेक साधन हैं। प्रबधपट्टावली प्रशस्तिया प्रतिमालेख एवं चरित-काव्य ऐतिहासिक गीत, तीर्थमालादि।

जैन धर्म अध्यात्म और निवृत्ति प्रधान है। ऐहिक वासनाओ से ऊपर उठकर आत्मा के विशुद्ध स्वरूप को प्राप्त कर लेना ही उसका प्रधान लक्ष्य रहा है। फिर भी महापुरुषो के प्रति आदर एवं भक्ति-भाव मानव की सहज वृत्ति होने से महापुरुषो की जीवनी संबंधी तथ्य और उनके गुणो का वर्णन जैन आगमो मे पाया जाता है। २४ तीर्थंकरो की अनेक प्रकार की घटनाओ का विवरण स्थानांग, समवायांग, तिलोयपन्नत्ति, आदि ग्रन्थो में सग्रहीत हुआ है। और उनके आधार से तथा श्रुतिपरम्परा से जो कुछ भी प्राप्त था उनसे तीर्थंकरो आदि के जीवन चरित्र काफी सख्या मे लिखे गये है। उनके समकालीन एवं परवर्ती गणधर, मुनिवर, आचार्य, श्रावक-श्राविकाओं के भी चरित्रग्रन्थ प्राकृत, सस्कृत, और अपभ्रंश एवं प्रान्तीय लोकभाषाओं मे रचे जाते रहे है। उन्हे हम विशुद्ध इतिहास तो नही कह सकते हैं, पर इतिहास के आधारग्रन्थ कह सकते हैं। आगे चलकर ऐसे चरित्रग्रन्थो में ऐतिहासिक दृष्टि का भी समावेश हुआ और बहुत से महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ रचे गये।

भगवान महावीर से लेकर ९८० वर्ष तक के आचार्यो-युग प्रधान और पट्ट-शिष्य परम्परा का कुछ विवरण कल्पसूत्र और नंदीसूत्र की स्थविरावलियो में मिलता है। वीर निर्वाण के ९८० वर्ष मे देवर्धिगणि ने जैनागमों को अन्तिम रूप से

लिपिबद्ध किया अतः वहा तक के युगप्रधान और गुरु शिष्यक्रम की नामावली वल्लभी और माथुरी पट्टावली के अनुसार इस प्रकार है ।

१. देवर्धिगणि क्षमाश्रमण की गुर्वावली :

श्री महावीर

१ आर्य सुधर्मा	२ आर्य जंबू	३ आर्य प्रभव	४ आर्य शय्यंभव
५ ,, यशोभद्र	६ सभूतविजय-भद्रबाहु		७ ,, स्थूलभद्र
८ ,, सुहस्ती	९ सुस्थित-सुप्रतिबुद्ध	१० ,, इन्द्रदिन्न	११ ,, दिन्न
१२ ,, सिंहगिरि	१३ ,, वज्र	१४ ,, रक्ष	१५ ,, पुष्यगिरि
१६ ,, फल्गुमित्र	१७ ,, धनगिरि	१८ , शिवभूति	१९ ,, भद्र
२० ,, नक्षत्र	२१ ,, रक्ष	२२ ,, नाग	२३ ,, जेहिल
२४ ,, विष्णु	२५ ,, कालक	२६ ,, संपलितभद्र	२७ ,, वृद्ध
२८ ,, संघपालित	२९ ,, हस्ती	३० ,, धर्म	३१ ,, सिंह
३२ , धर्म	३३ ,, सांडिल्य	३४ ,, देवर्धिगणि ।	

माथुरी युगप्रधान पट्टावली :

भगवान महावीर

१ आर्य सुधर्मा	२ आर्य जंबू	३ आर्य प्रभव	४ आर्य शय्यभव
५ ,, यशोभद्र	६ ,, सभूतविजय	७ ,, भद्रबाहु	८ ,, स्थूलभद्र
९ ,, महागिरि	१० ,, सुहस्ती	११ ,, बलिस्सह	१२ ,, स्वाति
१३ ,, श्यामार्थ	१४ ,, साडिल्य	१५ ,, समुद्र	१६ ,, मंगु
१७ ,, आर्य धर्म	१८ ,, भद्रगुप्त	१९ ,, वज्र	२० ,, रक्षित
२१ ,, आनदिल	२२ ,, नागहस्ती	२३ ,, रेवतीनक्षत्र	२४ ब्रह्म दीपकसिंह
२५ ,, स्कदिलाचार्य	२६ ,, हिमवंत	२७ ,, नागार्जुन	२८ ,, गोविन्द
२९ ,, भूतदिन्न	३० ,, लोहित्य	३१ ,, दूष्यगणि	३२ ,, देवर्धिगणि

३ वालभी युगप्रधान पट्टावली :

भगवान महावीर

१ आर्य सुधर्मा	२ आर्य जंबू	३ आर्य प्रभव	४ आर्य शय्यंभव
५ ,, यशोभद्र	६ ,, संभूतविजय	७ ,, भद्रबाहु	८ ,, स्थूलभद्र

९ ,, महागिरि	१० ,, सुहस्ती	११ ,, गुणसुन्दर	१२ ,, कालकाचार्य
१३ ,, स्कंदिलाचार्य	१४ ,, रेवतीमित्र	१५ ,, मगू	१६ ,, धर्म
१७ ,, भद्रगुप्त	१८ ,, वज्र	१९ ,, रक्षित	२० ,, पुष्यमित्र
२१ ,, वज्रसेन	२२ ,, नागहस्ती	२३ ,, रेवतिमित्र	२४ ,, सिंहसूरि
२५ ,, नागार्जुन	२६ ,, भूतदिन्न	२७ ,, कालकाचार्य ।	

साधारणतया देवर्धिगणि क्षमाश्रमण को २७ वा पट्टधर माना जाता है पर वह ठीक नही है। मुनि कल्याणविजयजी ने 'वीर निर्वाण संवत् और जैन काल गणना' नामक अपने निबन्ध मे संशोधित पट्टानुक्रम उपालिखित दिया है। देवर्धिगणि के बाद की कुछ शताब्दियो का व्यवस्थित पट्टानुक्रम व इतिहास नही मिलता। हिमवंत स्थविरावली नामक एक और स्थविरावली मिलती है। पर उसमे तो विक्रम सं० २०२ तक का ही वृत्त है। १० वी शताब्दी से आचार्यपरम्परा फिर व्यवस्थित मिलने लगती है। इसी शताब्दी मे 'वृहद्गच्छ' या 'वडगच्छ' और उसकी शाखायें प्रसिद्ध हुयीं। और आगे चलकर तो गच्छों की संख्या ८४ तक पहुँच गयी। अेक-अेक गच्छ की अनेको शाखायें हो गयी। इन गच्छो के सम्बन्ध मे मेरा एक लेख 'यतीन्द्र सूरि अभिनन्दन ग्रन्थ' मे प्रकाशित हो चुका है।

१६ वीं शताब्दी मे लोंकाशाह के नाम से लोंका गच्छ प्रसिद्ध हुआ। लोंकाशाह वास्तव मे श्रावक थे, उन्होने मुनि दीक्षा ग्रहण नही की थी। अतः आचार्य पद पर प्रतिष्ठित होने का तो प्रश्न ही नही उठता इसलिये पीछे से लोकागच्छ की जो पट्टावलियां बनायी गयीं उनमे धर्मघोष वृहद पौद्गलिकगच्छ आदि से अपनी परम्परा जोडली गयी। नागपुरिया लोकागच्छ की पट्टावली में इस गच्छ के आदि या मूल पुरुष श्री हीरागर एवं रूपचन्द से पहले धर्मघोष गच्छ के ५८ (प्रस्तुत ग्रन्थ के साधु समुदाय पट्ठावली के अनुसार है ६१) पट्टधरो के नाम जोड दिये गये हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ मे गुजराती लुंकागच्छ उत्पति रो छन्द प्रकाशित हुआ है। उसमे देवर्धिगणि के बाद की परम्परा न देकर लुंका, लखपत, भाण आदि से गुजराती लोंकागच्छ की परम्परा दे दी गयी है। तेजसिंह ने 'गच्छ संवंध भास' मे भी लुंका के वाद भाणजी का नाम देते हुये आगे की परम्परा (ऋषियो की भास) जोड़ दी है। अन्य पट्टावलियो में भी देवर्धिगणि के बाद और लोंका या भाणजी से पहले की परम्परा मे कई मतभेद दिखायी देते हैं। मुनि कल्याणविजयजी

सम्पादित 'पट्टावली पराग संग्रह' के पृ० ३६४ में प्रस्तुत ग्रन्थ मे म० सिलोके के अनुसार लोकागच्छ की पहली पट्टावली के पट्टपरम्परा के नाम ३८ ही दिये है जिसमें अन्तिम ज्ञानचन्दसूरि हैं। पट्टावली नं० २ मे ३४ नाम हैं जिनमे अन्तिम सिलगाचार्य स्वामी का नाम है, स्थानकवासी उपाध्याय हस्तीमलजी सम्पादित 'पट्टावली प्रबन्ध सग्रह' मे प्रकाशित बड़ौदा पट्टावली, बालापुर पट्टावली आदि में तो देवर्धिगणि और लोकाशाह के बीच के नाम दिये ही नही गये। मरुधर पट्टावली मे देवर्धि के बाद के नाम भिन्न ही दिये है और ज्ञान रिष को ६१ वां पट्टधर माना है। इस तरह पट्टानुक्रम में पारस्परिक भिन्नता देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि केवल भगवान महावीर से अपनी पट्टपरम्परा का संबध जोडने के लिये देवर्धि और भाणजी के बीच के नाम मनमाने ढंग से लिख दिये गये हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से वे सही नहीं हैं। (देखो पट्टावली पराग सग्रह पृ० ४४५)

स्वयं लोकाशाह की जीवनी के सबंध मे भी बहुत मतभेद है। उनके जन्म-स्थान, वंश, गोत्र, माता-पिता, जन्म संवत, आदि सभी बातों में काफी मतभेद दिखायी देता है। इसलिये किसको प्रामाणिक माना जाय, यह प्रश्न खड़ा ही रहता है। इस संबध मे मेरा ऐक लेख कई वर्ष पूर्व 'जिनवाणी' में प्रकाशित हुआ था। और मेरे भ्रातृपुत्र श्री भंवरलाल का लेख 'श्री राजेन्द्र सूरि स्मारकग्रन्थ' में प्रकाशित हो चुका है। प्रस्तुत ग्रन्थ में भी लोकाशाह संबंधी जो विवरण अलग-अलग रचनाओं में मिलता है, उनमे काफी भिन्नता पायी जाती है। 'दयाधर्म चौपायी' मे लोकाशाह को लींबड़ी के दशाश्रीमाली डूंगर और उनकी पत्नी चूड़ा का पुत्र बतलाया है और जन्म संवत् १४८२ लिखा है। तेजसिंह रचित गच्छ संबंध भास मे लोंका को पाटण का पोरवाड़ बतलाया है। उनके मतप्रर्वतन और निधनसंवतादि के विषय में भी एकवाक्यता नही दिखायी देती (दे० पट्टावलीपरागसंग्रह पृ० ४०५) मालूम होता है कि जिसने जैसा सुना, लिख दिया। प्रामाणिक जानकारी उन लेखकों के पास नही थी। अन्यथा इस तरह की बातें लिखना सम्भव नही था। लोंकाशाह व उनके मत के संबध में तो काफी रचनायें बनी पर प्रामाणिक वृतान्त अभी तक प्राप्त नही हुआ। अत: मतभेदों का निर्णय कठिन हो गया है।

इतिहास में वास्तव में समकालीन लिखित बातें ही अधिक प्रामाणिक होती

हैं। सुनी-सुनायी बातों के आधार से जो कुछ पीछे से लिखा जाता है उसमे काफी गड़-बड़ी हो जाती है। इसलिये नागोरी लोकागच्छ का इतिहास वास्तव मे हीरागर और रूपजी से ही सही रूप मे मिलने लगता हैं और गुजराती लोकागच्छ का भाणजी, रूपसी आदि से। लोकागच्छ का संगठन भी ठीक से नही हो सका इसलिये थोडे समय मे ही वह कई शाखाओं में विभक्त हो गया। उनमे म नगोरी और गुजराती लोंकागच्छ का उल्लेख ऊपर किया ही गया है। बीजा ऋषि से विजय गच्छ निकला। उसने मूर्तिपूजा मान्य करते हुये लोकाशाह से अपना सवंध नही रखा। उतराध गच्छ सखा ऋषि से अलग हो गया। पर उसने अपनी परम्परा भाणजी से जोड़े रखी। नागोरी और गुजराती लोकागच्छ भी कई शाखाओं मे विभक्त हो गया। प्रमुख पट्टधर के अतिरिक्त उनके अनुयायी अनेक ऋषि-मुनि उल्लेखनीय व्यक्ति हुये जिनके संवध में उनके शिष्य एवं भक्त जनों ने गीत, भास, रास, चौढ़ालिया, छन्द, शिलोक आदि रचनायें की हैं। ऐसी रचनाओ का भी संग्रह इस ग्रन्थ में किया गया है जिनसे अनेक उल्लेखनीय साधु-साध्वियों संवधी ऐतिहासिक जानकारी मिलती है। ये रचनाए अधिकाश समकालीन व्यक्तियो से संवधित होने से ऐतिहासिक दृष्टि से काफी प्रामाणिक और महत्वपूर्ण है। समकालीन व्यक्तियो ने अपनी आंखो देखा विवरण उनमें दिया है जिससे उन व्यक्तियो की जीवनी का सही पर सक्षिप्त परिचय मिल जाता है।

भगवान् महावीर की परम्परा में अनेक प्रभावक पुरुप समय समय पर हुये पर उनके संवध में समकालीन प्राचीन रचनाये नही मिलती। १२ वी शताब्दी से जैनाचार्यों सम्बन्धी समकालीन रचनायें मिलने लगती हैं। इनमें कुछ तो गुणवर्णनात्मक है और कुछ ऐतिहासिक विवरणात्मक। ये रचनायें प्राकृत, सस्कृत, अपभ्रंश, हिन्दी, गुजराती, राजस्थानी भाषा में प्राप्त है।

जव से हमने साहित्य और इतिहास के अनुसधान सम्बन्धी कार्य का प्रारम्भ किया तभी से ऐसी ऐतिहासिक रचनाओ का सग्रह करने लगे। जैनाचार्यो, मुनियों, आर्याओं, संवधी प्राप्त ऐतिहासिक रचनाओं का एक बड़ा संग्रह हमने अपनी अभय जैन ग्रन्थ माला से सं० १९९४ में प्रकाशित किया जिसमें १३ वी शताब्दी से १९ वी शताब्दी तक की १९२ रचनाओं का प्रकाशन किया गया था। इस ऐतिहासिक काव्य

संग्रह ग्रन्थ मे अधिकाश रचनायें खरतर गच्छ और उसकी विविध शाखाओं संबंधी थी। इसमें केवल दो रचानाये ही तपागच्छ सबंधी थी। इस समय तक लोंकागच्छ और स्थानकवासी ऋषि-मुनियो संबंधी ऐतिहासिक रचानाएं थोड़ी-सी ही मिली थी। पर ज्यों-ज्यो जैन ज्ञान भण्डारो का अवलोकन करते गये नयी सामग्री प्राप्त होती गयी। कई वर्षों से यह संग्रह किया हुआ पड़ा था और इसे एक स्वतन्त्र ग्रन्थ के रूप में प्रकाशित करने की इच्छा थी जो पडित-रत्न मधुकर मुनिजी की प्रेरणा और प्रयत्न से प्रस्तुत ग्रन्थ के रूप मे प्रकाश मे आ रही है। इसके अतिरिक्त और भी कयी रचनायें हमारे संग्रह में हैं जो ग्रन्थ के बड़े हो जाने के भय से इसमे सम्मिलित नही की जा सकी। इनमे से कुछ अपूर्ण भी हैं जिनकी पूरी प्रतियों की खोज जारी है। इस ग्रन्थ में प्रकाशित बहुत सी रचनाओं का ऐतिहासिक सारांश हमने 'जिनवाणी' पत्रिका आदि मे प्रकाशित कर दिया है इसलिए ग्रन्थविस्तार भय से प्रस्तुत ग्रन्थ में हमारे 'ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह' की तरह साराश नही प्रकाशित किया जा सका है।

इसी तरह की कुछ रचनायें मुनि श्री कान्तिसागरजी के प्रकाशित 'श्री लोकाशाह की परम्परा और उसका अज्ञात साहित्य' नामक लेख मे प्रकाशित करदी हैं। इनमें से तेजसिंह रचित गुरु गुणमाला भास प्रस्तुत ग्रन्थ मे भी प्रकाशित की गई है। मुनि कान्तिसागरजी के प्रकाशित बड़ा वरसगजी का छन्द, आचार्य जसवंत छन्द जसवंत चातुर्मास, रूपजी छन्द, रूप ऋषि भास, दामोदर छन्द, केशवजी भास, तेजसिंह भास, कानजी भास, हमारे ग्रन्थ की पूर्ति के रूप में समझी जानी चाहिये।

मुनि श्री मिश्रीमलजी 'मधुकर' सम्पादित गुण गीतिका नामक एक ग्रन्थ सं० २०१९ मे ब्यावर से प्रकाशित हुआ है उसमें जयमल, सबलदास, बुधमल, फकीरचन्द जोरावरमल, और हजारीमलजी सबंधी रचनाये है। मुनि श्री लक्ष्मीचन्दजी ने भी ऐसी कुछ रचनाओ का संग्रह एवं प्रकाशन किया है और उनके आधार से कई मुनियो आदि के जीवन चरित्र भी 'जिनवाणी' आदि पत्रिकाओं मे प्रकाशित किये हैं। उपाध्याय हस्तीमलजी ने लोकागच्छ और स्थानकवासी सम्प्रदाय पट्टावलियों का संग्रह श्री विनयचन्द जैन ज्ञान भंडार, जयपुर से गत वर्ष प्रकाशित करवाया है। उसमें प्रकाशित पट्टावलियो के कई पट्टधरो की प्रामाणिक ऐतिहासिक जानकारी प्रस्तुत ग्रन्थ से मिल सकेगी।

श्री मोहनलाल देसाई ने 'जैन गुर्जर कविओ' भाग ३ के परिशिष्ट मे लोकागच्छ और स्थानकवासी परम्परा की पट्टावलियो का साराश प्रकाशित किया है। इससे पहले वाडीलाल मोतीलाल शाह ने 'ऐतिहासिक नोंध' नामक पुस्तक प्रकाशित की थी। मुनि श्री मणिलालजी ने 'जैन धर्म नो प्राचीन इतिहास अने प्रभुवीर पट्टावली' नामक गुजराती ग्रन्थ सवत् १९९१ मे प्रकाशित कराया। मुनि श्री कल्याणविजयजी के 'पट्टावली पराग संग्रह' मे पट्टावलियो का साराश प्रकाशित किया गया है। मुनि जिनविजयजी सम्पादित 'विविधगच्छीय पट्टावली सग्रह' में नागपुरीय लुंकागच्छ पट्टावली प्रवध (रघुनाथ ऋषि रचित) और स्थानकवासी पट्टावली व लोकागच्छ पट्टावली दी है पर यह ग्रन्थ अभी तक प्रकाशित नही हो पाया है। लोकागच्छ की कई पट्टावलियां हमने 'जिनवाणी' पत्रिका मे प्रकाशित की है। यह सब सामग्री एक दूसरे की पूरक है। इसलिये इन सबके आधार से अब लोकागच्छ और स्थानकवासी परम्परा का इतिहास लिखा जाना आवश्यक है। ऐसी ऐतिहासिक सामग्री अभी विनयचन्द ज्ञान भंडार, जयपुर एवं अन्य भंडारो मे विशेषत: स्थानकवासी सम्प्रदाय के हस्तलिखित सग्रहो मे जो अप्रकाशित पड़ी है, उसे भी शीघ्र ही प्रकाश मे लाना चाहिये।

प्रस्तुत ग्रन्थ मे प्रकाशित प्रारम्भ की दो रचनाएं मुनि ज्ञानसुन्दरजी लिखित 'श्रीमान लोकाशाह' ग्रन्थ मे प्रकाशित हो चुकी हैं। उन्हे महत्वपूर्ण समझकर इस ग्रन्थ मे सम्मिलित कर लिया गया है--वाकी समस्त रचनाये अप्रकाशित है। इनमें से बहुत-सी रचनाओं की हस्तलिखित प्रतियां तो हमारे संग्रह मे है, कुछ अन्य ज्ञान भण्डारो से हमने लाभ उठाया है। उन सबके प्रति आभार प्रकट करना हमारा कर्त्तव्य हो जाता है।

प्रस्तुत ग्रन्थ मे अनेक विधाओ का समावेश हुआ है। किसी एक ग्रन्थ मे शायद ही इतनी अधिक विधाओ का समावेश हुआ हो। उन विधाओ की नामावली नीचे दी जा रही है जिससे जैन कवियो ने कितने अधिक रचनाप्रकारो को अपनाया है, उसकी कुछ झांकी मिल जावेगी।

१ रास	२ चौपायी,	३ छन्द	४ शिलोको,	५ मांडणी
६ चौढ़ालिया	७ भास	८ गीत	९ चातुर्मास	१० वारहमासा
११ गुणमाला	१२ सथारा	१३ निसाणी	१४ जकड़ी	१५ दूहा
१६ कवित्त	१७ सोलो	१८ पट्टावली	१९ सज्झाय	२० निर्वाण-ढाल
२१ दुढाला।				

ऐसे शताधिक रचनाप्रकारों के संबध मे मेरा एक लेख 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका' मे प्रकाशित हुआ है और ऐसे रचनाप्रकारों संबधी मेरे लेखों का संग्रह 'प्राचीन काव्यो की रूप परम्परा' नामक ग्रन्थ भारतीय विद्यामन्दिर शोध संस्थान, बीकानेर से प्रकाशित हो चुका है।

सवत् १५०८ और १५३१ के बीच लोकाशाह ने अपने मत का प्रचार किया। इसके बाद शीघ्र ही उनका स्वर्गवास हो गया। उनके मत के प्रचार में पारख लखमसी का भी अच्छा योग रहा। लोकाशाह की मान्यता के संबंध मे अधिकांश बातें विरोधी व्यक्तियों के लिखे हुए ग्रन्थो से भी विदित होती है। कुछ की चर्चा प्रस्तुत ग्रन्थ में प्रकाशित 'लोकाशाह का शिलोको' और 'दया धर्म चौपायी' में भी पायी जाती है। पं० दलसुख मालवणिया ने भी कुछ ऐसी रचनायें प्रकाशित की हैं जिनसे उनकी मान्यताओं के संबंध मे महत्व की जानकारी मिल जाती है। लोकाशाह के सबंध मे अब तक जो लिखा गया है वह या तो अतिशयोक्तिपूर्ण प्रशंसात्मक या निन्दा और खडनात्मक। वास्तव में प्राप्त सामग्री के आधार से तटस्थतापूर्वक प्रकाश डाला जाना आवश्यक है।

लोकाशाह अपने मत को व्यवस्थित और अनुयायियो को सगठित नही कर पाये थे इसलिये थोडे वर्षो के बाद ही उनके अनुयायियों में बिखराव हो गया। कुछ तो मूर्तिपूजक सम्प्रदाय मे दीक्षित भी हो गये और कुछ ने सम्प्रदाय मे रहते हुए भी मूर्ति-पूजा को स्वीकार कर लिया। कम से कम विरोध तो छोड़ ही दिया। १७ वी शताब्दी के अन्त मे लोकागच्छ के साधुओ मे शिथिलाचार भी आ गया। इसलिये लवजी, धर्मसिंह एवं धर्मदास ने क्रिया उद्धार या आचार मे सुधार करके अपना अलग संगठन बनाया जिसका नाम विरोधी पक्ष वालो ने टूटे-फूटे मकानो मे ठहरने के कारण 'ढूंढ़िया' प्रसिद्ध किया। उन्होने स्वयं 'साधुमार्गी' नाम अपने सम्प्रदाय का रखा। फिर २२ टोलो में विभक्त होने से इस सम्प्रदाय का नाम बाईसटोला पड़ा। आगे चलकर स्थानकों में ठहरने से 'स्थानकवासी' कहलाये। लवजी संवत् १७०९ मे दीक्षित हुये और सवत् १७१४ मे लोकागच्छीय अपने गुरु से अलग हुए। धर्मसिंह का समय भी संवत् १७०० के आस पास का है। इन्होने मुंह पर मुंहपत्ती बांधनी प्रारम्भ की। आगे चलकर इसी सम्प्रदाय के रघुनाथजी के शिष्य भीखणजी ने विचारभेद के कारण अपना

अलग सम्प्रदाय चलाया जिसका नाम तेरह व्यक्तियों (साधु) के कारण 'तेरहपंथी' पड़ा। जिसके नवें आचार्य तुलसी अभी विचर रहे हैं। स्थानकवासी सम्प्रदाय की कई शाखायें हो गयी जिनके संगठन का प्रयत्न वर्धमान श्रमण संघ की स्थापना द्वारा किया जा रहा है।

प्रस्तुत ग्रन्थ में लोंकागच्छीय व स्थानकवासी सम्प्रदाय के पट्टधरों, ऋषि-मुनियों और साध्वियों सम्बन्धी ऐतिहासिक रचनायें प्रकाशित की गयी हैं। इस संग्रह को तैयार करने में मेरे भ्रातृपुत्र भंवरलाल का भी उल्लेखनीय योग रहा है। महोपाध्याय विनय-सागरजी ने भी इसकी प्रेसकापी को देखली थी। रचनाओं की भाषा और लेखन शुद्ध एवं व्यवस्थित नहीं और ग्रन्थ का मुद्रण ब्यावर में हुआ। मुद्रण की अशुद्धियां काफी रह गई हैं। ग्रन्थ को शीघ्र प्रकाशित करने और भूमिका संक्षिप्त लिखने की सूचना मिलने के कारण और भी बहुत-सी बातें लिखनी थी और परिशिष्ट में विशेष नाम सूची देनी थी, वह नहीं दी जा सकी। अन्त में मुनिवर्य श्री मधुकरजी एवं पंडित भारिल्लजी का आभार मानते हुये भूमिका संक्षेप में समाप्त की जा रही है।

—अगरचन्द नाहटा

लौंकाशाह का सिलोको

लोकागच्छीय यति केशव ऋषि कृत

वीर जिणंदना प्रणमी पाय, समरी सरसती भगवती माय।
गुरु प्रणमी करइ सिलोको, इक मनी करी सुणज्यो लोको ॥ १ ॥
चरम जिनेश्वर श्री वर्धमान, गणधर एकादश गुणखाण।
पाट परम्परा तेहनी कहीइं, भणतां गणतां शिवसुख लहीइं ॥ २ ॥
पाचमुं गणधर सोहम साम, जंबु स्वामी प्रभव गुणधाम।
सीज्जभव जसभद्रा नामी, संभुती भद्रबाहु स्वामी ॥ ३ ॥
स्थूलभद्र पातरना त्यागी, महागीरी सुहस्ती वडुभागी।
बहुलनी जोडी स्वाती स्वामी, कानिक सूरि स्कंदील स्वामी ॥ ४ ॥
आर्य समुद्र श्री मंगु धर्म, भद्रगुप्त नेइं स्वामी वजर।
सीहगुरु धनगुरुना शिष, वजर स्वामीजी धुरी जगीस ॥ ५ ॥
वयरसेन श्रीचन्द सुनन्दा, संमत भद्रजी स्वामी मुनींदा।
सीतपट दीगपट पाय, वन महीं करइ तप ऋषिराय ॥ ६ ॥
मल्लवादी वृद्धवादी ज्ञानी, सिद्धसेन नय न्याय प्रमाणी।
वादी देव ने हेम सूरीद, परवशीं प्रगट्या मुनींद ॥ ७ ॥
इम अनेक मुनिपती मोटा, पाट परंपरइ कर्मइं छोटा।
जगिइचंद्र रुषी तप शुरा, विजयचद गुरु पावन पुरा ॥ ८ ॥
खीमा कीरतजी हेमजी स्वामी, यशोभद्र रत्नाकर नामी।
रत्न प्रभु रूषीवर मुनि शेखर, धर्मदेव अने ज्ञानी सूरीश्वर ॥ ९ ॥
इण कालइ सौराष्ट्र धरामइं, नागनेरा तटिनी तट गामइ।
हरीचन्द श्रेष्ठी तीहा वसइ, मउंघो बाइ घरणी शील लसइ ॥ १० ॥
पुनम गच्छंइ गुरु सेवन थी, शैयदना आशीष वचन थी।
पुत्र सगुण थयो लखु हरखी, शत चउदे सत सीतर (१४७७)वर्षी ॥ ११ ॥
ज्ञानसमुद्र गुरुसेवा करतां, भणी गणी लहीउं बन्यो तव त्यां।
द्रम्म कमाणी श्रुतनी भक्ति, वधइ रंगइ धर्मनी शक्ति ॥ १२ ॥
आगम लखइ मनमां शंकइ, आगम साखी दान न दीसइ।
प्रतिमा पूजा न पड़िक्कमणुं सामायिकं पोसइ पीण (पडि) कमणुं ॥१३॥

श्रेणिक कुणिक राय प्रदेशी, तुगीया श्रावक तत्व गवेषी ।
किणइ पडिक्कमणु नवी कीधु, किणइ परने दान न दीधु ॥ १४ ॥
सामायिक पूजा छइ ढोल, जती चलाइ इण विध पोल ।
प्रतिमा पूजा वडु संताप, तो अम्हि करीइ धर्मनी थाप ॥ १५ ॥
अविधि लुपइ लुंपक नाम, लखुको नामइ लउको नाम ।
नही सयत पीण यतीथी अधिकु, लोकोंइ मत परखीउं लडकु ॥ १६ ॥
सवतु पन्नर सत(१५००)अड वरपि(८)सिद्ध पुरीइ शिवपद हरपी ।
खोली, थापीउ जिनमत शुद्ध, 'लुंकउ'गच्छ हुओ परसिद्ध ॥ १७ ॥
पातशाही महमुद सयाण, मानीइ लुंकामत परमाण ।
सुबा सेवक सउको मानइ, लखु गुरु चरण शीश नामइ ॥ १८ ॥
हिव सोरठइ लीबडी गाम, कामदार अछे लखमशी नाम ।
लुंका गुरुनो ग्रही उपदेश, धर्म पसारओ देश विदेश ॥ १९ ॥
इण मत विषयि मडइ वाद, न्यायाधीश करइ पक्षपात ।
शत पन्नर तेत्रीश(१५३३)सालइ, छप्पन(५६)वरसि सुरघर महालइ ॥२०॥
शत पन्नर तेत्रीशनी सालइ (१५३३) भाणजीने ते दीक्खा आलइ ।
भाणजी रीखी सतमत फेलावइ, जीवदयानु तत्व बतावइ ॥ २१ ॥
वर्धमाननी पेठी एकी, विचरइ देश विदेशी छेकी ।
पाट परस्परा चालइ शुद्धि, पाटे भद्रऋषि सुबुद्धि ॥ २२ ॥
लवण, रूपि भीमाजी स्वामी, जगमाला ऋषि सखा स्वामी ।
बीजो नीकल्यो कुमति पापी, तेणइ वली जिनप्रतिमा थापी ॥ २३ ॥
रूपजी जीवाजी कुंवरजी, वीहरइ श्रीमलजी ऋषीवरजी ।
प्रणमी पूज्य तणइ वरपाया, गावइ 'केशव' नीत गुरुराया ॥ २४ ॥

॥ इति चतुर्वीशी समाप्त ॥



दयाधर्म चौपाई*

लौंकागच्छीय यति भानुचन्द्र कृत

वीर जिणेसर पणमि पाय, सुगुरु तणु लह्यो सुपसाय।
भस्मग्रहनो रोष अपार, जइन धरम पड़ियो अन्धकार॥१॥
दुय सहस(२०००)वरीस अन्तरे इस्यु, जिंजि वरत्यू कहिइ किस्यु।
दया धरमनी थइ झाकी ज्योत, सा लुंकइ कीधउ उद्योत॥२॥
सोरठ देसे लींबडी गामई, दसा श्रीमाली डुंगर नामई।
धरणी चूड़ा चित उदारी, दीकरो जायो हरष अपारी॥३॥
चौदसय व्यासी(१४८२) बइसाखई, वद चौदस नाम लुंको राखई।
आठ (८) वरिसनो लुंको थयो, सा डुंगर परलोकइ गयो॥४॥
लखमसी फुइनो दीकरउ, द्रव्य लुंका नु तेणइ हरउ।
उंमर वरिस सोलहनी (१६) थई, चूड़ा माता सरगि गई॥५॥
आवइ अमदाबाद मझार, नाणावटीनो करइ व्यापार।
धर्म्म सुणवा जावइ पोसाल, पूजा सामायिक करइ त्रिकाल॥६॥
सांभलइ यतितणु आचार, पण नवि पेखइ यतिहिं लगार।
कहइ लुंको तमे पभणो खरउ, वीर आणाथी चालो परउ॥७॥
कहइ यति अम्हथी रहे धरम, तमे किम जाणो तेहनो मर्म।
पाच आश्रव सेवंता तम्हे, सिखामण देवो सही गमे॥८॥
सा लुंका कहे दयाइ धर्म, तमे तो थापिओ हिंसा अधर्म।
फट भुंडा किहां हिंसा जोई, यति सम दया पालइ कोई॥९॥
सा लुंका आ मानइ अपमान, पोसालइ जावा पच्चक्खाण।
ठाम ठाम दयाइ धर्म कह्यो, साचो भेद आज अम्हि लह्यो॥१०॥
हाटउ बइठो दे उपदेश, सांभली यतिगण करइ कलेस।
सघनो लोक पण पखियो थयो, सा. लुंका तब लिंबड़ी गयो॥११॥
लखमसी ते तिहा छइ कारभारी, सा. लुंकानो थयो सहचारी।
अमारा राजिमा उपदेश करो, दया धर्म छइ सहुथी खरो॥१२॥

---

*इस चौपाई का पन्ना १५७८ वां यतिवर्य्य लाभसुन्दरजी के ज्ञानभण्डार से मिला था, उसको ज्यों का त्यों यहां मुद्रित करवाया है।

दया धर्मी थयो बहु लोग, एहवी मल्यो भाणाने संयोग ।
घरडउं लुंको नवि दीक्षा लहि, पिण भाणो पोते वेष ग्रही ॥ १३ ॥
दया धर्म जलहलती ज्योत, सा० लुंके किवुउ उद्योत ।
पनरसय बतीसउ (१५३२) प्रमाण, सा० लुंको पाम्यो निरवाण ॥ १४ ॥
दयाधर्म जयवंतो दीसइं, कुमति घणुं निंदे खीसइ ।
कह्यो लुंको मति मानज्यो यति, सामायिक पण कांगे कथी ॥ १५ ॥
पोसह पडिक्कमणु पच्चखाण, जिन पूजा नही मानइ दान ।
रे कुमति ! किम बोलइं इस्युं, सा० लुंके उत्थाप्यु किस्युं ॥ १६ ॥
सामाइंक टालइ वे वार, पर्व परे पोसह परिहार ।
पडिक्कमणुं विन व्रत न करइं, पच्चखांणइ किम आगार धरइ ॥ १७ ॥
टालइ असंयति नइं दान, भाव पूजार्थी रूडउ ज्ञान ।
द्रव्य पूजा नवि कही जिनराज, धर्म नामइ हिंसाइ अकाज ॥ १८ ॥
सूत्र बतीस (३२) साचा सद्दह्या, समता भावे साधु कह्या ।
सिरि लुंकानो साचो धर्म, भ्रमे पड़िया न लहइ मर्म ॥ १९ ॥
निंदइ कुमति करइ हटवाद, वींछी करड्यो कपि उन्माद ।
मूसा बोलइ बाधई कर्म, किम जाणइ ते साचोउ मर्म ॥ २० ॥
जयणाइ धर्म ने समताइं धर्म, ते टालि किम बांधिउ कर्म ?
जे निंदे ते संचइ पाप, समता विण सहु धर्म प्रलाप ॥ २१ ॥
दया धर्म श्री जिनवरे कह्यो, सा० लुंके तेहने संग्रह्यो ।
तेहिज आज्ञा पाली अम्हें, शुं खोटउ लागइ छइं तम्हे ॥ २२ ॥
शुं दयामा तम्हे मान्यो पाप, किम माड्यो एटलो विकलप ।
सूत्रनी साखीं लो तुमे जोय, दया विहुणो धर्म न होय ॥ २३ ॥
जे जिण आणा पालइं शुद्धि, तेहने नमवा होउ मुझ बुद्धि ।
दुहवाणुं मन परनुं जउ, मिच्छामि-दुक्कडुं मुझने हुउ ॥ २४ ॥
पनरसय अठ्योतर (१५७८) जाणउं, माघ शुद्धि सातम प्रमाणउं ।
भानुचंद यति मति उल्लसउ, दया धर्म लुंके विलसउं ॥ २५ ॥



ऋषि रूपचन्द मांढणी | त्रीकम कृत

रागे दूहा—

महावीर त्रिभुवन धणी, केवलज्ञान पड्डूर।
सेव करै सुर नर सदा, पूरै वछित पूर ॥ १ ॥
तास सीस गणधर नमु, श्री गौतम मुनिराज।
अष्ट महासिद्धि संपजै, पूरै वछित काज ॥ २ ॥
वलि प्रणमी सदगुरु सगुण, संसै भंजणहार।
रूपचन्द ऋषिराज नो, रसिक कहूँ अधिकार ॥ ३ ॥
रुडउ कुल श्रावक तणउ, लहीस गुरु नो संग।
वलइ जो दिक्षा आदरै, न करइ नारी संग ॥ ४ ॥
रूपचन्द र (व) इ वीर जगि, त्रिण जिम छोडी गेह।
जोग लीयो जग तारिवा, भविक तरोवर मेह ॥ ५ ॥
नामइ नाग डसइ नही, ध्यानइ धाड़ि पुलाइ।
मूल कथा सुणतां थकां, विघन विपति दुख जाइ ॥ ६ ॥
आलस तजि मन दिढ करी, साभलजो सवि कोइ।
रूपचंद ऋषराज गुण, घणउ वखाणे लोइ ॥ ७ ॥

राग मारुणी

स्त्री चरित्र न को लहै रे लाल (एहनी ढाल)
जम्बूद्वीप भरत मैं रे (लाल) लाछि अर्थउ भरपूर रे।
सवा लख देश अछइ अति दीपतो रे लाल, मरुधर माहि सनूर रे।
नगरै नागोर सुहामणउ रे लाल, जुगति करी अभिराम रे। स०।
अहिपुरि अति रलियावणउ रे लाल ॥ टेक ॥
पुन्य दिसा प्रगटी तिहा रे ला., धरमी नै धनवंत रे। स०।
लोक वसै सुख वासिया रे ला., मनुहारी मतिवंत रे। स० ॥ २ ॥
गुवाड़ी निज निज गोतनी रे ला., पंकति-बद्धि विसाल रे। स०।
महल विराज जोखना रे ला., रचना एह रसाल रे। स० ॥ ३ ॥

एक दिसा आवी वणाउ रे, सुन्दर सरल बाजार रे । स० ।
व्यापारी दस दस ना रे ला., विणजई लोक हजार रे । स० ॥ ४ ॥
दानी सनमानी घणा रे, भोगी नर बहु भाति रे । स० ।
मृगनइणी साथइ सदा रे ला., त्रिनसै मन नी खाति रे । स० ॥ ५ ॥
उत्तम कुल नेडा वसइ रे, बीजा ते सहू दूर रे । स० ।
मुसलमान धुरि आदि दे रे ला., अलगी जाति करूर रे । स० ॥ ६ ॥
पउलि सतोरण सोभतो रे, राजधानीरउ कोट रे । स० ।
बुरज खाई केरि गकडो रे ला., जिम तिम लागइ न चोट रे । स० ॥ ७ ॥
लावो पिहुलो कोस मइ रे, बीजो कोट उदार रे । स० ।
पुर चउंगडदा मांडियो रे., फिरता कोस चीय र रे । स० ॥ ८ ॥
पातसाह प्रतपै तिहां रे, मुगल पीरोजीखान रे । स० ।
सपत गउ राज जेहनो रे ला., पालै चढते वान रे । स० ॥ ९ ॥
वाग सरोवर अति घणा रे, सघन तरोवर बाग रे । स० ।
पाने फूले लहलहै रे ला., पास गिरनारणी तडाग रे । स० ॥ १० ॥
सोभा एम नगर नी रे, कविता केती कहाइ रे । स० ।
इंद्रपुरी नी उपमा रे ला, देख्या आणंद थाइ रे । स० ॥ ११ ॥
पहिली ढाल पूरी थई रे, गूंथी राग केदार रे । स० ।
मुनि तीकम कहइ साभलो रे ला., हिव गांधी अधिकार रे । स० ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

तिण अवसरि गांधी तिहा, सुखै वसइ श्रीवंत ।
सदारंग सोमा मिलो, सीचउ धुरि धर्मगत ॥ १ ॥
गेहउ गाधी धुर थकी, धर्म तणउ सविचार ।
व्रत पचखाण प्ररूपणा, करतो रहै उदार ॥ २ ॥
गांधी चारे अति चतुर, जीव दया प्रतिपाल ।
विख्याती वडभागीया, दाता परम दयाल ॥ ३ ॥
पाले श्रावक नी क्रिया, सहज सकोमल तेह ।
तिण अवसरि का सू थयो, ते सुणजो सुसनेह ॥ ४ ॥

राग–मल्हार

'ब्राह्मण दण्ड न दन्तो नै माहरो,' एहनी ढाल ।
साह सिरोमणी तिहां वसइ, अधिकारी उसवाल हो । विख्याती ।
देवदत पुण्यात्मा सुध कोमल[1] सुविसाल हो । वि० ॥ १ ॥

---

१ कमल

पुन्य तणी प्रकटी दसा, सूराणां कुल जोग हो । वि० ।
राजसभा अति मानता, पूगइ मनना भोग हो । वि० ॥ २ ॥
तास वडो बंधव अछै डेडो एक उदार हो । वि० ।
नगर कुटम्ब वखाणियै, सरल पणै सिरदार हो । वि० ॥ ३ ॥
परणीजे सो गाईयै, तेह तणइ दिसटात हो । वि० ।
वात कहुँ देवदत्त नी, आणि मन नी खात हो । वि० ॥ ४ ॥
भाग संजोगइ तेहने, अंगज हुवा तीन हो । वि० ।
रेइण पहिलउ प्रगडउ, जिणशासण लइलीन हो । वि० ॥ ५ ॥
देव कमर नी उपमा, दीसता वड डील हो । वि० ।
साडउ सोहिलउ सूत विहु, वरस विषै नही ढील हो । वि० ॥ ६ ॥
मूल थकी महिमा निलो, दिन दिन अधिक प्रताप हो । वि० ।
पात साहजी प्रीति सु, बोलावै मुख आप हो । वि० ॥ ७ ॥
भोग पुरन्दर सारिसा, पाम्या पुन्य प्रमाण हो । वि० ।
पोस पडिकमणा करे, पोसालै ही वखाण हो । वि० ॥ ८ ॥
पंचे कमर रेणु घरे, भांडराज हरिचन्द हो । वि० ।
रूपचन्द कमउ वली, पंचाइण सुखकद हो । वि० ॥ ९ ॥
पच पंचाइण जोध जु, दातारी वड वीर हो । वि० ।
नगर अगजी ते थया, सोवन वर्ण सरीर हो । वि० ॥ १० ॥
रयणादे उरि उपना, पचे पुत्र प्रवीण हो । वि० ।
अग उपग सोहावणा, विकसत वदन अदीण हो । वि० ॥ ११ ॥
सांडा संघवी नइ हुआ, चतुर महासुत चार हो । वि० ।
नाथू नापड अति भलो, नंदउ नान्हड धर्म धार हो । वि० ॥ १२ ॥
एक दिवस नाथू हुतो, ते पहुतो परलोग हो । वि० ।
तस अगज सांसी वड थयो, पामी सुभ संजोग हो । वि० ॥ १३ ॥
नाथू विणसुन तीन जे, ते दीसै वतमान हो । वि० ।
संतोषी शुभ लखणा, अधिक नगर महिमान हो । वि० ॥ १४ ॥
बीजी ढाल पूरी थई, तीकम अति आणद हो । वि० ।
सांभलता सुख ऊपजै, दूर हुवै दुख दन्द हो । वि० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

सोहिल सघली नारि सु, सुख भोगवइ अभंग ।
पिण बालक जीवइ नही, चिन्ता एह इकंग ॥ १ ॥
स्यु कीजै मणि मोतीया, भरीया लछ भण्डार ।
पुत्र नही जो आगणै, तो ते सरव असार ॥ २ ॥

चिंतातुर ते दम्पती, दिन प्रति करइ विचार।
पूरव भव ना पुण्य थी, उदेसी करतार॥ ३॥
सोहिल नारी भणी कहइ, चिंता न करे काइ।
जाया कइ आया हुवे, ग्रंथै साख कहाइ॥ ४॥
सुत होसी तो अति भलो, नहि तर एह उपाय।
रूपचन्द सुत नी परइ, राखउ आंणद थाय॥ ५॥
जाई घरि सुत मांगीयो, रेयणु संघवी पास।
रूपचन्द खोलै लियो, पूगी मन नी आस॥ ६॥

॥ राग सोरठ ॥

पदमणि परिहरी बतीस एहनी ढाल।
सोहिल संघवी नइ घरे ला., वाधइ सुत सुकमाल।
रजनीकर ज्यं बीजो (बीजनो) ला., तिम तै बाल सुभाल॥ १॥
सोभागी पुरष रतन रूपचन्द जी हो, मात पिता मन मोहतउ।
उदयउ धरम दिणंद सोभागी, पुरष रतन रूपचन्द। टेक।
हिय रूपचन्द आया पछी लाल, पूरव ली थी काइ।
तास तणा परभाव थी लाल, ते त्रूटी अन्तराय॥ २॥
सोहिल संघवी नी प्रिया लाल, जायउ पुत्र रतन्न।
सोमवदन छवि सोभतउ लाल, कीजइ कोडि जतन॥ ३॥ सो.।
मात पिता आसा फली लाल, प्रगटउ हर्ष पडूर।
कीजइ रंग बधामणा लाल, वाजइ मंगल तूर॥ ४॥ सो.।
पुत्र महोछव माडियउ लाल, दीजइ मागत दान।
सूहव नु पहिरावणी लाल, कीजइ अति परधान॥ ५॥ सो.।
गावइ गीत मनोहरु लाल, शशिवयणी इकरंग।
दिन २ श्री रूपचन्द नउ लाल, परसंसइ चित चंग॥ ६॥ सो.।
जोसी ज्योतिष जोइनइ लाल, दीधउ खेतसी नाम।
दिन दिन अति चढ़ती कला लाल, कुमर बधइ अभिराम॥ ७॥ सो.।
नागर लोक कहइ हिवइ लाल, धन रइणु अंग जात।
तस प्रभावइ सुत थयउ लाल, सोहिल अति विख्यात॥ ८॥ सो.।
इण अवसर रूपचन्दनो लाल, नगर वधी बहु सोभ।
राजसभायइ बोलावीयइ लाल, अधिक नही तस लोभ॥ ९॥ सो.।
विद्याभ्यास करावियउ लाल, परणाव्यउ बहु प्रेम।
भोग भला विहु भोगवइ लाल, देव दुगंधक जेम॥ १०॥सो.।

धन जोवन वर-कामिनी लाल, आपण देव कुमार।
पुन्य तणा फल पामिया लाल, अगणि इद दइ कार ॥ ११ ॥ सो.।
सोरठ गाइं सोहती लाल, कीधी तीजी ढाल।
मुनि तीकम कहइ गइकतउ लाल, वारु वचन रसाल ॥ १२ ॥ सो.।

सर्वगाथा ५६

॥ दोहा ॥

नगर लोक परसंसियइ, साहा धरम सुजाण।
संतोषी श्रीवंत ते, सदारंग विनाण ॥ १ ॥
सोचउ सवर निज मनइ, निरमल बुद्धि प्रमाण।
अरथ वखाणइ ग्रंथ ना, न करइ अति बहुमान ॥ २ ॥
श्रावक सुध कहय जिके, जे पालइ व्रत बार।
जिन मारग निश्चल रहइ, दानादिक गुणधार ॥ ३ ॥
रूपचन्द मन नी रली, वइमइ सोचा पास।
गुष्टि करइ जिण धरम नी, माहो मांहि उल्हास ॥ ४ ॥
सूधा गुण जे साधना, ते नवि जाणइ भेद।
आगम विण पामर नहीं, सुणिवा अधिक उमेद ॥ ५ ॥

॥ राग केदारउ ॥

मोहण प्यारे चेलणा रे, एहनी ढाल।
तिण अवसरि पोसाजिया रे, कुलगुरु वुधिगता रे।
विद्यागत वखाणियै रे, नही चारनणतारे ॥ १ ॥
आगम अरथ उदै थयो रे, मिथ्या भ्रम भागो रे।
चतुर मनुष नित सांभलो रे, धरम सुं चित लागो रे ॥ २ ॥
पुस्तक को काहुं नही रे, आगम सुवदीतो रे।
चारित कथा नवि केलवे रे, सेताम्बर री रीतो रे॥ ३ ॥
मुरधर सीम महा वडो रे श्री गढि जालोरो रे।
साह लुकउ तिहां वसइ रे, प्रवीण सन्दोरो रे ॥ ४ ॥
ग्रन्थ पुरातन केहनउ रे, तिण अवसरि हूवो रे।
दीघउ तेडी लुंका भणी रे, लिखवानो हूवो रे ॥ ५ ॥ आ.।
रात समै दीवा करी रे, सिघात लिखावै रे।
अरथ कहइ ते पूछीयो रे, सुणतां मन भावै रे ॥ ६ ॥ आ.।
एक दिन लिखतां साधनो रे, दीठउ आचारो रे।
रोम २ विकस्या सहू रे, सही अरथ विचारो रे ॥ ७ ॥ आ.।

वन २ जिण शासन जती रे, एह गुणधारो रे।
चरण रजइ पातक-पुलै रे, तरियइ ससारो रे॥ ८॥ आ.।
इम जाणी नै आप वै रे, बीजा ले पाना रे।
सूत्र सिधांत लिख्या सबहू रे, सेताम्बर छाना रे॥ ६॥ आ.।
ग्रंथ लिखी पूरा किया रे, गुरुजी सुख पायो रे।
साह लुको चरणे नमी रे, आपणी घरि आयो रे॥ १०॥ आ.।
मन्दिर मै वैठउ रली रे, माहाजन बोलावै रे।
भवसागर तरिवा भणी रे, सिधात सुणावै रे॥ ११॥ आ.।
सुणि २ अरथ वैरागिया रे, केई सुविचारी रे।
व्रत पचखाण समाचरै रे, छोडइ तर-अ-किरी रे॥ १२॥ आ.।
लोक प्रसिद्ध थई हिवै रे, लुंकानी टोली रे।
ध्यान निरंजण ध्यावता रे, पसारी रंग रोली रे॥ १३॥ आ.।
राग केदारइ मई भणी रे, ए चउथी ढालो रे।
मुनि तीकम जे सांभले रे, विकसै ततकालो रे॥ १४॥ आ.।

सर्वगाथा ७५

॥ दोहा ॥

हिव लेहउ (लुकउ) आगम लिखी, मुकइ देस प्रदेश।
पाटण खम्भाइति जिहा पुर नागौर विशेष॥ १॥
एता दिन दीठा नही, ए जिण वचन उदार।
इण कारण ते नीसर्या, भविक जना हितकार॥ २॥
ठउड २ टोली मिली, वाचइ ग्रंथ इकांत।
लुका नाम कहीजीयै, धर्मीजन मतिगत॥ ३॥
प्रतिमा को पूजइ नही, श्री जिन वचन सम्भारि।
देवल मंडप छाडीया, ए लुका अधिकार॥ ४॥
एम रहइ ते दम्पती, धरता जिणवर ध्यान।
पोसा पडिकमणा करइ, आपण पइ सावधान॥ ५॥

॥ राग धघासी ॥

हरिया मन लागो एहनी ढाल।
रइण सुत दिन २ प्रतै, आवी सोचा पास रे। चारितीया भला
सूत्र अरथ सूध साभलै सुमति तणे प्रकास रे॥ १॥ चा.।
एक सिधांत नवा लहया, बीजउ भणण उल्हास रे। चा.। टेक।

आगा जै जग मैं हुवा, जिण सासण मुनिराज रे।
दरसण थी दोलति हुवै, पूरइ वछित काज रे ॥ २ ॥ चा.।
श्रेणक सुत अति दीपतो, अभय कुमार सधीर रे।
रमण तजी रम्भा जिसी, जोग लियो वडवीर रे ॥ ३ ॥ चा.।
संव प्रजुन महाबली, पंडव पांच झूझार रे।
नारि सह सजम लीयो, जाणी अथिर संसार रे ॥ ४ ॥ चा.।
भू मण्डल महिमानिलो, राम भरत सिणगार रे।
लछ भण्डार तजी सवे, तेह थया अणगार रे ॥ ५ ॥ चा.।
सक्रेसर जीतो थको, राय दसारण जोइ रे।
दुहकर करणी आदरी, प्रणमीजै नित सोइ रे ॥ ६ ॥ चा,।
इत्यादिक मुनिवर हूवा, ज्यारी साख सिधांत रे।
भोग जोग साधी विहुँ, सिध थया बली भाति रे ॥ ७ ॥ चा.।
एम सुणी नै रूप तुं, सीचो साह उल्हास रे।
दिष्टाते समझावतो, आगम अरथ विलास रे ॥ ८ ॥ चा.।
एक दिवस बोलै रली, साम्भलि तू रूपचन्द रे।
सजम लै तो सारिखउ, जिण सासण सुखकन्द रे ॥ ९ ॥ चा.।
जाणे राणा राजवी, थारो अति वैराग रे।
भागी भमर कहीजीयै, तुं दीसै वड भाग रे ॥ १० ॥ चा.।
कायर नर चालइ नही, श्री संजम नो भार रे।
तिण कारण तुं साहसी होई सही अणगार रे ॥ ११ ॥ चा।
संभलि वाणी ताहरी. समाझै लोक हजार रे।
संघ चतुरविघ थापना, होवै इण संसार रे ॥ १२ ॥ चा.।
रूप कहइ सीचा प्रतइ, समझावी निज नारी रे।
आज्ञा मांगी तात नी, लेस्यां संजम सार रे ॥ १३ ॥ चा.।
जां अनुमति पाई नही, तां श्रावक आचार रे।
पालु सुध क्रिया करी, दानादिक अधिकार रे ॥ १४ ॥ चा.।
ढाल कही ए पचमी, वैरागे रूपचन्द रे।
साभलतां सुख ऊपजै, तीकम अधिक आणंद रे ॥ १५ ॥ चा.।

सर्वगाथा ९५

॥ दूहा ॥

वड़ वइरागे पूरीयो, भोग उपरि नही भाव।
रूपचन्द दिल मैं रहे, चारत लेवा चाव ॥ १ ॥

तुरत करावी जीमतो, भोजन अति प्रधान।
अवर फूल तंबोल विध केसर तिलक समान ॥ २ ॥
भोग निमत सेवे नही, न करइ गृह व्यापार।
उतकिष्टी रहिणी रहइ, श्रावक नो आचार ॥ ३ ॥
तिण अवसर आवी मिला, हीरागर मति सार।
मन हूवो दीख्या तणउ, छोडी घरि अतिवार ॥ ४ ॥
आगै हाथी केसरी, पाखर चढीय सरीर।
एक रूप पहिलो हुंतो, बीजो मिलीयो हीर ॥ ५ ॥
माहो-महि मिली कीयो, चारित नो सुविचार।
हीर रूप बिहुं जणा, संजम सुं अति प्यार ॥ ६ ॥
पहिलो सीचा साहनुं, पूछीजै इक वार।
बीजो पण समझइजे कोइ, ते लीजइ वलि लार ॥ ७ ॥

॥ राग धन्यासी ॥

इक दिन बैठउ भवन मझार, पासै तात अवर परिवार।
वाचइ सरस सिधांत वखाण, वचन अमीरस बिंदु समाण ॥ १ ॥
दइ अनुमति दीख्या नी जोई, ते सम वड जगमइ नही कोइ।
श्रेणक किसन महाभउ जेह, साहिज करि लहिसी सिव तेह ॥ २ ॥
जो वारै संयम गुण सार, ते माहे नही बुधि लगार।
इम सांभलि रेणू सुत वाणी, बोलै मो वरजण पचखाण ॥ ३ ॥
पुत्र सहोदर रमणि उदार, छोडी घरि जजाल अपार।
जे माहि होवै अति वैराग, ते संजम लीजो वड भाग ॥ ४ ॥
तिण अवसर सोहिल साह, ते पहुतो परलोग उछाह।
रूपचन्द मन चीतवै इसो, हिव रहिवो ग्रहवासै किसो ॥ ५ ॥
जनम मरण ना देखी दुख, मूरख नर मानै अति सुख।
जिण सासण जे सूवा जती, ते जगि सुं रहिया पाखती ॥ ६ ॥
सीचा नुं ते पूछी विचार, भुवा पास गयो मन धारि।
बे कर जोडी बोलै रूप, चारत नी छै मो मन चूप ॥ ७ ॥
सा बोले फिर सांभलि रूप, भोजन भावै तुझ अनूप।
इतउ दन्न मोहन पकवान, उत उगरीया ठरीया धान ॥ ८ ॥
इत अतलस भइरव नो वेस, मलिन चीर उत लोचइ केस।
इत तंबोल गले पुफ-माल, उत दातण नही देह सम्भाल ॥ ९ ॥

इत रमणी सिज्या संजोग, उत भूसइ नवहिवो जोग।
इत मन्दिर रहीं चेवउ खाट, उत चालवो अलवाणउ वाट ॥ १० ॥
इत खेलइ चउपडि आवास, उत रहियो निसदिन वनवास।
इत पीवा कढिया गो-खीर, उत पीजइ उन्हा नित नीर ॥ ११ ॥
इत मंजन विधि अंग करंत, उत वैरागइ मल जमंत।
इत आपण मैं तु महाराज, उत फिरवो घरि भिख्या काज ॥ १२ ॥
इत रमणी सु कीजै लील, जीव जीव उत पाले सील।
सीतल वाउ सहिवो अतिचार, इत्यादिक मुनिवर आचार ॥ १३ ॥
दुहकर करणी दूह कहाय, तेइं किम संजम नी विध थाय।
तु सुकमाल सदा नित रहउ, भूख त्रिखा नो कष्ट न सहचउ ॥ १४ ॥
भूआ एम कह्यो सुविचार, रूपचन्द सु हरष अपार।
छठी ढाल धन्यासी राग, तीकम उपजै सुणत वैराग ॥ १५ ॥

सर्वगाथा ११८

॥ दूहा ॥

भूवा वात भली कही, मारग कठन बताइ।
सूरवीर वीहइ नही, कायर त्रासी जाइ ॥ १ ॥
श्री जिणवर प्रसाद थी, संजम ले स उछाह।
तप जप सुध किरीया करी, हु करिस्यु निरवाह ॥२॥
समझावी भूवा प्रतै, हरषउ वदन विकास।
आप चुणावै एकदा, चउबारो आवास ॥ ३ ॥
मन्दिर तेह चुणावतां, राति पडी तिणवार।
मंदिर मैं ते दपती, सूता सेज उदार ॥ ४ ॥

सर्वगाथा १२२

॥ राग मल्हार ॥

मोकलि हो दाउ देसडै, एहनी ढाल।
निसि भरि गुष्टि करै रली, जी हो घरणी सु रूपचन्द।
घन वैरागी रे रागी। राज रमणि त्रिण ज्यू तजी, जी हो साधु थया निरदेह ॥ १ ॥
घन संयम सु लीणा रहै, जी हो न करै नारी रंग। घन०।
पंचाश्रव टालइ सदा, जी हो पाले व्रत अभंग ॥ २ ॥ घन०।
राजलीला भव २ लही जी हो सोवन सुन्दर नारि।
संजम विण ए जीवनो जी हो न सर्यो काम लगार ॥ ३ ॥

गढ मढ मंदिर मालिया, जी हो देही रूप प्रधान।
धन लखमी नो वासो वली, जी हो जेम संझा नो वान ॥ ४॥
देव दुगंधक सारिखा, जी हो भोगी भोग अपार।
मुगतिपुरी जावा भणी, जी हो वाछइ चारत सार ॥ ५ ॥
एक दिवस नो चारित्याउ, जी हो पाली सुद्ध आचार।
पामइ परमोद सुं, जी हो कै सिवपुर अवतार ॥ ६ ॥
साध जिके सुखी सदा, जी हो राता जिणवर ध्यांन।
भरत छ खंड नो राजवी, जी हो तेहूँ तेह समान ॥ ७ ॥
माहरो पिण मन उल्हसइ, जी हो चारित लेवा काज।
पग बंधण नारी तणउ, जी हो जद छूटे महाराज ॥ ८ ॥
मन राजी तो क्या करैं, (जी हो) काजी बात कहाय।
जिम तिम दोख्या लीजांयैं, जो हो नारी नुं समझाव ॥ ९ ॥
सा बोलै तव सुन्दरी, जी हो सांभलि कंत सुजाण।
बोल इसा नवि बोलियइ, जी हो देखी जे निज प्राण ॥ १० ॥
कुण वरजै तुम्हनुं कहउ, (जी हो) मैं दीधउ आदेश।
जो चारत छै सोहिलो (जी हो) म करो ढील विसेस ॥ ११ ॥
हंसगमण हसती कहै, जी हो प्रीतम सुं बहु प्रेम।
रेणू अंगज बोलियो, जी हो अब रहिवइ मुझ नेम ॥ १२ ॥
नारी सुण विलखी थई, जी हो वीनति वचन करंत।
वचन कहउ मूरख थकी, जी हो इम किम कीजै कंत ॥ १३ ॥
मोह तज्यउ हिव नारि नुं, जी हो अडिग थयो मन तास।
ढाल भणी ए सातमी, जी हो तीकम अधिक उल्हास ॥ १४ ॥

सर्वगाथा १३६

॥ दूहा ॥

आसा संजम नी थई, आग्या दीधी नारि।
रूपचन्द मन चितवै, वार एह विचार ॥ १ ॥
पाडिकमणउ कीधउ भलो, हूवो सफल विहाण।
वाजा नवबत वाजीया, उगो अम्बर भाण ॥ २ ॥
बोले मात पिता भणी, थउ दिक्षा आदेस।
अवर सहू समझाविया, पिण छै तुम्ह विशेष ॥ ३ ॥
अति आग्रह जाणी करी, दीधी अनमति तास।

रूपचन्द हरिषत थई, पूगी मन नी आस ॥ ४ ॥
तिण अवसर ते नगर मैं, सूर वंस उसवाल।
पंचाइण नाम (इ) प्रगट, परणीजइ सुविसाल ॥ ५ ॥
अधिक महोछव माडियो, तोरण बंध्या बार।
गावै गीत मनोहरु, नारी करि सिणगार ॥ ६ ॥
रूपचंद नो सांभली, सजम नो अधिकार।
पंचाइण मन चिंतवै, ए ऐ अथिर संसार ॥ ७ ॥

॥ राग सोरठ ॥

राणावंत भीम हो, हो चढतै मकर वधार। एहनी ढाल।
इम जाणी तरुणी तजी हो, सुन्दर रूप रसाल।
महूछव जेवा व्याहना हो, ते दीखा ततकाल ॥ १ ॥
वड वइरागीया हो, रूपचंद राजीया हो, हीरा सरताजीया हो।
न करो धर्म असूर[1] वेला जाअइ वात मे हो, जेम नदी नो पूर ॥टेक॥
थां परणी छोडी सुणी हो, मो चित थयो रे उदास।
तीजो हुँ आवी मिल्यू हो, चारित लउ सुखवास।
तीन गुगति (गुपति) ज्यू विहरस्यू हो, चारत ले मन रग।
सील सरोवर झीलता हो, करता निरमल अंग ॥ ३ ॥
भोग जोग जोवन दिना हो, वूढा पण (इ) बल-हीन।
अखि जरइ अग लडथडइ हो, वचन वदै मुख दीन ॥ ४ ॥
वचन सुणी हिव तेहना हो, हीरागर रूपचंद।
तन मन लोचन विहिसिया हो, साथ मिल्यो सुख कद ॥ ५ ॥
श्रावक ना व्रत पालता हो, धरता चारित भाव।
अधिक वइरागे पूरीया हो, तजी ससारी साव ॥ ६ ॥
सवत पनरइ परगटउ हो, असीय छमछर जाणि।
भसम ग्रह तिण अवसरइ हो, वीतो आगम वाणि ॥ ७ ॥
जेठ धवल पखि अति भलो हो, विध पडिवा सुभ जोग।
दीख्यउ रो महूछव सजइ हो, मिलिआ सर्व सजोग ॥ ८ ॥
हीर महोछव माडिया हो, महिमा अधिक मडाणि।
साहंस करण आगा मुखी हो, श्रीकण (र्ण) साह सुजाण ॥ ९ ॥
सहस वीर सोभा घणी हो, सिवदत्त साह सधीर।
अबर पहिर्या अति भला हो, सोभा संहित सरीर ॥ १० ॥

---

१ चेला

ए च्यारे मिलि एकठा हो, महुछव नो अधिकार ।
कीधउ अधिक मंडाण स्युं हो, देइ दान उदार ॥ ११ ॥

दान कही ए आठमी हो, सोरठ राग सुरंग ।
सोनलना भाजन जनां हो, तीकम आणंद अंग ॥ १२ ॥

सर्वगाथा ॥ १५५ ॥

॥ दूहा ॥

सोना सुत घरि आंगणइ, मेली सहू परिवार ।
तेण । बोल दियो तिहां, जाचक जइ जयकार ॥ १ ॥
दान मान देता थका, थई घणेरी वार ।
सूर्य अस्तगति थयो, कीधा मंगलचार ॥ २ ॥
हिव परभात उठीया, सयण लोक सहू कोई ।
पहिर्या वेश मनोहरू, हुंसइ हरषि होइ ॥ ३ ॥
हीर महुच्छव मांडियो, मिलीया लोक हजार ।
मात तात धन ताहरा, जिणनामण सिणगार ॥ ४ ॥
रेषणू माह रही परै, खरचइ दाम पहूर ।
रूपचन्द दीन्या तगुर, महूछव करउ सनूर ॥ ५ ॥
थात नगर माहि विस्तरी, साह वडा सिरदार ।
अनरिज मन माहि ऊपजै, ते आव्या तिणवार ॥ ६ ॥
सुन्दर सिणगार कि (रा) जिया, अति ऊंची चउसाल ।
पाट पाटंबर बधाईया, मिचका तीन विसाल ॥ ७ ॥

॥ राग—खंभाइती सोहलानी ॥

मिचका तीन तजी सुखा रे, हो जी बैठा हीर रूपचन्द रे ।
पंचाइण परमोद सुं, हो रे दरसण नयणानन्दो रे ॥ १ ॥
गोरे मावसुं हो हीरागर रूपचन्द, रिप राजीया रे ।
जागो रूडू रणो किया रे, दूर गयो दुख दंदो रे । सो० । हो० ।
[1] सोना साह तणुं घरे रे, तोरण बांधा बारो रे ।
अनुपम सिझ धाली सिरदारे, मिचका तीन उतारो रे ॥ २ ॥
म गट मोड सिराबांधा रे, पाग सुरंगी सोहे रे ।
मोती हार उरहट धर्या रे, वदन कमल मन मोहे रे ॥ ३ ॥

---

[1] सोहा

जाचक जन संतोषीया रे, देई पूरण दानो रे।
साथ वण्यउ सहू सावतो रे, ज्युं जादव री जानो रे॥ ४॥

नगर सु गुडी उछली रे, वात सुणी पातसाहो रे।
किसन मन्त्रीसर मु कियो रे, महिमा करण उछाहो रे॥ ५॥

गुहिर नगारा गाजीया रे, भूंगल ने सरणाई रे।
[1] साल्हइरी वाजै घणा रे, जय २ सबद कहाई रे॥ ६॥

सोल सिंगार सजी करी रे, पदमणि रूप प्रधानो रे।
गावै गीत गुरातणा रे, कंठ करी इकतानो रे॥ ७॥

सायर साह तणी सरा रे, पहुँता [2]उतम ठानो रे।
आगलि सिबका हीर नी रे, पूठि अवर अभिरामो रे॥ ८॥

नगर-लोक आवी मिल्या रे, महाजन विप्रो रे।
पत्तन छतीसे उलटी रे, खत्री चारित्र देखण खिप्रो रे॥ ९॥

खलक दुनी उभी करै, लुलि २ करण प्रणामो रे।
मात पिता घन ताहरा रे, इम बोले ठाम ठामो रे। १०॥

श्री सिधारथ-सुतनी परै रे, सहू नो वचन मतोषी रे।
वसुधा घरा धन वरसतो रे, मगण जण नुं सपोखैं रे॥ ११॥

देस प्रदेश विस्तरी रे, श्री रूपचन्द विख्यातो रे।
इण अवसर ते आवीया रे; लोक घणा सुणि वातो रे॥ १२॥

प्रथम आलावो मुख पढी रे, आभरण सवि उतारी रे।
पूरब दिसी बैठा रली रे, तीन्हे मिली सुविचारी रे॥ १३॥

जिणसासण थयो उजलो रे, धर्म दिसा हिव जागी रे।
इण कलियुग पहिलो हूवा रे, ए मुनिराज वैरागी रे॥ १४॥

लोच कीयो निज हाथ सुं रे, सहु धनै सुखकारो रे।
धन २ लोक सहू को कहै रे, ए दुहकर आचारो रे॥ १५॥

अरिहत सिध सुसाधनो रे, नाम समरि सुभवारो रे।
सामाईक चारित लियो रे, तारण तरण संसारो रे॥ १६॥

ढाल तो राग खंभाइती रे, नवमी ढाल रसालो रे।
तीकम कहै ते साधुजी रे, मैं वदु त्रिकालो रे॥ १७॥

सर्वगाथा १७९.

[1] सिलुउडी, [2] सुखमा.

॥ दूहा ॥

चारित लेनै आवीया, हीर रूप पंचाइण ।
मंदिर श्री चंदी तणउ, लेई अनुमति सुविनाण ॥ १ ॥

आचारज पद थापीया, हीरागर रूपचंद ।
सकल लोकनी साख दे, हूवा परमाणंद ॥ २ ॥

रूपचंद दीख्या पछै, रूपा दे तसु नारि ।
सवर अधिकउ आदर्यो, उचरियो व्रत बार ॥ ३ ॥

आगम अति अवगाहतां, करता पर उपगार ।
ध्यान ज्ञान लीणा रहै, ते तीन्हे अणगार ॥ ४ ॥

॥ राग गुंड ॥

एक दिन विणजारो चालियो, एहनी ढाल ।
दिवस रही केता तिहा, हिव चाल्या वनवासो रे ।
मोह नहीं को लोक सुं, अजरामर पद आसो रे ॥ १ ॥
सकल दुनी चरणे नमै, श्रीवड साह नरेसो रे ।
हीर रूप रिप राजीया, विचरै देश प्रदेसो रे ॥ २ ॥
गज इंद्री वसि आणिया, मन आकुस ठहराई रे ।
देह तणी सोभा तजी, न करै ता(वा)त पराई रे ॥ ३ ॥
पट काया रख्या करै, पालै पंचाचारो रे ।
कानन मइ काउसग करइ, सफल करइ अवतारो रे ॥ ४ ॥
सुमति गुपति नित साचवइ, ध्यान निरंजण ध्यावइ रे ।
उपसम रस राता रहइ, भविक जना समझावइ रे ॥ ५ ॥
कंचण काच समउ गिणइ, वसती नई वनवासो रे ।
दुरमय को मानै नहीं, इन मटप रह वासो रे ॥ ७ ॥
सरस निरस ठाढा ठर्या, लीजइ सुधि आहारो रे ।
सखर सवाद तजी सहू, दीसै देह आकारो रे ॥ ८ ॥
कलियुग तिर्थंकर जिसा, विचरै उग्र विहारो रे ।
सतवीस गुणे करी, ते सोहइ अणगारो रे ॥ ९ ॥
नगरि २ महिमा होवै, देस अनै प्रदेसो रे ।
वाणि सुणी समझा घणा, वड़ा वड़ा साह नरेसो रे ॥ १० ॥
केई समकित आचरइ, के होवै ब्रह्मचारी रे ।
केई भावना भावता, के होवै व्रतधारी रे ॥ ११ ॥

मालव रा गढ मरुधरा, उतर नैं मेंदपाटो रे।
रूप विहार करैं तिहा, देखावै धर्म वाटो रे ॥ १२ ॥

धन २ इण अइरैं इसा, वड रिहणी रिषराजो रे।
नामइ न पडै वीजली, तारण जगति जिहाजो रे ॥ १३ ॥

जहर भुयंगम उतरे, दालिद्र जावै दूरो रे।
चोर धाडि संकट टलै, नामाय चरण सनूरो रे ॥ १४ ॥

सबद फुरैं सुख सपदा, पावइ जे पग आवै रे।
अचरिज देखी उपजैं, धरम धारा वरतावै रे ॥ १५ ॥

दसमी ढाल कही भली, गुण गाया रिष रायो रे।
मुनि तीकम कहै रूप नो, तेज प्रताप सवायो रे ॥ १६ ॥

सर्वगाथा २००

॥ दूहा ॥

हीरागर रयणु सुतन, तीजो उवटिन पचाइण।
देस नगर पुर विहरता, दीपावै जिण वाणि ॥ १ ॥

एक दिवस ले आग्याना, साव तणैं परिवार।
पचाइण पहुतो रली, मालव देश मझार ॥ २ ॥

नगर कोटडे आवीया, हरिस्या सहु नर नारि।
देय उपदेस दया करी, कीधउ अति उपगार ॥ ३ ॥

केईक दिन रहता थका, देह उपज्यो रोग।
पचाइण अणसण करी, पाम्यो ते परलोक ॥ ४ ॥

संवत पनर पच्यासीयै, रयणू साह सुजाण।
संजम मारग आदर्यो, जीव तणउ हित जाण ॥ ५ ॥

दिवस घणा सुध भाव सुं, पाली पचाचार।
अंत समइ अणसण कियो, सरणा कीधो च्यारि ॥ ६ ॥

गढ़ रणथंभ उरइ हुँता, रूपचन्द मुनिराज।
आवी नैं निज तात ना, सार्या आतम काज ॥ ७ ॥

दिवस पचास लगैं करी, संथारो शुभ ध्यान।
काल करी थयो देवता, आछे अमर विमाण ॥ ८ ॥

धन रेयणू रिष राजियो, देवदत्त धन तात।
देल्हणदे उर जन्मीयो, कमादेउर मात ॥ ९ ॥

॥ राग सोरठ ढाल काछवारो ॥

हिव रिणू मुनिराज, हे सखी हिव रिणू मुनिराज, सहसमल पंचाइण मुदारे ।
सफल कियो अवतार हे सफल कियो अवतार, प्रणमं मइ सिर नामी सरवदा हो ॥१॥
हीरागर रूपचन्द हे हीरा, आचारिज दिन प्रत चढती कला हे ।
श्रावक वड़ सिरदार हे, श्रा, श्रावी समण समणी गुण निला हे ॥ २ ॥
जइवंतो परिवार हे जय., संघ चतुरविध चतुर सिरोमणि हे ।
आराधइ गुरुदेव हे आ., गधि नागोरी महिमा अति घणी हे ॥ ३ ॥
जिण सासण जयखंभ हे जि., धरम धजा चउगडदा फरहरे हे ।
आणद लोक अपार हे आ, जप तप किरीया निरमल नित करे हे ॥ ४ ॥
हीरागर रिषराय हे ही., नगर उजेणी सुर पदवी लही हे ।
वदइ जो नर नारि हे सखी व., त्या घर दुख दोहग आवै नही हे ॥ ५ ॥
करतां पंथ विहार हे करता., पुन सजोगे महिम पधारीया हे ।
लोक कहे सवि कोई हे लो., श्री आचार (ज) रूपचन्द आवीया हे ॥ ६ ॥
दे उपदेश अनूप हे दे, सुध कमल घण जण समझवीया हे ।
अमृत वाणि रसाल हे अ, च्यार वर्ण सुण अति सुख पावियो हे ॥ ७ ॥
तेहीज नगर मझार हे सखि ते., अन्त समय अणसण किवो हे ।
श्री रूपचन्द मुणिद हे श्री., देव विमाण अनोपम पावियो हे ॥ ८ ॥
देपागर तस पाट हे सखी, देपागर., वैराग वैरागे पूरियो हे ।
श्री मुनिवर वस्तपाल श्री., गछिराज कल्याण वधावियो हे ॥ ९ ॥
श्री नारू सुखकार हे श्री., नेमिदास गच्छाधिप दीपतो हे ।
श्री आचारज एह हे श्री., आसकरण वादी घड़ जी पतो हे ॥ १० ॥
अनुक्रम ए मुनिपाट हे अ. ए मुनिराज कहीया मैं कीरति मनरली हे ।
सोनागी सुसनेह हे सो., भवियण वंदउ दिन प्रति वलि वली हे ॥ ११ ॥
संवत सोल निन्याणुवें हे सं., मास विराजै भादव सुरू हे ।
बरसै अति असराल हे., वलि वाधि चिहु दिसि मनोहरु हे ॥ १२ ॥
परव वहूनि तिथि तीज रे प., बुधिवार महामहिमा निलो हे ।
अकबरपुर अभिराम हे अ., मांहि मंडल नगर सिरातिलो हे ॥ १३ ॥
तेय कियो पटनाम हे नमि ते., श्रावण वारम गुरु महिमा रली हे ।
ताग प्रसादै एह हे ता., ग्रन्थ कियो ए मन आसा फली हे ॥ १४ ॥

श्रावक वंस सूराण हे श्रा., वीरदास चतुर सोभा घणी हे।
तस आग्रहि करि एह हे त., अधिक महारस कीधी माडणी हे।। १५ ।।
सोरठ राग सुरंग हे सो., ढाल भणी एकादसमी मुदा हे।
तीकम जे नर नारि हे ती., गावते मन वंछित लहै सदा हे।। १६ ।।
सर्वगाथा' ३२५ इति श्री रूपचन्दजी री माडणी समाप्त।

संवत शशि मुनि नभ शशि वर्षे संरका ज्ञायते। सि० भद्रं भूयात्।

(पत्र ६ नरोतमदासनु संग्रहे)

सं० माहारिप श्रो भीवाजी पठनारथ लिखतं श्री जोघा नाहार श्री मंडतामध्ये सं० १७२१ वर्षे आसाडमासे शुक्ल पक्षे दिन चउदशिसुभं भवति कल्याण मसतु।

(प्रत आर्या चोलम देजी री छई)

प्र० ७ गोविन्दराम भणसाली संग्रहस्थ।



हीरा रूपचन्द ऋषिरास

कान्हा

वीर जिणेसर त्रिभुवन स्वामी, तजीय भोग सव कमला पामी ।
जिणउ सासन पर ते आज, जास नमी सीधर सवि काज ॥ १ ॥
तास नमी रिसना गुण गाउं, जल मा चंद जने ।
हुँ मांडउ हु दुगरी सघात, तरिउ वाछउ सायर हाथ ॥ २ ॥
तिम हुँ अलप सुरती मुत हीणउ, हीरा रूपचन्द रिष गुणण लीणउ ।
पण माहरो एहवउ सभाव, अण बोल्यौ न रहुँ प्रस्ताव ॥ ३ ॥
रास ए कर विस्पू मन खंति, मति माहरी अणसर महंत ।
वागी म करज्यो कोइ व्याकरणी, मनहि बोला वड रिषनी करणी ॥ ४ ॥
जंबू दीप मनोहर जाणी, संकट पइ करे ता संठाणी ।
लंबो पहिलो जोयण लाख, भरत क्षेत्र माहे इम दाखु ॥ ५ ॥
जोयण पाचसइ नइ छवीस, ऊपरि छकला अधिकी दीसई ।
देश सवा लख सहस छत्रीस, आरिज देस साढा पंचवीस ।
भरत खेत्र माहे दोइ भाग, उत्तर दखण तइ विभाग ।
दखण अरघ भरथ माहि जाणी, मुरधर देस नामइ वरवाणी ।
(ढाल) मुरधर देस मझारइ कही, देस सवा लख वहुलो सही ।
अहिपुर नगर अछर तिणि, माहे, अमरावती समो कहवाइ ॥ ७ ॥
चिहु दिस कोट नगर पाखती पाहण बंधव वेरा नही रती ।
तीण नगर पै पोल दुलंग, सवा लाघुल रु पाह अभग ॥ ८ ॥
भीडा भीडी हुइ छइ घणी, लाख हइं सरादिक तणी ।
फीरती खाइ गढ पाखती, पाहण सिल लाग नविइ रती ॥ ९ ॥
तेण नयरनउ अति विस्तार, लांबो पहिलो धनुप हजार ।
चिहु दिसि फिरता कोस चियार, फिरतो थाल तणइ आकारी ॥ १० ॥
पूरव ऊपरि तपणी जाण, लीला करइं सहु निज ठामि ।
लोक वसइ पुहवी दातार, वहुत वछायत करइ व्यापार ॥ ११ ॥
वाडी वन अति रलियामणा, कुआ वावि सरोवर घणा ।
तिहां सतानिक सभा अति घणी, अछइ परव वहु पाणी हणी ॥ १२ ॥

ऊचा घर ऊचा बार घणा, पाहण तणे बंधाणो चण्यु ।
श्री जिण भुवण अछइ अति वहु, नाम करी करि पूजइ सहु ॥ १३ ॥
घरण तरण करणी सरिखी करइ, इक वीसी वीसी अंतरइ ।
माहो माहि करइ मिथ्यात, जोवो भोलपणा नी वात ॥ १४ ॥
पां (मो !) उसाल मांडइ अति घणा, करइ सूखडा बूरा तणा ।
नाना प्रकार तणा कहवाइ, ठाम ठाम देसाउरि जाइ ॥ १५ ॥
हाट सेरी अति माडी घणी, इसी नगर नी छइ माडणी ।
इसी अनेरा थानक नही, माड ही तिनि सवल ते कही ॥ १६ ॥
निज २ पख गहते बहूँ, पाडा वादू तिहा पणि सहुँ ।
वासा जूजूआ आपणा, साच कनिइ महेसर तणा ॥ १७ ॥
पाड्यउ अलाहदउ वटउ सही, नारी तणो गमण तिहां नही ।
मुसलमान रहइ अलगा घणा, नवि दीसइ दरसण तिहातणा ॥ १८ ॥
चरिआ बहू मनता घणा, जाणे अहिपुर नयरी तणा ।
किम बहुणा हूँ करो वरवाणा, लक नयरी तणइ अहिनाणा ॥ १९ ॥
(ढाल) तेणि नयरी गांधी वसइ, श्रीवंत सदारंग साहूए ।
श्रीपाल सोनो गुण निलउ, सीचा साहू उदारू ए ॥
सेवो २ आचारिज गज गुण, हीरागर रूपचन्दू ए ।
जमल पचायण जाणीइं, परिहरिय घर धंधूए । सेवो० ।
धुर थी धरमनी खप करइ, गेहा गाधी मल्हारू ए ।
व्रत पचखांण परूपता, गोपवइं नही लगारू ए ॥ २० ॥
देवदत्त साह तिहो वसइ, सूराणा उसवालू ए ।
तसु सुत रूनि रणु वडा, सांडा सोहिल क्रिपालु ए ॥ २१ ॥
धु (थु !) र मधुरि घर ए, दु (पु !) आ, जाणइ राजदिवाणु ए ।
तास तणउ संतान नउ, साभलि करू वरवाण ए ॥ २२ ॥
पांच कुंवर राणु तणा, माड राज हरिज हरिचंद साहु ए ।
रूपचंद कमो पाचउ सही, इयणादेवि मल्हारू ए ॥ २३ ॥
सांडा संघवी तणा अछइ, चार कुंवर वदितु ए ।
नाथ नप्पउ नंद नल्हउ, धरम मरम जाणु तु ए ॥ २४ ॥
छोरू संघवी सोहिल तणा, जीवइ नहीय लगारू ए ।
रूपचंद नइ मांगी लीयउ, राणु पासि तिवारू ए ॥ २५ ॥
रूपचंद घरि आव्या पछइ, तास घरण सुत जायउ ए ।
खेतउ नाम मति भलउ, हरषत पिता मन भायउ ए ॥ २६ ॥

मान हुव रूपचंदइ, वाघर, सुखइ कुमारू ए ।
जिम गिरि चंपक नी लता, वाइ तणइ आकास ए ।। २७ ।।
सघवी राणु परणावीया, भली परि सुत चारू ए ।
रूपचन्द संघवी सोहिल तणां, परणाव्या वर नारी रे ।। २८ ।।
मनुष तणा सुख भोगवी, सुख गमाइ इ कालु ए ।
अवर पुरषि सवि ते तणी, आरति चिंता सवि टालइ ए ।। २९ ।।
श्रीवंत सदारंग जिणमती, सीचा साहू सुजाणु ए ।
सांस्त्र वखाणइ अति घणा, नाणइं मनि अभिमानु इ ।। ३० ।।
सीचा साह तणी अछइ, निरमल अति अति गाढीए ।
इसा अनेरा नर नही, जोता जमल लिगारू ए ।। ३१ ।।
करम तणा षय उपसम्यां, जास मिल्यो रूपचंदू ए ।
तस मुखि सास्त्र संभल्या, प्राम्या परमाणंद ए ।। ३२ ।।
सीह अनइ पाखर चडी, हाथी नइं मद मातउ ए ।
आगेइं रूपचंद वहु सुरती, सीचां सगि पुहुतउ ए ।। ३३ ।।

।। ढाल ।।

खप करइ सुत भणिवानी, नीरमल (म) ति गाढ तेहनी ।
दया धर्म जाण्यो तास प्रमाण, तप करइ, नही अभिमान ।। ३४ ।।
जिण शास्त्र घणाइ विचार्या, काम भोग ऊपरि नही राग ।
मन थयउ चरित्र वेला (लेवा) नउ, आगमण हुउ हीरा साहनउ ।। ३५ ।।
हीरा रूपचन्द संघवी ते दोइ, एकति विमासी जोइ ।
रूपचंद संघवी इम बोलइ, माहरउ मन विषड़े थी डोलइ ।। ३६ ।।
लीजइ चारित्र वार म लावउ, हीरा साह कहइ वीरा थावउ ।
सीचा साह प्रतइं पूछीजइ, भाव थाइ 'ति' साथ लीजइ ।। ३७ ।।
सीचा साह प्रत इम पूछइ, मन चारित लेवानोउ छइ ।
सीचा साह कहइं सुण वात, तुम्ह घरण समझावउ तात ।। ३८ ।।
ताहि पछइ घरिणि समझावो, भाइ बधव कुटंम्ब मनावउ ।
समझाई लीया व्रत बार, उडांह न थाइं लगार ।। ३९ ।।
(ढालो)—इक दिन सासत्र वखाण कराता, आयो छइं अधिकारो जी ।
चारित्र लेतां प्रति जे बारइ, तसु गुण नही लगारो जी ।। ४० ।।
चारित्र नइ आवरण पड़इ छइ, न रहइ कोइ किही वार्यो ।
चारित्र नी जिण अनुमति दीधी, तेह जाणो हूँ विस्तार्यो ।। ४१ ।।
एहवी वात कही दीपावइं, पिता तणउ मनिण ठामि ।
ऊठी भीम कहइं सुणि रूपचन्द, आज पछइ मोहि पचखाण ।। ४२ ।।

भाइ बंधव सहोदर गाढा, पुत्र प्रमुख वाल्हो कोइ।
चारित्र लेता प्रति जे वारइं, ए पच (खा)ण मुनां जोइ ॥ ४३ ॥
ए पचखाण कीया तर पाछइ, संघवी साहि लुंके तइ कालइ।
पामिउ मरण जव रूपचन्द मनि माहि, अथ संसारि करी जाणइ ॥ ४४ ॥
आजीइ दूइ जिम कालि मुहइ छइ, मरण आवतो रहइ नही।
हिव मुझनइ श्री संयम लेवा, किसो करो गृ(ह)वास रही ॥ ४५ ॥
एहवो वात कही भूआ नइं, भूआ आहे चारित्र लेस्या।
भूआ कहइ घणू मति बोलइ, लोक माहे होसी हासो ॥ ४६ ॥
भाणे वइणे तिवण करावइ, सरस सवाद तन भावइ।
चारित्र ले घरि २ भिख्यावइं, अरस विरस न किम भावइ ॥ ४७ ॥
इक दिन अगणि द्रिखद नखावइ, कहउ चिणा वइ वडवाएउ।
निस भरि सूतो कहइ घरिणी नइ, जग माहि चारित्र अतिसार ॥ ४८ ॥
बोलो घरिण चारित्र जिम सोह, तउ तुम्हि लेतां काइ नही।
उगे सूर कियो पडिकमणो, घरिणि वचन मनि नांहि गहि ॥ ४९ ॥
मन महि वात न प्रगट प्रकासइ, करइ विमासण इम करतउ।
प्रगट हूउ असीय समाछारि, दिन २ भावि अधिक चडितउ ॥ ५० ॥
तेणि समय तिणं नयरि पचाइण, सांह सूराणो उसवाल।
हीरा रूपचन्द दीख्या लीना, जाणि तजि जिण विवाह ॥ ५१ ॥

॥ ढाल ॥

पंचाइण साह तिणिइ सइंनजी, हीरा रूपचन्द पासि।
आप कहइ लेस्या अम्हेजी, संजम मनिहि उलहासहजी ॥ ५२ ॥
काइ करो छो ढील कानि, आखिर सना सि काजी।
कारिस दीयइ दुख भी लहइवजी, काइं कउ जिम तुम्हे दोइवेजणाजी ॥ ५३ ॥
जिम धनइ ऊठाणीयाजी, सालभद्र सुजाण।
पंचाइण तिण परि करीजी, श्रावक करइ मंडाण हवरजी ॥ ५४ ॥
इम चितवत आवीयोजी, जेष्टि सुदि पडिवा दिनि।
चारित्र लेवां सामहाजी, घीन २ पुरिष्या रत्तन हवइजी ॥ ५५ ॥
हीरा काह तणउ कयउजी, महुछवउ अधिक मडाण।
सहसा क्रमण जाणीयइजी, सह वीर सिवदत वाणि हवइजी ॥ ५६ ॥
सोढावत घरि मिला सजन बहुत, तस तंबोल दीया पछइजी।
महुछव कीयउ परभाति हुव ॥ ५७ ॥
वात नगर मांही विस्तरी जी, हुउ जय २ कार जी।
त्रिजणा वयरागे करी जी, वरतइ बहु नर नारि जी ॥ ५८ ॥

चारित्र महोत्सव नउ सहीजी, कीधा काज अनेक ।
संजम सिरी नइं परिणेवाजी, पंडियइ हीर विवेक हुडजी ॥ ५६ ॥

रूपचन्द संघवी तणउजी, महुछव राणो साहु ।
दाम ति खरच्या अति घणाजी, मनह तणइ उल्हासि । हुवइजी ॥ ६० ॥

सिवकांइ गेइसाडीयाजी, हीरा साह सुजाण,
आगइ वाजा वाजियाजी, हिव अनइ नीसाण हुवइजी ।
गोरा साह घरि आंगणइजी त्रिवटइ सिवका तीन,
अनुक्रमि आवी मिलयाजी, दीपइ दान सुपन हुवइजी ।
धुरि सिवका हीरासाह तणइजी, विचिह माहि रूपचन्द ।
छेहड़इ पंचाइण पालखीजी, चाल्या मनिहि आणंद हुवइजी ॥ ६१ ॥

सागर साह तेणी सरा(य)जी जाय कीया उचारि ।
लोच धनउ साह कीयउजी, तिज्यो सयल संसारोजी ॥ ६२ ॥

अरिहंत सिद्ध अम्हारा गुरूजी, मिलिया तिहुनी साख ।
हीरा रूपचन्द चारित्र लीयउजी, जावइ मस्य (नुष्य) ना लाख ॥ ६३ ॥

चारित्र लेवा आवीयाजी, श्रीचंद साह र वाष ।
आचारिज करि थापियाजी, वहु लोक नी साख ॥ ६४ ॥

रूपचन्द व्रत लीया पछइजी, रूपादे तसु नारि ।
अधिकउ संवर आदिरउजी, उचिरीया व्रत बार । हुवइजी ॥ ६५ ॥

हीरा रूपचन्द खोरलइं ढाल जिण, लीधो संजम सारो जी ।
तव राणउ साहइ कीउ, संवर अधिक अपारोजी ।
लोक कहइ ! हीरागर सरोजी, जोडी रूपचंद जाणइं ।
हो तित्ती पंचाइण माहाजी ॥ ६६ ॥

इकदिन पंचायण रिषिइ, कीधउ गुरू विहारोजी ।
मालवा दिसि पधारियाजी, कोटडी नयर मझारोजी ॥ ६७ ॥

जीव घणा तिणि तारियाजी, हो जिणवर धरम करेसोजी ।
घणे जिणे समकित लीया, हो रिष नी वाणी सुणे होजी ॥ ६८ ॥

तिहां आ बाधा ऊपनी, कीधउ अणसण सारोजी ।
काल करी हुआ देवता, सहसमल पुत्र सुजाणो जी ॥ ६९ ॥

संवत पनर पंचासीयइ, हो रयणु साह सुणो जी ।
तिणि पणि सजम आदरी हो, वइहइ जिणेसर आणो जी ॥ ७० ॥

घणा दिवस संजम ग्रही, छेहडइ अणसण कीधो जी।
रूपचन्द रणथंभरि हुँता, आया हुइ अरथ संघाजी।
दिन पंचास लगइ कीयो, भात तणो पचखाणो जी।
कालि करी हूआ देवता, हो देवदत्त पुत्र सुजाणो जी ॥ ७१ ॥

रतनग मति सुमाइडी, हो देल्हण व महुरोजी।
सती सिरोमणि जाणीयइं, हो करम्मदेवि सुणो जी ॥ ७२ ॥

रयणु पंचाइण रिषइ, हो कीधउ तिम कामो जी।
अरित्त घणा सुख भोगवइ, हो प्रति मुगति नो वासोजी ॥ ७३ ॥

हीरा रूपचन्द रिषि तणा, हो जीयणता परिवारो जी।
समणा समणी श्रावका, हो श्राविका बहुय हजारो जी ॥ ७४ ॥

कर जोडी कान्हो कहइ, जे भणइ ए रासोजी।
अरिह घणा सुख भोगवइ, हो प्रति मुगति नो रागो जी ॥ ७५ ॥

॥ इति श्री हीरा रूपचन्द रिषि नो रास समाप्ता ॥
शुभ भवतु (पत्र सग्रह में नं० ७२०)



गुजराती लुंका गच्छ उत्पत्ति रो छंद लिख्यते

कवि भीम कृत

:: गाहा चोसर ::

प्रणमिस प्रथम जिणंद, इंदं नरियद अरुण नागिदं ।
समरिस सचि सकल सुवृंदं, नंदं मुरदेवि नाभि कुलचदं ॥ १ ॥

॥ दूहा ॥

नाभि नृपति कुलचन्द हुय, आदि जिनवर एह ।
वृष लंछन सो है सुवप्प, दीपे कांचन देह ॥ २ ॥

॥ गाहा ॥

वीणा पुस्तक धरणी जणणी जोगणी सुकवि सुख करणी ।
तारा त्रिभुवन तरणी धरणी शुभ ध्यान बुद्धि विसतरणी ॥ ३ ॥

॥ दूहा ॥

विसतरणी तरणी तिने, वरण सक्रीत विसाल ।
तूठा सरसति गुण तवसि, रूपक भला रसाल ॥ ४ ॥

गवरी नन्द निकद दुख, नमियै तेहने नित ।
वरणिस जसवंत वड़ व्रती, गहिर गुणे गछपत्ति ॥ ५ ॥

जपतां नमतां जयकरण, राजै इम ऋषिराज ।
पाटोधर वरसिंघ पट, जग जसवंत जिहाज ॥ ६ ॥

पोह परसिव परवत सुतन, सर्व विध साध सुजाण ।
इल लूंका रा आखिजै, उतपति रा जहिनाण ॥ ७ ॥

आदिनाथ वृद्धिमान अंत, चोवीसे जिन चोज ।
दीनदयाल गनुं दीयै, यहि सुख संपति मोज ॥ ८ ॥

चवता तिथ चोवीसमो, भाष सदुग्रह भार ।
दोय सहस जिण वरस दया लहै न कोई लिगार ॥ ९ ॥

महावीर पहुँता मुगति, पछै सतावीस पाट ।
चारित चूकन चालिया, क्रीया न लागो काट ॥ १० ॥

देवढगणि खिमाश्रमण सूरि विचरै इम व्रत धार ।
षट काया नै खाति कर, साचा गुर साधार ॥ ११ ॥

॥ छंद पद्धडी ॥

साधार भणीजै सुगुरु सुध, जीपियो जेण भड मयण जुद्ध ।
देवढगणि खिमाश्रमण सूरिदेव लिगार माया अंग नहीं लेव ॥ १२ ॥
विचरत विमल इम व्रत धार, आणीयो एक समीयै आहार ।
माडलै साध, वैठा मुणिंद, जागती जोति जाणे जिणंद ॥ १३ ॥
आदरी सुंठ आंवला आण, करवा मूंछणनै धरी कान ।
वीसरीयो सुगुरु जाणी न वात, पडिकमै ताम संध्याय पात ॥ १४ ॥
मुनि खामिवा वैठो जोडि मूठ, संचरे श्रवणथी पडी सूंठ ।
विमास सुगुरु जाणी वृतात, चावाज सुगुरु चित चढी ज चित्त ॥ १५ ॥
विद्या चितनां रहे अलप बुध, पतरे लिख राखो परत सुध ।
संवत नवसै असीयै (९८०) प्रमाण मंडाण पुस्तक कीया मंडाण ॥ १६ ॥

॥ दूहा ॥

महि पुस्तक मंडण तणा, लिखिया पतरे लेख ।
देवढ गणि विण दूसरो, भिखु पालटया भेष ॥ १७ ॥
साध संथारा साहीया, पडीयो काल करूर ।
कपटी लपटी लोभीया, श्रवणे सुणिया सूर ॥ १८ ॥

॥ छंद भुजंगी ॥

श्रवण न को सुणीयो साध सूर, कहर काल नै चाल पडीयो क्रूर ।
जती जन मती सती दीसै न जोगी, रहै रांकी सांकीया जिसा रोगी ॥ १९ ॥
लाखै दोष लागै जितो भख्य लाधै, करै नही संतोष कोरे न राधै ।
जायै जुजुवा जणों जण जाचि ल्यावै, खड़ा रक खुंदल करि खोस खावै ॥ २० ॥
हाथां लाकडी रक संकता लीधी, कथै पाप पाखंड कथा कूड़ कीधी ।
वेहल केईक दिन लाकड़ी संक वहीया, गिणै नहीं कोइ आगला भेद ग्रहीया ॥ २१ ॥
पछै पोहवि पाषाण प्रतिमा पूजावै, नरां संक घालै तिके मन नावै ।
इला पूजतां प्रतिमा अन्न आवै, खरै मतै होय नै गेच खावै ॥ २२ ॥
गुरां केक ईसी सी विधै दीह गमीया, भली पालटी रीति सहु साह भमीया ।
तरै देहरा मंडने देव धरीया, भुवण हुवा सुरमक्ष भंडार भरीया ॥ २३ ॥

मागी भूख ऐसी विधै पेट भरीया, तरै कुगुरे कानडै छेद करीया ।
चवां असी नै चार(८४)गच्छ हुवा चावा,दुनीदार जिम देखीयै कर्म दावा ।। २४ ।।

महा मंडीया सेतांवरी मतै काचा, सवत नवसै तिता वरस साचा ।
करै मत नै तंत टामण टूणा, इला देखीयै सरव जीवा अकूणा ।। २५ ।।

कथै कथा मै कूड़ क्रोवीया कपटी, लीया लोभ रा घणा लालची लपटी ।
बैस रह सनै वात सिंगार वाचै, रूपक जोड़ि मुख रचे श्रावक राचै ।। २६ ।।

फिरै पान चाबता पामडी पासै, पीवै नीर सीतल नृमल रहै पासै ।
कहै चोपाई जोड नै चोज कूड़ा, रटै नही भगवंत रा वचन रूड़ा ।। २७ ।।

भाखै काल चाल: तणी वात भेला, मिलै माहो माहे करै जात मेला ।
नवो वडा ए श्रावक तरण तार, मलो भूंचीयो भसम ग्रह तणो भार ।। २८ ।।

।। गाहा ।।

भल भुंच्यो ग्रहभारं, श्रावक श्रावका सयल संसारं ।
बहु सुणज्यो व्रत, धारं, तारं जिन-धर्म सत सुप्रकारं ।। २९ ।।

।। दूहा ।।

धर गुजर मै नगर धन, इल पटण इधकार ।
लको तिहा धर्म लोभीयो, सहु जाणै संसार ।। ३० ।।

रूपक साह र रानसी, राखण संघ रो रंग ।
मिल लखपति सो इक मतै, प्रीत सबल प्रसग ।। ३१ ।।

लको सुध अख्यर लिखै, ज्ञानी बहु गुणवंत ।
उत्तारण उद्यम करै, श्वेतांवरयां सिद्धान्त ।। ३२ ।।

उत्तारै पाना अवल, लको तिहां लिव ल्याय ।
भगवत रा वायक भला, भल समघो भल भाय ।। ३३ ।।

परति ज कुल गुर ने पहिल, लिखै आप नै आप ।
दोवड़ पाना दिन प्रतै, प्रसिद्ध सिद्धात प्रताप ।। ३४ ।।

संवत पनर व्रसवीस अठ (१५२८), भागो मन रो भ्रम ।
धर लखपति जिन-धर्म रो, मुंहतै लाधो मर्म ।। ३५ ।।

।। छंद हणूफाल ।।

मुंहतै एम लाधो मर्म, धर पुड़ प्रगटीयो जिन-धर्म ।
खोवै घणुं कर कर खेद, भल ग्रंथ लकै जाण्यो भेद ।। ३६ ।।

डरपै नही जोवै डाव, चरचा तणो मांडयो चाव ।
पाटण पातिसाह पू नाल, मिलीया साह सहु मूंछाल ॥ ३७ ॥

वह बहसि रचीया वाद नव खंड लको राखे नाद ।
देखें अब अंतर दुख, साचो कीयो ए धर्म सुख ॥ ३८ ॥

जीतो लकै कीधी जैत, खल खेसीया उभै खेत ।
अणहलपुरां कीध उछाह, लीयै घणु लखमी लाह ॥ ३९ ॥

लखपति तणी लागा लार, भांज्या तिहां भवरा भार ।
प्रतमा किसी किसड़ी पूज, ज्ञानी तणी राखो गुझ ॥ ४० ॥

भुवणे भाण ऊगो भाण, विध सुं सुण्या जेण वखाण ।
साभल लीयो सयम भार, अहिमद पुर अति इधकार ॥ ४१ ॥

सवत सहस्र दोढ (१५००) सुजाण, वलि चोत्रीसमेक(३४)वखाण ।
पहि पोरवाड़ जाति प्रवीण, वांणी जेण वाजै वीण ॥ ४२ ॥

वड गुरु जे था कीयो विहार, महा बाली सय देस मझार ।
भींदै वांदीया घर भाव, रहसु चरण तो रिषराव ॥ ४३ ॥

सीरोहीया दाख्या साच, कांचन लीयो छाडे काच ।
भींदा पूठ नानू भल, ऊगो अरक जेम अपल ॥ ४४ ॥

नव खड कियो नानू नाम, कसीयो घणू रसीयो काम ।
पलगत जीपिया बावीस, सदगुरु सोहिया सतवीस ॥ ४५ ॥

मुनिवर सहिर पाली माहि, सदगुरु वांदीया सद भाय ।
सांभल भीम अथिर संसार, भुवने मलो संजम भार ॥ ४६ ॥

लीया पच व्रत लिव लाय, थिर जिण नाम ना थिर थाय ।
लाढे कियो सबलो लोभ, सदगुरु देस उत्तार सोभ ॥ ४७ ॥

पोहता नगर नन्दरवाल, असट क्रम तणा पाय कपाड़ ।
महोछव हुवा झझर माहि, सब विध सुपर संयम साहि ॥ ४८ ॥

दस विधि दीपियो जती धर्म, भव भव मेटीयो भव मर्म ।
सबलो कियो क्रित सुजाण, वसुधा वदै सहु वाखाण ॥ ४९ ॥

झाल्यो जेथ जगमल्ल, जोग, भीखु थयो छांडै भोग ।
सखा जिसा सदगुरु सूर, प्रथवी नवे विद्या पूर ॥ ५० ॥

जग पुड़ कीध गुर जगमाल, ढूको मदन ढाहण ढाल ।
नमीया सकल आथ नरिंद, वसुधा वंदे सकल सुछंद ॥ ५१ ॥

॥ दूहा ॥

विरद ज ताजा वरणीये, इण गछ रा अणगार।
रूप रिप उदीयो रतन, साउ गछ सिणगार॥ ५२ ॥

सवत पनरै अड़सठ (१५६८) समै, इल उद्योत अनूप।
गछ लूंकां रे गरजियो, रूप वधारयो रूप॥ ५३ ॥

॥ छंद-मोतीदाम ॥

रूपै रिख लूंकां चाढ्यो रूप, भला मल श्रावक कीधा भूप।
सदगुर संयम ले सयनेव, सुर नर किनर सारे सेव॥ ५४ ॥

मुनिवर पाटण गाम मझार, चोखे चितसु किया मगल चार।
एका सु एक चढे अणगार, वधे वड़ साखा ज्यु विसतार॥ ५५ ॥

माडी महीमंडल मे गछ मड, पूरा ग्रथ गाजै पात प्रचंड।
निरतो अन्न सरतो नीर, वहिरे साव करे नव धीर॥ ५६ ॥

इसी विध लिये न दीयैं ओर, जिणेसर जाप तणो बहु जोर।
न जाणै टाणा टूणा नाम, कथे न कथा में आरंभ काम॥ ५७ ॥

माया जिन राखै मासा मात, घट मे काय न दीसै घात।
अमोलक वसत्र न राखै आप, प्रकासै पुण्य न माखै पाप॥ ५८ ॥

न भेटै माया काया नारि, सरभर कोन करै संसार।
न लावै तेल न न्हाणै नीर, सुगंध सुलेपन देत सरीर॥ ५६ ॥

इसी विधि चालै जे अणगार, परंवरीयो परघल परिवार।
सामेले सामगरीरे संच, न दीसै पापन को पड़िपच॥ ६० ॥

आचारज रूप तणे उणीहार, सिरोमणि साधन को ससार।
पधारया सूरतगढ सुजाण, वडै गुरु जेथ कीयो वखाण॥ ६१ ॥

वस्या जीवराज मनै वैराग, वादै नरनारी जिहां वड़भाग।
सुणी साह तेजल वात सुजाण, पाटोधर वायक कीध प्रमाण॥ ६२ ॥

जीवो जग ऊगो साझण जोग, रटंता नाम झड़ै सर्व रोग।
माता ज कपूरां तू धन मात, प्रभाकर जाणिक ऊगो प्रात॥ ६३ ॥

देसरला गोत न राखे दूज, रूड़ो जीवराज तणी रमूज।
रूपै गुरु कीध जीवो रिषराज, क्रीयावंत आप सुधार्या काज॥ ६४ ॥

जगे जीवराज प्रकासी जोति, इला में पाप तणो न उद्योत।
वड़ो वरसिंघ वड़ो व्रत धार, भुजे जीवराज समप्या भार॥ ६५ ॥

सुणी सम या तन नाध सधीर, गछ गुजरात्यां ग्यान गहीर ।
कीया कसतूरां मात कल्याण, इलां अंग सील तणा अहिनाण ॥ ६६ ॥

वरसिंघ कीयो वरसिंघ विचार, आचारज पद दीयो अणगार ।
पीता तस झांझणसीह प्रमाण, कहीजे सुन्दर बहोत कुलीण ॥ ६७ ॥

वोहरां वंस वधारै वान, मोहत वदै आपै मान ।
सदा वरसिंघ कहो सुख संत, इला जसवंत कहुँ उतपत्त ॥ ६८ ॥

॥ दूहा ॥

इल जसवंत उतपति श्रवन, कहुँ सुणो सहु कोय ।
इल अचरिज स्यो अखीयै, हंस तणे हस होय ॥ ६९ ॥

नव कोटा सोभित नगर, सेहिरा मेल सिणगार ।
साह परबत सिर तपै, राजै राय साधार ॥ ७० ॥

॥ छंद हणुफाल ॥

राजै एम राय साधार, विलसै वित्त लाधी वार ।
इल पुड ओसवंस उदार, दीपै दु-फड़ हथ दातार ॥ ७१ ॥

लू कड़ गोत राखण लाज, पोह पुण्य तणी बाधण पाज ।
परबत घरे सहोदहोदरा नारि, सतीया सिरै सीता सार ॥ ७२ ॥

सुपनै सिंह देख्यो सार, भामण पूछीयो भरतार ।
परबत तेड़ पंडित पात, मन में थई हरषित मात ॥ ७३ ॥

जनम्यां कुंवर जन आधार, विप्रा दिया दान अपार ।
महीयल जीया नव मास, जननी तणी जागी आस ॥ ७४ ॥

जनम्यां कुंवर जग जसवंत जाचिग जण सुजस जपंत ।
चक्रवत कीया मंगलचार, परबत पोखीयो परिवार ॥ ७५ ॥

प्रोढो थयो जसो पुनीत, चित में पढावण री चूंप ।
वप्प सुभेद विसवावीस, बहोतर कला लख्यण बतीस ॥ ७६ ॥

जाण्या भोग जोग सुजाण, भवणे जाण ऊगो भाण ।
जसवंत चित वसीयो जोग, भवणे अथिर सगलां भोग ॥ ७७ ॥

भल समझया षट काया सु भेद, छोलै नही न करै छेद ।
जननी कहे सुण जसवंत, चितगे पूत किसड़ी चिंत ॥ ७८ ॥

विघ सु करिस ता विवाह, आखै मात मुझ उछाह।
जसवंत वदै वायक जाम, कलियुग कारिमा सहु काम ॥ ७९ ॥

जल अंजली आवखो जेम, पभणै जसो किसड़ो प्रेम।
नरके दुख नाखै नाम, ताता लोह लागै ताम ॥ ८० ॥

तिम विवाह ना वैताक, वदीया जसौ इसड़ा वाक।
उनमत मात मुझनै आप, विघ सु सुणी परबत बाप ॥ ८१ ॥

परवत कहै संभल पूत, साचा भुजा छाजै सूत।
भव दुख टालसु तजी भोग, जोवन पालसु तप जोग ॥ ८२ ॥

कुंवर कह्यो परबत कीघ, दिल सुं घरे उनमति दीघ।
वरसिंघ सुणी साची वात, पहुता सहर सोझत पात ॥ ८३ ॥

कोको संघ करो कल्याण, सकजा मिलै साघ सुजाण।
परघल पोखीया परघान, दीघा संघ में बहु दान ॥ ८४ ॥

संवत सोल उगुण पचास,(१६४९)एहणा तणी बूगी हास।
तेरस माघसुदि गुरू ताम, कीघा जसै उतिम काम ॥ ८५ ॥

संयम लीयो पंच जण साथ, हीरो चढ्यो वरसिंघ हाथ।
जग जस भणै जय जयकार, घर्म व्रत लीया आणंद घार ॥ ८६ ॥

॥ दूहा ॥

वरसिंघ गछपति वड़ व्रती, साथै साघ सकोय।
सहर सीरोही संचरया, हरख ज मन मैं होय ॥ ८७ ॥

पद देवा नै पटघर, वरसिंघ कीयो विचार।
वैसाखा वदि वाचीयै, व्रत असट सुभ वार ॥ ८८ ॥

वयावर वघीयो करमसी, भंडारी मलमाय।
खित पुट जस खाटै खरा, लख द्रव्य लाहिण लाय ॥ ८९ ॥

प्रतपो जां लग पटघर, अर्क इला उदियंत।
थिर कर वरसिंघ थपीयो, जगगुरु जग जसवंत ॥ ९० ॥

॥ छंद त्रिभंगी ॥

जगगुरु जसवंतं, मुगट महंतं, सूत सिघात सचवंतं।
जपतां दुख जंतं, दया घरंतं, गोयम ज्युं गुरु गाजंत ॥

मोडण मयमंतं, अनम अनंतं, न्हासै नित्य निरखंतं ।
गछपति गुणवंतं महिमावंतं, जुग जयवंतं जसवंतं ॥ ६१ ॥

करवा अघ अंतं दुक्रत दमंतं, निसचल चित्त विचरंत ।
वाणी वरसंतं अमी झरंतं, विद्यागरा बुधिवंता ॥
जस हुवो जपंतं नवनिधि नित्त, परम सबे सुख प्रणमंतं ॥ ६२ ॥ गच्छ० ॥

इल मे उदिवंतं भल सोभंतं, दणियर ज्यु जग दीपंत ।
तन तंत न मत न चचल चित्तध्यान धरतं अरिहंतं ।
जैकार करंतं सुरनर संतं कीरति कविजन कुरवंतं ॥ गच्छ० ॥ ६३ ॥

अब नै गालतं व्रत पालत चले न चित्तं चालतं ।
संजम साभंतं रिष राजंत मय भाजत गाजंतं ।
गुण कवि गावतं मुनि भावतं या तसु द्रिवदत पावतं ॥ गच्छ० ॥ ६४ ॥

॥ कलश ॥

जग जयवंत जसवंत इला उदिवंत उभैकर । गछ सिणगार गुणगहिर पाल क्रम कीधा पंजर । साधनै साधवी, श्रावक श्राविका सुखकर । श्री संघ सकल साता सदा । मुख देखवा मुकटधर । कवि 'भीम' भणे गुरु कलपतर । दरसण दुखदालिद दमंत । साहिमल्ल साह तेजल सुतन, निसचल सदगुरु पाय नमंत ॥६५॥

॥ इति श्री गुजराती लूंका गछ उत्तपत्ति छंद सम्पूर्णम् ॥



गुजराती लुंका गुरु-परम्परा भास

रतन कृत

॥ दूहा ॥

श्री संतीसर प्रणमी करी, लागु गौतम पाय।
गछनायक गुण वीनवु, सरसति नै सुपसाय ॥ १ ॥

॥ ढाल - वैदरभी सु मन वस्यो ॥

सदगुरु वादो भाव सु गिरुवा श्री गछराज हो लाल।
सोहम स्वामी परपरा श्री रूपजी रिषराज हो लाल ॥ २ ॥

वैद मुहता पाटण भला, देदा सुत रूपराय हो लाल।
सील शिरोमणि जाणीये, धन धन मेघां माय हो लाल ॥ ३ ॥ सद० ॥

सूरति नगरे जीव जी, दोसी तिहां तेजपाल हो लाल।
मात कपूरां उरवर्या, जीव दया प्रतिपाल हो लाल ॥ ४ ॥ सद० ॥

कस्तुरा मात समीयो पिता, नाहटा गोत्र नो भाण हो लाल।
देवके पाटण सोभता, वड वरसिंघ सुजाण हो लाल ॥ ५ ॥ सद० ॥

झांझण सुन वरसिंघजी, सादड़ी नयर विख्यात हो लाल।
वोहरा पूनिम दीपतो, सुन्दर सोहै मात हो लाल ॥ ६ ॥ सद० ॥

सोझति नयर सोहामणो परवत साह पुण्यवंत हो लाल।
मात महोदर जनमीया, लूंकड़ गोत जसवंत हो लाल ॥ ७ ॥ सद० ॥

वींझवे रूपसिंघजी, सालेचा सिरदार हो लाल।
कनकादे पीयल घरे, जायो पुत्र उदार हो लाल ॥ ८ ॥ सद० ॥

अजमेर गढ रलियामणो, दामोदर पटधार हो लाल।
रतनादे रतनो पिता, लोढा गोत्रे सार हो लाल ॥ ९ ॥ सद० ॥

॥ दोहा ॥

देदा सुत धनराजजी, सेवाड़ी गुण धार।
लाछिमदे जणणी सती, सील शिरोमणि सार ॥ १० ॥

॥ ढाल – मन गमतो साहिब मिल्यो ॥

मुरधर देश सुहामणो, तिहा आउओ सिणगार ज रे।
साह चोमो धरमातमा, चतुरंग दे तसु नारि ज रे॥ ११ ॥

॥ सदगुरु वांदो भाव सुं ॥

पुत्र रतन जिण जनमीया, लुंकड़ गोत्र प्रधान ज रे।
चितामणि चढती कला, छाजै गुण निधान ज रे॥ १२ ॥ सद० ॥

लूंकड़ राम घर रानादे, तस सुत श्री खेमकर्ण ज रे।
मन वछित सुख जें लहै, वंदै गणि त्रिकरण ज रे॥ १३ ॥ सद० ॥

बछावत विकमपुरै, नैणसिह अणबीहज रे।
राजलदे तस घर सती, तस सुत श्री धर्मसींह ज रे॥ १४ ॥ सद० ॥

जयवता विचरो सदा सूर्यचन्द्र नी जोड़ि ज रे।
जे नर नारी गावस्यै, लहस्यै मगल कोड़िज रे॥ १५ ॥ सद० ॥

संवत सतरै सतसठै, परवतसर चौमास ज रे।
संघ सहु सेवा करै, दिन दिन अविक उलास ज रे॥ १६ ॥ सद० ॥

चितामणिजी गच्छपति, तम सिष्य वेणीदास ज रे।
भाद्रव सुदि, द्वितीया दिने, रतन कही ए भास ज रे॥ १७ ॥ सद० ॥

॥ इति श्री ॥



गच्छ संबंध भास

तेजसंघ रचित

॥ राग धन्यासी ढाल – तुं मेरे मन तुं अभिनन्दन देवा, तथा
राम कली ढाल – अंवर देहो मुरारी ॥

लकें जिन वचन नी लवघ ते पाई,
पोरवाड प्रसिध पाटण मे लका नामे लुंका कहाई।
लकें जिन वचननी लवव ते पाई॥ १ ॥

संवत पन्नर अठ्यार वीसे, वड गछ सूत्र सिद्धांत लिखाई।
लिखी परति दोइ एक आप राखी, एक दीए गुरु ने ले जाई॥ ल० ॥ २ ॥

दोय वरस सूत्र अर्थ सर्व समझी, धर्म्म विध सघने बताई।
लके मूल मिथ्यात उथापी, देव गुरु धर्म समझाई॥ ल० ॥ ३ ॥

त्रीसे वीर रासी ग्रह भस्म उतरतां, जिम वीर कह्यो तिम थाई।
उदे उदे पूज्या जिन शासन, नीति दया धर्म दीपाई॥ ल० ॥ ४ ॥

इगत्रीसे भाणजी ए संजम लेइ, लुंका गछ आदि जती थाइ।
लुका गछ नी उतपति इणी विध, कहे तेजसंघ समझाई॥ ल० ॥ ५ ॥

❋ साध सझाय ❋

॥ राग धन्यासी तथा आस्याउरी ॥

अवसर आज छे रे लुंका गछ आदि थया अधिकारी।
भाणा भीदा नून भीम जगमाल साध सरवा सुविचारी॥ लु० ॥ १ ॥

भगवत भाख्यो तिणे सरव राख्यो, दया धरम चितधारी।
केशी गोतम नी पर मिलि ने, विचारयो सुध आचारी॥ लु० ॥ २ ॥

विनयादिक विवेकें सव विध सुं, करे जिन वचन विचारी।
देश देश ना श्रावक समझाव्या, थया सवे उग्र विहारी॥ लु० ॥ ३ ॥

संवत पनर पेसठे लुका थी, वजे कीधी विध न्यारी ।
विजामति तिणो नाम कहायो, जाणो सो जाण विचारी ॥ लु० ॥ ४ ॥

साध साधवी सहस्र दोय सख्या, श्रावक बहू धन धारी ।
अढत्रीस वर्ष इणि परि विचरया, पछै रूप ऋषि थया गणधारी ॥ लु० ॥ ५ ॥

* रूप ऋषिजी नी भास *

॥ राग धन्यासी तथा राग सोरठ ॥

॥ ढाल – रावण रे तोकु कवण मत्ति आइ ॥

रूप ऋषि सासण नो सिणगारी ।
देवो पिता मात मिरधाइ जाया, पनर त्र्याले सुखकारी ॥ रूप० ॥ १ ॥

पनर अदुसठ माही पुन्यम, स्वयमेव संयम धारी ।
मोदिक पात्रे सासु ए मुक्यो, गछ बंधेज सुकन विचारी ॥ रूप० ॥ २ ॥

तिण समे बहु साध साधवी, श्रावक बहु धन धारी ।
पद देइ पाटण गछ थाप्यो, जिन शासन जयकारी ॥ रू० ॥ ३ ॥

पनर अठ्योतरे जीवजी ने संजम, पद दे कीया पटधारी ।
सात वरस गणी साथे विचरया, समझाव्या बहु नरनारी ॥ रू० ॥ ४ ॥

माहा पन्नवणा उदे ग्रंथ माहे, आगम कह्यो ते उदारी ।
रूप जीव नामें दो आयरिया, थया ते जुओ विचारी ॥ रू० ॥ ५ ॥

चौरासी गछ मा केंकेइ गछ ना थया ते उग्र विहारी ।
ग्यान ध्यान तप तेहनो देखी, थिर श्रावक थया तेण वारी ॥ रू० ॥ ६ ॥

लुंका नागोरी पनरसे असीइ जूदा थया नागोर मझारी ।
हीरो आचार्य थयो तेणि चउदस, पाखी मानी तिण वारी ॥ रू० ॥ ७ ॥

उतराध देशे गछ उतराधी, ते जूदा थया तिण वारी ।
साध सखा नो परिवार सघलो, लुका बिरद नाम धारी ॥ रू० ॥ ८ ॥

पनर पंचासी ए रूप ऋष अणसण, दिन पंचवीस चउविहारी ।
अणसण मा उदोत कीयो देवें, सात वार जाणे ते संसारी ॥ रू० ॥ ९ ॥

पंचास ग्रीहावास वर्ष वली, सतरे संजम साथे पद धारी ।
वरस सरब आयु पाली, थया देव स्वरग मझारी ॥ रू० ॥ १० ॥

* श्री जीवजी नी भास *

॥ राग धन्यासी तथा काफी ॥

गाथा । जीव ऋषि सासन उदयो दिणंदा । जीव ऋषि जिणंदा,
पनर पंचासे कपूराइ जनम्या, दोसी तेजपाल कुलचन्द ।
जीव ऋषि जिणंदा । सासन उदयो जिणंदा जी ॥ १ ॥

अढ़सठ माह सुदि पंचमी दिवंसे, संजम मन मानंदा ।
तिणे समे रूप ऋषि पदवी देतो, घन विलस्या लाख लेख लोखंदा जी ॥ २ ॥

विहार करयो जीवजी ए जिण देशें, समझाव्या नार नारिंदा ।
सोल वारोत्तरे वैशाख शुदि सातम, जीने वरसंघ ने पद देदा जी ॥ ३ ॥

वरस भाभेरा ठाणि दोय विचरया, धर्म नो ध्यान धरंदा ।
तेरोतरे जेठ सुदि छठ सोमे, जीवजी ए अणसण लेदा जी ॥ ४ ॥

अठ्यावीस गृहावास वर्ष पैंत्रीस, संजम पद पालंदा ।
पंच दिन चोवीहार त्रेसठ वर्ष आयुं, पाली पाम्या सुर तेज वृंदा जी ॥ ५ ॥

* श्री वड वरसंगजी नी भास *

॥ राग धन्यासी तथा गोड़ी ॥

॥ ढाल - आवे माइ व्रज ललना दुख मोचना ॥

वरसघजी जीवजीनां पटधार ।
सोरठ देश पाटण पिता सुमीया कस्तूरां कुष अवतार ॥ वर० ॥ १ ॥
संवत पनर चोसठे जनमां, सित्यासीइं संयम धार ।
सोल वारोतरे पदवी पाम्या, सका वर्ष गणि संग विहार ॥ वर० ॥ २ ॥
सोल सोलोतरें सिसु मति नीकल्यां अविधकरी अपार ।
वरसंह सु विरुध करी नें, सिसु घन नाम गणीधार ॥ वर० ॥ ३ ॥
लका सीचा पासा विजा सखा, कडुआ धरमा मत धार ।
ब्रह्मा कोथलीया साकर टाकरिया, सिसुमति सुथया वार ॥ वर० ॥ ४ ॥
सीवे चवदिस पासे वेठा, पडिकमणो वजे हार फुल मान्यो आकार ।
सर्वे देश कडुइं गृह वेसइं, धर्मो नामा रघ नो धार ॥ वर० ॥ ५ ॥
कोथलीए पासो कोथली में, ब्रह्मा मती मान्यो नमस्कार ।
साकरीइं व्रत ढ़ाकरीइ समकित, सिसू ए मान्यो सूत्र विवहार ॥ वर० ॥ ६ ॥

बारे मत एक स्थिर परुरणां, जो रह्या हुतः तिणवार।
वर्द्धमान उही परि लुंका, तो वधे तो गछ विस्तार ।। वर० ।। ७ ।।
चन्द्रगुपति चंद्रे छिद्र दीठां फल कह्यो पूरव धार।
शासन मां बहु मति मता(त)र, ए लक्षण पंचम आर ।। वर० ।। ८ ।।
मत गया केइ मत जासे, थिर थडनो विस्तार।
इकवीस सहस आरा लगे रहेसी, अंति दुसे नाम गणधार ।। वर० ।। ९ ।।
वरसंघ जाए वरसंघ जी ने, सतावीसे दीओ गछभार।
सत्तर वरस बे साथे विचरया, आव्यां खंभायति नयर मझार ।। वर० ।। १० ।।
वड वरसंघजी सोल चोमालें, अणसण अंग उदार।
सिसु पख थी श्रीपति संघ संघाते, वादी आण मानी व्रत धार ।। वर० ।। ११ ।।
गृहावास त्रेवीस संजम सतावन बत्रीस वर्ष पट्टधार।
आठ पहोर अणसण असी वर्ष आयु, पाली लीयो सुर अवतार ।। वर० ।। १२ ।।

* वरसंघ जी नी भास *

।। राग धन्यासी तथा कल्याण ।।

।। ढाल – आज माइ रंग हे ए देशी ।।

वरसिंघ पाट वरसंघ जाय कहीजे ।
पनर निव्यासीइ सुन्दरि जाय झाझण सात्तात्त तवीजे ।। वर० ।। १ ।।
सोलछके संयम ले विचरइं, सतावीसे गणी पद लीजे।
विचरतां वर्ष साठे चितव्यो, कोन हीवे पद थापीजे ।। वर० ।। २ ।।
रात्रे देव सुपन माहे कहीयो, पर्वत सुत्त पद दीजें।
अगुण पंचासें जमणत जाने, दीक्षा दे पद ठावीजें ।। वर० ।। ३ ।।
बार वरस झाझेरा गणि बे विचरयां तेह वदीजे।
सोले बासठे माहि पुन्य जे, अणसण अंगि आदरीजे । वर० ।। ४ ।।
सोल गृहवास छपन वर्ष संजम, पेत्रीस पद पालीजे।
बहोतर वर्ष नो आयु पाली, पाम्या स्वर्ग सहीजें ।। वर० ।। ५ ।।

* श्री जसवंत जी नी भास *

।। राग धन्यासी तथा राग नट ।।

।। ढाल – पीया तेरे अखियां ऊपरि वारी ए देशी ।।

जसवंतजी इं जग माहें जश उपायो ।
चोरासी गछ माहे जस चावो, सगले देश सवायो ।। ज० ।। १ ।।

परवत पिता सहोदर माता, सोलें चोत्रीसे जायो।
उगण पचासे संजम लेइ, पदत्रासी दिने आयो ।। ज० ।। २ ।।

सोल अठ्यासी ए मगसिर पुन्यम, रूप साहजी ने पद ठायो ।
मिगसरि बदि बीज बुद्धे अणसण, आराधी देव पद पायो ।। ज० ।। ३ ।।

सोल गृहावास वर्ष अठत्रीसनो, संजम पद धरायो ।
चोपन वर्ष सर्व आयु पाल्यो, गणि तेजसंघ गुण गायो ।। ज० ।। ४ ।।

* श्री रूपसिहजी नो भास *

।। ढाल – रे वनचर कोन देश थै आयो ।।

।। राग धन्यासी तथा राग सारंगा ।।

जसवंतजी पाट रूपसीह नीको ।
जसनो जिहाज जाणी जसवंतजी, दीयो आचार्य पद टीको ।। ज० ।। १ ।।

पिथड पिता कनकाइ जनमो, सोल अठावने कीको ।
संजम पंच्योतरे सोल अठ्यासी, धणी थयो गणि पद वीको ।। ज० ।। २ ।।

सोल छन्नूइ अणसण कीधो, पचखाण भात पाणी को ।
दामोदर ने पद देइ देव पद, पाम्या जगमाहे जसजी को ।। ज० ।। ३ ।।

सतर गृहावासइ इकवीस संजम, सात वर्ष आयु पदवी को ।
अढत्रीस वर्ष नो आयु जाणी, कहे तेजसंघ रूपसीह को ।। ज० ।। ४ ।।

* श्री दामोदर कर्मसीहजी नो भास *

।। ढाल – दीनाथ भमर कमल विन झुरे ।।

।। राग धन्यासी तथा राग सामेरी ।।

कर्मसीहजी दामोदर वे भाइ ।
पाचमे आरे पुन्यवंत उपना, वेहु जणे गणी पद पाई ।। क० ।। १ ।।

अगुणोतरे रतनावे जनम्यो, करमसी वहोतरे दामोदर भाई ।
अठासीइ नवासीइ संजम महोछव, कीयो रतनेसाह सवाई ।। क० ।। २ ।।

सोल छिनूइ वेलाइ पद पाम्या, पहेला माने पछे वडइ भाइ ।
मास दामोदर वरस एक कर्मसी, अति अणसण अमि आइ ।। क० ।। ३ ।।

दामोदर सोल गृह आठ वर्ष सयम, त्रेबीस वर्ष स्वर्ग जांइ ।
तिणे समे धनराजा कर्मसीहजी थी, जुदो गणी नाम धराइ ।। क० ।। ४ ।।

सोल सताणुंइं खमायति अणसण, करयो के बावने पद ठाइ ।
सतर गृहे दस दिक्षा सतवीस वर्ष, आइयु पाली सुर थाइ ॥ क० ॥ ५ ॥

※ श्री केशवजी नी भास ※

॥ ढाल – जागि अब भोर भयो नाभि के नंदा ॥

॥ राग धन्यासी तथा राग ललित ॥

श्री केशवजी संघ सेवे मन भायो ।
सतर वरसे सघ साथे धनराज, मेल करवा पासे आयो ॥ श्री के० ॥ १ ॥

नेतसी पिता नवरंगदे (माता) सोलसें पच्योतरे जायो ।
निव्यासीइं नव सु सजम लेइ, सताणुंइं गणी पद पायो ॥ श्री० ॥ २ ॥

विचरंता तेरोतरो समछर, सुरति नयर सोहायो ।
वोरा वीरजी विचार करी नइं, धनराजजी ने तेड़ायो ॥ श्री० ॥ ३ ॥

मेल करता मनोरथ फलीया, लालमण पाए आयो ।
तिनथि वरगछ माहे आया, सघले जस सवायो ॥ श्री ॥ ४० ॥

सतर वीसोतरे जेठवदि नवमी, कोल दे अणसण ठायो ।
त्यारे वोरा वीरने नाम लिखी ने, गछ नो भार भलायो ॥ श्री० ॥ ५ ॥

चउव गृहा वास बत्रीस संजम, मैं वरष त्रेवीस पद धरायो ।
बरस छेतलिस सर्व आयु पाली, स्वर्ग थयो सुररायो ॥ श्री० ॥ ६ ॥

※ श्री गुरुगण माला भास ※

॥ राग धन्यासी ॥

हमारे दोलित गुरु नी दया थी ।
केशवजी नी धुरथी कृपा मोटी, महेमा गुरुनी मया थी ॥ ह० ॥ १ ॥

संवत सतर एक वीसें सवछर, वोर वीर हीयाती ।
वैशाख सुदि सातम वुद्धवारे, गछ भलाव्यो गुरुना कह्या थी ॥ २ ॥

संघ वंदावतां धर्म्म नो महिमां, गुरु माई सुं संतोष थयाथी ।
गणी तेजसंघ ने सुगुरु प्रसादे, सरब सापति सुख सयाथी ॥ ३ ॥

पूरवे पंच पाट विद्द जाणी, विचारयो मन नी मया थी ।
कानजी ने पोता सम कीधो, गणी तेजसंघ पासे रह्या थी ॥ ४ ॥

सवत सत्रर त्रेतालीसे सवछर, चोमासो सूरति थया थी।
दिन दिन दोलित अधकी दीसें, दुसमन दाष गया थी॥ ५ ॥

॥ कलश ॥

लौ लुंका गछ नतपति कही, ते सत्यसघ सेवे साभलो सही।
वली साध सारा गुण भंडारा, थया षट नाम ते कही॥ ६ ।

वली पाट पाटोधर धरम धूरंधर, गाम नाम सवे कह्या।
तेहना पाच कल्याणक माता पिता, नाम जाणी परपर लह्या॥ ७ ॥

सवत सतर एकावनां सवछर, दीवनगर चोमास ए।
ए भणे गुणे जे कहे गणि तेजसंघत सघर सपति सुखवास ए॥ ८ ॥

॥ राग देशाष ॥

लवघणत लुंका सही श्रावक समझाव्यां।
सिद्धात वचन सुणावि ने, मिथ्यात मुकाया॥ ल० ॥ १ ॥

असाजत पूजा उथापिने, दयाधर्म दीपाया।
सांते अतरे जिम जिणे, मिथ्यात मिटाया॥ ल० ॥ २ ॥

भाण भीन नुन भीमजी, जगमाल मुनी सरवा।
रूप ऋषि सजम लीयो, भव सायर तरवा॥ ल० ॥ ३ ॥

तस पाटे जीवऋषि थया, पाटे वरसंघ जाणों।
वरसंघ तस पाट वली माने, सहु सघ आणें॥ ल० ॥ ४ ॥

जासवंत रूप दामोदर क्रमसीह कुल भाण।
तस पाट केशव गणी तेज अधिके वाम॥ ल० ॥ ५ ॥

॥ इति सम्पूर्ण ॥



ीव ऋषि चौढालिया

जइत रचित

गूजर देस वखाणीइ, जिहां दोसी श्री तेजपाल।
बारह व्रत अगी करयाजी, घरण कपू सुकमाल ॥ १ ॥

जीवउजी पुन्य तणउ भंडार, मात कपू कूषि अवतार।
जीवउजी पुन्य तणउ भंडार, सीह सुपन देखी करी जी।
जागी हरष अपार, जीवानु जीव अवतरयउजी।
अभय दान दातार, जीवउ० पुन्य० ॥ २ ॥

सुखइ समाधइ वरतताजी, प्रसविउ कुमर सरूप।
देवकुमर जिसउ दीपतउजी, रूपइ मोह्या भूप ॥ जीव० ॥ ३ ॥

माय बाप न्यातइ मिलीजी, जाणी गुणनउ ठाम।
जीवानु सुखकारीउजी, दीघउ जीवराज नाम ॥ जीव० ॥ ४ ॥

दिन दिन व्रिधवाता हूइजी, धन जस काया सुघन।
भणवा अवसर अति भण्याजी, निरमल च्यारे बुध ॥ जीव० ॥ ५ ॥

उत्तिम कुल अवतार, जीवुजी पुन्य तणउ भंडार।
योवन वय परणावीउजी, बहुला दीधा दांन।
लीला पति सुख भोग वइजी, जे जग माहि प्रधान ॥ जीव० ६ ॥ ॥

भसम ग्रह हिव ऊतरिउजी, जिन ना वचन निहाल।
साघ साधवीरा उदाजी, जोइजइ इण काल।
जिण शासण शृंगार, जीवउजी पुन्य तणउ भंडार ॥ जीव० ॥ ७ ॥

॥ ढाल – बीजी छाहिकी ॥

इण अवसर रिष पाटणी, रूपाजी नइ मति घणी।
जिन तणी आण न लोपइ, विचरताए ए सहीए।
जिन तणी आण न लोपइ विचरताए ॥ आंकड़ी ॥ १ ॥

देखी अम्ह प्रसंसीउ, देव अंसीएह।
जीवण मरण संमारीउ, इण कल माहे सार॥ मनि० ॥ ८ ॥

सवछर पइत्रीसनइ (३५), वली च्यारइ मास।
दिन इकवीसइ आगला, संजम माहि वास॥ मनि० ॥ ६ ॥

संथारइ दिन पावमइ, रिप सारचा काज।
देव तणाउ कहिवउ किस, संजम सिवराज ॥ मनि०॥ १० ॥

जिगाए लाखे करी, गुण बोलु सार।
जइत कहइ रिप जीवना, तउ हइ न लहुं पार॥ मनि० ॥ ११ ॥

दिन दिन प्रति जे गाइसइ, नर नारि जाण।
ते मनि वंछित पामसइ, सुख श्रेय किल्याण॥ १२ ॥
मनहि मनोरथ ए कीउ, ॥ छ ॥

॥ इति श्री जीवरिप चउढालीउ सम्पूर्ण संवत १६७६ फागण सुदी ८ समाप्त ॥



जीव ऋषि गीत

लालजी ऋषि

दया धर्म दीपत करण भवियण जण नै तार।
जीवो जिण धर्म जस तिलक, दाहिण दिस अवतार।
अहो दाहिण दिस मह मंडलउ गूजर घर अवतार जी।
नट सुरेत सुहामणो देसलहरउ दिनकार जी ॥ १ ॥

अम्हे साध शिरोमणि वदसु श्री जीवऋष मुनिरायजी।
अम्हे जंगम तीरथ जुहारसु शरण सदा तस पाय जी ॥ अम्हे० ॥ आंकणी ॥

सोल कला सोहइ सदा मुनिवर महिमावन्त।
देसलहरउ दीपत करण तेजपाल सुतन्न।
साह तेजपाल दोसी घरे शील सुहागण नार जी।
मानकुंवर ऊपना अम्ह गुरु गौतम अवतार जी ॥ अम्हे० ॥ २ ॥

आगम अरथ विचार करि, वरसइ अमृत वाण।
जगम तीरथ जुगपवर पाम्या पुण्य प्रमाण।
अहो पुण्य प्रमाणइ पामिया श्री रूपऋषि गुरुरायजी।
तास वयणइ वइरागीया, अनुमत दिइ माय तायजी ॥ अम्हे० ॥ ३ ॥

श्री सोहम संतानिया गूजरघर अहिठाण।
सवेगी सुविहित हुआ संवत पनरहि जाण।
अहो संवत पनर अठहेतिर(१५७८)माहा महुच्छव कीधजी।
सुकल पख पंचम गुरू श्री रूपऋषि चारित दीधजी ॥ अम्हे० ॥ ४ ॥

सजम भर धुर धवल सुइ सागर सुविशाल।
आगे आगम वाणि गुरु पंच सुमति प्रतिपाल।
अहो पंच सुमत सुमता सदा पालते अरिहंत आणजी।
प्रकट उदइ जिण धर्म किउ जिम पूरब दिश भाणजी ॥ अम्हे० ॥ ५ ॥

मेघ तणी परिगाजता, सूत्र अरथ दीपावता।
भावत नवमउ रस जे जिण रुहिउ ए, तेजपाल परवारसुं।
वादण आव्या साधनु, जीवराज मुण वाणी वइरागीउए॥ हीएजी॥ २॥
तेजपाल उछव कीधउ, जीवराज चारित लीधउ।
दीधउ दान वहू परध लहीइए॥ ३॥
सही० लीघाउ० साहमी, मिलीया अति घणा।
भगति युगति सतोषणा, आसीस दिइ जीवा रिष तम्हे दीपज्योए॥ ४॥

॥ ढाल त्रीजी॥

रिष चारितू लेइनइ चालइ, रिष आठ कर्मनइ पालइ।
रिष समत इरया पालइ, वलि मथू ते सवि टालइ॥ १॥
बोलइ भाषा समति विचारी, त्रस थावर नइ सुखकारी।
इम पंच सुमति त्रिहुँ गुपता बाबीस परिसह दमता॥ २॥
चरण करण सत्तर गुण धारी वलि दस विघ सामाचारी।
अढ़ार सहस सीलंग, रिषि धारया मननइ रगइ॥ ३॥
जे आवइ वादइ माणी, ऊत्तर दिइ सूत्र वखाणी।
भव करम विवर दिइ जाही, सद्दहणा आवइ ताही॥ ४॥
बीजाइ सीतल बोलइ, सूत्रवी थोडाइस तोलइ।
ससम उपरसमउ लंहता, रिष आचारिज गुण पुहता॥ ५॥

॥ दूहा॥

गुण जाणी जीवरिष नइ, आचारिज पद दीध।
रूपरिष अणसण कीउ, मनि हि मनोरथ सीध॥ १॥
आचारिज श्री जीवरिष, सूत्र अरथ ना जाण।
आण सवि हुँ दिसि विस्तरी, परतपि पुन प्रमाण॥ २॥

॥ ढाल – चुथी॥

जिम गंगाजल लहरे लह कइ ए ढाल।
सूरिज ऊगइ तिमर पणासइ, तिम रिप दर्श(न) मिथ्या नासइ।
वासइ समकित जिन तणउ ए॥ १॥
सोल कला पूनिम नउ चन्द, रिपमुख दिठइ परमाणंद।
नयण कंचोले दीपताए, एतउ नयण कचोले दीपताए॥ २॥

देव माहि जिम दीपइ इंद्र, ग्रह गण तारा माहे जिम चन्द ।
तिम श्री संघ माहे जीवरिष ॥ ३ ॥

मोह मयण मद च्यार कषाय, जीवरिष थी दूरइ जाइ ।
तप संजम सु सुख घणउए, एतउ तप संजम सु सुख घणउए ॥ ४ ॥

जंगम तीरथ जीवरिष गाजइ, छकायां घरि वाजित्र वाजइ ।
आव्यंउ ठाकुर आपणउए, एतउ० ॥ ५ ॥

अरथइ धरमइ कामइ हुणता, परवस पड़्या असाता सहिता ।
तेहनउ वाहरू जीव जीय ॥ ६ ॥

स घ साधवी वहूला सार, सावक श्रावी अतिहि उदार ।
समकित द्रष्टी अति घणाए ॥ ७ ॥

॥ हिव ढोल – पचमी संथारारी श्री जीवरिष री ॥

मनहि मनोरथ ए कीउ, संथारउ कीजइ ।
जे जिणशासण जिण कहिउ, शिवपुर साधीजइ ।
मनहि मनोरथ ए कीउ, ए आकड़ी ।
साव्र सावंवि तेड़िया, जाणावी वात ।
जीवरिष संथारा तणी, देसे हूइय विख्यात ॥ मनहि ॥ १ ॥
देस देस थी आवीया, वली गाम नगर थी आवीया ।
श्री पाटण आदइ, जिन मति वादण साधनइ ।
श्री अहिमदावादइ ॥ मनि० ॥ २ ॥

सुरवर मुनिवर नइ कहइ, संथारउ सार ।
जाव-जीव नउ आदरउ, मम लावउ वार ॥ मनि० ॥ ३ ॥

सुप्रभात साध साधवी, मिल्या संघ बहुतु ।
श्री मुखि अणसण ऊंचरइ, रिष विध संजतू ॥ मनि० ॥ ४ ॥

इणि अवसर परभावना, जिनमति ए कीध ।
दान सीयल तप भावना, आखड़ीय प्रसिध ॥ मनि० ॥ ५ ॥

संवत सोल तेरे तरइ (१६१३), वदि बीजइ जेठ ।
संथारउ सीघउ दसिम, दीठउ महिमा दृष्टि ॥ मनि० ॥ ६ ॥

इण अवसर अद्योत थिउ, त्रिण वार प्रसिध ।
केसर वरण काया हुई, गंध अतिहि सुगंध ॥ मनि० ॥ ७ ॥

जंबूवर दाहिण भरह पुहवइ पुण्य विख्यात ।
सोल सहस जिण जोवतो घरम देश गुजरात ।
अहो गूजर पूरब मालवो उतराधिगिरि पारजी ।
मेदपाट मुरधर मही वरतावी अमारिजी ॥ अम्हे० । ६ ॥

नंदण वन वनराइ जिम जोइस अष्ट प्रकाश ।
सोहस वहोत्तरि परिवर्या तिम पाटण पुण्य निवास ।
अहो पाटण गछ गिरवा गुणइ सोहत जिम समवाइजी ।
आचारिज पद संपदा, भरहखेत्र ऋषिराइजी ॥ अम्हे० ॥ ७ ॥

मेरुगिरि महिमा तिलक नाणे केवल रेख ।
गंध गुणे गोसीस जिस तिम वृक्ष कल्प विशेख ।
अहो कल्पवृक्ष कुल जगि समउ पूरत भवियण आशजी ।
जांमल जस ऋषलालजी नित प्रणमे जणदासजी ॥ अम्हे० ॥ ८ ॥

॥ इति श्री जीवऋषि गीतम् ॥



ऋषि जीवराज गीत

करमसी कृत

॥ राग सवल कला अमृत–वसुंदरा वांणी तथा सोरठा ॥

सिगलां माहे सरोमण, जंगम तीरथ जाणू ॥ १ ॥

धन २ जीवजी, धन २ मात कपूरां,

धन २ जिण एसउ सुत जायउ, पांचमइ आरइ परगट कीधउ ।

दया धरम दीपावउ, धन २ जीवजी । आंकड़ी,

सवेगी वैरागी त्यागी, जिनवर आणज पालइ ।

खमा दया जस दीपइ दिन २, दोष बइतालीस टालइ ॥ २ ॥

धन-धन ०। धन २ नगर ···· ····,जिहां जीवा ऋषि विचरइ ।

धन २ जे नर वदइ, धन २ जे आ ते नर शिवपुर नंदइ ॥ ३ ॥

अष्ट संपदा सं······· , आचारिजा ।

नदोवउ कहइ करमसी । जग जइवंता श्री जीवराज चिर जीवउ ॥ ४ ॥

धन धन जीवजी, धन मात कपूरा ।



पूज्य श्री वरसिंघजी चातुर्मास

सयल जिणेसर नदी पाय, गाइसि श्री वरसिंघ ऋषिराय, सरसति तणि सुपसाय।
श्री वरसिंघ गुण वणवेस, वर्षा चउमासा सहु कहेस, सुणतां सुख लहेस ।। १ ।।

श्री कंदुकी नयर अतिहि विसाल, सा. झांझण तिहां दीपे दयाल, सती सुंदरि सुभमाल।
दीठु सुभ स्वपन रसाल, अवतरिउ कूखि कृपाल, सुख भोगवी सुराल ।। २ ।।

संवत पनर नेऊ नेतार, चैत्र सुदि पंचमि रुविवार, पुत्र प्रसव्या सुखकार।
सजन सहु संतोषी अपार, नाम दीय वरसिंघ उदार, वुधि अभयकुमार ।। ३ ।।

अनुक्रमि कला बहुत्तरि धार, जोवन वय जीता विकार, उस वंशकुलि अवतार।
सवत सोल छडोत्तरि सार, माघ सुदि पचमी गरुवार, सिवपुर नयर मझार ।।४।।

ऋषिलालजी हस्ति संजम भार, सेव्या रूप धरमा गुणधार, जिनशासन सिणगार।
बड़ वरसिंघ श्रुतिसागर, निर्मल शील बुधि अपार, कोधो शुद्ध विचार ।। ५ ।।

संवत् सोल सातावीसि उदार, पोस सुदि पूनिम गरु विस्तार, संप्यो गछ नो भार।
अहिमंदपुर आवि संघ वृंद, करिइ मोछव मनि आणंद, गुरनइं सेवि सुर नरंद ।।६।।

॥ ढाल ॥

प्रथम चउमासुं राहुली रे, बीजु हणादरि गाम।
मनुष घणा ध्रम पामीया रे, गुरु गौतम गुण धाम ।। १ ।।

भविजन गाउ गुण गछराय, जेहने नामि सवे सुख थाय।
जेहनि दरसणि दुकृत जाय, पूज्यइ राखिइ जे षट काय ।। भ० ।। अचली ।।

त्रीजुं जालोरि जयकरु रे, चउथुं निजामपुरि ठाम।
पंचमुं नीतोड़ि मुनिवरु रे, सारिइ भविजन काम ।। भ० ।। २ ।।

छट्ठुं सीरोही सचरया रे, चउद विद्या गुण धार।
पर वादी सि जय पामीया रे, हरख्या जीवजी अपार ।। भ० ।। ३ ।।

सातमुं पालड़ी पधारिया रे, आठमुं बीलाड़ि महत।
जेसलमेरि सिधाविया रे, नवमुं महिमागत ।। भ० ।। ४ ।।

राउलह (र) राज हिए हरखीया रे, राख्या चउमासे मांडाणि ।
उस वंस वृंद समभ्भीया रे, सांभलि अमृत वाणि ॥ म० ॥ ५ ॥

वड़ वरसिंघ पासि रह्या रे, सिद्धपुरि सुखकार ।
शास्त्र बुधि उत्तर कह्या रे, शिशु श्रावक विचार ॥ म० ॥ ६ ॥

इग्यारमु सिवपुरि वली रे, गोगुंदे गुणगत ।
तेरमु जेसलमेर मनि रली रे, श्रावक वहु धर्मगत ॥ म० ॥ ७ ॥

राजनगरे चउदसु रे, त्रांबावती त दयाल ।
हणादरि गामे सोलमु रे, राडवरि ते रसाल ॥ म० ॥ ८ ॥

अढारमु सीरोहि कवि भणे रे, उगणीसमु जसदण ।
वीसमु वेलाउल पाटणे रे, सुणिइ चउमासा सो धन्न ॥ म० ॥ ९ ॥

अहिमदपुरि एकवीसमु रे, तिहु पदां नु शुभ ठार ।
सिद्धपुरि वावीसमु रे, सीरोही त्रेवीसमु सार ॥ म० ॥ १० ॥

चउवीसमु त्रबावती रे, जितारणि ने तार ।
तिजारि छवीसमु गच्छपती रे, महिम रह्या गुणवार ॥ म० ॥ ११ ॥

॥ ढाल राग गोड़ी ॥

हुंसार कोटि अठावीस थया, तिहा थी कीध विहार ।
मनुष्य घणा प्रतिबोधीया, लाहोर माहि विचारो रे ॥ १ ॥

श्री पूज्य गच्छपती, तरण तारण महतो रे । श्री पूज्य । अंचली ।
महिमे अगुणत्रीसमु, वली महिम मभार ।
आगरि कीय इकत्रीसमु, अजमेर ग्यान्य भडारी रे ॥ श्री ॥ २ ॥

श्री तेत्रीसमु सीरोही वखाणीए दोत्रय त्रं(बावती) ताम ।
छत्रीसमु वडपद्रि जाणीए, उसमांपुर सु ठामो रे ॥ श्री ॥ ३ ॥

अठतीस मु त्रंबावती थयं वड़ वरसिंघ गुणधाम ।
कातिक सुणि (? दि) एकमि कीय, अणसण आठ यामो रे ॥ श्री ॥ ४ ॥

समकित घणा तिहा आदरघा, धर्म दीपाव्यो अपार ।
सा. श्रीपति व्रत उचरघा, दीधा दान दातारो रे ॥ श्री ॥ ५ ॥

उगुणचालीसमु चतुरमती, अहिमंदपुर निधांन ।
चालीसमु त्रंबावती, पाटण युग प्रधानो रे ॥ श्री ॥ ६ ॥
बेतालीसमु सीरोही आविया, धर्म ना महिमा अनेक ।
राय सुरतण तिहा हरखिउ, सांभलि वाणि विवेको रे ॥ श्री ॥ ७ ॥

भंडारी प्रमुख घणो व्रत लीधां, समकित ना वली वृंद ।
तेतालीसमु सादड़ी कीयं, विहार कह्यो मुणदो रे । श्री ॥ ८ ॥

श्री पूज्य सोझती पधारिया, सहे दर सुत धिन ।
छ जण सि संजम लीयं, माह सुदि तेरसि दिन रे ॥ श्री ॥ ९ ॥

मिलीया वृंद मुनिवर तणा, मुनिष ना न लहुं पार ।
सा. परबत उछव करि घणा, संघ सहु जयकारो रे ॥ श्री ॥ १० ॥

जसवंतजी गुणी जाणीय, श्री पूज्य मनि उलास ।
पाटि पटोधार थापीया, वैशाख सुदि छठि तासो रे ॥ श्री ॥ ११ ॥

करमसी भंडारी उछव करया, मिलीयो संघ अपार ।
चउमालीसमुं सीरोही रह्या, गुजर देसि विहारो रे ॥ श्री ॥ १२ ॥

अंबावती पचितालीसमुं, वलि पाटणि वड़वीर ।
उसमापुरि सेतालीसमुं, अंबावती सुधीरो रे ॥ श्री । १३ ॥

॥ ढाल—नीबाय नी ॥

उगुण पंचासमुं सिवपुरि तदा, पाटिण थया पंचासो रे ।
एकवनमुं अंबावती मुदा, वलि अहिमंदपुरि तासो रे ॥ १ ॥

सुरनर मोहन गुणवंत मुनिवरु ॥ आंचली ॥
च्यार चउमासां ते उसमापुरि रह्या त्रिघावासो रे ।
श्रावक सेवा भक्ति घणी करइ, पहुचइ मनी नी आसो रे ॥ सु० ॥ २ ॥

देसि विदेसि विहार करया घणा, प्रतिबोध्या बहु प्राणी रे ।
मर्दया मान मिथ्याती तणा, सुणी सरस सुवाणी रे ॥ सु० ॥ ३ ॥

सघ वधारो अति घणो गछपति, श्री पूज्य वुंद्धि निध्यानो रे ।
सिषनी संपदा अतिही दीपती, आराधि गुरु नी आणो रे ॥ सु० ॥ ४ ॥

ऋषि ठाकुरजी गुर नित सेवीया, विनयादिक बहु कीध रे ।
तिम तेजपाल मुनिवर जाणीए, पुण्य तणा फल लीध रे ॥ सु० ॥ ५ ॥

बासठि श्री पूज्यजी विचारीया, माह सुदि चउदसि रंगि रे ।
प्रथम पहर समि अणसण किया, छेव जणाव्युं सुचंग रे ॥ सु० ॥ ६ ॥

जसवंतजी ए तिहां नी जा आया, मिलीया मुनि व्रंद जाण रे ।
आठ पहरनुं अणसण पालयं, पूनिम थयं निरवाण रे ॥ सु० ॥ ७ ॥

उसमांपुर मां श्रावक बहु गुणी, दयावंत दातार रे ।
दया पालवी संथारि घणी, उछब अधिक उदार रे ॥ सु० ॥ ८ ॥

ऋषि श्री रूपजी जीवजी जयकरु, दाख्यो दयाधर्म सार रे ।
वड लघु वरसिंघ धर्म धुरधरु, सध सहु हितकार रे ॥ सु० ॥ ६ ॥

जिणंता श्री गुरुजी गुणवंता, जसवंतजी जगि जाण रे ।
गच्छपति पदवी पूरण पालयो, दीपयो जेम तेजे भाण रे ॥ सु० ॥ १० ॥

संवत सोल छासठि कह्या कातिक सुदि नमि चंग रे ।
छपन चउमासा श्री गुरु ना भला, सुरताणपुरि मन रंग रे ॥ सु० ॥ ११ ॥

॥ कलश ॥

श्री पूज्य गरिण गुर गुणागर, तास चोमासा सार ए ।
जे नर नारी भावि भणसि, लहि सुख उदार ए ।।
श्री आर्यजी ने संगि सोहे ठाकुरजी गुणधार ए ।
भास सिससु ·········· ·· ··· ··· श्री संघ जय जय कार ए ॥

॥ इति चउमास············· ·· (पत्र २ अभय जैन ग्रथांक प्रति नं० ७६५६
पंक्ति १४-१५ अक्षर ३२ से ४० तक) ॥



श्री जसवंत गुरु गुणमाला

जीवऋषि रचित

श्री सरस्वति समरु सदा, जस समरता ए सुख संपद सार।
कवियण जण वछित लही, विद्यावर ए सुन्दर जस कार॥ १॥
श्री सद्गुरु निति वदीइ, श्री जसवतजी सुभ गुण भण्डार।
जस नामि वछित फलइ, वलि वर्त्तइ इए सरका जय-जयकार॥ श्री. श्री.॥

सघ गुण समरइ सदा, जस दीठइ ए हर्षित भवि होइ।
श्री गुरु आज पधारस्यइ, इम आवीय ए कहइ पथिय कोइ॥ श्री.॥ २॥
श्रावक मनि ऊमाहीया, गुरु वदण ए सुविधि सुविचार।
गहगहि मनि श्राविका, गुरु वादए चालु सजि सिणगार॥ श्री॥ ३॥
आज अपूर्व दिन भलु, प्रहर ज वलिए घटिका त सार।
वेला जे गुरु वदियइ, जणइ कीजए निज सफल अवतार॥ श्री.॥ ४॥
सखीय भणइ सखी साभलो, कुण महोछव ए मंदिर तुम्ह आज।
तुझ मनि हरख दीसइ घणु, जिणि जसीया ए नाना तुम्ह साज॥ श्री॥ ५॥
सहसफूल सखी ताहरइ, सिरि सोभइ ए जाणइ करि सूर।
भाले तिलक घडि हेमना, कानि दीपइ सखी तेजह पूर॥ श्री.॥ ६॥
कठ निगोदर राखड़ी, तुझ सोहइ ए सखी सोवन हार।
वली नवसर मोती तणा, मध्य दीपइ नव चुकीय सार॥ श्री.॥ ७॥
सोहिउ वर कंचुकी, मोतीरती ए सहि अतिहो अनूप।
हुँ जाणु मनि नवलखा, ए वडु दीपि तुझ पुण्य सरूप॥ श्री.॥ ८॥
सोवन चुड़ी सोहमणी, करि ताहरइ ए माहि दीनी रग।
वाजूबंद बांहि भला, आगुल्यइ ए मुद्रड़ीय सुचंग॥ श्री.॥ ९॥
सुघट घटित कडि मेखला, कटि सोहइ तुझ अति सुकमाल।
चरणे नेउर रणझणइ, सोभइ तुझ ए सखी रंग रसाल॥ श्री.॥ १०॥
नारी कुंजर तुझ तनि सखा, पहिरिउए ते अति सोभत।
कढी अनोपम चूंनड़ी, जिहि जड़ीया ए मोती बहु भति॥ श्री.॥ ११॥

तुझ मस्तकि वर राखड़ी, वेणी वलि ए गुंथीय बहु खंति।
मुखि तंबोल रसे आगलु, नयणे तुझ ए काजल सोहंति ॥ श्री. ॥ १२ ॥

इम सिणगार सवि सजी, सखि जोवइ ए गुरु वदण वाट।
ते सहु गुरु गुण मुझ प्रति, सखीय भांषु ए ते कहनइ पाटि ॥ श्री. ॥ १३ ॥

श्री पूज्य वरसिंह गणपती, तस पाटइ ए गिरुआ गुणधार।
श्री जसवंत गणि सोहता, सोहम जिम ए गोयम अवतार ॥ श्री. ॥ १४ ॥

सील जुगति जंबू जिसा, वलि जाणे ए सखि वयरह स्वामि।
मेघकुमर जिम जाणीइ धन्य मुनिवर ए सहु इ जस नामि ॥ श्री. ॥ १५ ॥

भद्रबाहु प्रमुख मुणी, सखि आगमि ए तेहनइ अणुसार।
ए गुरु वांदि वंदीया, मन माहरु ए सखि कहिइ निरधार ॥ श्री. ॥ १६ ॥

सखि सहु गुरु गुण सामले, मुझ कहता ए नवि आवि पार।
पंच महाव्रत जे धरइ, छत्रीस गुण ए जस अंगि उदार ॥ श्री. ॥ १७ ॥

सुमति गुपति शुभ मनि धरइ, शुध संजम ए सखि सतर प्रकार।
छड काय हित कारिया, गुरु भाखइ ए उपदेश विचार ॥ श्री. ॥ १८ ॥

दुष्कर तप विधि जे करइ, धरइ निर्मल ए अहनिशि ध्यान।
श्रुतसागर गुणि आगला, नवि दीसइ ए जस मनि अभिमान ॥ श्री. ॥ १९ ॥

दोष बइतालीस परिहरी, एषण शुद्धिए जे लेइ आहार।
बावीस परिषह जीपवा, सखि जाणे ए पूरव अणगार ॥ श्री ॥ २० ॥

बाल पणइ सजम सिरी वरी, सुन्दर ए श्री गुरु सुखकार।
मोह ममता मेल्ही करी, मनि आणी ए संवेग अपार ॥ श्री. ॥ २१ ॥

सारद ससि जिम सुंदरु, सोभइ गुरु ए वचनामृत सार।
भविजन नइ प्रतिबूझवि, जिन भाषित ए नवतत्त्व विचार ॥ श्री, ॥ २२ ॥

श्री सुरतर नी परि दीपता, दुकृत तम ए सखि वारणहार।
भवि हृदयांबुज भासता, ज्ञानि ए सजन सुख कार ॥ श्री ॥ २३ ॥

सुरतरु जिमि सुख पूरवइ, चिंतामणि ए जिम चिंतित सार।
कामधेनु कामित दीइं, मन्त्रि घट ए तिम श्री गणधार ॥ श्री. ॥२४॥

बुद्धि सुरगुरु सारिखा, मन्दिर गिरि ए जिम संजिम धीर।
गंभीर गुणि सागर जिसा, खिमा गुणि करि एवसुहा वड़ वीर ॥ श्री. ॥२५॥

गुरु हृदि समरुं सदा, जिम समरइ ए कोइल सहकार।
मानसरोवर हंसजुग जयति जिम ए रेवा जल सार ॥ श्री. ॥ २६ ॥

सुरही जिमि वछ न इस्मरइ, जिम समरइ ए सखी चातक मेह ।
सती स्मरइ जिम सील नइ, सुर समरइ ए जिम मानव देह ।। श्री. ।। २७ ।।

देश नगर पुर ग्रामनुं, धन्य श्री संघ ए सुविचार ।
श्री गुरु वंदन जे करि, इम अहिनिशि ए धरी हरष अपार ।। श्री. ।। २८ ।।

श्री गुरु गुण कुसुमे रची, गुणमाला ए जीवऋषि सुखकार ।
भवियण कंठि जे धरइ, लहइ वंछित ए वर संपद सार ।। श्री. ।। २९ ।।

।। इति सखी लखित गुरु गुणमाला भाषा समाप्ता ।।

प्रति नं० ७६५८ श्री अभय जैन ग्रंथालय - बीकानेर पत्र २ पंक्ति १३
प्रति पंक्ति अक्षर ३५ अंतिम पृष्ठे पंक्ति ५



जसवंत ऋषि भास

देवमुनि कृत

॥ ढाल-बिंदलीनी ॥

प्रथम नमूं जिन पाय, गुण गावूं भास पसाय हो गुरु।
मै भरथखण्डे श्री पूज्य ना पटधार, नामे काह न उदार हो गुरु ॥ १ ॥

मरुधर देस मझार नडुलाइ नयर सिरदार हो गुरु।
कवरो लाभ सुख दाई, जगीसां गुरुजीनी माइ हो गुरु ॥ २ ॥

बाल पणे व्रत लीधो, श्री पूज्यजी निज कर दीद्धो हो गुरु।
सिद्धांत भण्या न्याय सार, व्याकरण काव्य विचार हो गुरु ॥ ३ ॥

सूरति नयर पद दीधो, पूरवली पेरें कीधो हो गुरु।
वरसंघ वरसंघ दीधो, वरसंघ जससंत कीधो हो गुरु ॥ ४ ॥

श्री पूज्यजी एम विचारी कीद्धा, निज पट धारी हो गुरु।
अविचल जोडी जग माहिं जेहने वांधां अति सुख थाय हो गुरु ॥ ५ ॥

संघनी वीनती जाणी, श्री पूज्यजी चित माहे आणी हो गुरु।
अंबावती नयरें आया, संघ सकल सुख पाया हो गुरु हो ॥ ६ ॥

सतर छै तालें उल्हास, खंमायति नयर चोमास हो गुरु।
देव मुनि गुरु नामें, भणतां सुख पामें हो गुरु ॥ ७ ॥

॥ इति आचार्यजी नी भास ॥



रूपसी ऋषि भास

सहज पाल कृत

॥ श्री गुरु गुण भास ॥

॥ राग वसंत ॥

सकल जिणेसर सुख कर समरी, प्रणमी श्री गुरु राय ।
गुण गाउं श्री गच्छपति केरा, आणंद उछव थाय ॥ १ ॥
भविक जन वंदो रे वंदो रे, श्री रूपसी मुनि राय ।
जेहनइ दरसणि दूरित पलाय, जस सुर नर सेवइ पाय ॥ भवि ॥ आचली ।
साहा पेथड़ कूलि कलप तरू मम, प्रगट्यो पुन्य पसाय ।
भविक भाव घरी जे सेवइ, ते सुख सपति पाय ॥ २ ॥ भवि ॥
जिन जणणी सम रत्नगर्भा घर, धन कनका दे माय ।
प्रात समइ प्रभु परम प्रमोदि, देव निरजन ध्याय ॥ ३ ॥ भविक०
सकल शास्त्र वखाणइ विधि स्यूं, नय नैगमादिक न्याय ।
आठे प्रवचन मात संभालइ, राखइ जे षट काय ॥ ४ ॥ भविक०
पाट प्रभावक श्री पूज्य जी को, दिन दिन अधिक जसवाय ।
जिहां लगि मेरु अचल मही मंडन, प्रतपो सहित समुदाय ॥ ५ ॥ भविक०
श्री पूज्यजी शिष्य महिमा सागर जिम जगि जंवुकुमार ।
मम श्री मेघ मुनीश्वर सुंदर सहज प्रभु सुखकार ॥ ६ ॥ भविक०

॥ श्री गुरु वीनती भास ॥

॥ राग सारंग मल्हार ॥

सोरठ जनपदि आउ सद्गुरु मेरे, सोरठ जनपदि आउ ।
संघ सवे कुं दरसन देई आनंद अधिक बधाउ । सहगुरु ॥ १ ॥ आचलो
जिउं जलधर कुं चतक चाहइ, चतुर चकोर जिउं चंदा ।
जिउं गज समरइ विंझगिरि कुं, तिउं संघ रूप मुणिंदा ॥ २ ॥ सह० ॥

जिउं जगि पोत मन होत निज मात परि, जिउं प्यासे मनि नीरा ।
तिउं पेथड़ कनका सुन रूप कुं, वंछइ संघ सधीरा ॥ ३ ॥ सहगु० ॥

जिउं बन मोर घन घोर सुनी, अति पामइ परमानदा ।
तिंउ श्री पूज्य पटोधर दरसनि, संघ सदा सुख कंदा ॥ ४ ॥ सह० ॥

श्री पूज्य शिष्य श्री मेघ मुनिश्वर, गुण निधि ज्ञान गंभीरा ।
तस सेवक मुनि सहजपाल करइ, बीनती गुरु प्रती धीरा ॥ ५ ॥ सह० ॥

॥ श्री गुरु गुण भास ॥

॥ ढाल—नवरंग विरागी लालनी ॥

॥ राग हुसेनी ॥

आज अपूरव मइं लह्यो कल्पतरु कलि मांहि ।
आचारिज रूप सिंहको दरसण मन उछाहि ॥ १ ॥

गुरु बिरागी ध्याउ जिम, मन वंछित सुख पाउरे ।
जस गुण गावइ सूर राउरे, तस चरण कमल चित्त लाउरे ॥ २ ॥ गुरु०

श्री गौतम गणधर वली, सोहम जंबू जेह ।
परभव शयंभव मुख्य गणी, तुम्ह दरसणि दीठा तेहरे ॥ ३ ॥ गुरु०

आज कितारथ हूँ भयो, पवित्र हूउ हूँ आज ।
नयण वयण शिर आज सफल मुझ, सरीयां वंछित काजरे । ४ । गुरु०

आज जन्म सुकृत हुवो फल्या मनोरथ आज ।
काम कुंभ मुझ करि चडयो तुम्हि दरसणि श्री मुनि राजरे । ५ । गुरु०

धीर पणइ सूर गिरि जस्या, जलनिधि सम गंभीर ।
सोम गुणे शशि सारिखा, रविसम जस तेज शरीरे ॥ ६ ॥ गुरु०

सुरपति तुम्ह गुण नवि लहइ, तो अवर के ही मात्र ।
ते पूरब पुन्यइं मइ लह्या, प्रभु अभिनव जंगम यात्र रे ॥ ७ ॥ गुरु०

श्री पूज्य शिष्य सुरतरु समा, मेघ मुनि स्वर सार ।
तस वाचक सुति गुरु तणी करइ 'सहज' प्रभु सुख कार रे ॥ ८ ॥ गुरु०

॥ श्री रूपसी जी भास ॥

॥ राग धन्याशी ॥

श्री जिन शासन नायक निर्मल, प्रणमी वीर जिणंदा ।
पूज्य पटोधर ना गुण गाउ, पाउं अधिक आणंदा ॥ १ ॥

सेवो श्री रूपसी मुनि राय, जस दरसणि शिव सुख थाय ॥ सेवो श्री ॥ आचली

साहा पेथड़ कनकादे कूखि, प्रगट भयो जी दिणंदा ।
भविजन हृदय कमल प्रति बोधन, श्री रूपसीह सुणंदा ॥ २ ॥ से०

सकल कला संपूरण सोहइ ग्रह गण मां जिम चंदा ।
तिम श्री साधु शिरोमणि सुंदर, श्री रूपसिंह गणिंदा । ३ ॥ से०

सील सनाह सजा सुभ अंगि, जीत्यो मारनरिंदा ।
जय जय कार सदा जिन शासन, जस जपइ सुरइंदा ॥ ४ ॥

श्री पूज्य शिष्य मन मोहन मूरति, मेघ मुनि सुख कंदा ।
सहज भणइ श्री गुरु गुणगातां, प्रगटइ परमाणंदा ॥ ५ ॥
सेवो श्री रूपसी मुनिराय ॥

॥ इति श्री आचार्यजी ऋषि रूपसिंह जी भास संपूर्णा ॥ छ ॥

(श्री–पानीबाई उपाश्रय के पत्र से)



रूपजी ऋषि बारह मासा

जसवन्त रचित

चरण कमल श्री गुरु तणा, प्रणमी मन वच काय ।
गुण गावा गच्छराज ना, मुझ मनि हरष अपार ॥ १ ॥

श्री जिनशासन सिर धणी, रूपसिंघ ऋषिराज ।
तस गुण भावइ सांभलो, जिम हुइ आतम काज ॥ २ ॥

मरुधर मण्डल सिरतिलो, 'वीझेवो' वर गाम ।
सा. पेथड तस घरि सती, कनकादे तस नांम ॥ ३ ॥

तस सुत श्री रूपसिंघजी, मोटा पुरुष प्रधान ।
जगगुरु जसवत वदीया, जिम मेघइ वर्द्धमान ॥ ४ ॥

जुगप्रधान जसवंतजी, दाख्यो धर्म उपाइ ।
संवेगी रूपसिंघजी, जइ प्रणम्या जननी पाइ ॥ ५ ॥

अनुमति आपो मातजी, लेसुं संजम भार ।
दान दयाव्रत आदरूं, जिम सफल हुइ अवतार ॥ ६ ॥

वलतो उत्तर जे दीयो, ते कहिस्युं कर जोडि ।
अनोपम ए अधिकार छइ, सांभलज्यो धरि कोडि ॥ ७ ॥

◆ ◆ ◆ ◆

८ से ३० गाथा तक बारह मास का वर्णन है

◆ ◆ ◆ ◆

अन्त :—

इम भाखी नव नवी वात, समझाव्या जननी तात ।
महा महोछवी दीक्षा लीधी, श्री जसवंति निज करि दीधो हो साथ ॥ ३१ ॥

श्री रूपसी गुरु नीको, जे वादइ भाग तिहां को ।
प्रभु जसवंस कुलि टीको, हो साधु ॥ ३२ ॥

◆ ◆ ◆ ◆

सा कल्याणमल वेणीदास, सा नाभा सुत गुणवास ।
कीधी वीनति बुधि प्रकाश, जोडाव्या द्वादश मास ।। ३५ ।।

श्री पूज्य शिष्य सुगण सुजाण, गणेसजी मीज कुल भाण।
तस शिष्य जसवत गुण गावइ, नित्य मनि वछित फल पावइ ।। ३६ ।।

।। कलस ।।

संवत सोल बाणुआ संवसरि, कृष्णगढि चौमास ।
भाद्रवा सुदि नोम मंगल, रच्या द्वादश मास ए ।। ३७ ।।



(मोतीचन्द खजानची संग्रह प्रति)



श्री पूज्य कर्मसीह संथारो

मुनि झांझण रचित

तीरथपति त्रीजो नमी, संभव सुख दातार,।
गाउं गुण गच्छराय ना 'कर्मसीह' गणधार ।। १ ।।
श्री पूज्य दामोदर तणइ, पाटि पुरुष प्रधान।
कर्मसीह सीह सारिखो, महिमा मेरु समान ।। २ ।।
अजमेर देस आणंद कर, गढ अजमेर उदार।
साहिजहा सुरित्राण पति, सहु लोका सुखकार ।। ३ ।।
वापी कूप तड़ाग वन, साहि महिल श्रीकार।
नववति निति वाजइ सुसुर, ख्वाजा कइ दरबारि ।। ४ ।।
पत्र पुष्प फल मूल तरु, सुन्दर शीतल छांह।
पंथी पंखी सुखकरू, देख्या हरख उच्छाह ।। ५ ।।
झाझा पाणी झालरइ, आवइ पर्वत सीर।
चसमो देख्यां चित प्रसन, सीतल तिहां समीर ।। ६ ।।
दोइ हजीरा दीपता, गढ मढ पउलि पगार।
घर मन्दिर बाजार हट, घण कण भरीया सार ।। ७ ।।
विवहारीया वसइ तिहा, श्रावक समकित-धार।
दान शील तप भावना, धारइ वलि व्रत बार ।। ८ ।।
रतनो रतन तणी परि, साहां माहि श्रीकार।
धनावत धर्मवंत वर, लोढां गोत्र सिंगार ।। ९ ।।
रतन कुखि सुत धारणी, रतना दे तस नारि।
सुपिनय दोइ गज देखिया, ऊचा अधिक उदार ।। १० ।।
मास सवा नवमा जनइ, अनुक्रमइ बेऊं कुमार।
रतन पुत्र तिणि जनमिया, सुन्दर नइ सुविचार ।। ११ ।।
कर्मसीह भाई भलो, दामोदर दातार।
सुगुरु वचन श्रवणे सुणी, आगम भणइ उदार ।। १२ ।।

वइ वैरागी निपुण नर, सोहइ सील सिंगार।
चारित्र चित्त अगी करी, मांगइ अनुमति सार, ॥ १३ ॥

मात पिता नइ वीनवइ, बांधव वेहूउ कुमार।
अनुमति आपो अम्हा सही, लेस्युं सजम भार ॥ १४ ॥

मात पिता कुटम्ब सयल, संघ सनमुख तिणिवार।
अति आदर अनुमति दीयइ, मात रतन सुखकार ॥ १५ ॥

दीख्या महोछव दीपतो, कीधा रतनइ साह।
वेउ माइ [1]संजम वरिउ, आणंद अंगि उछाह ॥ १६ ॥

करमसीह अजमेर गढि, दीख्या ली जण [2]दोइ।
दामोदर नव जण सहित, संजम धारइ सोइ ॥ १७ ॥

गुजरात थी गुरू आवीया रूपसीह ऋषिराय।
दीक्षा दीधी निजव ह दामोदर सुखिदाय ॥ १८ ॥

॥ ढाल-१ राग-सामेरी सभापती ॥

वेउं भाई दीक्षा वरी, तप संयमइ मन थिर करी।
विधिकरी श्री रूपसीह गुरु सेवाया ॥ १ ॥

गुणवंत श्री रूपसीह गुणी, पर उपगारी महामुणी।
तस तणी साभलइ सीख सुहामणी ए ॥ २ ॥

आगम निगम भणइ घणा, सूत्र अरथ वली तेह तणा।
देसणा सुणइ तिहां सद्गुरु तणी ए ॥ ३ ॥

सुमति गुपति चिनि धरइ, विनय विवेक समाचरइ।
आचरइ साधुक्रिया जिनवर भणी ए ॥ ४ ॥

श्री जसवंत [3]गणी परखीया, श्री रूपसीह गुरु हरखीया।
थिर किया ज्ञानादिक सुन्दर गुणइ ए ॥ ५ ॥

दामोदर ऋषि दीपतो, विषय कषायरिपु जीपतो।
गुणवतो संघ प्रति श्री पूज्य भणइ ए ॥ ६ ॥

दामोदर [4]पदवी दीजीइ, जिम वछित आसा पूजइ।
कीजइ ए सुह कारिज इणि अवसरइ ए ॥ ७ ॥

श्री पतिपुरि संघ सनमुखई, पदवी दीयइ गुरु निज हरखइ।
नव वरपइ गुरु सेवी पदवी वरी ए ॥ ८ ॥

---

१ दीक्षा २ दोय ३ गुण ४ पद दीजइ

संपद आठ सोहइ संगइ, गुण-छत्रीसे धरइ अंगि।
चंगइ ए चारित पालइ मति रंगइ ए ॥ ६ ॥

श्री पूज्य रूपसीह आपणो, जाण्यो अवसर अणसण-तणो।
मुखि भण्यो संथारु सोहामणो ए ॥ १० ॥

प्रहर दिवढ प्रमाणइ ए, सीधोमति सुइ भ्राणइ ए।
नाणइ ए क्रिया करी सुखवर थया ए ॥ ११ ॥

॥ ढाल-२ पथीयड़ा नी ॥

श्री पूज्य रूप तणइ पाटि प्रगटियोजी, श्री दामोदर गणधार ए।
श्री आचारिज इणि उदयो इलाजी, संघ सहु नइ ए सुखकार ए॥ १ ॥

श्री गछपतिजी निति गुरु गाइयइजी, श्री दामोदर परम दयाल ए।
नाम जपतां नवनिधि संपजइ, [1]पातिक दूरि पुलाय ए॥ श्री गच्छ० ॥ २ ॥

साह कल्याण प्रमुख सघवीनतीजी, कीधा गणि किशनगढ़ चोमास ए।
श्रावक सहु मिलि बहु सेवा करइ, [2]निति चिति उल्हास ए॥ श्री ग० ॥ ३ ॥
चोमासो सुख वासो श्री गुरु करिउजी, तिहाथी श्री पूज्यजी [3]कीया विहार ए।
मरुधर गूजर देस वंदाविवाजी, [4]आवी अजमेर नगरि मझार ए॥ श्री० ॥ ४ ॥
मुनिवर करमसीह भाई भलोजी, ज्ञान सहित क्रिया गुण धार ए।
सुमति गुपति निति [5]प्रति चिति राखतोजी, सेवइ श्री दामोदर पटध र ए॥श्री॥५॥
श्री पूज्य दामोदर गुण परिखि नइ जी, ऋषि श्री करमसीह नइ दीधो पाट ए।
सघ अजमेर प्रमुख नो बहु मिल्यो जी, मुनिवर महासती ना थाट ए॥ श्री ॥ ६ ॥
पदवी महोच्छव सहु संघे कीयोजी, जाचिक जन नइ दीधा दान ए।
धर्म नो महिमा तिहा बहुलो थयो जी, आपइ श्री आचारिज सनमान ए॥श्री ॥७॥
संपद सोह आठ सुहामणीजी, गुरु गुण छत्रीसइ अंगि धार ए।
आगम निगम वखाणइ सुपरि सु जी, मधुरी मुखि वाणी सुन्दर सार ए॥श्री ॥८॥
श्री पूज्य दामोदर अणसण करिउजी, स्वयमुख जावजीव त्रिविहार ए।
दोइ प्रहर नो अणसण दीपतोजी, च्यारि घडी नो अति चोविहार ए॥१०॥श्री॥
संवत सोल सताणुवइजी माह सुदी तेरसी नइ गुरुवार ए।
सदगुरु दामोदर सुरवर थयो जी, श्री पूज्य सकल कर्यो अवतार ए॥११॥श्री०॥
जिम जिनवर नो महोछव इन्द्र कर्योजी, [6]धरमि साह तिम कीधो श्रीकार ए।
संघ सयल बहुला द्रव्य खरचियाजी, भरिया तिणि पुण्य तणा भंडार ए॥१२॥श्री॥

---

१ दरसन पातिग, २ धरम करइ निति उल्हास ए, ३ करिउ, ४ आव्या ५ चिति निति प्रतइ ६ धर्मसीह।

॥ ढाल-३ झूंबकरा नी ॥

जुगप्रधान मुनि करमसी, परतखि१ प्रगटिउ भाण।
सुगुण नर सांभलउ, आणी मन आणद ॥ सु० ॥
ग्राम नगर पुर विचरता, सघ आणा करइ प्रमाण ॥ १ ॥ सु० ॥

मरुधर देश वादावता, वलुदो ग्राम प्रधान सु० ।
राय२ जगत सिंघ जाणीयइ, चतुर चांदावत नाम ॥ सु० ॥ २ ॥

श्री पूज्य सेवा अति घणी, कीधी अण प्रमाण सु० ।
श्रावक सेवा सहु करइ, मानइ श्री पूज्य आण ॥ सु० ॥ ३ ।

आव्या सीरोही इणि विधि, साहमो आव्यो सघ सु० ।
भडारी भल भाव स्युं, सघवी उदइकरण गग ॥ सु० ॥ ४ ॥

संघ सयल सेवा करइ, हरखइ दीयइ दान सु० ।
दान शील तप भाव भली३, दीधा गुरु बहु मान । सु० ॥ ५ ॥

गुजर देस पधारता, मिलइ महाजन वृंद सु० ।
भावसार वली चिन भला, आणइ मनि आणंद ॥ सु० ॥ ६ ॥

आवइ आचारिज वादवा, श्री करमसीह मुणिंद सु० ।
डाडंबर करि अति घणी, वादइ माणस वृंद ॥ सु० ॥ ७ ॥

सीधपुर पाटण महिसाणो, अहिमदावाद मझारि । सु० ।
सघ संतोषी सुपरि सुं, तिहांथी करइ विहारि ॥ सु० ॥ ८ ॥

थंभणपुर ४थी आवियो, संघ सनमुख नर नारि । सु० ।
वादि ५श्री करमसीह नइ, सुकृत भरइ भंडारि ॥ सु० ॥ ९ ॥

दान शील तप ६करइ, तिहां सघ विशेषि । सु० ।
संघ पूज प्रभावना, हरखइ सहु जन देखि ॥ सु० ॥ १० ॥

दान सुपात्र अभय दीजइ, कीजइ धरम उच्छाह ॥ सु० ॥
चोमासा नी वीनती करइ खंभाइत साह ॥ सु० ॥ ११ ।

संघ विनती सफल करी, श्री करमसीह उल्हास ॥ सु० ॥
सपरिवार श्री पूज्य जी, सुखइ करइ चोमास ॥ सु० ॥ १२ ॥

सघ सेवा बहु परि करी, सकल करइ अवतार ॥ सु० ॥
वलि सूरति सोरठ तणा, गूजर दीव हलार ॥ सु० ॥ १३ ॥

---

१ प्रतख्य २ राउ ३ वली, ४ सु, ५ वादइ, ६ भावना

लखमसीह [1]वुहरो वली, ठामि ठामि ना साह ॥ सु० ॥
महते घणइ गुरु मानीया, लीयइ धरम नो लाह ॥ सु० ॥ १४ ॥

आवइ श्री गुरु वांदिवा, खरचइ, द्रव अपार ॥ सु० ॥
विधिइ [2]वांदया श्री करम्रसीह, साथइ सहु परिवार ॥ सु० ॥ १५ ॥

खंभाइत संघ तेहनी, भगति करइं बहु भाति ॥ सु० ॥
दानि मानि आदर घणइ. सेव करइ दिन राति ॥ सु० ॥ १६ ॥

इम सोभाग सुगुरु तणो, प्रगटी देसि परदेसि ॥ सु० ॥
पर उपगारी करमसीह, दीपइ जेम दिणेस ॥ सु० ॥ १७ ॥

सार समइ गुरु देखि नइ, मुनि केसव नइ पाट ॥ सु० ॥
दीधो सर्व संघ देखता, [3]थीइ बहु गहगाट ॥ सु० ॥ १८ ॥

आण प्रमाण करु सहु, ए केसव गण.धार ॥ सु० ॥
एम कही गच्छ सूपीयो, हरख्यो संघ अपार ॥ सु० ॥ १९ ॥

ढाल--४ नंदणानी

हिवइ श्री पूज्य करमसीह जी रे हा करइ मनोरथ एम । श्री पूज्य करमसी ।
आणी मन आणद, मुख पुनिम ससी । आ० ।

अण सण करियइ अति भलो रे हां, पूरव मुनिश्वर जेम ॥ श्री पू० ॥ १ ॥
श्री रूपजी (जी) व जी जिम कीयो रे हां वरसीह दोइ जसवंत । ॥ श्री० ॥

वलि रूप दामोदर गच्छपति रे हा, अणसण कीधो अंत ॥ श्री० ॥ २ ॥
इम जाणी अणमण कर्यो रे हां, जाव जीव चोविहार ॥ श्री ॥

[4]चढनइ मनि घडि च्यारि नो रे हां, सिद्धि थयो शनिवार ॥ श्री० ॥ ३ ॥

सूर विमाणइ संचर्यो रे हां, पाडचा कोड़ि कल्याण ॥ श्री० ।
नीजाभ्या[5] केसव गणी रे हां, आगम अवसर जाण ॥ श्री० ॥ ४ ॥

महाऋषि मुनि ठकुर बडा रे हां, सेव करी तिस दीस ॥ श्री० ॥
मिलिया मुनिवर महासती रे हां, पचाधिक च्यारि वीस ॥ श्री० ॥ ५ ॥

श्री करमसीह नइ सेवीया रे हां, आणी हीयइ जगीस ॥ श्री ॥
ऋषि सामल[6] सहसा [7]वहुउ रे हां, श्री पूज्यजी ना शीस ॥ श्री० ॥ ६ ॥
वीथावच्च पंथग परि रे हां, कीधो मनि उच्छाह ॥ श्री० ॥
निरवाण महोच्छव गुरू तणो रे हां, खंभाइत ना साह ॥ श्री० ॥ ७ ॥

---

१ बोहरो, २ वंदइ श्रावक सवे, ३ थापइ, ४ चडत परिणामइ ५. निजा मइ ६ सांवल ७ बेर ।

इद्रइ जिम जिनवर तणा रे हां, महोछव कर्यां मडाण ।। श्री० ।।
खमाइत नइ श्रावके रे हां, कीधा विविध निवाण ।। श्री० ।। ८ ।।
श्री पूज्य पाटो प्रतपो सदा रे सदा रे हा, श्री केसव गणधार श्री० ।
दिन प्रति होयो [1]दीपता रे हा, संघ सहू जयकार ।। श्री० ।। ६ ।।

।। कलश ।।

श्री पूज्य करमसीह ना पटोधर, प्रतपो श्री केसव सदा ।
गुण ग्राम करता नाम जपता, पामीयइ सुख संपदा ।। १ ।।
आचारिज केसव आदेसइ कह्यो गुण श्री पूज्य तणा ।
गुरु नाम जपतां अने सुणतां सुख संपति पामइ घणा ।। २ ।।
संघ शिरोमणि साह नटा सुत, धर्मरत धरमदास ए ।
तस बीनतीय गुरु तणा गुण जोडया मनि उल्हास ए ।। ३ ।।
जे भवि भणस्यइ अनइ सुणस्यइ, संथारो श्री पूज्य तणो ।
ते ऋद्धि वृद्धि समृद्धि लहस्यइ मुनि झांझण कहइ ए भणो ।। ४ ।।

।। इति संथारो श्री पूज्य कर्मसिहजी नो सम्पूर्णः ।।

ऋषि श्री ५ गोपालदेव नाशिष्य ऋषि ५ सिघजी तस शिष्य लालजी लिखितं ।। श्री रस्तु ।। कल्याण मस्तु ।



केशवजी भास

राजसिंह रचित

॥ श्री सुरतनगर सिणगार ॥ ४ ॥ श्री० ॥

वोहरा श्री वीरजी सिंघ सिरोमणि पुन्यवन्त बहु परिवार।
पूज्यजी नो वचन विचारी करि, पद महोछव सुविचार ॥ श्री० । ६ ॥

अनुक्रमि गुरु विहार करता, गुजर मरुधर सार।
मेदपाट मालव नइ सोरठ सिंघ संतोसी सुविचार ॥ श्री० ॥ ७ ॥

सुरति नगरि सघ सिरोमणि बोहरा सुत बहु परिवार ।
सिंघसकल नी वीनती, इ गुरु आव्या हरखा अपार ॥ श्री० ॥ ८ ॥

सिंघ सर्व सेवा करइ गुरुनी, दिन दिन अधिक आणंद।
मन सुधइ सेवा करता सही, पामइ परमाणंद ॥ श्री० ॥ ९ ॥

सेवा करइ सद गुरुनी सुधी, साह पुंनसी गुण निवास।
साह कर्मचन्द नी वीनती इए, भास रची अति उलास ॥ श्री० ॥ १० ॥

श्री पूज्य श्री केसवजी गुणागर, बहु गुण तणा निवास।
तस सेवक राजसीह इम जंपइ, आंणी अगि उल्हास ॥ ११ ॥ ११ ॥

॥ इति भास सपुरणं लिखतं ऋ-वस्त्र पाल बाइ मेघबाष पठनार्थम् ॥



गुजराती लुंका :-

पूज्य श्री धनराजजी री पदवी रो रास

कवि वैण

श्री सरसति वाणी सरस, प्रणमुं हुं तुझ पाय।
गछपति रा गुण गाविसुं, तुम्ह तणै सुपसाय ॥ १ ॥

देदा साह रो डीकरो, श्री जसवंतजी रो सिष।
गछ रो नायक गह गहै, रिव युं धनजी रिष ॥ २ ॥

पच महाव्रत पालिजै, गालै आठ गुमान।
जिण सारण मोटो जती, धन गछपति धन्य धन्य ॥ ३ ॥

॥ छन्द ॥

धनो सदा गछ रो मन धारै, शसि वद साभलियो जगसारै।
दाखां रूपा ऋषि श्री हूणो ऊगो सहस किरण आजूणो ॥ ४ ॥

चिहु खंड जीवा ऋषि थी चावो, अरज करणे सहु को आवो।
वरसिंघ दोय हुवा वैरागी; तरुण पणै जिण त्रिसणा त्यागी ॥ ५ ॥

जसवंत नणा पराक्रम जाणै, वीर वीर कवियण वाखाणै।
रूपो हुवो गच्छ रो राजा, सालम सदा २ दिन साजा ॥ ६ ॥

प्रतपै पाट दामो पाटोधर, नर भाइक लाइक मोटो नर।
सगला थी धनराज सवाई, ठावी जसवत री ठकुराई ॥ ७ ॥

गछ मे धनजे सदाई गाजै, वाजा सुजस तणा नित वाजै।
कवण धना री भीढ कहावै, आदि वडा मड पाये आवै ॥ ८ ॥

धनजी तणा जती सव धोरी, आखां की वाता अजमेरी।
अचार्य रा शिष इधकारी, सुजस जिया रो पृथिवी सारी ॥ ९ ॥

कुमर पणै जिण संजम लीधो, दान अभै षटकाया दीधो।
जसा रिष जंबू सारीखो, पुनवंत रो लाधो पारीखो ॥ १० ॥

मानावत मुनिवर मतसागर, वैरागी उदयो वैरागर।
सगुर पसाय गह गाजै, राज जीहा रा ध्रुव ज्युं राजै ॥ ११ ॥

जैंसिघ कान्ह वड़ा छल जागै, लुलि-लुलि श्रावक पाये लागै ।
मोटा जती वडालै माणै, पावां, रहै तिके सुख पाणै ॥ १२ ॥

रिवजी सदा पराक्रम रूड़ै, जूतो भला सुजस रै जोडै ।
तपसी धरमो गुण रो गिरवर, साधां सिरै सुजस रो सरवर ॥ १३ ॥

चोरड़ियो जिणदास चितामणि, भल चोके जह रास सिवद भणि ।
बाल ब्रह्मचारी बुधसागर, अंग जिणवास पुनिरा आगर ॥ १४ ॥

साम तणै बल स्थिवर सदाई, कदे न दाख कावल काइ ।
आगै हीतायो इधकारी, भूप बड़ा प्रतबोध्या भारी ॥ १५ ॥

वसता तिण रै पाट विराजै भरीयो मेघ तणी पर गाजै ।
जसवंत स्थिवर जिणवर जाणै, आखा गौतम रै अहिनाणै ॥ १६ ॥

चौथ कुमरपाल जग चावा, मुनिवर वड़ा वड़ा लै मावा ।
माबू श्रीपाल भलाभल दानी, वधती वेस चढंती वानी ॥ १७ ॥

माबू उतर घर इधकारी, घर मुरधर दीठो व्रतधारी ।
तामा तणा सदा जस ताजै, वड़हथ ताम श्रीपाल विराजै ॥ १८ ॥

झंझण आठ करम नै झाडै, सकजो समरथ तेण सधाड़ै ।
उत्तम असहा मान उतारै, तारग नाव जगत नै तारै ॥

चोलो नै पांचो सुखदाई, जसवंत समरथ रा गुरभाई ।
तपसी गोपालो जस ताजै, भव भव रा बांध्या भय भाजै ॥

सामधरम रायमल सोहणै, वडहथ संजमरी विधवेवे ।
विसनो कहै बडाला वायक, लाखां जतीया माहे लायक ॥

भारी जती कहां इम भीवो, दणियर धनजी नसरो दीवो ।
गोदो तपसी गोतम ग्यानी, झझण तणा धरम रो ध्यानी ॥

भादो ने सिवराज सवाई, लाहानूर अ ण वरताई ।
डांवर जसो वडालो दाणै अष्ट करम नु आण मनाणै ॥

धरमो जती स्थिवर वसता रो, आखां जिण रो घणो उभारो ।
वाघो सीसोदयो वैरागी, तरुणपणे जिण त्रिसना त्यागी ॥

प्रणपति करै आगन्या पाले, निजर अत गछनायक न्हाले ।
कोटां गढां मढां जस गायो, सुगुरु वचन सगलै सरदहीयो ॥
सोमाचन्द गणधर सारीखो, पात वांल तो पारीखो ।

॥ दूहा ॥

साराहै मोटा सुपह, साराहै संसार ।
राज भखी धनराज रो, तप कायम करतार ॥ १ ॥

॥ छंद पधड़ी ॥

करतार कियो मोटे कर्म, धनराज जती साचे धर्म ।
वड़ श्रावक जती करी वात, पदवीधर थपीयो घनो पात ॥

आवीया संघ एता उदार, जैतारण बूठा रूप धार ।
धनराज तणा श्रावक सधीर, निलवट चढता सदा नीर ॥

सीरोही सहरा मैं सुचंग, गढ़ां कोटा जिण रली रंग ।
भंडारी उवयसिंघ भल, मोटीम वरे मोटिम मल ॥

पोरवाड़ रामो पातिसाह, सांभल्यो श्रवणे वडो साह ।
बोवो ने अमरो ईष, सदगुर री माने भली सीख ॥

राजावत दूदो वडी रीत, पालै गुर चरणां घणी प्रीत ।
सेवाड़ी देदो वडो साह पातां देतो नित प्रवाह ॥

कुल दीपक केसोकरण, वाखाण करै वरणो वरण ।
दाखीजै दीवो धर्मदास, आवै नित अहण करे आस ॥

रुादड़ी साह तेजो मसद, चावा घर जेतली सूरचन्द ।
संकर वा भला विरद साह, पीरो ज्यां दीजै दत प्रवाह ॥

आउवै सहर समरथ अभंग, रूपक जस राखै घणो रंग ।
रोहितास अनै इसर रसाल, पूरवली पाता करे पाल ॥
सकरमण चंडालीयो वडोसीह, लोपे नही कुलवट तणी लीह ।
कल्याण तोलावत वडै त्याग, जगड़वा साह विरद याग ॥
गुगलीयो कचरो गुण गंभीर, घरवट घरे गिरवो गहीर ।
नरनाथो नरो नरेस, दीपावै मुरधर वडो देस ॥
करमचन्द जसो कवरो करन, दीवरावै दुखियां वडो दंन ।
कालू नै महकरन कुल कंधाल, संघ नाइक धरमो सुविसाल ॥
जस गाहक जोधो ने तसीह पीपाड़ सहर अणभंग अवीह ।
कमराज अनै ऊदो अथाह, सिघनाइक सरीखा वडा साह ॥

राव सघार लोढा राजान, पदमसी तेजो पुन्य प्रधान ।
सुरताण अनै संसो सुजाण, मोडीजै प्रसुणां तणा माण।
वीलसीजै माल मोटा वीचार, भलां दानी जुना भलै भार ।।

हरषा नै सांवल राज हस, प्रघला ग्रंथ खरचीजै प्रशस ।
जसराज फलो कलीयांण तन, मेर री बरावर बडा मन ।
सादो देवो बगड़ी दातार, भुज झाल्या जस रा बडा भार ।
नव कोटी ना बरीया नरेस, पातां दीजै दान असेस ।।

सोभाग लीयो मल राजसाय, भल पदवी थापी भल भाय ।
कलीयांण तेणि कुलरो कंधाल, पातलसी पातां प्रति पाल ।।

भारमल कवरो बडभाग, जैतारण जुना छल जांग ।
कविराव वखाणै कोटि गढ़ पगारा घरणो आदि पढ ।।

सकमाल मगावत बड़ै साज, लोपी नही पीथो वडलाज ।
खुदालम मालिम खेतसीह, दिन दिन जीम चढत सदा दीह ।।

गोपी पीपाडो बडै गात, दाखीजै ईला सिरै अवदात ।
कोठारी ताराचन्द तिलक, दलनायक दीपे वडा दक ।।

चथमाल अनै मोहण ………………… घर जितरी तपै चंद ।
गोयंद कोठारी बडै गात, पृथीराज करै नित पूछ वात ।।

भागचन्द करमचन्द रामचन्द, हीरावत कहीजै इला इंद ।
क ………… गोपालदास, अणभंग बड़ा रूप रा उजास ।।

जिणदास पंचायण जैतहथ, संघनायक कोटेचा समथ ।
कुलदीपक मुहतो आसकन, वाखाण ……… सवरनो वरन ।।

कृष्णगढ़ अमरो घणै आघ, भल दानी भोपत बडै भाग ।
आवीया गुरु मोटै उछाह, सुनोयागी पीथा बड़ा साह ।।

कुलदीपक कुमर कहि कपूर, संघनायक राजसी वंस सूर ।
बापणो राय जोधो बवाल, महाराण बड़ी जस री माम ।।
आवीया सगुरु मोटै उछाह, पाता नै रुपीया दै परबाह ।
मेवाड़ धरा चावा मसंद, मेर री बरावर बड़ो मास ।।
जीवराज बाघ जाडै वखत, तुडताण कचारा कुल तखत ।
धनराज वदीजे मोटै धर्म, कुल दीपक मोडै आठ कर्म ।।
संवत सोलै सताणवै (१६९७) वरस, संघ थाट मिलै जैतारणर ।
फागुण सुदि पचम सुमवार, गछ नायक थाप्या गछ सिणगार ।।

वड स्थविरां की बडी बात, गछनायक घनजी वड़े गात ।
पावीयां दरसण हुवै पुन, मुनीराय मुनीसर मेर मन ॥
थूलभद्र थावचा जिसी थोभ, सगला ही गछरी वधी सोभ।

॥ दूहा ॥

सकजै गछ वाधी सिधा, सहु जाणै संसार।
पाटोधर पदवी तणो, भुजां तुहारी भार ॥ १ ॥

॥ छन्द ॥

भुज भार तो नै जगै भाल्यो, थाय शुभ तिर्थंकरं ।
रात दिन श्रावक करै सेवा, घणी वरवट ज्यां घरां ॥

वुह देम वाचाथिवर च्यारुं, अभंग जिणरा उमरा ।
घनराज पदवी भालां पाई, ग्यान गिरवरा ॥ २ ॥

गंगाजल निरपल कवल, राज अखी धनराज ।
मल शास्त्र सुभर भरयो, गाजै गहरी गाज ॥ ३ ॥

ग्यान रो गोतम जिसो ग्यानी, धार पग खांडा घरै ।
कारमी वातां कदे न करै, कह्यो केवल तिम करै ॥

मुनिराव चारित सदा निरमल, नकस जडीयो नगरा ।
घनराज पदवी भलां पाई, ग्यान गिखरा ॥ ४ ॥

गुण सागर गौतम जिसो, गौतम वालो ग्यान ।
मुख दीठां संपत मिलै, दीयै छकायां दान ॥ ५ ॥

दिन प्रति शास्त्र अरथ दीजे, दुनी आगे देसणी ।
तुं भलां दामा पाट दीपै, घणु जस महिमा घणे ।
थिर करै थापी वात थेरां, साहू जाणी संघरा ॥ घन० ॥ ६ ॥

चोरास्यां सोह चाढणो, महा अमोलक मन ।
गछ गुजरात्यां गाइयो, तरवर देद सुतन ॥ ७ ॥

कुल माण देदा तणो कहिये सुजस सहु कोइ सवे ।
परभात लागै जगत पायै, वित वसुधा चिह्नवै ।
दाखीजै शस वद भलै देसे, अग जाणेइंदरा ॥ घन० ॥ ८ ॥

॥ कवित्त ॥

गौतम सरिखै ज्ञान, ध्यान गछपति धुरधर।
काछ वाच लिकलंक नरां सिरहर मोटो नर।।

दामा थी दीपतो सदा रूप थी सवाई ।
वरसिंघ जीवा वडम ठांमी मोटी ठकुराई ॥
जसराज सवाई जागीयो, कवि वेंणो कीरत करै।
परताप सदा धनराज रो, वड़ शाखा ज्यु विस्त रो ॥ १ ॥

॥ इति श्री धनराजजी री पदवी रास मारो सम्पूर्ण ॥



अथ पूज्य श्री चिंतामणिजी री :-

स्तुति निसाणी घग्घर रूपक लिख्यते

सरसत्ती देवी महिर करेवी गच्छपति गुण गावंदा है।
चिंतामणि सोहे दुनीयां मोहे तेजे भाण दीपदा है।
चोमैंदा नदण पाप निकंदण साधां में सोहदा है।
चतुरंगदें माता जस विख्याता सतीयां मे आखंदा है ॥ १ ॥
धनराज पटोधर बड़ा सधर आचारे ओपदा है।
बखताबर बड्डा अवगुण छंडा गुण पखैं गावंदा है।
महिमा अच्छी पावै लच्छी नामे तो लीयदा है।
जिणंदी आग्या तो मन लाग्या वैरागे झूलंदा है ॥ २ ॥
जबू ज्युं जुगता है गुरु भगता गोयम ज्युं गाजंदा है।
कलियुग मे केते दरसण जेते तो पीछे कहंदा है।
माने भूपति बडा जती लूंके गच्छ सोहंदा है।
वायक मिट्ठा सब्बे दिट्ठा सामल दरद मिटंदा है ॥ ३ ॥
सोहावै सवां तेरी जवां कर्म कटोर घटंदा है।
वदन विराजै चंदा छाजै सोल कला दीपदा है।
मेघां ज्युं गाजै पाखंडी लाजै मद छाडै भाजंदा है।
साधां दा मेला होवै भेला तेरे पास मणंदा है ॥ ४ ॥
साधां श्रावकां होय गहका गुणियण जस गावदा है।
मुख तैंडा जोवै निरमल होवै पाप नही छिपंदा है।
चौरासी सिधां है नही निधां मन मेलू मेलंदा है।
कासी केदारां करै विहारां तीरथ कुं फिरदा है ॥ ५ ॥
परवत चढ़ंदा मन दे छंडा मूरख नहि जाणंदा है।
द्वारा मती दुनीयां रती पोकर ज्युं फरसंदा है।
दादस वरषां जोगी सरषां हरद्वारा हालंदा है।
मथुरा मेवासा करि आवासा मठवासी रहदा है ॥ ६ ॥
रामेसर रता बांधै छीका पार न को पावंदा है।
चोसठ करंदा तीर्थ फिरंदा सिवगत को साधंदा है ॥

॥ इति ॥

तेजसिंह भास

रवि मुनि

॥ ढाल माहरी सहि रे सामणी ए देशी ॥

प्रथम नमी जिन पाय सुमति ना तो गुण गाउं गछपतिनारे।
माहरो गुर रे वैरागी, श्री तेजसिंघजी सुगण सुज्ञाता तो, ना मिलइ सुख साता रे १
माहरो गुर रे वैरगी अनइ गुण ना रागी तो सुदर साधु सोभगी रे मा० ।आंकणी।
वदन सोहइ जिम पुन्यम चंदतो, दीठा हो ए अ.नद रे ॥ मा० ॥
नयन कमल सम सोभाकारी तो, संपदा सहु अति सारी रे ॥ मा० ॥ २ ॥
बाल ब्रह्मचारी सदा सुख कारी तो, श्री पतिजी नो पट्ट धारी रे।
सरस सुधारस सारसी वाणी तो, सुणता रीझइ बहु प्राणी रे ॥ ३ ॥
साह लक्ष्मण सुत वसुधा विख्याता तो, करणी अधिक तुम्हारी रे।
तप सवम गुण अधिको सगि तो, सत्य संवेग धरइ रंगि रे ॥ ४ ॥
नय निगमादिक न्याय विचारी तो, आगम अगम अरथ सुधारी रे।
युगति वंत देखी बहु अन्य तो, सहु को कहइ धन्य धन्य रे ॥ ५ ॥
सरस वखाण कला जन पेखी तो, प्रसंसइ जुरजीनि निरखी रे।
पार न पामु हुं गुण प्रभुजीना तो, गुण अनंत गुरजी ना रे ॥ मा०
सुन्दर सूरति नयर सुहावइ तो, रवि मुनी तुम्ह गुण गावइ रे ॥ मा० ॥ ६ ॥

॥ इति भास ॥



तेजसिंघजी रो भास

॥ ढाल चूनड़ी नी ॥

सांति जिणेसर सुख करू', प्रणमुं अहनिस पायो रे ।
श्री गुरु ना गुण गावतां, सुख संपति घर थायो रे ॥ १ ॥

श्री तेजसिंघ गुरु सेवीये 'आचली' इला महि अति सोभतो नयरा मांहि सिरदारो रे ।
साह लखमण तिहा वसै, नगर पचेटीयो सारो रे ॥ २ ॥ श्री० ॥

तसघरि लख आदेंसती, जायो सुभ कुल चंदो रे ।
दिन दिन अति सोभा करू', तेजै करी दिणंदो रे ॥ ३ ॥

अनुक्रमे दीक्षा आडरी, श्री पूज जी ने पासो रे ।
व्याकरणादिक सहु भण्या आगम अरथ अभ्यासो रे ॥ ४ ॥ श्री० ॥

सूरति वोहरा वीर जी, पद दीद्धो गुण पेखो रे ।
संघ सकल सेवे सदा, वधतें भाव विशेषो रे ॥ ५ ॥

व्याहर करंता आवीया, सीरोही सुख दायो रे ।
चरण कमल श्री गुरु तणा, प्रणम्या पाप पुलाया रे ॥ ६ ॥ श्री ॥

संवत सतर वैंतालीसें सीरोही नयर चोमासो रे ।
संघ सकलनी वीनती, देव मुनी कहे भासो रे ॥ श्री० ॥

॥ इति भास सफणं ॥ श्री ॥

॥ ढाल–फागवी ॥

श्री पारस प्रणभुं मुंदा हो, गावां गुण गछ राय ।
श्री पूज्य श्री गुरु तेजसी हो, नाम जप्यां सुख थाय ॥ १ ॥

धन्य २ गुरु तेजसी हो । उत्पति मरुधर जांणी दूहो ।
पांचेटीयो पुर ठांम । उस वंश कुल सुंदरू हो, लखमणसी शुभ नाम ॥ २ ॥ श्री० ॥

तस सुभ श्री तेजसिंघजी हो लखमादे प्रभु माय ।
लघु वेसें संजम जिणि लीद्धो श्री पूज्य केशव पाय ॥ ३ ॥ घ० ॥

खंभाइति चोमासें श्री गुरु पूरे मनि खंति ।
वदन कमल देखी हरख जु, पामे कोकिल मास वसंत ॥ ४ ॥ घ० ॥

गौतम नी परि श्री गुरु वांचे, जिन वर वचन विचार ।
श्रवणे सूणी ने संघ करे हो, दान सीयल तप सार ॥ ५ ॥ घ० ॥

॥ इति ॥



श्री मल्ल मुनि भास

कान्ह मुनि कृत

साधु शिरोमणि श्री मल्ल गणिवर, मधुर वचन मुखि बोलइ।
हेतु युगति करि पागम वाचक, कुण श्री मल्ल गणि तोलइ जी ॥ सा० ॥ १ ॥

घइ उपदेश सुगुरु अति मीठउ, संघ चतुर विव रजइ ।
कठ कला केलवणी जाणइ, शरद मेघ जिम गुंजइ जी ॥ सा० ॥ २ ॥

सुण उपदेश बहु नर नारी, ते हियड़इ संभारइ।
रात दिवस मन हरख धरंता, ते वाणी समारइ जी ॥ सा० ॥ ३ ॥

जेहनइ पाटी रतनसी मुनिवर, पंडित चतुर वइरागी।
नारि सहित जिण सजम लीधउ, छती रिद्धिना त्यागी ॥ सा० ॥ ४ ॥

सोल कला शसिहर सुख दाइक वचन कला निम दीपइ।
रूप कला गुरु पार न जाणू, आठ कर्म नइ जीपइ जी ॥ सा० ॥ ५ ॥

वचन कला सांभलवा बहु नर, पर गच्छवासी आवइ।
सुणतां सुणतां अति आणंदइ, तिहा को नवि रीसावइ ॥ सा० ॥ ६ ॥

साह थावर सुत जगि जयवंता, मात कुंयर उर हंस।
कहइ मुनि कान्ह तुम्हे चिर जीवउ, कुल दीपक अवतंस जी ॥ सा० ॥ ७ ॥

॥ इति रतनसी मुनि भास ॥



❋ श्री मल्ल मुनि भास ❋

साध शिरोमणि गुण संपूरण देख देख मन रीझइ।
श्री मल्लजी कउ नाम सभे दिन लीजइ ॥ १ ॥
प्राग नग साह थावर कुल नन्दन कुयर २ भणीजइ।
अमृत वचन सिद्धान्त सुणावति काज मुगति को कीजइ ॥ श्री० ॥ २ ॥
पाट प्रगटिउ जीवा ऋसि नइ ए मुनि दान अभय कुं दीजइ।
कहइ श्रेठ कमउ दर्शन आणंद सेवक ही सुख दीजइ ॥ श्री० ॥ ३ ॥

—सेवक

॥ इति ऋषि श्री मल्लजी भास ॥

◈ ◈ ◈ ◈

❋ श्री मल्ल भास ❋

नसीयाजी, धन्न पिता धन्न माय।
भाव सहित जे वांदसइजी, तेहना पातक जाइ ॥ करण० ॥ १० ॥
गच्छ गुजराती दीपतउजी, श्री श्रीमल रिपराय।
हाथ दिखत करण भलउजी, दर्शन पातक जाइ ॥ करण० ॥ ११ ॥
तपसी रा गुण गावतांजी, हीयडइ हरप अपार।
ऋषि देवराज सिष वीनवइजी, ते पामइ भव पार ॥ करण ॥ १२ ॥

—ऋषि देवराज कृत

॥ इति श्री भास समाप्त ॥

◈ ◈ ◈ ◈

❋ श्री मल्ल गीत ❋

॥ राग–धन्यासी ॥

साध सरोमण गुण सरपूण, देख २ मन रीजई।
श्री मल्लजी को नाम, सभे दिन लीइज ॥ आंकडी ॥
प्राग वंस साह थावर कुल नन्दन कुंयर २ भणीजइ।
अमृत वचन सिद्धान्त सुणावति, काज मुगति को सीजइ ॥
श्री मल्ल० पाट प्रगटि३, जीवाजी के इए मुनि ।
दान अभय के दीजइ, कहइ सेवक मोह दशा आणद सेवत ही सुख कीजइ ॥ २ ॥
॥ श्री मल्ल० इति श्री गीत समाप्त ॥

—सेवक रचित

रत्ना ऋषि रास

सूजा रचित

सरसति सामणी दे मती भाइ, हंस गमणि मुझ आव जो भाइ।
गुण गिरूआ तणां गाव सुं, गणपति (अक्षर) आंण नो 1ठाए ॥ १ ॥

तउ गुण रतना 2गुर गाव सुं, जेणइ तजी श्रीनाई हो नारि।
पंच विषइ 3सुख परहर्या, लघु वयथी लीधउ छइ संयम भार-
तउ गुण रतनागर गाव सुं ॥ आ० ॥ २ ॥

जंबूअ दीप नइ भरह मझार, देस हालाहुउर जाणी ए,।
नवउ हो नगर छइ तेणि मझारि।
नयर सिरोमणि सोमतउ जाम सतउ तिहां राय सुजाय । तउ गुण. ॥ ३ ॥

श्रीश्री प्रमालीजी वंस सिणगार, सूरउ साह जइवंत (उजी) मल्हार।
घरणीजी सुहवदे सती, पहिरण सील सरोमणिहार ॥ तउ० ॥ ४ ॥

सूरउ साह भोगवइ भोग सिणगार, पालइ छइ श्रावक तणउजी आचार।
रतन कुअर कुलि ऊपना, मात पिता मनि हरष अपार ॥ तउ० ॥ ५ ॥

(हवि) सुभ दिन जनमीया रतनकुमार, गोत्र सुहासणि हरष अपार।
गीत नि-मंगल, गाविया जाचक जन बोलई जय जय (हो) कार ॥ तउ० ॥ ६ ॥

निरमल पखि जिम वाधइ छइ चंद, तेणी परि रतनसी करइ छइ आणंद।
रामति क्रीडा निति नवी, यादव कुलि जिम नेम जिणंद ॥ तउ० ॥ ७ ॥

माता पिता मनिहरष अपार, भलवानि मेल्हइ छइ रतनकुंमार।
कृपा करी कुल गुरु कन्हइं, बावन अक्षर अक नव सार ॥ त० ॥ ८ ॥

....

एक थकी अरथ नइ ग्रन्थ भण्डार भली परि भणिआ छइ रतनकुमार ॥ ९ ॥

सूर साह चीनवइ चित्त विचार, कन्या अछइ एक नगर मझार।
पुत्रीय साह ननपति तणी, जाणीयइ अपछर तणइ अवतार ॥ त. ॥ १० ॥

---

१ ठाइ, २ श्वार, ३ दुख

साह नरपति तुम्हे संभलउ वात, कुमरि तुम्हारी छइ लखण सुजात।
कुंवर रतन परणावज्यो, ए अछइ लखण बत्रीस सुजाण ॥ त ॥ ११ ॥

नरपति कहइ तुम्हे सांभलउ सूर, रतनसी धर्म (धुरंधर) घोरीधर धीर।
कन्या अम्हारी जी आप सुं, जन्म लगइ देज्यो वीर नइं कूंर। त. ॥ १२ ॥

साह सूरा मनि हरष अपार, मंडप मांडस्या नगर मझारि।
वरण अढारइ जी पोखस्या, म्हारइं निहतरि आवस्यइ बहु नरनारि ॥ त. ॥ १३ ॥

रतनसी कहइ तुम्हे सांभलउ तात, मुझ मनि नवि गमइ पतली वात।
संयम श्री परणावज्यो, सहगुरु श्री मल्लजी तगइ हाथि ॥ त. ॥ १४ ॥

सूरउ साह सांभलइ सुत तणा बोल, घरणि ढन्या थया दुख निटोल।
मुरछा-गत मोटी लहो, म्हारउ हीअडलइ नीठर नयणउइ नीर ॥ त. ॥ १५ ॥

तात कहइ सुण रतनकुमार, तुं अछइ माहरा प्राण आधार।
सरवणि झावड़ि किम तजइ, तम्हनइ अम्हनवि देसु जी संयम भार ॥ त. ॥ १६ ॥

रतनसी बोलइ छइ वेकर जोडि, तातजी दुरगति थकी हो विछोड़ि।
अनुमति मन सुधि आपज्यो, हुं तउ चारित्र लेईं टालिस भव खोडि ॥ त ॥ १७ ॥

सूर कहइ माहरउं नांन्हडउ बाल, संयम लेसी रे किम तत काल।
वावीस परिसहा जीपवा, जनम थकी सुत तुं सुकुमाल ॥ त ॥ १८ ॥

जिन शासन तणी सांभलउ रीति, नेमजी राजल स्युं तजी प्रीति।
तोरणथी जी पाछा वल्या, देइं (य) सवछरी दान विचार ॥ त ॥ १९ ॥

तजी पणि लीधइ छइ संयम भार, सूर कहइ तुम्हे थाइज्यो सूर।
आठ करम वसि आणज्यो वीर, चारित्र थिर तुम्हे पालज्यो धर्म धुरंधर थाइज्यो धीर ॥ त. ॥ २० ।

निस भरि पोढी छइ श्री बाई नारि, उठी छइ आरसी वदन संभालि।
सखी मुखइ वयणडे सांभलइ वात, रतनसी साह ल्यइ संयम भार ॥ त. ॥ २१ ॥

हवइ श्री बाई बोलइ छइ बोल विचार, सामी तुम्हे किम लेस्यउजी संयम भार।
अनुमति अम्हे नवि आप सुं, अवर पुरष माहरइ बाधव तात।' त. ॥ २२ ॥

नरपति-धी तुम्हे संमलउ सार, विषइ सुख घालस्यइ नगर मझारि।
अम्हे तउ विषइ कादम नवि खुणस्या साभल्यां छइ अम्हे सूत्र विचार ।न.॥२३॥

सामी जउ तुम्हे जाणउ छवु ससार असार, तउ अम्हे पिण पालिस्युं पच आचार।
चारित्र चूंनडी ओढस्युं सार, माहरइ हीयडलइ नवसर सील सिणगार ।त ।२४।

फुड गुतलि तुम्हे सांभलउ वात, वीतवस्यु' माहरउ नरपति तात।
चतु' चारित्र अम्हे पालस्यां, मुगति मारग तणउ मिलउ छइ संघात ॥त.॥ २५॥

तात कहइ माहरी अकनकुमार, चारित्र पालवउ खंडा नी धार।
(तउ) ए वडी वात काइ आचरउ, तोनइ आणस्यु' भला कुलनउ भरतार ।त.।२६।

तातजी काइ कहउ ए वडी वात, पुरष माहि छइ रतनसी पात्र।
धात माहि जिम सोवन धात, ग्रह गण माहि जिम चन्द्रमा एतउ गुणे करी नइ
कु तीयावण हाट ॥ त. ॥ २७ ॥

अनुमति आपीछइ नरपति तात, जामसतइ तिहा सांभली वात।
रतनसी श्री बाई विहुँ मिलज साथ, सदगुरु पासि सजम लेई छांडस्यां मन रली
सब परिवार ॥ त. ॥ २८ ॥

राव कहइ तुम्हे सांभलउ वात, किसइ हो कारण तजउ मायनइ तात।
बइदिननि बांधव कांइ तजउ, कांइ ताजउ ! भामिनी ग्रथ भंडार ॥ त. ॥२९॥

रतनसी कहइ तुम्हे सामलउ राव, ए अछइ सहुय असासता भाव।
दुरगति दायक ए अछइ, जग मांहि जीव दया छइ जी सार।
सहि गुरु मुखि अम्हे साभलिउ, मुगति कारणि तजो एह संसार ॥ त. ॥ ३० ॥

जाम सता तणी वोलइ छइ नारि, श्री बाई सांभलउ वात विचार।
कन्याकुमारी नइ बहुवरा शील० त नरनी काइ लागइ हो लार ॥ त. ॥ ३१ ॥

वयणडे बोलइ छइ अकनकुमार सयम लेस्यांजी 'रतनसी लार।
भूषण पहिरस्या सीयल सिणगार, समकित मोड शिर वाघस्यां
माहरइ हाथ मेलावडंउ मुगति मझार ॥ त. ॥ ३२ ॥

संघ चतुरविध सांभलीवात, सयम लेइ छइजी रतनसी पात्र।
साथि हो श्री बाइसती, मुगति मारग तणउ पडवजउ पथ ॥ त. ॥ ३३ ॥

नवइहो नगर छइजी श्रावकसार, रतनसी चाल्यउ छइ तजी संसार।
अरमदाबाद उमाहीया म्हारइ सहिगुरु श्री मल्ल सबल नेतार ॥ त. ॥ ३४ ॥
राव कहइ सुणउ रतनकुमार, साथि देस्यु' माहरा घणा असवार।
तोनइ पा छि खी वइअं पहुँतां करु', तिहां तुम्ह लेज्योजी संयम भार ॥ त. ॥ ३५ ॥
सूर पणइ साह आव्या उछि सूर, गरथ तणउ माहरइ छइ घणउ पूर।
महोछव मनरली माडज्यो, श्रावक तेडज्यो चतुर सुजाण ॥ त. ॥ ३६ ॥
मोठडीउ लालउजी अमइराज, गांधी गोवालनइं (साह) समार सिंघ।
महोछव मांडस्यां मनरली आज, नव नवा पात्र नचावस्यां वाचित्र-
मादल ढोल नीसाण ॥ त. ॥ ३७ ॥

वरण छत्रीस तणां नर नारि, मिलीया छइ अम्मदावाद मझारि ।
घन घन मुखि इम उच्चरइ, घन साह रतनागर श्री बाई नारि ॥ त. ॥ ३८ ॥

पांच पुरुष साथइ थया सूर, १रतनसी २भोज(३)नइ ३गेहरउ गंभीर ।
४अमरसी ५ठाकुरसी भला, एतउ कर्म विडारण मोटाजी वीर । त. ॥ ३९ ॥

रतनसी ऋषि साथइ साध्वी च्यार, १श्री बाई २हीराई गुणइ भंडार ।
३कीकाई ४चगाई चतुर छइ, एतउ हरष करी लीधउ संयम भार ॥त ॥ ४०॥

संवत सोल अग्नालइ जाणि, मास वइसाख ते सुगुण वखांणि ।
तेह वदि तेरमि जाणज्यो, रतनसी ऋषि धरि संयम भार ॥ त. ॥ ४१ ॥

रतनसी पालइ छइ पच आचार, उपशम रस तणउ भयउ भडार ।
साध सिरोमणि सोभता, परतसि जाणीयइ पुन्य भडार ॥ त. ॥ ४२ ॥

आठ कर्म वमि आणइ छइ वीर, नवविध पालइ छइ सील गंभीर ।
सतरइ हो भेद संयम तणा, बहु गुण रतनसी गुहिर गंभीर ॥ त. ॥ ४३ ॥

रतनसी ऋषि हवइ करइ छइ वखाण, श्रावक संभलइ तत्व ना जाण ।
दान शीयल तप दाखवइ, तम्हे भावना भावज्यो वीर सुजाण ॥ त. ॥ ४४ ॥

संघ चतुरविघ देइ छइ आसीस, रतनसी जीवज्यो कोडि वरीस ।
चारित्र तुम्हे चिर पालज्यो, अनुक्रमि वसज्योजी मुगति मझारि ॥ त. ॥ ४५ ॥

सासणि श्री मलनजी नइ घणा पात्र, मारू हो मांडण गुण भर्या गात्र ।
नर हो सरोमणि ऋषि नरा, ऋषि श्री हराज सदा (?रूप) गुण जाणि-
कान्हजी कवि कहइ श्रुत सुजांण । त ॥ ४६ ॥

सहसमइ प्रहसमइ अक्षर जांणि ।
हवइ वीर निरवाण नी साभलउ वात, च्यारिसइ सित्तर वरिस विक्रमात ॥
सोलइ सइ त्रेपनउ तिहां थकी, चइत्र वदि चउपि रच्यो वंर(रवि)वार ।
हस्त नक्षत्र सिघ जोग सु, कव्य धरि वरतइ छइ मगल च्यार ॥ त. ॥ ४७ ॥
ताल नगर छइ मेवाड मझार, प्रतपइजी सींघलराव सगार ।
सेवक सूजउ इम वीनवइ, मइ कर्मउ मन रली रास विचार ।
संघ चतुरविघ जय जय होकार ॥ त. । ४८ ॥

॥ इति रास समाप्त ॥

॥ श्री उदिपुर स्थाने संवत १६८६ वर्षे मीगसिर वदि ५ रवी अम्हदावाद लिखितं ऋषि धनजी वा. पढनार्थं शुभं भवतु कल्याण मस्तु ॥

रतनसी ऋषि भास

ज्ञानजी रचित

श्री नेमीसर वंदियइजी, बावीसमौ जिनराय।
आचारज गुण गाइयइजी, ते साव तास पसाय ॥ १ ॥

सुगुण नर वंदउ रतन मुणिंद।
नारि सहित सजम लिउजी, उपम नेम जिणंद ॥ २ ॥

सकल रिध करि दीपताजी, देव मांह जिम इंद।
तिम आचारज जाणियैंजी, ग्रह गण मांह जिम चंद ॥ सु० ॥ ३ ॥

पंच महाव्रत भली परइजी, पालइ पंच आचार।
सुमति गुपति वहु गुण भर्याजी, खिमा तणा भंडार ॥ सु० ॥ ४ ॥

नवा नगर माहे जाणिइजी, साह सूरा जस ताय।
सूहवदे घरणी सतीजो, जन्मा रतन्न ऋषिराय ॥ सु० ॥ ५ ॥

सोहम पाटे दीपताजी, जिम जंवू अणगार।
श्री मलजी पाटि सोभताजी, रतन ऋषि गणधार ॥ सु० ॥ ६ ॥

श्री श्रीमालि वंश मां जी, उदया सूर समान।
वाल ब्रह्मचारी वंदियइजी सर्वे गुण तणा निधान ॥ सु० ॥ ७ ॥

वरस रस ऋतु शशिकलाजी, जेष्ठ मास गुरुवार।
शुक्ल पक्ष ततया दिनइजी भास रची उदार ॥ सु० ॥ ८ ॥

नागोर नगर पधारियाजी रतनसीह गणधार।
तास सीस ज्ञानजी भणइजी, सव संघ जै जैकार ॥ सु० ॥ ९ ॥

॥ इति रतनसी ऋषि भास सम्पूर्ण ॥

॥ संवत् १६७६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १५ दिने समाप्त ॥



ऋषि रतनसी जकड़ी

सागर कृत

॥ राग--गउड़ी ॥

॥ नाकर कुल--रतनसी भास ॥

मन वइराग्यउ रतनसी, जाणु अथिर ससार ।
विकत पधार्यां सासरइ, टालइ विषय विकार ॥
टालीस विषय विकार विकृत श्री बाई सु इम कहइ ।
मोहि देइ अनुमति लिउं दिक्षा दुख मरण जामण कोइ सहइ ॥
जा दिवस चितन भयु सुख कउ आग पांचि जागीया ।
ता दिवस छडूं भोग सगला रतन मुनि वइरागिया । १ ॥

वचन सुणे जब प्रीय के श्री बाई विलखाणी ।
नंदिन लागी आपकुं कइ प्री मनइ न मानी ॥
कइ मन न मानी कंत तोरइ विना अवगुण क्यु तजउ ।
सुकुमाल अबना वेश तरुणा विना वालभ किम रजइ ॥
ए कुवण अवसर देह विछोह महा अजुगत हुव दीइ ।
जब सुने वचन कठोर प्रिय के श्री बाई विलखी भई ॥ २ ॥

रतन कहइ तुम संभलउ नरपति वाल कुआरि ।
काल अनन्ता हुँ रुलउ किनही न पूछी सार ॥
सार न पूछी किन्ह मोरी अब सगाई नही करूं ।
वहु त्रास साते नरग दीठा कठन संकट थी डरूं ॥
पालसु पंच आचार विध सुं शील संजम दृढ़ रहूँ ।
काटसू कर्म्म तन सहुं परीसह संभल प्रीया इम कहूँ ॥ ३ ॥

श्री बाई आगल खड़ी वीनवई मस्तक नामि ।
तजइ नीठुर प्रीतमा रचकर आवउ भाउ ॥
रच भाउ सेती विनाह कीजइ मनह मुनवत आपणी ।
तोरण मंडप रचउ चंवरी हाथ जोड़इ घण घणी ॥

मिल नारि मंगलाचार गावइ पढइ वेद विप्र घरइ धड़ी ।
उच्छाह सु नीसाण वाजइ वीनवइ प्रिय आगल खड़ी ।। ४ ।।

रतन कहइ हठ जिन करउ तजउ मोह नइ प्रेम ।
घर परियण सब छंडसु वीहा न करण को नेम ।।
वीहा करण कउ नेम कीनउ तउ कहउ हमारउ कीजीइ ।
विन नाथ हुँ किउ रहुँ एकेली साथ सामी लीजीइ ।।
नर नारि एकत भए नवसू श्री श्रीमल दीक्षा दइ ।
सोभाग दिखते पाट थापइ आ वीनती सागर कही ।। ५ ।।

।। इति रतनसी ऋषि नी जकड़ी सम्पूर्ण ।।



रतनसी भास

नाकर कृत

॥ राग--नट नारायण ॥

सकल गुण शोभित श्री अणगारा ।
पाटी श्री मल्लजी नइ उदयो दिन कर रतनसीह गणधार ॥ स० ॥ १ ॥
साह सुरा सुतन सदा सुख दाइक जिन शासन शिणगार ।
सूहवदे कूखि अवतरिया राखइ बंपयार (?) ॥ स० ॥ २ ॥
शंख जेम निरमल पय भरियो सूत्र अरथ भंडार ।
अश्व जाति जिम उतम भणियइ तिम गुरु भगत विचार ॥ स० ॥ ३ ॥
वृषभ तणीपर धर्म धुरंधर करि बलवंत उदार ।
परिसह पूस विहारि मनाव्या एमुति उदयो गच्छ आधार ॥ स० ॥ ४ ॥
सूर परिण महियल मुनि विचरइ सीह तणी पर सार ।
मदन राय नउ मान उतारिउ भविक उतारण पार ॥ स० ॥ ५ ॥
सात रतने करि जिम वसु जीपइ वासुदेव बल विस्तार ।
तिम सप्त नय करि वखाणइ आगम अर्थ विचार ॥ स० ॥ ६ ॥
चक्रद्धर नवनिधि करि पूरु महा मंडल जग सार ।
युगप्रधान श्री मलजी पाटि नवतत निरताधार ॥ स० ॥ ७ ॥
देव माहि इदु जिम दीपइ तेजिइं रविय अपार ।
सोल कला ससिहर जिम सोहि वचन विधि सोल प्रकार ॥ स० ॥ ८ ॥
पंच महाव्रत निरता पालि श्री श्रीमालि ज्ञाति शृंगार ।
मेर गिरि च्यार वनि जिम सोभित तिम संघ तणइ परिवार ॥ स० ॥ ९ ॥
सयम लीधउ वर्षे (१६४८) अड़तालि साथि श्री वाई नार ।
राजल नेम तणी पर उच्छव अम्हदावाद हरख उपार ॥ स० ॥ १० ॥
संवत सोल चौपना वर्षे वैशाख वदि सत्तमि शुभ वार ।
गच्छ पति श्री गुरु थापिउ सिहथ वरतिउ जय जय कार ॥ स० ॥ ११ ॥
सवत सोल छप्पना वर्षे आसु सुदि नुमि रविवार ।
ऋषि श्री नाकर चरण भजीनि त्रवावती नयरी मझारि ॥ स० ॥ १२ ॥

॥ इति भास ॥

ऋषि रतनसीजी नी भास

सूजा रचित

॥ राग-आसावरी ॥

श्री नेमीसर जिन नमी, प्रणमी श्री गुरु पाय ।
गुण रतनसी गाइय, मति दउ सरसति माय ॥ १ ॥

भरत खेत्र माहें भलउ, थीन नाभाहर देस ।
नवु नगर जगे जाणिइ, जिहा धरम पुण्य सविशेष ॥ २ ॥

श्रावक दृढ धरमी वसै, आराधइ जिन आण ।
श्री मलजी सहगुरु तणा, ससि निति करइ वखाण ॥ ३ ॥

मोल्हाणी कुल अति भलउ, सूरजैवत सुतन्न ।
सूहवदे घरणी सती जिणइं, जनम्या कुअर रतन्न ॥ ४ ॥

रूपवंत नइ गुण निलउ, पण्डित पुरुष प्रधान ।
साथ जगमालजी संघति समरथ थया सावधान ॥ ५ ॥

देव धर्म गुरु उलखी, वसुधा राखु वान ।
जीव जतन कीजइ जुगत, मोटू अभया दान ॥ ६ ॥

जोवन वे जाणी करी, विवाह मेलइ तात ।
वच्छ कहइ संजम आदरुं, साभल जो मुझ वात ॥ ७ ॥

तनअ नीज नरपति तण, अणी अति उच्छाह ।
श्री वाई साची सती, तिहा किणइ मिल्यउ विवाह ॥ ८ ॥

ऋपि नाक एणइ अवसरइ, आव्या तिह चौमास ।
रतनसीय वाणी सुणी व्रत उचर उल्लास ॥ ९ ॥

तात वात तव संभली, मिल्या कुटुम्ब परिवार ।
वत्स कहइ संजम आदरु, ए ससार असार ॥ १० ॥

॥ ढाल-चलवेला नी ॥

ए संसार असार असो छंड, सोहणा समवड जाणो ।
चक्रवर्त्ती भूपत चारित लीधा, तेहनाऽसेण वखाणो ॥ ११ ॥
राजकुमर बलदेव कहीजइ, मोटा जे महाराज ।
धन संयोग परवार परिहरि, कीवो उत्तम काज ॥ १२ ॥
जोवन वइ एह बात मोटको, कुंयर कहो किम कीजइ ।
परणी सुन्दर नार रतनसी, पछइ चारित लीजइ ॥ १३ ॥
वलतु कुमर कहै तुमे वित पन, जोवो श्री नेमि जिणंद ।
मूकी सती पशु मूकाव्या, एमां परमाणंद ॥ १४ ॥
नात बात सजन समझावी, मन शुद्ध अनुमति मांगी ।
नेमि जिणंद तणी परे निरमल, वली अधिक वैरागी ॥ १५ ॥
नवइ नगर सहु संघ मिली तिहां, उच्छव कर्या अनेक ।
वसुधा विचरा सुमारग वावइ, फूले कामुविवेक ॥ १६ ॥
धन धन मात रतनसी तारी, जिणे दया अमी रस पीधु ।
श्री बाई नैं घरि जइ नइ, संसार वासो कीधू ॥ १७ ॥
एक दिवस धरमनाथ निरखता आव्यउ मन वैराग ।
श्री बाई सती इम जंपइ, घरि रहिवा नही लाग ॥ १८ ॥
पुत्तल बाई नइ अनुमत मांगी, आवइ जिहा धरमनाथ ।
मुझ वना किम चारित लेसो, हुँ गहुँ तुमारो साथ ॥ १९ ॥

॥ राग-मल्हार ॥

स्वामीजी मांहरा वचन सुणो म्हारै अवर पुरुप भाई बाप ।
ऋप श्री मलजी नइ सहथि संजम लेइ परिहरिए सवि पाप ॥ २० ॥
धन धन श्री मलजी गच्छनायक, धन धन ए नर नारि ।
नेमि रजुल तणी परि उत्तम, कुमर पणि ब्रह्मचारि ॥ २१ ॥
कहइ रतनसो सुणउ श्री बाई, ए तो ऋषिजी जाणइ ।
अनुमति चारित ते नर देसइ जे सकल सिद्धन्त वखाणइ ॥ २२ ॥
कहइ श्री बाई तुम्हे घणु म बोलउ, मनइ पहिलउ चारित देम ।
माहरी अनुमति बिना किम स्वामी, तुम कहो किम चारित लेमो ॥ २३ ॥

वर वीतपन बोलइ वैरागी, मोटा महाव्रत सारी।
आद अंत लगइ आराधो, पामीजइ भव पार ॥ २४ ॥

सुन्दर कन्या कहइ सुणि स्वामी जाणु मजिन धर्म।
ऋषि श्री मलजी नइ सोह चढावी, अमे छूटेसु सर्व कर्म ॥ २५ ॥

सत शील संतोष खमा रस, पर प्राणी सु प्रीत।
श्री बाई सजम वरी नइ, रूडी राखी धर्म नी रीत ॥ २६ ॥

मैणादन लोहमय चणाहू, सूर धाड थड चावू।
पंच महाव्रत निर्मल पाली वली भामना वारह भावु ॥ २७ ॥

वेत्रइ रागवंत नड लघुवइ, छह दरसण आणदइ।
त्रण प्रदिक्षण देइ नर नारी तुमनइ मात्र सहित सौ वदइ ॥ २८ ॥

अमीपाल दोसी कहइ बाई, मोरइ धर्म पुत्री तु सार।
सोना रूपा पहिरावु सावटु, परणावु भलो भरतार ॥ २९ ॥

अमा भाई वर एह वरू कि वीजु वम्यु आहार।
सासर वासु करि नइ चम्हनइ दिवरावउ व्रत भार ॥ ३० ॥

रतनसी श्री बाई ततखिण, जाम सतउ तेडावइ।
महाव्रत तम्हारा मोटा तेहनइ, कोई न तोलइ आवइ ॥ ३१ ॥

भव जल सायर घरमइ तराइ प्राणि सुगति तणा सुख पावइ।
जय विजय करि सोन बाई मोतिये रैण बधावइ ॥ ३२ ॥

अनुमति ऋषिजी तणी आणवी उपन (न्यो मनि। आणंद।
भरत खेतर माहि सउ हरखा, हरसा नर नारी ना वृंद ॥ ३३ ॥

वसा करणा माचो गलो अमीपाल उच्छव कर्या अपार।
सोल्हणी सूर बाई अबी वित वावइ संघ पोसइ पहिरामणीसार ॥ ३४ ॥

अरथ गरथ भंडार समोपु थिर मन्त्रीश्वर थापु।
हलवदि पति चन्दसेन वीनवइ, जो जोइय ते आपु ॥ ३५ ॥

दान अभय राणाजी देज्यो, पर भव जत सुख पाकइ।
चतुरंगी सेनासु साथइ, राणो चन्दसेन वउलावइ ॥ ३६ ॥

अधिकारि नर साथइ आवइ, अहमदावाद उलास।
रिख श्री मजजी साध वृंद वंदया, छूटा भवि बंधण पास ॥ ३७ ॥

भली चीत मिहतो भोजउ भणीजइ, गहरउ गुण भंडार।
अमरसी नइ ठाकुर उत्तम, समतारस भंडार ॥ ३८ ॥

बाई श्री बाई हीराइ फीकाइ चंगाइ रतनसी नी साथे ।
महाव्रत मगइ मन नइ रंगइ, रिष श्री मलजी मइ साथे ।। ३९ ।।

।। राग--समेरी ।।

मठड़ीउ लालो अमीराज करि, धर्म पुण्य ना काज ।
वोहरो जीवो सदा अविकारी, जिन-शासन जय जय कारो ।। ४० ।।

दोसी देवजी सा चपसी दातार, सघवी सूरजासा पकू उदार ।
सा सहसवीर धन धन वीयो, मूलो समकित लियो ।। ४१ ।।

नागर लालजी नरंद, महोच्छव करया पानंद ।
रूप भगत तेठ रंगराज, सा, भीमजी करइ पुण्य काज ।। ४२ ।।

सारंग समरपुर छाजइ, वृन्द छोड गुण गाजइ ।
अहमदावादि अन आवारी, सामी जिन भगत सवारी ।। ४३ ।।

सव सफल सघ वित वावी, नर नारी रग रङ्गावी ।
अहोच्छव मीठडीयो, गमर संघ आवेइ जिणे, पाठण जेजिउ मूकाव्यो ।। ६४ ।।

अठार वरण नै करा आसन, अकवब साह दीगे मान ।
लाहण संघ माहि लाहइ, समर सघवी रउ वाहइ ।। ४५ ।।

वित खरच्यउ गांधी गोवल, रणपुरो दया प्रतिपाल ।
गांधी रमा सुत ब्रह्म व्रत धारी, प्रगड़उ नित पर उपगारी। ४६ ।।

अडवडियां दीअ आधार, सरणागत नु साधार ।
गांधी बित सुमारग वावइ, जिन मारग सोह चथावइ ।। ४७ ।।

पारिख जयवंत सुत नयी पाल, जसवत मूकावे जाल ।
दोसी सारंग सीवसी सुजाण, तेहना मनोरथ चढया परमाण ।। ४८ ।।

सा. वल्हास, रूपचन्द सोमदत्त त्रवावनी नउ संघ उदवंत ।
गुजरात तणउ सउ सघ, आव्या श्रावग सुचंग ।। ४९ ।।

अहमदावाद महोच्छव थाइ, मन वंछित दान दिवाइ ।
वर घोडउ करयु मडाण, पारिख जसवत गुण जाण ।। ५० ।।

वाजइ पच शब्द नीमाण, जाचक जन करइ कल्याण ।
हय गय रथ न लहुँ पार, राज वाहण पालखी सार ।। ५१ ।।

खेह अम्बर छाहो भाण, मिल्या नर नारी वृन्द सुजाण ।
संवत (१६४८) सोल अडतालइ वरसइ रतनसी चारित लीधउ हरसइ ।। ५२ ।।

ोग खव दि तेरस सार, महाव्रत कर्या उच्चार।
भोजो गहरो समरसी धन्न, ठाकुर कीधु जीव जतन्न ।। ५३ ।।

रिषजी ए चारित दीवउ, तमे उत्तम कारज कीधउ।
नवे जणे करो निज नेह, श्री श्रीमल धरम सनेह ।। ५४ ।।

।। दूहा राग-मेवाड़ो ।।

गाइयें गुण रिम रतनसी, मूर तणे कुल सूर।
नामइ नवनिध नीपजइ, दुर्गत नाठी दूर ।। ५५ ।।

वीस वरस नइ व्रत लियउ, सजम सुख भंडार।
तरण तारण गुरु तुम मिल्या, श्री मलजी नेतार ।। ५६ ।।

वरम (११) इगार पणइ बाई, वुधुवन्त कीधु उत्तम काज।
आर्या लीलाइ बाई ढढ गुरणी, पाम्या श्री मलजी रिषराज ।। ५७ ।।

।। ढाल ।।

रतनसी तुं मुनिवर खरउ रतन्न, जिणइ कीधुं जीव जतन्न।
नर नारी कहइ धन धन्त, वरवा मुगत नार सुं मन्त रतन. ।। ५८ ।।

तु तो पंडित पर उपगारी, तुं तो कुमर पणइ ब्रह्मचारी।
तुं तो मोटो महाव्रत धारी, त्रस थावर नइ हितकारी ।। ५६ ।।

वाई अवी दीय आसीस, तुये प्रतपो कोड़ वरीस।
तुम निदंते रग्राधिक जगीश, तुमनइ तूठो छइ जगदीश ।। ६० ।।

धन श्री बाई सती शिरोमण, राजमती पर कीधउ।
सेहजानि कुल सोह वढावी, दान अभीनउ दीधउ ।। ६१ ।।

विरासूर अहमदाबाद नावइ, वीसा कथड़उ हुउअसूजिण।
सोनी हीरजी लाल मन्त्रीसर, तेहना मनोरथ चढया प्रमाण ।। ६२ ।।

पंच सुमति त्रण गुपते आदरइ, पोढा महाव्रत पालइ।
पाप अठार परिहरि रतनसी, दोष बेंतालीस टालइ ।। ६३ ।।

वरस अगार पणइ बाई वुधवंती, कीधउ उत्तम काज।
श्री बाई ग्ररथ आपणउ सार्यो, पाम्या श्री मलजी ऋषिराज ।। ६४ ।।

नरपति सधू मात नारंगदे कुल उपना किरपाल।
सूरा सुतन लूहवदे जाउ, रिस रतनसीय दयाल ।। ६५ ।।

रिस गुलु जगमाल पूनउ रिस पदमरंगउ जेठउ मुनीश।
उभय मेघराज आदेइ जती, इकोवन, आरजा उगणीस ॥ ६६ ॥

व्रत पचखाण नइ अगड़ आखड़ी, करइ बहु नर नारि।
राति भोजन कंद मूल परिहरइ, परिहरइ अनेक पर नारि ॥ ६७ ॥

एहवा साधतणा गुणगाती पहुँचइ मननी आसि।
कर जोडी गोधउ इम विनवइ सुख संपति लीलविलास ॥ ६८ ॥

॥ इति रतनसी रिस भास समाप्त ॥



रत्नसिंह

हर्षमुनि कृत

सरसति सामनि वीनवुं रे, प्रणमी श्री जिन पाय।
रानसिंघ गुण गायवारे, ऊलट अंग न माय ॥
उलट अंग न माय र सही ए, रत्नागुरनि वांदवा जइए।
जादव कुल जिम नेम जिणंद, सोल्हणी कुलि रत्न मुणिंद ॥
जी रत्नागरजी रे, ए आकणी।
जबू दीपे जाणीइ रे, दखणि भरत उदारो ॥
देस हलार महि भलो रे, नवुंनगर जगि सारो।
नवुंनगर जगि सार ते लहीइ, जामसतो तणं राजा कहीइ ॥
प्रजा लोकनि सुख अपार, द्रव तणो तिहां न लहुँ पार ॥ २ ॥

वात्य सर्व माहि वड़ी रे, श्री श्रीमाली वंश।
साह सुरो वखाणीइ ए, सोल्हणा कुलि-हंसो ॥
सोल्हणी कुलि हंसति जाणु, रिधि तणो घरि पार न आणुं।
उलट हरषि आवि दान, राज तणु बहु पामइ मान ॥ ३ ॥

सुहवदि तस सुंदरी रे, सहोणि दीठो सीह।
रूपइ रभा जीपती रे, सफल सती माहि लोह ॥
सयल सती माहि लीहति कहीइ, सिवा देवी नी उपमा लहीइ।
दान सीयल तप भावि, श्री जिनराज तणा गुण गाविइ ॥ ४ ॥

तेहनी कुखइं अवतरा रे, गुणवंत राजकुमार।
माता हरष घणो धरे रे, गर्भ वहि उदार ॥
गर्भ वहि उदार तिसोहि, जनमा कुमर सजन मन मोहि।
माता सहोणि दीठो सीह, नाम धरू तस रत्नसीह ॥ ५ ॥

रत्नकुमार जव जनमीआरे, माता हरष अपारों।
गोत्र सोहासणि सवि मली रे, गाविइं मंगल च्यार रे ॥
गावि मंगल च्यार सोहाविइ, सजन सवि अर कोणुं लावि।
साह सुरा मनि हरष अपार, जाचक बोलइ जय जइ कार ॥ ६ ॥

रूप जसु कुंअर तणुं रे, सुन्दर अतिह सुचंग ।
मख पूनम नो चद लो रे, अधर परवाली रंगो ।।
अधर परवाली रंग वखाणी, सायल कंदली थंभ समाणी ।
अति अणीआली आखि निहाली, भमिहड घणुहड जेहवी वाली ।। ७ ।।

पांच वरस जब बोलीआरे, पुत्ता मुंकाने सालो ।
कृपा करी कलगुर कनि रे, बावन अक्षर सार ।।
बावन अक्षर सारते जाणी, चऊदवधा मुखि सरस वखाणइ ।
अमी समाणी वाणी जाणी, आपइ सरसति अविरल वाणी ।। ८ ।।

कुमर वधा भण्यी सवि रे, सकल शास्त्र आध्यारो ।
पडित मन मांहि उलसी रे, वुध्य तणो भंडारो ।।
बुध्य तणो भंडारो ते लहीइ एक मुखी गुण केता कहीइ ।
दयावंत भवी कविता रे, श्री श्रीमाली वंश सणगारे ।। जी० ।। ९ ।।

साह सूरा मनि हरप वसु रे, उलठ अंग न माय ।
सजन सविनि इम कहि रे, करसु कुंअर विवाह ।।
करसुं कुंअर विवाह अति सारो, तस करणी ताई मंदर पधारो ।
सजन सवि मनि हरप अपार, कथा जूइ नगर मझारि ।। १० ।।

पुत्री साह नरपत्य तणी रे, अपछरा तणो अवतार ।
रूपइं रभा जीवती रे, चन्द्रवदन मुख सार ।।
चन्द्रवदन मुख सार ते कहीइ, राजेमती नी उपमा लहीइ ।
सीअल शणगार करइ अंगपूरो, नारिगण माहि को नहीय अधूरो ।। ११ ।।

वात सुणी नरपति पिता रे, उलट आणी अंग ।
निज परिवारि पखरा रे, विवाह करि उछंग ।।
विवाह करइ उछंग रे स्वामी, पुन्य प्रभावि ए वर पामी ।
माहो माहि बहु दीइ मान, आपइ श्री फूल फोफल पान ।। जी० ।। १२ ।।

तेणे समइ नवइनगरी हता रे, ऋषि नाकर सजाण ।
ऋषि वधाधर नो सिखि भलो रे, अम्रत करि वखाणो ।।
अम्रत करि वखाण रे स्वामी, पुन्य संज्योगइ पामी ।
सूत्र तणो रस साभली सार, चारित्र संन्य करि रत्नकुमार ।।१३ ।।
सात सोपारी नालीअर रे, चीर चुंनड़ी साथो ।
रत्नसही लेर करी रे, दीइ श्री बाई हाथो ।।
देई श्री बाई हाथे इम बोलइ, तुम्हारे छंभयणी तोलइ ।
मांगइ हऊआ साध अपार, तिम अम्हे पालसुं पच आचार ।। १४ ।।

श्री बाई ए सांभल्यां रे, अम्रत वचण उदारो।
उत्तम करणी ए कहइ, तो माहारइ रहइ सुं काजो ॥
माहरइ रहइ सुं काज रे स्वामी, पुनि पुज्यनुं दरिसण पामी।
नेम साथइ जिम राजले नारि, त्यय तम साथि लेसु संजम भार ॥ १५॥

जांमसतइ तव साभल्युं रे गुणवंत रत्नकुमार।
नारि तजी संजम लीहू रे, करइ सफल अवतारो ॥
करइ सफल अवतार जांणी, कुमर तेडावो ऊलट आणो।
राया कहि सुणों रत्नकुमार, काइ छांडो तुम्हे घन परिवार ॥ १६ ॥

रत्नकुमार तव बोलोआरे, सांभलि स्वामी राय।
पुन्य संज्योगि सपजइ रे, घन कहुँव उछाह ॥
घन कहुंब उछाह ते कही ए, आय तणो विस्वा न लहीए।
ए ससार असार ते जाणी, संयम लेसु ऊलट आंणि ॥ १७ ॥

तव सतोजाम नरपति कहे रे, घन घन रत्नकुमार।
नारि सहित संजम लीइ रे, करइ सफल अवतारो ॥
करइ सफल अवतार सो हाथे, सभट लीउ तुम्हे माहरा साथे।
पहोता करइ अहइंमदावाद सार, गुर कनि लेजो संजम भार ॥ १८ ॥

तव नवानगर नो संघ सवि रे, ऊलट आणी अगो।
फूले कादे अति भला रे, मन तणइ उछरगो ॥
मन तणइ उछरंग रे, कोडे, वर कन्या वेहु चडीआ जोड़ि।
नगर लोक सवे परिवार, जोवा आवइ वहु नर नारि ॥ १९ ॥

घन घन मुखि सहु ऊचरइ रे, नगर लोक, परिवारो।
रत्नकुमर घन गुण-नलो रे, सतो श्री बाई नारो ॥
सती बाई नारि ते कही ए, तिम राजल नी ओपम लही ए।
तेतो श्रवणे साभल्या सार, प्रतग दीसइ पुन्य भंडार ॥ २० ॥

साह सुरा मनि हरष सुं रे, महोछव करीय सुचंग।
सघ सवि ने वीनवर रे, उलट आणी अगो ॥
उलट आणी अगोरे सहीए, श्री मल गुरनि वांदवा जई रे।
रत्नकुमार साथि श्री वाई नारि, आवीआं अहिमदावाद भामरि ॥ २१ ॥
राजनगर मांहइ आवीआ रे, श्रावक् सहुअ सुजांण।
श्री श्रीमल्ल गुरु वदीआरे, अम्रत सणीअ वखांण ॥
अम्रत सणी वखाण रे स्वामी, पुन्य सयोगइ सेवा पांमी।
श्रावक श्रावका वहु मल्यां वदे, साहे श्री मल्ल ग्रह गण माहि चन्द्र ॥ २२ ॥

श्री मल्लजीइ पेरवीउ रे, रत्न सही गणधारो।
रूपइं सबाहु वखाणीइ रे, बुधे अभेय कुमारो ॥
बुधि आभेअ कुमार ते कहीइ, जंबुकुमार नो उपमा लहीइ।
घणा जीव ·इ तार से सार, होसि गछ तणो आधार ॥ २३ ॥

संवत सोल अढताल १६४८ भलारे, मास वईशाख वखाण।
वदि तेरसि ते अति भली रे, सजम वरइ संजाणो ॥
संजम व·इ सजांण ते कहीइ, शुभ मुहरत शुभ वेला लहीइ।
घणा पंडित मली दखिद ने थापि, संघ सवे बहु दाने आप ॥ २४ ॥

पाच नर प्रवर सुं सोभीइ रे, रत्नसही गण धारो।
सती श्री बाई सुभली रे, नारि च्यार सव चारो ॥
नारि च्यार सवि चारते साथि, संजम लइ गुरू श्री मल्ल हाथि।
रत्नसहीजी भविक नि तारइ, लीइ चरित्र जग माहि सार ॥ २५ ॥

७विद ५बाण' ६रस १चंद्रमा रे, तेणइ संवछर जाणो।
मास वई साख, वदि सप्तमी ऐ, पद दीइ संजाणो ॥
पदवी दीइ सजांणते सोहीइ, सघ चतुर्विध नाम न मोहिइ।
श्री श्रीमल्ल गुरू पुनमचद, गणपति थाप्या रत्न मुणिंद ॥ २६ ॥

आठ संपदा अति भली रे, एक एक पइं सारो।
षटकाया खेमंकरु रे, रतनसिंह अणगारो ॥
रतनसिंह अणगार ते कहीइ, नांम जपता शिवपुरी जईइ।
अमृत वाणी करइ वखांण, रत्न मुनि प्रगटो गछनो भांण ॥ २७ ॥

सोल संवछरे बहुत्तरे रे, मास वइशाख ते जांणे।
सुदि तेरसि गुण गाईआ रे, सुरगुरु वारि वखाणो ॥
सुरगुरु वारि रत्न मणंदा, सघणोउ आणी परमाणंदा।
कहि सेवक मुनि हरष अपार, सघ सविनि जइजइ कार ॥ २८ ॥

॥ इति श्री श्री आचार्य श्री रानसहीजी ना दुहा संपूरण. ॥ छ ॥ छ ॥

॥ पत्र ३ रामचंद भं० वं नं० ६ ॥



रत्नसिंह गीत

॥ ढाल–ऋषभजी हम कुंतारो रे ढाल ॥

श्री जिन शासन दिन करु रे, उदयो रतन ऋषि राय ।
प्रहसम उठी वंदतां रे, अष्ट महासिधि थाय ॥ रतन ॥ १ ॥

रतन गुरु भविजना तारण रे, ए तो सोहग सुंदर धीर ।
ए तो गुणवंत गुणह गंभीर, ब्रह्मचारी मांहि वड वीर ॥ रतन ॥ २ ॥

नेम जिणंद तणी परि रे, सायइ श्री वाई नारि ।
पाच पुरषां चार नार सुं रे, अमदावाद मझार ॥ रतन ॥ ३ ॥

सवत सोल अड़तालीस रे, मास वैसाख शुभ वार ।
वदि तेरसि दिक्षा वरी रे, वरत्यो जय जयकार ॥ रतन ॥ ४ ॥

गुरकुल वासो सेवता रे, भणीआं शास्त्र अनेक ।
शुभ महुरति श्री मल जोइ रे, पाट दीवो सुविवेक ॥ रतन ॥ ५ ॥

उपशंत बहु गुण भर्या रे, जिम गोतम गण धार ।
राका चंद तणी परि रे, सोम वदन आकार ॥ रतन ॥ ६ ॥

पुष्कल सवद ! नी परि रे, वरसि अविरल धार ।
भविजन तरुअर सीचता रे, महि अलि करि विहार ॥ रतन ॥ ७ ॥

माता सुरा सुत गहीट रे, सुहदे जग माय ।
श्रीश्री मालो वस विभुषण, भ..त वेशी कहियाय ॥ रतन ॥ ८ ॥

गुरु गुद मन दवि टाहरी रे, तो गुण पुराय कहिवाय ।
श्र शोही.......... नराट रे, नागुरि हर्ष उच्छाय ॥ रतन ॥ ९ ॥

॥ इति श्री आचार्य रतनसिंहजी नो भास समाप्त आर्यां करमां टलावतं ॥

卐 卐

ऋषि रत्नसी बारह मासा

धनजी कृत

तीतणउजी ॥ १० ॥

फागुण वाजइ वायजी, किलोल करइ छकाइजी ।
कायन जी सोम घणी सहगुरु तणी जी ॥ ११ ॥

चेत्र चतुर सुजाणजी, रिष रत्न बुध निधानजी ।
धीरनजी धान धरइ मन आणेइजी ॥ १२ ॥

वइसाख विचरइ सीहजी, मन सायर जेम गंभीरजी ।
धीरनजी धीर धरइ मन आपणइजी ॥ १३ ॥

जेठ तपंतउ जोयजी, दह दीस दीसइ सोयजी ।
सोयनजी पापमल दूरइ करीजी ॥ १४ ॥

असाढ वहुला हे जी, जिन ऊपर अधक सनेहजी ।
नेहजी हेत मुगत सु मन रंजी इजी ॥ १५ ॥

ऋष रत्नसी गुणपूरजी, प्रगटी इण गच्छ सूरजी ।
सूरनजी नाम नवे खड जाणीइजी ॥ १६ ॥

परतपउ कोड वरीसजी, जिन शासन माहि जगीसजी ।
जगीसनजी कलपवृष हम पाइउजी ॥ १७ ॥

मेड़तानयर मझारजी, सयती नक्षत्र सुचंगजी ।
रंगनजी वारइ मास सुहामणाजी ॥ १८ ॥

श्रेवक तुं मन धानजी, तुम्ह गुणन लाभूं गानजी ।
धनजी कर जोड़ी, गुणहर नमइजो ॥ १९ ॥

॥ ऋष रत्नसी बार मास समाप्त ॥ छ ॥

卐 卐

करणा ऋषि भास

गोधा कृत

महावीर जिन तणा पाय प्रणमी, गौतम नो लेइस नाम।
रिख श्री मल्लजी ना चरण वंदी, कीजइ करणजी गुणग्राम रे ।। १ ।।

ओसवंश सुगुण मुनिवर, सासण साहस धीर।
साधु करणउ करम जीपे, वयरागवंत बड़ वीर ।। ओस. ।। २ ।।

संवत (१६३६) सोलइ उगण चालीसइ, रिख श्री मल्लजी समोसर्यो मेवाड़।
महाव्रत करणजी ऊचर्या, रूडउ नयर धन सेवाड़ ।। ओस. ।। ३ ।।

मुरधर मांहे जाणगइ भाई, धन लूणावंस गाम।
छकाय ना प्रतिपाल मुनिवर, अवतर्या गुण जाण रे ।। ओ. ।। ४ ।।

छठ अठम दस आठ पचखइ, करइते चउ विहार।
पनर वीस पचीस त्रीसे पुजि, लियइ छासि आहार रे ।। ओ. ।। ५ ।।

तप करइ मोटा भाव आणी, इति घणि उल्हासि।
पचोत्तरि नइ पारणइ, पूजि पचखिया पचास रे ।। ओ. ।। ६ ।।

सीत कालि नाढि वाड, उसन सूरिज सूं नेह।
डंस मसा ना सहइ परिसइ, जारि झाझा वरसइ मेह रे ।। ओ. ।। ७ ।।

रजनी प्रथम पहरि करइ सझाय, दूजइ अरिहंत नउ ध्यान।
त्रीजइ परमाद परहरइ, चउथइ आवसग भलउ ध्यान रे ।। ओ. ।। ८ ।।

दिन प्रथम पहरि जीव जतनि, दूजइ गुरु आगन्या प्रतिपाल।
त्रीजइ लीय आतापना, चउथइ आवसग भलइ मान रे ।। ओ. ।। ९ ।।

वरस दिवसि अल्प आहार, दियइ देहनइ आधार।
घना नी परि काज सारइ, करणजी ने तार रे ।। ओ. ।। १० ।।

थिवर मुनिवर साध चावउ, छट्ठ पारणइ लियइ आहार।
करणजी ना वछल कारी, खिमावंत अपार रे ।। ओ. ।। ११ ।।

जोगो चउया ग्रारा नी वानकी, रिख श्री मल्लजी तउ परिवार।
रिख रतनसी रिख करणजी मुनिवर, अवतर्या वसुधा विख्यात रे ॥ ओ. ॥ १२ ॥

धन माता फूलमदे उरधर्या भाई, धन फलुम्रा रिख तात।
छ काय ना प्रतिपाल मुनिवर, अवतर्या गुण जाण रे ॥ ओ. ॥ १३ ॥

करम आठे जीपवा भाई, करणजी रिख सूर।
पार ताप निवारिया, राग द्वेष कीधा दूरि रे ॥ ओ. ॥ १४ ॥

संवत (१६४९) सोल उगण पचासइ मागसर धन वार रे।
पाटणि पूज्य पधारिया ज्यारि गोघइ गाइ भास रे ॥ ओ. ॥ १५ ॥

॥ इति करण ऋषि भास ॥



वरधाजी ऋषि भास

त्रीकम कृत

॥ ढाल–कायापुर पाटण जाणीए ॥

वीर जिणेसर पाए नमी, गाऊं गाऊ मुनि गुण सार रे ।
कान्हजी मुनि शिष्य सोभतउ, वीरदास कुलि सिणगार रे ॥ ऋषिवर ॥ १ ॥

ऋषि वरधा गुण गाईए, सफल कीयो अवतार रे ।
उपदेइ अमृत मइं सदा, सूर पणइ कीधो विहार रे ॥ ऋषिवर ॥ २ ॥

मात कसुंभदे उरि धर्यो, वोल पणउ व्रत धार रे ।
श्री रतनागर निज मुखइं, दीधो जस संजम भार रे ॥ ऋषिवर ॥ ३ ॥

पंडित पूज्य माह तजी, गुणमणि रयण भंडार रे ।
वरस सइंतालीस माजनइ, संयम पाल्यो उदार रे ॥ ऋषिवर ॥ ४ ॥

सतरासइं वरसि सत्रोनरइ, गढ रिणथम्भ चौमास रे ।
फागुण चउमासइजी आपीया, मेड़तइ लील विलास रे ॥ ऋषिवर ॥ ५ ॥

थीक मुनिसर बांदि कई, विहार कीयो चित्र विमासि रे ।
संसारीया नइ वंदाविवां, देवली आया उल्हासि रे ॥ ऋषिवर ॥ ६ ॥

मिखना कृष्णा परमुख आरिज्या, वादीया पूजना पाय रे ।
वीरदास सादूल आदि दे, वंदणा करी इहा आय रे ॥ ऋषिवर ॥ ७ ॥

सरीर सावाध जाणी कीयो, बीज दिनइं उपवास रे ।
त्रीज दिनइं अणसण उचर्यो, सघ साखइ सुविलास रे ॥ ऋषिवर ॥ ८ ॥

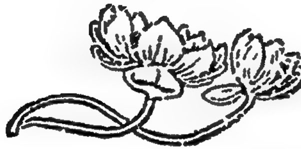
सतरासइ वरसि अठोत्तरइं, प्रथम वैशाख वदि चतुथि रे ।
गुरु वारइ देवंगत थया, वइठां पदमासणि ऊठि रे ॥ ऋषिवर ॥ ९ ॥

आठ पउर नइ आसिरइ, अणशण रहयो सिरदार रे ।
सत घड़ी पट्ठ चउतइ दिनइ, सीधा तस नामइं जयकार रे ॥ ऋषिवर ॥ १० ॥

सेत्रा वहु श्रावके साचवी, देवली नगर मझार रे ।
सघ तणी पूरी रली, कीया महोछव अविकार रे ॥ ऋषिवर ॥ ११ ॥

कान्हजी शिष वर्धमानजी, त्रीकम मुनि तससीस रे ।
सातमि मास रची प्रभु, पूरउ २ सघ जगीस रे ॥ ऋषिवर ॥ १२ ॥

॥ इति पूज्य श्री ५ वर धनजी भासः संपूर्ण आ० आमरदे आ० जगी सा० पठनार्थे । पत्र १ ॥



शिवजी ऋषि रास

धर्म-संघ मुनि रचित

॥ ढाल-२५, र० सं० १६६२, उदयपुर ॥

॥ राग-केदारो । एक ताली । आख्यानिनि देसी ॥

आदि पुरुष आदिसरू, मन वंछित वर सुख करू ।
जिन वर चरण कमल नमो सदा ए ॥ १ ॥

सदा नमो सहि गुरु पद पंकज, प्रणमी पुरुष प्रधान ।
श्री शिवजी गछपति गुण गाउ, सांभलज्यो सावधान ॥ २ ॥

वर्द्धमान श्री जिनवर नइं पाटि, सुधर्म स्वामि गणधार ।
पाटी सतावीस तास ते, परं परे पालो सुद्ध आचार ॥ ३ ॥

श्री महावीर मुगति पोहता पछि, वरस दोय हजार ।
रुप ऋषि आचारय प्रगट्या, करवा पर उपगार ॥ ४ ॥

सार सिद्धांत परुपक उदया, तस पाटि जीवराज ।
तस पाटि कुंयरजी गणिवर, वर नीरमल जस लाज ॥ ५ ॥

जन मन मोहन श्री मल्लजी तस, पाटि रतन ऋषि राय ।
नारि सहित संयम जेणि लीनो, महीयलि यस महिमाय ॥ ६ ॥

महीमावंत तस पाटि अलंकृत केशवजी गुणवंत ।
तस पाटि ऋषि राय महा मुनि, श्री शिवजी जय वंता ॥ ७ ॥

सुरतरु चंदन कनक मोहन मणि, ए पंचि गुण ऋषि राय ।
वर सुवास शोभा वृद्धि वंछित, फल सकल सुखदाय ॥ ८ ॥

सुखदायक शिवजी गणि गाउं रास रसिक करि रंग ।
ढाल विलास प्रथम आख्यानि, कहि वल्लभ मुनि धर्म संघ ॥ ९ ॥

॥ ढाल-२ राग सारिंग ॥

जंबू द्वीप मध्य सुर गिरी, दक्षण भरत सु विचारो रे ।
आरज देश मांहि भलो, सोरठ देस सिणगारो रे ॥ १० ॥

नवउ नगर रलीयामणउ, जन मन मोहन सारो रे ।। वउ० !! ए आक० ।।
सोरठ देस माहि जाणी ए, पुखर तिलक समानो रे ।
नवउ नगर नयानानदकारी, उनपति पुरुष निधानो रे ।। ११ ।।
लखपति जन बहू तिहां वसि, सोहि मंदिर मालो रे ।
जलवट थलवट ना तिहा । आदि व्यापारी चोसालो रे ।। न० ।। १२ ।।
ग्रहगण मांहि जिम चंद्रमा, दीपइं झाक झमालो ।
नगर नगोना नो धणी, जाम सतो भूपालो रे ।। न० ।। १३ ।।
अरि गजण तरणि तुला, सज्जन शसि किरणालो जी ।
छत्र छाया वछि सहु, प्रजाकेरो रखवालो जी ।। न० ।। १४ ।।
नवा नगर नी वर्णना, वदि मुनि धर्म सधं।जी ।
बीजी ढाल सोहामणी, सुंदर राग सारिंगो जी ।। न० ।। १५ ।।

।। ढाल–३ राग केदारो ।। काजळ ताहरु रे कामण गारुं ।।

नगर नगीनो रे संघवी अमरसी, श्री श्रीमाली तस रूड़ि रे जाति ।
जस कीरति विस्तार नगर मि, वोलइं तस सहुको रे विख्यात ।। १६ ।।
नगर नगीनो रे सघवी अमरसी ।। ए आकणी ।।
मान सहित जन दानज आपि, वली करि रे परनि उपगार ।
पूरण लछी कुंटब सूराजि, लाज जेहनी रे वड़विवहार ।। न० ।। १७ ।।
श्री रतनागर नो सो ए श्रावक, पलि रे व्रत वली सुंदरबार ।
समकित रतन आराधि अगि, चालि रे निज कुलतणि आचार ।। न० ।। १८ ।।
कुलवंती गुणवंती दीपंती, तेज बाई तस रूडी रे नारि ।
प्रतिवर्तानि प्रेमि पनोती, सोहंती रे कुटंब मझार ।। न० ।। १९ ।।
ढाल विलासा त्रीजी मन रुचती राग काफी सरसो रे केदार ।
धर्म्म संघ मुनि गुण गाइं, श्री शिवजो गणि जस विस्तार ।। न० ।। २० ।।

।। दोहा ।।

सोरठ देस सोहामणो, नवउ नगर नृप जाम ।
सघवी अमरसी तस प्रिया, तेज बाइ तस नाम ।। २१ ।।

।। ढाल–४ राग रगाड़ी रामगराडि ।।

तेज बाई तस नाम कहीजइ, सहिजि पुन्य भंडार ।
श्री जिनवर नउ धर्म्म आराधइ, सील तणो सिणगार ।। २२ ।।

नीज पीउ सु' प्रेम धरंती, करती कुल सभाल।
एक दिवसि सयनंतर सुपनि, दीठो सघ सुकुमाल ॥ २३ ॥

सुपन लही जागी सा सुन्दरि, हइडइं हरख पपार।
प्रेम धरीनि पीउनि कहिसइं, ढाल थई ए च्यार ॥ २४ ॥

॥ राग काफा वसंतमि ॥

राजहस सरखी गतिए। सरखी गति आवी पीउ के संग ।। २५ ॥

वदिं प्रिया प्रम सू', मधुर वचन मुखि बोलती ए।
मुख बोतली। सांभलि नाह सुरंग ॥ व० ॥ २६ ॥

चित्र प्रमोद निद्रा वसि ए।
निद्रा वासमि सुपन दीठउ सघ ॥ व० ॥ २७ ॥

सुभ सुपन के फल कहो ए। फल कहो मोही पूछनवेकु उमंग ॥ व० ॥ २८ ॥

मनि विचार उचार करि ए। उचार करि ए सांभलितु' मन रंग ॥ व० ॥ २९ ॥

कुल मंडन नंदन हुसि ए। नंदन हुसि ज्यु कनक मुद्र उपरि नंग ॥ व० ॥ ३० ॥

निज वछित फल साभली ए, फल सामली पामी अति उछरंग ॥ व० ॥ ३१ ॥

पंचमी ढाल सुपन तणी ए। सुपन तणी वदि मुनि धर्म्म संघ ॥ व ॥ ३२ ॥

॥ दूहा ॥

मंडलीक राजा तणी·उर सुन्दर साघु की मात।
चउदइं सुपना माहिलो, एक लहें सु'विख्यात ॥ ३३ ॥
एतो मुनी पति महायती, श्री शिवजी ऋषि राय।
मृगपति सुपन इह भलो, ए साची वात मिलाय ॥ ३४ ॥

॥ ढाल-६ राग धन्यासी कुमर भलि जनमीआ ए-ए देसी ॥

कुमर उत्तम डहोलो उपजडं ए, पून्यवंत पुत्र वसाय ॥ ३५ ॥

सजन मनि हरखीया ए ॥ ए ॥ आंकणी० ॥
अनुक्रमि नदन जनमीउ ए, संतोष सहुने थाय ॥ स० ॥ ३६ ॥

दीधी वधाई रंग सू ए, मलीया साजन वृंद ॥ स० ॥ ३७ ॥

जनम मंगल सवि साचविए, गावि गीत आनंद ॥ स० ॥ ३७ ॥

जाचक जन वहु पामीया ए, दान अनि सनमान ॥ स० ॥ ३९ ॥

अविरग ववामणा ए, वहुमणा उपरि पान ॥ स० ॥ ४० ॥

पून्यवंत पूत्रज अवतर्यो, वंस वधारण वान ।। स० ।। ४१ ।।
छठी ढाल सोहामणी ए, सुन्दर तासूं तान ।। स० ।। ४२ ।।

।। ढाल–७ राग काफी ढोडरो श्री देवी रे ए देसी ।।

सजन सहु मली प्रेम सू रे लाल नाम घरु शिवजी कुमार मेरे प्यारे रे ।
हेज घरी हुलरावती रे लाल, जननी जुगति अपार मेरे प्यारे रे ।। ४३ ।।

मोहन मेरी नदनां रे लाल, वदि तेजलदे मात मेरे प्यारे रे ।
मोहन मेरे नंदना रे लाल, ए आंकणी ।।
अमृत सीचो आंबलो रे लाल, बीज तणो जिम चंद मेरे प्यारे रे ।
दिन दिन वधि तिम दीपतो रे लाल, रूपकला गुण वृंद मेरे प्यारे रे ।। ४४ ।।

अनुक्रमि वय चढती कला रे लाल, थया आठ वरस सुविसाल मेरे प्यारे रे ।
मात पिता उलट धरा रे लाल, पाठवी निसाल मेरे प्यारे रे ।। मो० ।। ४५ ।।

ॐ नमो पाठ भणावीयो रे लाल, जेहथी होइ सव सिद्ध मेरे प्यारे रे ।
लिखित गणित सव सीखीया रे लाल, सारद वर जस दीध मेरे प्यारे रे ।। मो. ।।४६।।

भणीकरी घर आवीया रे लाल, साजन हरख्या तेम मेर प्यारे रे ।
राग काफी ढाल सातमी रे लाल, धर्ममुनि भणी एम मेरे प्यारे रे ।।मो ।।४७।।

।। ढाल–८।। राग आसावरी ।।

भणीकरि घरि आविया, कुयर विनय गुणवंत ।
चढती वय चातुरी प्रगटी, कांति सुरंग ।। ४८ ।।

सोल वरस नो सोल कला सूं, जिम तारा मांहि चंद ।
छए वंधव सूराजि शिवजी, दीठडि परमानन्द ।। ४९ ।।

अमीपाल मंगलजी शिवजी लखमसी शुभ दानी ।
जइतसी जगका हुइ दाता, ए बए बन्धव न्याती ।। ५० ।।

श्रावकनी क्रिया सवि साखी तत्त्वादिक रसाल ।
मात तात मनिवंति रगि, परणावी सूं बाल ।। ५१ ।।

एणि अवसर रतनागर राजि, जैनह केरो राय ।
नवा नगरनोरे संघज वछि, श्री गुरु नि वंदनाय ।। ५२ ।।

अष्टम ढाल ए राग आसाउरी आसफली रे अपार ।
सुललित वाणि वदि गुरु ना गुण, धर्म संघ अणगार ।। ५३ ।।

।। ढाल-६ राग मेघ मल्हार ।। छ ।।

।। आव्या आव्या रे आव्यो श्रावण चहु पखि ए देसी ।।

हवि सुन्दर रे नवा नगरना संघपती, सुभ उपम रे लेख लिखी करि वीनती ।
पावधारो रे नवेनगरि तुहनो गछपति ।
दर्शन वंछि रे, जाम, सतोवर महीपती ।। ५४ ।।

महीपती वंछि दर्श तुम चोलेख श्री करिपाठयो ।
राय घन पुरि वली नवानगर नो संघ वदन आवयो ।।
सघ आदर देखि सहि गुरु नविनगर पधारयो ।
गाम जेता पंथ आव्या, लाहण तीहां करण लाहीया ।। ५५ ।।

आव्या आव्या रे, नवेनगर रतनागरु अति उछत्र रे, संघ करि निरंतरू ।
करि सेवा रे संघ चतुर मनोहरु, नतवरति रे नविनगरि जय जय करु ।। ५६ ।।

जय करु जगगुरु श्री रतना गरु, उपम नेम कुमार ए ।
श्री बाई कत सोहामणो, महिमडलि जस विस्तार ए ।।
अवसर आवो तेहना गुण, सभलो सुखकार ए ।
ढाल नोमी धरम संघ मुनि भणि मेघ-मलार ए ।। ५७ ।।

।। ढाल-१० गरवानी देसी ।।

रतन गुरु गुण मीठड़ा रे, मीठडा मुखना बोल ।
साभलतां रंग वासना रे, आपि जेम तंबोल ।। ५८ ।।

रतन गुरु गुण मीठडा रे,
सूर सुहवदे नो नंदजी रे, श्री माली कुलि चन्द ।
ताकर ऋषजीइ वूझव्या रे रतनागुर गुण वृद ।। र० ।। ५९ ।।

सोलमी वरसि रतनसी रे, कीधो व्रत उचार ।
देव कन्या सरसी त्यजी रे, श्री बाई कुमार ।। र० ।। ६० ।।

श्री बाईनि रे बोलाविवा रे, सासरि आव्या स्वामि ।
मासर-वासो लेइ करि रे, साथि मित्र अभिराम ।। र० ।। ६१ ।।

विनय करी साहसु वंदि रे, केम पधारया आज ।
रतन कहि नवरगना रे, तुम्ह तनया सूं काज ।। र० ।। ६२ ।।

तेडो तुम्हारी बालिका रे, श्री बाई सुकमाल ।
मासर-वासो करा अम्हो रे, संयम लेउं सुविसाल ।। र० ।। ६३ ।।

पंच सहियर मांहि खेलती रे, श्री बाई प्रमोद।
मात बोलावी मदरि रे, सुणी बात विनोद ॥ र० ॥ ६४ ॥

रतन कहि सुणि सुन्दरि रे, अहो आदर सु चरित्र।
मानी बहिन मि तुहनि रे, लिसासरवासो पवित्र ॥ र० ॥ ६५ ॥

कहि श्री बाई कंतनइ रे, निठुवर वचन निवार।
भोलम चित्त थी पर हरो रे, चालो मारग व्यवहार ॥ र० ॥ ६६ ॥

विण अवगुण निज कामनी रे, केम त्यजो निरधार।
उत्तम कुल हुँ ऊपनी रे, मुझ साखि पूरइ ससार ॥ र० ॥ ६७ ॥

हुँ दिन दिन सुख मानती रे, मुझ रतन सा भरतार।
हुँ मोटम मनि आंणती रे, तुछ ऊपरि निरधार ॥ र० ॥ ६८ ॥

॥ रत्न कुमारो वाच ॥

सुणि कुलवंती सुन्दरी रे, ए संसार असार।
चोरासी लख मांहि फिरयो रे, जीव अनता वार ॥ र० ॥ ६९ ॥

सगपण पण सर्व आपे लह्या रे, न रही मणा लगार ।
धर्म्म विहुणो आतमा रे, वसीउ निगोद मझार ॥ र० ॥ ७० ॥

दसि दृष्टांति पामिउ रे, मानव नो अवतार।
धर्म सामग्री सवि ल्ही रे, हवि कुण फिरि संसार ॥ र० ॥ ७१ ॥

कीधु सदगुरु सानधि रे, परणेवा पचखाण ।
बहिन सरखी तुहवी रे, सांभलि चतुर सुजाण ॥ र० ॥ ७२ ॥

सासरवासो परिहरी रे, मुझ बंधव कहि बोलावि।
दिं आसीस सोहामणी रे, कुंकम चोखि बंधावि ॥ र० ॥ ७३ ॥

॥ श्री बाई वाच ॥

तुम अम सगपण जोडिअउ रे ते जाणि जगत्र विख्यात ।
एम कि कामिनी छोडस्यो रे, तुम सूं मोही मुझ घात ॥ र० ॥ ७४ ॥

गुणवंता सुणि कामिनी रे, किम रहिसी निरधार ।
जो विराग ए बड़ो हुतो रे, कां न करयो प्रथम विचार ॥ र० ॥ ७५ ॥

हवि मन थिर करि नाथजी रे, पोहचो तुम आवास।
लगन दिवसि चवरी वंचि रे, आव्यो घरि उल्हास ॥ र० ॥ ७६ ॥

तुम अव तात आसा घणी रे, सफल करो गुणवंत ।
एम दीक्षा किम लीजइ रे कुंमारा सुणि कंत ॥ र० ॥ ७७ ॥

यौवन दीक्षा दोहिली रे, दोहिलो साधु आचार ।
लघु वेसि कोंणि आदर्यो रे, दुःखर संयम भार ॥ र० ॥ ७८ ॥

सुणि सुंदरि, सुंदरि तजी रे, जिम श्री जंबुकुमार ।
तिम हूं संजम आदरूं रे, अनुमति दिउ श्रीकार ॥ र० ॥ ७९ ॥

श्री बाई कहि जंवुजी रे, परणी आठी नार ।
तिवार पछी दिख्या ग्रही रे, तिम करो रतन कुमार ॥ र० ॥ ८० ॥

अइम ते परण्या विना रे, आदर्यो सुद्ध चारित्र ।
तिम तूं मुझनि जांणज्यो, कहि श्री बाई पवित्र ॥ र० ॥ ८१ ॥

वे बिसाल न मेलीउ रे, नही तस नारि जंजाल ।
हूं पालव लागी पीउ तुम तणि रे जाणि बाल गोपाल ॥ र० ॥ ८२ ॥

पालव लागी ते परिहरि रे, नेमि राजकुमारि ।
तिम हुं तजउं छउं तुझ नारि, तुझ करि उत्तर सुं विचारि ॥ र० । ८३ ॥

हाथ जोड़ तव वीनवइं रे, तुम्हो जीत्या मोरा स्वामि ।
जेणि रचनाइं हूं रहूं रे, ते दाखो मुझ ठाम ॥ र० ॥ ८४ ॥

मुझ जनक घर सुंदरि रे, रहिज्यो सुख समाधि ।
श्री बाई कही तुह्म विना रे, कुण देखइ तुम घर बार ॥ र० ॥ ८५ ॥

ते तुम पीहर भज्यो रे, हूं आपउं द्रव्य अपार ।
दान पुन्य लिखमी तणो रे, लाहो लेज्यो सुं विचार ॥ र० ॥ ८६ ॥

पीहर मीठा तिहा लगो रे, जिहां आणां नी वाट ।
दोष चडावी लोकड़ा रे, पाडि मन नो फाट ॥ र० ॥ ८७ ॥

कुंमारी कुमारिका रे, सो घर सो भरतार ।
आदर ज्यों मन मानीउ रे, जाणो तुम हितकार ॥ र० ॥ ८८ ॥

आप भव सायर तरो रे, मुझ राखो संसार ।
पीउडे प्रेम न आणीउ रे, स्वारथीउ भरतार ॥ र० ॥ ८९ ॥

सुंदरि कही सुणि वाहलारे, भव भव तुझ सूं नेह ।
हुं तुझ नूं छोडू नही रे, न छिटालूं अवसर सू देह ॥ र० ॥ ९० ॥

मान सरोवर हंसली रे, नगर खालि न नहाइ ।
दाम अखोड़ मेवा तजी रे, नीबोली कुण खाई ॥ र० ॥ ९१ ॥

जो रहिस्यो संसार मां रे, तउ हुँ तुमची नारि।
जो पणि सयम आदरो रे, तो मुझ साधवी आचार ॥ र० ॥ ९२ ॥

नेमिनी रीति तुमे करी रे, तो मि करी राजल रीति।
परमेसर साखी करी रे, भव भव तुम सूं प्रीति ॥ र० ॥ ९३ ॥

अमृत वचन श्री बाई ना रे, सांभलि रतन कुमार।
दपती सयम आदरयो रे, जाणि जगत्र विचार ॥ र० ॥ ९४ ॥

सासरि जइंनि प्रिया प्रीछवी रे, श्री बाई वरनारि।
प्रीउनो साथ न मेलीउ रे जिम राजल राज कुंयारि ॥ र० ॥ ९५ ॥

देवकीनंद सोहायणो रे नामे गय सुकमाल।
कुआरी कन्या तजी रे, संयम लीधो सुविसाल ॥ र० ॥ ९६ ॥

बांभण केरी ते बालिका रे, उतो यादव राय।
योड़ा वाड़ो नही सारखो रे किम मिले ए न्याय ॥ र० ॥ ९७ ॥

नेमि जिणंद नी ऊपमारे श्री रतनागर सार।
राजल श्री बाई सारिखा रे, आदरयो सयम भार ॥ र० ॥ ९८ ॥

श्री मल्ल पाटि सोहि सदा रे, जिन सासन सिणगार।
संयम सरस झीलइं सदा रे, निर्मल सील आचार ॥ र० ॥ ९९ ॥

सो ए रतनगार आवीया रे, नवा नगर मझारी।
संघ सहु सेवा करइं रे, सफल करि अवतार ॥ र० ॥ १०० ॥

तेणी समि पंच भ्रात सु रे, श्री शिवजी कुमार।
चरण कमल ऋषि राय ना रे भेट्या प्रेम अपार ॥ र० ॥ १०१ ॥

रतनागुरु नी देसना रें जुं पुष्कर जलधार।
सांभलतां सुख ऊपजइ रे दसमी ढाल उदार ॥ र० ॥ १०२ ॥

॥ ढाल-११ राग मारुणी जाए लेज्यो रे लकानां खेड़ा ए देसी ॥

दीए देसन रे सभा मांहि, सहु गुरु रचना सुं रस लाई।
श्री रतनागर बाणी मधुरी, सुधा रस सरसाई ॥ ३ ॥ दी. ॥ ३ ॥

अनंतन पुदगल करी भव पूरया, चौदराज लोगाई।
पुन्य योगि मानव भव पायो, अब कछु करि चतुराई ॥ ४ ॥

श्रुत वचन सांभलवा पाम्या पून्य बलें साची अधाइ।
तप संयम प्राक्रम ए, च्यारि शिव रमणी सुखदाई ॥ ५ ॥

ममता मोह मछर मद मघुमि, कांई रहीउ लपटाइ ।
ललित यौवननि आउ तो, चंचल अंजली जल उपमाइ ।। दी. ।। ६ ।।

मात पिता सुन युवति सहोदर, इह भव केरी सगाइ ।
परभव जाता प्राणी सहुनि साचो धर्म सखाई ।। दी. ।। ७ ।।

काहा एतनो सुख पायोति जगमि,जे वीसारें जिनराइ ।
पर भव थी डरत नही काहा तुह्म, अमर की छाम लिखाइ ।। दी. ।। ८ ।।

कवहुक मन मोहन मदरमि, पोढणि सेज तलाइ ।
कवहुक भोमि सुखासन पायो केसी गरव गहिलाइ ।। दी. ।। ९ ।।

कवहुक कुर कपूर न भवि कवहुक मधुकर इ ।
कबहुक चीर पीतावर पहरण, कवहुक खंथा न पाई ।। दी. ।। १० ।।

कवहुक गजपति असपति नरपति, सवहुँ आण मनाइ ।
चेतन चेत सोइ पुनि कवहुक, मानि आण पराई ।। दी. ।। ११ ।।

कवहुक बाल पणा पिछि कवहुक, यौवन का लटकाइ ।
धर्म्म करो जिम कवहुँ न आवि, जरा की कटकाई ।। दी. ।। १२ ।।

समकित सहित धर्म जेंणि कीनो, तेणि संपति सब आरा ही ।
इत्यादिक रतनागर वाणी, सभा सहु सराही ।। दी. ।। १३ ।।

व्रत पचखाण करि बहु भविजन, आनंद अंग उमाइ ।
सहिज सुलखण सुन्दर शिवजी, वैराग वासना पाइ ।। १४ ।।

देसन केरी ढाल एकादश, राग मारूणी मल्हाइ ।
धर्म मुनि कहि भवि कहुंसि, ते सांभलसि चित लाइ ।। दी. ।। १५ ।।

।। ढाल-१२ राग मभ्री सुपन नी देसी ।।

इत्यादिक देसन सुणीनि, चितइ चिनइ शिवजी कुमार ।
रतन सघ पासि मुदा, संयम लिउ सुखकार ।। १६ ।।

तत्व ग्रही गुण आदरि रे छंडिय विषय विकार ।
राजहस सरखा कह्या रे साचा ते श्रोतार ।। १७ ।।

शिवजी चतुर बुधि निधान रे, सहज सुन्दर अति मनोहर ।
राजहस समान शिवजी, चतुर बुधि निधान रे ।। १८ ।।

एक मोटम आणि मनि घणि रे, समझें नही लगार ।
दानपून्य थी वेगला रे, अफल तास अवतार ।। शि. ।। १९ ।।

एक रूढपरणा थी सांभलिनी, मिलन छडि मन ।
डूबी नाग तणी परि रे, तस अवतार अधन्य ॥ शि. ॥ २० ॥

ए गरथ गहिला बापड़ा, नवि जांणि पून्य नी वात ।
एक अणछति छति सारिखा रे, रूड़ी तेहनी घात ॥ शि. ॥ २१ ॥

रीझ बूझ प्रीछी नही नी, टेक नही रति भार ।
काम काज सिकइ नही, उनका हालिउ अवतार ॥ शि ॥ २२ ॥

अंधा आगलि मणि जिसी, बहिरा आगलि गीत ।
मूंरख आगलि कहिण तिम, ए सर्व एकज रीत ॥ शि. ॥ २३ ॥

एक वेधक मन आपी करी, सांभलि चित लीन ।
प्रीति उपजावइ धर्म सूं शशि चातक जल मीन ॥ शि. ॥ २४ ॥

ए साची मति शिवजी धरी तव विनवि निज मात ।
द्वादस ढाल सोहामणी सुन्दर धर्म्म विख्यात ॥ शि. ॥ २५ ॥

॥ ढाल-१३ राग फरोदस्त गोड़ी द्रौपदी वंदु-कपिल मुनीस ए देसी ॥

वीनवी शिवजी कुमार, मात प्रति मुंदा श्री रतनागर वंदीया रे ॥ २६ ॥
उपनी मनि वीराग, अनुमति दिउ माइ, संयम सू कारज अछि ए ॥ २७ ॥
रतन गुरुनी मात, आवि एम कह्यो, मुझ सुतनि दीक्षा दीउ ए ।
द्रौपदी गौरी राग, ढाल ए तेरमी तेज बाई वलतुं कहि ए ॥ २८ ॥

॥ ढाल-१४ राग परज मारुणी यतुर उजी रे ए देसी ॥

सुत वचन श्रवणे सुणी रे, नयणि नीर भराइ ।
गद गद कंठ करी तदारे, बोलि ते जामबाइ ॥ २९ ॥
नंद लाडिला रे अनुमति केम देवाइ ।
वीरस सनेहला रे मानो इछा नाराय ।
जीवन वाहला रे तुमस कोमल काय ॥ ३० ॥
प्राण थकी तुं वालहो रे, मात थी दुरि म थाय ।
तुं जीवन आसा वेलड़ी, तुझ विण किउ मात रहिवाय ॥ ३१ ॥

सुन्दर सहिज सुहामणो रे, वेटा छइ ए प्रधान ।
ते मांही तूं दीपतो रे, जीवन प्राण समानि ॥ न. ॥ ३२ ॥

साधु तणो पंथ दोहिलो रे, कोमल तुम शरीर ।
पंच महाव्रत पालिवां रे, निरदोष पीवा नीर ॥ न. ॥ ३३ ॥

ऋतु रस बार मासह तणो रे, खेलण खेलो खंति।
जननी आसा पूरवो रे, माइ कह गुणवंत ॥ न. ॥ ३४ ॥

राग वचन रचना परि रे, हेत वचन सुविसाल।
परज मारुणी रागमि रे, चौदमी ढाल रसाल ॥ न. ॥ ३५ ॥

॥ ढाल १५ राग गुजरी अरे जीउ दुख तु थि काहा करि ॥

शिवकुमर संवेग धरि, वर विराग धरीनि, वाणी मात प्रति उचरइ ॥ ३६ ॥

उत्तम पुरुष ना सुन्दर वायक, बोल्या सफल करे।
पामर रंग पतंग सारिखा, पवन धजा ज्यु फिरें ॥ शि. ॥ ३७ ॥

सयम श्री सु मेरो मन लीनो, ते किम न उतरे।
निश्चल सुत नो सुरमन जांणी, नयणा नीर भरि ॥ शि. ॥ ३८ ॥

अति आग्रह अनुमति माय दीनी, सजन सहु सुखरि।
गुजरी राग गाता मीठो, ढाल हुइ पनरि ॥ शि ॥ ३९ ॥

॥ ढाल–१६ राग कालहरो तुंगिया गिर शिखर सोहें ए देसी ॥

दीक्षामहो छव करि तिहा, करिण प्रथम महुरत लीधरे।
मास फागुन पक्ष निरमल बीज अमृत सिद्ध रे ॥ ४० ॥

वंदि रे मुनि महा विरागी, श्री शिवजी गुणगतारे वं० ॥ ए आंकणी ॥

उछव महोछव सरस सुभपरि, नवानगर नो संघ रे।
माणवडि श्री नगरि आव्या, जिहां विमल अब उतंगरे ॥ वं. ॥ ४० ॥

तेज बाई शिव नन्दनजीनि, पहिराव्या सिणगार रे।
सुन्दर रथ बिसारी रंगि, पाणि श्री फल सार रे ॥ वं. ॥ ४२ ॥

जिनिज मातनि निज भ्रात सरसो, साथि संघ अपार रे।
जाचक दान वरसात आयो, जीहा रतन संघ अणगार रे ॥ व. ॥ ४३ ॥

लोचन जल भरि मात बोलि पंच भ्रात विसाल रे।
शिवकुमर नि संयम सो प्रभु, अंगज ए सुकमाल रे ॥ वं. ॥ ४४ ॥

ए सोल उगणोतर वरसे, वीज फागुण सार रे।
श्री रतनागुर शिवकुमर ने, दीनो संयम भार रे ॥ वं. ॥ ४५ ॥

सघ वंदि शिव मुनिनी, वंदी धन्य अवतार रे।
ढाल सुन्दर सोलमी ए, संयम नो अधिकार रे ॥ वं. ॥ ४६ ॥

॥ ढाल-१७ राग वालुयड़ा नी देसी ॥

जननी जल भर लोयरगा रे, दि ग्रासीस ग्रपार रे मेरे नन्दजी ॥ ४७ ॥
श्री सहि गुरु नित सेवज्यो रे करज्यो विनय विचार रे ॥ मेरे. ॥ ४८ ॥
पंचम प्रमाद तजी करो रे होज्यो ज्ञान भडार रे ॥ मेरे. ॥ ४६ ॥
कुल किरति विस्तारज्यो रे, तरज्यो भव संसार रे ॥ मेरे. ॥ ५० ॥
सुमति गुपति सु पालज्यो रे, पालज्यो पंच ग्राचार रे ॥ मेरे ॥ ५१ ॥
समरथ सत्य वादी होज्यो रे, सेवि वितजन सुखकार रे ॥ मेरे ॥ ५२ ॥
इति ग्रासीस कही घणी रे, ए सजन रीति उदार रे ॥ मेरे. ॥ ५३ ॥
संघ सहु वदि मुदा रे, रतन शिव ग्रणगार रे ॥ मेरे ॥ ५४ ॥
संघ सहु घरि ग्रावीउ रे, सफल करी ग्रवतार रे ॥ मेरे ॥ ५५ ॥
सतरमि सोहामणी रे, ढाल भणी ओकार रे ॥ मेरे. ॥ ५६ ॥

॥ ढाल-१८ राग गोडी जितसरी मन मोहन मेरे नंदन ए देसी ॥

श्री रतनागर गछपति, तस लाल मुनि परधान रे ।
मन मोहन रे सामिजी नीको, तेज वाइ को नद रे ॥
सखी ग्रमृत बाणी सदा भरि, मुख्य दीपि पुन्यमचंद रे ॥ म. ॥ ५७ ॥

लाल मुनि नइ एहवी, रतनागर कहि ग्रनुमति रे ।
शिवजा भणवा सारिखा, मणावो ए कवित्त रे ॥ म. ॥ ५८ ॥

वचन इति ऋधि राय नुं, सत्य कीधु ग्रंगीकार रे ।
गुरु खांति करि भणावी, सुखि विनय सहित उच्चार रे ॥ म. ॥ ५९ ॥

ग्राचारांग ग्रादि करी, वर सूत्र मण्या बत्रीस रे ।
व्याकरण सटीका कौमुदी, हेम नाम नाय सुजगीस रे ॥ म. ॥ ६० ॥

साहीत्य छद लीलावती, वली काव्य सुहि ग्रलंकार रे ।
इति ग्रागम निगम ग्रति घणा, सीख्या वली विनय विचार रे ॥ म. ॥ ६१ ॥

विनय थी विद्या ग्रावडे रे, विनय ते घर्म नु मूल रे ।
ग्रविनय घटि जेह नइ वसि, ते माणस नही खर तुल रे ॥ म. ॥ ६२ ॥

कामण विनय मोहन सदा रे, मुखि बोलि मीठी भाष रे ।
विनय वसीकरण जाणीइ रे, स बोलि तेहनी साख रे ॥ म. ॥ ६३ ॥

सुभ साधु गुणे सोभइं सदा, खति दंनि गुणि मनोहार रे ।
गुण वर्णन ढाल सोहामणी, जिति गौरी राग अठार रे ॥ म ॥ ६४ ॥

॥ ढाल-१६ राग जन वल्लभ केनारो ॥ जन मन मोहन रे ॥ ए देसी ॥

हाल्हार देश गुजराती जी शिव मुनि सुंदर रे ।
मरुधर देश विख्याती जी, शिव मुनि सुंदर रे ॥
वंदावइ सासग्री सारी जी शिव मुनि सुंदर रे ।
जेसलमेर प्रमुख उदारी जी शिव मुनि सुंदर रे ॥ ६५ ॥

अनुक्रमि लाल मुनीजी, शिव मुनि सुंदर रे ।
शिव मुनि साथे जगीस जी, शिव मुनि सुंदर रे ॥ ६६ ॥

रतनागुरु अनुमति धरी जी, शिव मुनि सुंदर रे ।
आव्या नवानगर फरी जी, शिव मुनि सुंदर रे ॥ ६७ ॥

तेज बाइ मात वंदावीजी, शिव मुनि सुंदर रे ।
सामग्री सख हरखी बीजी, शिव मुनि सुंदर रे ॥ ६८ ॥

वचन गंगाजल सोहि जी, शिव मुनि सुंदर रे ।
धर्म संघ मुनि मन मोहि जी, शिव मुनि सुंदर रे ॥ ६९ ॥

मन वलभ राग रसाली जी, शिव मुनि सुंदर रे ।
उगणीस ढाल सुकुमाली जी शिव मुनि सुंदर रे ॥ ७० ॥

॥ ढाल-२० राग वेराड़ी ॥

हवि सवत सोल छासीया वरषे, अहम्मदाबाद मझारी ।
सघ सविनि आनद कारी, रतन गणि गुण धारी ॥ ७१ ॥

सुख समाधि विचरि सहि, गुरु पूरण पर उपगारी ।
एक दिवस सुदि तेरस में दिन, प्रथम पोहर मझारी ॥ ७२ ॥

सभा मांहि बिठाता सहि गुरु, निज श्रुत सुमति विचारि ।
मथारा नो समय लहिनी, अनसन कीध उचारी ॥ ७३ ॥

वीर निर्वाण तणि परिचो विह, संघ मलि अपारी ।
आउ प्रति कोणि कांइ न चालि, षटका गुण सभारी ॥ ७४ ॥

ने मिश्वर उपमा साहिब जी, कुण होसइ गच्छ वारी ।
जलधर नी परि सींचि सांचि, तुम्ह संघ वेलि वधारी ॥ ७५ ॥

तुह्मचि पाटि रहो कुण स्वामी, गच्छपति कहि अवघारी ।
केशवजी शिवजी दोय मुनिवर, होसइ गच्छ आधारी ।। ७६ ।।

इम रत्ननागर वात करंता, पोहोता स्वर्ग मझारि ।
जयनदा जय भदा करता, पय सेवइं देव कुमारी ।। ७७ ।।

तेणि दिन पाट पटोधर, थाप्या केशवजी ब्रह्मचारी ।
संघ चतुर्विधनी पणि सोई, गुरु हूया आनंदकारी ।। ७८ ।।

वरस एक अधिक परिमाणि, केशवजी पटि धारी ।
सोए गच्छपति अणसण आराधी, स्वर्ग पुरी अलंकारी ।। ७९ ।।

लाल मुनि पणि स्वर्ग पधारथ्या, सकल अरथ पणिसारी ।
गुण गंभीर प्रभु गोतम सरखा, जिन सासन सणगारी ।। ८० ।।

हवि सघ सहु मनि चिंतइ एणि, परि दुख सवि विसारी ।
मुख्य गच्छ तणो आभरण, अछि श्री शिवजी मनोहारी ।। ८१ ।।

नविनगर श्री शिवजी मुनी नी, लेख लिखि सुविचारी ।
ढाल वीस ए राग वेराडी, सांभलज्यो नर नारी ।। ८२ ।।

॥ ढाल–२१ राग आसाउरी-छए देसी ॥

अमदाबाद थकी सहु रे, संघ लिखी सुभ लेख ।
उपम अति सरसि लिख करी, वीनतड़ी सु विशेष ।। ८३ ।।

सहि गुरु सुभ मति ए, हारे श्री शिवजी गणि धार सहि० ।
सघ वीनतडी अवधारि सहि०, तुम्ह हो गच्छ तण सिणगार ।। सहि० ।। ८४ ।।

गच्छ.धुरधर छो तुम्हो रे, धरो रे गच्छ नो भार ।
अमदाबाद पधारीइं, गिरुया गणि गुण भंडार ।। स ।। ८५ ।।

अवधारी संघ वीनती रे, श्री शिवजी ऋषिराय ।
राजनगरु गुरु आवित सब, आनंद्र रग उछाय ।। ८६ ।।

गुजराति संघ सहुमिलि रे, अमदाबाद मझारि ।
पंचासिनि माजिनि, साध साधवी सुविचार ।। स. ।। ८७ ।।

तेसहुनि मनि मानीया रे, श्री शिवजी गणधार ।
दर्शन देखि जेहनो सखी, हरखि नर नारि ।। शि. ।। ८८ ।।

उछव मोहछव अति घणा रे, तेहनो बहु विस्तार ।
दान्य पून्य बहु तिहा करि रे, श्री संघ हरख अपार ।। ८९ ।।

जेठ सुदि अठासीए रे, पंचम दिन सोमवार ।
संघ चतुर्विध प्रेमसूं रे, प्रभु सुप्यो गच्छने भार ।। ९० ॥

संघ सहु आसा फली रे, पोहोचि मनह जगीश ।
उतम राग आसाउरी रे, एह ढाल हवी एकवीस ॥ ९१ ।

॥ ढाल-२२ राग सिंधु आसाधरा चुगा रे हु माछरा ए गीत नी देसो ॥

पय वंदो रे श्री पूजना, श्री शिवजी मुख कारो रे ।
पाट पटो घर जाणी रे लोका गच्छ सणगारो रे ॥ ९२ ॥

सूरय उगि सोभतो, दीपि भाक भमालो रे ।
पेला गुहुडनि गमि नही, तिम दुर्जन त्रित झालो रे ॥ प । ९३ ॥

अरीसो अति ऊजलो, मनुष्यनि मोह उपजावइं रे ।
चावुक दीठि दुखलहि, तोऽयु दर्पण भुटो काहावइ रे ॥ प. । ९४ ॥

परमति दुर्जन दुस्मनी, को एक चित न चाहि रे ।
जिन सासन सानिधि सूर करे, तिणो आनंद उछव थाइ रे ॥ ९५ ॥

अमृत श्रावी चंद्रमा, चोरटो चित न भावि रे ।
मरखी चंदन मेहली करी, असुचि उपरी ते धावइ रे ॥ ९६ ।

गुजर देस भूपण भलो, पाटण लील विलापी रे ।
वल्लभ दान पून्यइ सदा, तेह नगर ना वासा रे ॥ ९७ ॥

ठाकरसी साह डूंगरसी, अमीचंद साहव दाता रे ।
पातसाह केरी छाप लखावी, धम्म बुद्धि जिणंता रे ॥ ९८ ॥

दलिपति आप मुखी कहि, धन्य लोके गुजराती रे ।
पुण्माना उनका करूं, जो होइं सुभ जाति रे ॥ प. ॥ ९९ ॥

तेणि लेखि सब संघ कुं, वरते जय जय कारो रे ।
गुरु रायनगर पधारीया, जिन सासन जस विस्तारो रे ॥ १०० ॥

चिंता मणि सखि चंद्रमा, तिम सुंदर पुत्र जगीसो रे ॥
धर्मसिंह मुनिवर कहि, ढाल पइ बावीस रे ॥ प. १ ॥

॥ ढाल-२३ राग गोडि धूमारि-भमरानी देसी ॥

श्री शिवजी गणि वंदोइ, गुणसागर रे जिन सासन सणगार ।
लाल गुण भंडार रे, पंचेद्रि जिणइ वसि करया गुण०
नव विधि सुं ब्रह्मचार लाल गुण भंडार रे ॥ २ ॥

च्यारि कषाय दुरि करी गु०, पालइ पंच आचार ला० गु० ।
पंच समति गुपति त्रिण गु०, एछत्रीस गुणधार ला० गु० ।। ३ ।।

संपद आव सोहि मला गु० श्री श्रीमाला सार ला० गु० ।
कठ कला सोहामणी गु०, सूत्र अर्थ भंडार ला० गु० ।। ४ ।।

अमृत सरखी देसना गु०, वरसि जउ जलधार ला० गु० ।
परम वेराग सोहि सदा गु०, सोमि पर-उपगार ला० गु० ।। ५ ।।

गुण कारण करी जाणीइं गु० वछित कार्य प्रमाण ला० गु० ।
जिन प्रत्यक्ष कवि जन कहि गु० गछपति गुण निधान ला० गु० ।। ६ ।।

गणिवर गुण अन्येकछि गु०, त्रेवीस ढाल सुरग लाल गु० ।
वल्लभा ए श्री रागनी गु०, वंदि मुनि धर्म सघ लाल गु० ।। ७ ।।

।। ढाल—२४ राग वंसत-फाग अहो मेरे ललना एनी रास ।।

अहो मेरे ललना, किसि भरूं दिन रयण बाल भवण फागुण होइ ।
अहो मेरे प्रभुजी, सोम वदन सुभ वयण सहि गुरु गाइइ ।। ८ ।।

रूपऋषि जीवराज गणिवर, कुंयरजी कुलभान ।
श्री मल्लजी सोह वडावण, रतनागर निद्धान ।। अहो० ।। ९ ।।

केशवजी कुलिचन्द मनोहर, गोतम स्वामि समान ।
जयवंता शिवजी गणराजि, दीपि दिनकर त्यान ।। अ० ।। १० ।।

गंगाजल निर्मल वर वयणा, चंपक तन कोवान ।
धर्म-सघ मुनि सहि गुरु वल्लभ ढाल चोवीस मुम तान ।। अ० ।। ११ ।।

।। ढाल—२५ राग धन्यासी ऊगत्र गुरु ए देसी ।।

महा मुनि श्री शिवजी गणिधार ।
वंस विभुषण महिमा सागर संघ सवि हितकार ।
महा मुनि शिवजी गणिधार ।। ए आंकणी ।। १२ ।।

देस मेवाड़ मांहि अति सोनि, उदयपुरि सणगार ।
संघ वीनतडी सहे गुरु आया, दिन २ हरख अपार ।। १३ ।।

सेवा भक्ति करि संहु रंगि, वछित पूगो आस ।
वीनती सघ तणा मनि जाणी, रचउ सुन्दर रास ।। १४ ।।

ऋषि नाना शिष्य देवजी मुनिवर, तस शिष्य कहि सुविचार ।
२नयन ९नन्द ६रस १चन्द सवछर, श्रावण पून्य शशि धार ।। १५ ।।

गछनायक नो रास रसिक ए, भणि जेह नर नारि ।
सांभलती सांपति सवि पामि, सफल तस अवतार ॥ १६ ॥

पार्श्वदेव सदा प्रभु मुझनि, वंछित फल दातार ।
सुख वरण प्रभो नमो निरंतर, सदा जग आधार ॥ म० ॥ १७ ॥

धर्म-संघ मुनि मनह रंगि श्री गुरु-गुण विस्तार ।
पंच विस राग ए ढाल धन्यासी, प्रेम वचन श्रीकार ॥ म० ॥ १८ ॥

॥ कलस ॥

श्री संघ नायक वंछित दायक श्री शिवजी गणिधार ए ।
उपम जंबुकुमार राजि, पूरण गुण भडार ए ॥ १९ ॥

जिन सासन प्रतपो शिव आचरज, रवि शसि महि धार ए ।
दिन दिन अधिक आनन्द आंनंप, सेविइ सुखकार ए ॥ २० ॥

सुरतरु सरखा सहि गुरु जाणि, आणी प्रेम अपार ए ।
रास सुन्दर रुचि रागि, उदिपुर मझार ए ॥ २१ ॥

देव मुनि शिष्य धर्म-संघ मुनि, वदि गुण विस्तार ए ।
वल्लभ श्री जिनराज जिनवर, सेवक जन सुखकार ए ॥ २२ ॥

॥ इति आचार्य श्री शिवजीनो नो रास सम्पूर्ण ॥

॥ आचार्य श्री शिवजी जीन शिष्य लिखितं ऋषि श्री त्रिकमजी स्वयंमेव वाचनार्थ ॥ छः ॥



शिवजी सलोका

आणन्द रचित

श्री जिन चौवीसे नित ध्याउं, श्री शिवजी गछ नायक गाउं।
देश सवे शिर सोरठ देश, नगर नगीनो जाम नरेश ॥ १ ॥

संघवो अमरसी श्रावक सार, तास घरे तेजां वर नारि।
तास उवरि श्री शिवजी उपन्न, रूप कला सौभाग्य सपन्न ॥ २ ॥

छह वत्रव सु शिवजी सुराजे, वडो अभियपाल विराजइ ।
मगलजी शिवजी लखमसी जाण् जेता साका हूजा सु प्रमाण ॥ ३ ॥

श्री रतनागर यत्र (पूज्य) पधारे सोग सताप दुःख निवारि।
इणि परि विचरंता मुनिराय, नविनगरि चहुँ उछव थाय ॥ ४ ॥

सांभलि श्री रतनागर वाणी, वेराग पामइ के भव्य प्राणी।
पाप किंपाक फल सम जाण, सोस करे केइ नर नाणी ॥ ५ ॥

इणि परि श्री शिवजी गुण खाणी, वेराग वासना मनि आणी।
माता समीपइ आगना मागि, चारित्र आदर्वा मन जागि ॥ ६ ॥

दोहिलो छइ वछ संजम मार. आदरतांजी खाडानी धार।
क्रोध ने मांन माया नइ लोभ, टालवा सोग संभाव खोभ ॥ ७ ॥

वछइ कहिजी साभलो माय, टालस्युं काम क्रोध कपाय।
एह संसार छे असार, आदरस्युं पंच आचार ॥ ८ ॥

हठ करीनइ आगना लीद्ध, वंद्धव पंचइ उछव कीध ।
श्री रतनागर हाजिथि दिक्षा, लइने रुडी सिखेजी शिक्षा ॥ ९ ॥

लाल मुनीश्वर शास्त्र भणावे आगम छ कोसं सुणावे।
व्याकरण नाम कोप भडार, वा विजा शिवजी गणित विचार ॥ १० ॥

जाणइजी शास्त्र ना सहुए मर्म्म, पाल यतीना दशविध धर्म्म।
श्री शिवजी गुण रयण भंडार, सोभेजी साधु माहि शृंगार ॥ ११ ॥

संवत १६८८ सोलसेय अठ्यासे, केशव पाटि थप्या उल्हासी ।
गणी तीस गुण गंभीर, माहा मुनीवर चारित्र धीर ।। १२ ।।

पाय नमे जस देव नरिंद, सेवेजी पाय मुनिवर वृंद ।
जे नर नारी सिलोको गाइ, ने घरि सुख संपति थाइ ।। १३ ।।

॥ कलश कवित्त ॥

वने नंदन वन जाण, मुनिवर माहि महंत, ज्यु महावीर वखाणू ।
मंत्रा जिम नवकार, सुरा कोकिल, सल दीजइ गिरवर माहि गिरद ।।
ज्यु तारा माहे चद, कलस कवित्त सार जिम मेरु कहीजे ।
जयु रूप तेज परताप कांर, प्रतपो श्री शिवजी गणि ।
आणद कहत गणी गावतां, ऋद्धि वृद्धि कीरति घणि ।। १४ ।।

॥ इति श्री शिवजी नो सिलोको संपूर्ण ॥



शिवजी ऋषि कवित्त

सीता सीत नदी नग मेर, सउ न कोउ नगनंदन समान न वन वन द्रुम देखीइ।
जवू सउ न वृक्ष चलकुट सउन कुअउर देव कुरु देव भूमि सम जुग लोविइ ॥ १ ॥
लक्ष्मी समान अपछर अउर कोउ नाहि गग सउ पवित्र जल जलहु न पेखइ।
पंथग सउ शिष्य, पुत्त श्रवण समानि, द्रुग गणि शिवजी समान अउर न विशेषि

जाकु दिगबर जोग जटा धर ज्वारथ देह दवानल धारी।
जांकु पारासर आदि सबी तपसी तप कष्ट कीया जगि भारी॥
जाकुं विचित्र विचार करइ कर पाठ पठइ सूत्र सवारी।
सो शिवजी गणि देन मुकति कहा द्रुग वातन वात विचारी॥ ३॥

अइ सउ अउर कोउ नाहिं जाहि उपमा बखाणीइ।
खारउ तउ समुद्र जल विकल कल्प द्रुम॥
चिंतामणि पारस पढाण जगि जाणीयइ।
पशु कामध्येन, सूरतीष्यणी सुप्रकट हइ चन्द्रमा कलंकी इन्द्र बहु माणिइ।
कट भहीतवास सुन्दर प्रधान पुफ केतुका सरिस अउर चित नही ठाणीयइ॥
अधिक वइ रागी शिवजी मुनिद कहिइ, द्रुगअइ सउ अउर नाहि जाहि उपमा बखाणीयइ॥ ४॥

परम उदार गुण ग्यान कउ विद्वान दुख दारिद मिटत जाके चरण परसतइं।
अस्वनीकुमार रूप अतुल बल विख्यात अधिक विराजइं मुख पकज सरसतइं॥
भूपती कउ भूप अदभूत बाणी मधुर मुनिद पद पायो मुनि चिंतत अरसतइ।
कहि द्रुग अइस सद गुरु भये ताखेकु शिव सुख पाइहत शिवजी दरसतइं॥ ५

मोटो जाकउ मन वच काय दृढ बोल सच।
हारजु अमोल जाचो जाको दृढ मन हइ॥
कुंदन करित सार घडित सोवनकार जेसो वरचाव चोखो कंचन वरणहइ।
अनेक गुण पडित विदोष कार छडित सुंघाट परि मडित सुरुप जाको तनहइ॥
कहित आणंद मुनि शिवजी गणीश गुनि सेवत सदैव ताको जिवित सुधनहइ॥ ६

देश सु' धन्य सुठामि सुगामि सुधाम जिहा गच्छपति सिधावइ ।
तेजलदे जस मात सुवन्य जिको नर नारि अहो निश ध्यावइ ।।
धन्य पिता अमरेश्वर धन्य जिको जन लोक तुम्हा गुन गावइ ।
धन्य तिको शिवजी गणिको निति दर्शन प्रातु समेनितु पावइ ।। ७ ।।

अउर गच्छपति माहि मुनीश्वर सोहत सार सुभागनि लोरी ।
तेज वाइ जस मास भली, गुजरात्रिन को गच्छपति तिलोरी ।।
रूप कला ललताइ विराजित, हेक थे हेक वदेइ भलोरी ।
पावर सात सखी मिल्लरी जिवजी ऋषि वंदन कु'हि चलोरी ।। ८ ।।

।। इति ।।



ऋषि शिवजी गीत

देवमुनि रचित

॥ राग गुड़ी गरवो ॥

सदा भाविहुँ गुण स्तवु' रे, गुरजी गुण भंडार।
एकी जिभि किम कहुँ रे, कहिता नावि पार ॥ स० ॥ १ ॥

सहि गुरु सहिजि सुहामणा रे, मुख्य मोहन वेल।
नामि नव निधि सपति रे, दरशन वा रंग रेल ॥ स० ॥ २ ॥

श्री माली कुलि दीपतो रे, उदयो अविचल भाण।
अमरसी सूत जाणिया रे श्री शिवजी गुण जाण ॥ स० ॥ ३ ॥

सूर पणि पणि विचरइ, सदारे, मयण मता व्योहार।
महिमा महियल विस्तरो रे, महा दुखु करत पुकार ॥ स० ॥ ४ ॥

सू-धर्म स्वामि सम जाणी ए रे, ग्यान तणो दातार।
मानव नाम न रीझइ रे, वाणी सरस अपार ॥ स० ॥ ५ ॥

गुण भाण्या भावि करी रे, पाटण नयर मझारि।
संवत १६९६ सोलए छाण रे, देव मुनि सुखकार ॥ स० ॥ ६ ॥

॥ इति ॥



आचार्य शिवजी नो सलोको

इन्द्र रचित

श्री आदि जिनेसर वीनवतुरे. अविचल वाणी आपज्यो ।
शिवजी गछपति नो कहुँ सलोको, भावधरी नमे सांभल ज्यो लोको ।। १ ।।

नगर नगीनो दस निधान, जाम सतो तांरा जे बलवान ।
तेनी नगरी मां श्रावकसार, संघवी अमरसी सबल परिवार ।। २ ।।

तस घरि तेजा रुडी छउं नारि, पीउसु ं धरती प्रेम अपार ।
अवसर अनोपम तेजां सुकमाल, सुखभरि सुती रग रसाल ।। ३ ।।

सीह सुपन ते पेखी सुरंग, ततखिण जागी मनमें उछरंग ।
गजगति आवी तेजां गुणवंती, प्रीउ सु ं ते पूछे प्रेम धरती ।। ४ ।।
सांभलो मेरे नाथ सुजांण, सिंघ दं ठो जिम जल हल भाण ।
पंडीत तेडी पूं छी प्रभाति, देस व देस वारु वखाति ।। ५ ।।

सांभलो संघवी वात अमारी, तुम सुत होसि कीरतिकारी ।
अरथ सुणी नह आप्पा छइंदान, सुपन पाठिक नइ वाल्ग सनभान ।। ६ ।।

सुभ जोगि जनमा शिवजी उदार मातपिता मन हरख अपार ।
सु ंदर सुहासण गीत बनावि, हरख धरीवर वचने हुलावी ।। ७ ।।

छसु ं तमे तु ं तेजबाई नद, मेर मही जिम ससी रविइद ।
दिन खाधि शिवजी सुधीर, जिम वेल वधी समदर नीतीर ।। ८ ।।

पुन्य जोगि जोवन पामा वस्तार, रुपि करी जिम राजकुमार ।
तेणि समइ ता सामलो सार नगर चोमासु रतन गणधार ।। ९ ।।

सुत्र सिद्धांत अरथ सुणावइ, दुख दारिद दुरि गमावइ ।
वचन सुणी नइ शिवजी वैरागीइ, मात समीपि अणुमति मागई ।। १० ।।

सांभलो माता वात श्रीकार, परभवि हुसइ धर्म आधार ।
एह ससार दीसइ असार धर्म दिना नही अवर प्रकार ।। ११ ।।

अनुमति आपु मनमइ उछंग, चारित्र लेसुं मन सुद्ध चंग ।
वचन सुणी नइ बोल्यांजी मात, दीक्षा तणी वछ मोटी छइ वात ॥ १२ ॥

सांभलि शिवजी तुं सुखकार, साधु तणु तां सवल आचार ।
पहिलइ व्रति तो हिंसा परि हरवी, कुडी करजीते बीजइत करवी ॥ १३ ॥

वस्तु न लेवी अणदीवि कोय, व्रत त्रीजु ते एणी परिजोय ।
व्रत चउत्थानु कहुँ विचार, नववाडि सुद्ध सहित आचार ॥ १४ ॥

सदा धातु जे जगि माहि सार, साधु समीपि नही ते लगार ।
व्रत पंच एह दुधर धरवा, क्रोधादिक पाप नित परिहरवा ॥ १५ ॥

सांभलि शिवजी तु पुनवंत, बावीस परीसा सहिवा बलवंत ।
पंच इंद्री ते वली वसि करवां, भात पाणी निरदोष ग्रहवा ॥ १६ ॥

ए आदि बीजा अनेक प्रकार, साधु ना गुणनो नावेजी पार ।
वरन पाचना सुभे वस्तार, लवलेस मइ ते कहा लगार ॥ १७ ॥

वचन सुणी नइं शिवजी बुद्धवांन मातासुं बोलइ वचन प्रधान ।
सत्य कहिउ ए माता प्रमाणि, कायर पुरुष नही चारित्र उजाणि ॥ १८ ॥

सूत्र सिद्धांत अर्थ जे जाणि, कायर पणु ते मन मा न आणि ।
सूर सुभट नइ अकल अबीह, चारित्र पालइ जिम केसरी सीह ॥ १९ ॥

वाणि सुणी नइ बोलापणी भ्रात, आंभानु शिवजी साली कहुँ वात ।
तुम सरिखा बंधव चतुर निधान, तुम बेठा अम नइ सवल आसान ॥ २० ॥

वचन सुणी नइ शिवजी श्रीकार, पंच भाइ सुं बोलइ प्रकार ।
सांभलो बंधव धर्म ना जाणि, अनुमति आपु होसई कल्याणि ॥ २१ ॥

अति धरिइ आग्रह अनुमति आपई, सज्जन मनी सहु एर फुलेकां थापइ ।
१अमीपाल २मगल ३शिवजी सुजांणि ४लखमसी ५जयतसी ६कान्हजी प्रमाणि २२

बंधव मली बहु कीधो विचार, मोछव कीजइ अतिघणु सार ।
नगर माजन नइं हरख अपार, तिम करीइ जिम सोभा श्रीकार ॥ २३ ॥

मोटइ मंडाणइ दीक्षा ते आपइ, रतनागर दीख्या शुभ योगइ थापइ ।
दीखा देई श्री शिवजी नइ जोमइं ऋषिजी लाला नइं शिष्य पणइं सुपइ २४

ऋषिजी प्रति कहि लालु अणगर, सूत्र भणावुं सिद्धांत सार ।
शिवजी सुबुधी विनीत आचारी, तरुण पणि नेनी कीरति सारी ॥ २५ ॥

शास्त्र तणु ता मांड्यो अभ्यास, न्याय चिंतामणि छद प्रकास ।
अलंकार नाम कोस भंडार, आगम अर्थ गणित विचार ॥ २६ ॥

कौमुदी सिद्धांत व्याकरण हेम, शास्त्र भण्या वहु मन धरी प्रेम।
कुमत पाखंडी जीत्या वहु कोडि, शिवजी आगलि कोन मांडइ होडि ॥ २७ ॥

दिन केते पदवी अवसरि आवइ, संघ मली सहु का काम बनावइ।
नवहनगर छर शिवजी आणगार, तेडावी पदवी आपउ श्रीकार ॥ २८ ॥

गुजर खंड थी तेडुं ते आवइ, जुगति सुं आवी वात जनावइ।
संघ सहु को सामलो मार, गछ घोरघर शिवजी सणगार ॥ २९ ॥

नगर ब्रंद्दर थी शिवजो मुणद, व्याहार करे नइ प्रेम अ णंद।
अमदावाद नुं माजन आवइ, सामहीउं साहू जुगति बतावइ ॥ ३० ॥

मोटइ मडाणइं शिवजी अणगार, पोहोता ते अम्हदाबाद मझार।
शुभ दिवसी पदवी सुरन सार, १६८८ सोल अठासी वरस उदार ॥ ३१ ॥

केसवजी पाटि शिवजी रखराय, पदवी ते पामी पुण्य पसाय।
संघ मिली सहु देइइ आसीस, घणुं जीवइ तुं शिवजी मुनीस ॥ ३२ ॥

गुण छत्रीसइ सहित विराजइ, गोयम गणधर उपम छाजइ।
देशना देइ श्री शिवजी गुणधार, कुमति पाखडी काढयो अहंकार। ३३।

एणि परि विचरइ शिवजी गछराज, भविक माणीनां सारइ छइकाज।
दिन २ महिमा अधिक प्रताप, नाम जपइ नरनारी वहु जाप ॥ ३४ ॥

संघ सहु नइ साताते करी, कीरति पसरी चिऊं दिस सारी।
अक्षरि बावनलइं गुणछइं अनेक, कीधो श्लोको बुद्ध सारु एक ॥ ३५ ॥

संवत १७५ सतर नइं पांच श्रीकार, वहिउ श्लोको खीरपुर मझार।
इंद्र कहि जे जतनइ गुणगाय, तस घरि सुख संपति थाय ॥ ३६ ॥

॥ इति श्री आचार्य श्री शिवजी नो श्लोको संपूर्ण मिती लिखित ऋषि गुणवंत वेणीदास ऋषि चंद्रसेण पठनार्थं शुभभवतु ॥



आचार्य शिवजी भास

॥ राग–आसाउरी ॥

॥ ढाल–श्री नेमीसर गुण निधि गातां ए ढाल छइ ॥

पास जिरोसर त्रिजग दिरोसर प्रणमी तेहना पाय रे ।
सुखदायक गच्छ नायक गाता सफल मनोरथ थाय रे ॥ १ ॥

वादउ भवियरा गुणनिधि गणिवर, श्री शिवजी ऋषिराय रे ।
श्री केशव गणि पाटिइ दिनमणि, सुरनर प्रणमइ पाय रे ॥ वं ॥ २ ॥

देश हालार शृंगार सिरोमणि, नवुंनगर अति चग रे ।
उत्तम श्रावक धर्म दीपावक, वसइ तिहा मनि रंग रे । वं. ॥ ३ ॥

श्री श्रीमाली वंश विभूषण, अमरसीह सुत जाण रे ।
तेज वाई उरि सरि हंसोपम, शासनिश्र उदयो भाण रे ॥ वं. ॥ ४ ॥

९नव ६रस १६चंद कला वर वरसइ, फागुण सुदि बीज सार रे ।
रतनागर गणि दीख्या दीधी, वरत्यो जय जय कार रे ॥ वं. ॥ ५ ॥

समिति गुपति करि शोभइ मुनिवर, पालइ पंच आचार रे ।
दश विध यति धर्म करी अलंकृत, छत्रकाया हितकार रे ॥ वं. ॥ ६ ॥

छती ऋद्धि त्यागी महा वैरागी, सवेगी सुखकार रे ।
निजमति निर्मल शास्त्र तणइ बलि, जाणइ अर्थ अपार रे ॥ वं ॥ ७ ॥

जिनमत थापइ सुभमति आपइ, वाचइ सूत्र उदार रे ।
हेतु वणावइ दया दढावइ, वरसइ अमृत धार रे ॥ वं. ॥ ८ ॥

भविजन तरुवर सीचइ बहुपरि, जेम सजल जलधार रे ।
मधुर वचन सुणि पामइ बहुजन, आणद चित्त मझारि रे ॥ वं. ॥ ९ ॥

अनुक्रमि सोल अठ्यासीआ वरसे, जेठ पंचमि सोमवार रे ।
सुदि पखि परम हर्षि पद दीधउ, अहिमदावाद मझारि रे ॥ वं ॥ १० ॥

पुण्य प्रमावि परम गुरु उदयो, वहु गुण रयण भडार रे ।
कर जोड़ी सेवक इम जंपइ, सवि संघ जय जय कार रे ।। वं. ।। ११ ।।

॥ इत्याचार्य श्री ६ शिवजी भास सम्पूर्ण ॥

प्रति–पत्र १ अभय जैन ग्रन्थालय– १७ वी शती.......... नं ५३६६

इस भास के बाद श्री संभवनाथ सावन लिखा हुआ है ।

आदि–सावत्थी नयरी अभिराम, राय जितारी नउ सुख ठाम ।

अन्त–साठि लाख पूरव जिनराज, जीवी पाम्या शिव पद राज ।
रूपऋषि गणि पटि श्री जीवराज, घणा जीवना सार्या काज ।। ७ ।।

तेजकुंअर श्री मल्ल गणि कहीइं, जेहता गुण नो पार न लहीइ ।
तास पाटि जिसउ पूनिमचन्द, सुखदायक श्री रत्न मुणिंद ।। ८ ।।

ज्ञानादिक गुण दिन दिन दीपइ, इणिपरि आठ कर्मनइ जीपइ ।
तस सेवक मुनि कान्ह प्रसंगइ, बीका नयरि तवन कीउ रगइं ।. ९ ।।

सवत सोल छासठइ (१६६६) सार, कार्त्तिक सुदि एकम रविवार ।
भणतां भावि विघन सवि चूरइ, सकल संघनी आसा पूरइ ।। १० ।।

॥ इति श्री संभवनाथ स्तवनं ऋ सुरतांण पठनार्थं ॥



वयरागर ऋषि रास

कवियण रचित

पहिल प्रमाण करूं जिनराय, सिद्ध सवे निज गहिस्युं भाव ।
सगुण आचारिज पाइ नमउ ।।
पछइ मन सुधि वंदिस्युं श्री उवझाइ, साव चलण चित लाइस्यइ ।
इणि परिवंदतां पातिक जाइ ।। १ ।।

सगुण शिरोमणि गुण निलउ ।
सील अखंडित वयरकुमार, कुमर भलउ नइ वयरागियउ ।
पछइ जाणि छोडीय सेवंतीय नारि ।।
मोह महाभड परिहर्यउ वीनति सुणि हो भाखर राय लखवति लोक लुंका हुवा ।
चतुर हुंता जके एण संसार ।। सुगुण ।। २ ।।

पुण्यवंत प्राणी संभलउ रास, नाम लेता मनि होइ उल्हास ।
गाइसु गुण गिरूआ तणा ।।
पछइ लहुअ पणइ लीयउ संजम भार, गृहवास तणा सुख परिहरी ।
मन करि जाणिउ अथिर संसार ।। सुगुण. ।। ३ ।।

कुण नयरी कुण देश मझारि, कुण कुल किण परि संजम भार ।
केण गीतारथ दीखीयउ ।।
पछइ किणि परि छोडी सेवंतिय नारि, केस वयरागइ पूरियउ ।
तेह तणा गुण कहुं विचार ।। सगुण. ।। ४ ।।

जबूअ दीप नइ भरत मझारि, मुरधरा देश छइ अति सुविचार ।
नयरत कोटडउ जाणीयइ ।।
पछइ कुलवट किरत श्री श्रीयमाल, तात नामइ भलराज छइ ।
मात रयणादेवि उवरि मल्हार ।। सगुण. ।। ५ ।।

वरस बारह अनइ बालक वेस, नयण सलूणडउ सांवल केमि ।
रुप कला गुण आगलउ ।।
पछइ आठ चउगणा लखण अगि, वाणि अमीरसि जंपता ।
अहनिसि दीसइ छइ धर्मस्यु रंग ।। सगुण ।। ६ ।।

कुमर पहुंताजी जोवन संधि, जउ परणाव तउ रहइ वृद्धि ।
सारिखइ सारिखउ जे मिलइ ॥
वछइ साह कहइ तव जोसि नइ वात, जोवउजो कन्या अति भली।
रुपवंती अनइ सील विख्यात ॥ सगुण. ॥ ७ ॥

चाल्यौजी जोसिय देश मझारि, गयउजी महेवे नगर मझारि ।
तिहा कन्या दीठी अतिभली ॥
पछइ रुपह निरुपम रंभ समान, हिरणाक्खी गुणगोरड़ी ।
कोमल अगनइ चपा कइवन्न ॥ सगुण. ॥ ८ ॥

जोवइ छइ जोसीय कन्या तणो रूप, जाणि अमृत रस भर्या कूप ।
अमिय रसायण वेलड़ो ॥
किया एक सण कि गुण रस मूल, सजीवनीय ओषधी ।
वदन जोतां जाणे चन्द्र प्रकाश ॥ सगुण ॥ ९ ॥

ब्राह्मण वोलइजी मधुरीय वाणि, कूड़ कहूँ तो जी देवनी आण ।
साह रयणायण सांभलउ ॥
पछइ जउ तुम्ह हीयडइ करउ विचार, सारिखइ सारिखउ जड़ मिलइ ।
वइरागरि वर सेवंतीय नरि ॥ सगुण. ॥ १० ॥

जोयउजी जोत्तिष मेलीय प्रीति, लगत महूरत मंगल रीति,
सजन मिल्या सहु देसना ॥
पछइ हुइय सुपारीय जी हर खियउ साथि, वोल वोल्या कन्या तणा ।
फल दीधउ मलराज कइ हाथ ॥ सगुण. ॥ ११ ॥

मेलि विवाह नइ मंडीयउ जंगि, फिरीय कंकोतरी मन तणइ रंगि ।
सजन कुटंब सहु आविया ॥
पछइ वानिय वड़ि नीपजइ पकवान, सालि दालिघृत सालणा ।
भोजन भगति नइ ऊपरि पान ॥ सगुण. ॥ १२ ॥

हुइय सगाईय चालिए छइ जान, वांभण भाट नइ घइ अछइ दान ।
रथ सज वाल्या सज किया ॥
पछइ हींसता हयवर नइ चकडोल, पालंखी दीसइ छइ नवरंग ।
मृग नयणी तिहां गावइ छइ गीत ॥ सगुण. ॥ १३ ॥

लोक महाजन चालयउ साय, गयल लीधी अछइ अतिघणी आथ ।
इण अवसरि धन खरचियउ ॥
पछइ विलसता धन तुम मति करउ लोभ, मलराज करइ छइ वीनति ।
माहरउ माडवइ राखिज्यो सोभ ॥ सगुण ॥ १४ ॥

हुईय वधाईजी ग्रावीछइ जान, साम्हा कीजइ छइ अति घणइ मान।
तोरण वर जव आविया ॥
आरती करइ छइ रतन की ज्योति, सामू आरंग भरि पोखती।
मांडोह मांहि हुउ उद्योत ॥ स० ॥ १५ ॥

सहीय सहेलिय गावइ छइ गीत, वर कन्या हथ-लेवा की रीति।
आम्हा साम्हा छांटणा ॥
पछइ मंडिय चउरीय मंगलचार, च्यारि फेरा तिहां फेरिया।
दायजइ दीधाजी तुरिय तुषार ।। स० ॥ १६ ॥

परण नइ उतर्यंउ वयर कुमार, जाणि नइ रुखमणि देव मुरारि,
जाणइ हेम ऊपरि हीरउ जड्यउ ॥
शंकर गउर जाय जेम अरधग, सुर सुंदर प्रेमावती।
तिम वयरागर सेवंत्री कंत ॥ स० ॥ १७ ॥

वभण भाटजी छइ आसीस, वर कन्या जीविज्यो कोड वरीस।
आस पूगी सहु लोकनी ॥
पछइ जे जण आव्या छइ जाननइ साथि, तेह तणा मन रंजिया।
वरण अढारह उडव्याहाथि ॥ स० ॥ १८ ॥

हुइय पहिरावणी राखिया चाव, वाजइ छइ नीसाणे घाव।
जान वउलीघरि आपणइ।
पछइ लेई नालेर जहारिय सास, साला सूं साया सिलइ।
पछइ दान देई तिहां पूरवी आस। स० ॥ १९ ॥

दोइ वीवाहीय अति घणउ नेह, विनति करी रखे दाखिउ छेह।
साह रयणायर जो कहइ ॥
वेटीय एक छइ मोधर रारि, तुम्हा उछरगह या मइठवी।
अति घणी करिज्यो सेवंती नीसार ॥ स० ॥ २० ॥

जान व उलावी नइ आविउ सेठ, सूनउ चित्त नइ जल भरि द्रेठि।
मंडप दीसइ छइ ऊपाखरउ ॥
पछइ उसरिखेत्र तिहा नीपनी सार, कुमर आव्यउ मलराज।
नइ रतन लेइ चालियउ वयरकुमार ॥ स० ॥ २१ ॥
कोटड़इ नयरते हुअउ उछाह, वाजा हो वाजइ नीसाणे घाउ।
घरि घरि जूडीय उछली ॥
पछइ पूरण कलश नइ दीपक माल, वहन करइ छइ आरती।
जीविज्यो वीरा तूं चिरकार। स० ॥ २२ ॥

तात परणावियउ वयर कुमार; ततखिण मुंपियउ घर तणउ भार।
अरथ गरथ सहु भलाविया ॥
पछइ देवल देहरा गुरु तणी साल, तेह तणी चिंता करउ।
आपणइ कुल अछइ एहवी ढाल ॥ स० । २३ ॥

तात तणी नवि लोप छइ आण; लोक(क)रइ सहु कुमार वखाण,।
कुल मडण कुल दीपतउ ॥
पछइ कीरति वाधी छंइ देस विदेस, भलपण लियउ भलराज रइ।
नव जोवन अनइ बालक वेस ॥ स० ॥ २४ ॥

दिन दिन नव नवा भोग सजोग, अहनिस हरख नइ मन नही सोक।
दुख दालिद सुहणे नही ॥
पछइ साघ नइ रंग नइ सजन स्युं प्रीति, दान दियइ चिंति ऊजलइ।
पर उपगार धरमस्युं चित्त ॥ स० ॥ २५ ॥

चोवानइ चदन अगर कपूर, केसर कुसम नइ कूकमाचूर।
तेल वास्या बहु भांतिना ।
पाछइ निरमल नीर पखालिया अंगि, सेज तुलाइ पउढणइ।
आछा चीर कसुभा नइ रंगि ॥ स० ॥ २६ ॥

इण परि विलसइजी वयर कुमार, तात तणइ मनि हरख अपार।
पछइ पूख पुण्यह प्रेरियउ ॥
पछइ भव थोडा नइ तुच्छ संसार; विपयारस थकी विरचियउ।
लूखा लागइजी काम विकार ॥ स० ॥ २७ ॥

मनि कही तव धरम नी रीत, चीते चमक्यउ सकियउ भय भीत।
विपय तणा सुख विप-समा ॥
विपय समाउ वयरी नही कोई, विपय अनंता भव रुल्या।
विपय तणी गति पाडवी होइ ॥ स० ॥ २८ ॥

विपय थकी विरचियउ वयर कुमार, अपणइ चितस्युं करइ विचार।
भोग भला नहीं अति घणा ॥
व्रत चउथा नउ कवउ अंगीकार, भव भवसायर छांडीयइ।
बारह वरत मांहि एहिज सार ॥ स० ॥ २९ ॥
कुमर विचारइजी बुद्धि विनाण, इम करता हुवइ धरनी हाण।
तात वचन किम लोपिय आण ॥
भाव पख पूजइ देव अचेत, मनि संका आणइ घणी।
मात पिता मन हरखवा हेत ॥ स० ॥ ३० ॥

वरस ग्रढार तणउ अनुमान, वरत चउथा नउ कीधउ पच्चखाण।
मात पिता अण जाणता ॥
तिणि समइ पीहर थी घर नारि, बीजउ कोई जाणइ नहीं मित्र।
जाणइ तिहां कियउ उचार ॥ तउसु ॥ ३१ ॥

कामणी पूछइ कंत स्युं वात, वंइरसी दीसइ अवरसी धात।
घर ऊपरि चित्त ऊतर्यंउ ।
हांसा नइ रामत्ति रंग नइ रोल, भोग सहु इण परिहर्यंउ ।
सरस ग्राहार नइ फूल तंबोल ॥ स० ॥ ३२ ॥

तात जाण्यउ जब वरतनउ भेद, पूछतां आणइति घण खेद ।
माता पिता विलखा हुग्रा ॥
पछइ करइ पडकमणउ साझ-प्रभाति, सामाइक मइडी करइ पछइ
विणज व्यापार नी छोडी छइ वात ॥ सु० ॥ ३३ ॥

घणा दिवस वहु पीहरि वेडि, बोलावउजी मम करउ ढील ।
तात कहइ सुत सांभलउ ।
वलतउ बोलइ वयरसी वाण, कर जोडी ऊभउ रहइ ।
हुँ नही जउ मम छंडि मेउ काण ॥ सु० ॥ ३४ ॥

पछइ कागल लिखियउ छइ अति घणइ भाइ, वइगउ दूत महे इ जाइ।
साह रयणायर स्युं कहइ ॥
वाचिज्यो कागल वुद्धि किनाण, वेटिय पाठवउ आपणी ।
पछइ वरत चउथउ लीयउ वियरकुमार ॥ सु० ॥ ३५ ॥

वाचियउ कागल उपनउ खार, डीभउ जामियउ हीयड लाबार ।
सेवंत्री पुहवी पडी ॥
पछइ सीतल वीझणे घालइ छइ वाउ, सही समाणिय वूझवइ ।
एवडउ दुःखन सहणउ जाइ ॥ सु० ॥ ३६ ॥
वेगि चाली तव निजती हाथ, वाट वहता नवि जोवइ छइ साथ ।
आविया ततखिण कोटडइ ॥
पछइ सासू तणा तत्र प्रणमइ छइ पाय, नाह न जोवइ कारणइ ।
साघण ऊपरि मइडिय जाइ ॥ त्र० मु० ॥ ३७ ॥
करिय सामाइय वइठउ छइ धीर, आय सेवती ऊभी रही तीर ।
सिस वयणी इम ऊजरइ ॥
पछइ किणि दुख सामी तुम्ह सूकउ देइ, कवण धर्म तुम्हे ग्रोलख्यउ ।
इम करतां किम छूटिस्यह छेह ॥ ३८ ॥

सुरज अगनि नइ चंद्र नी ज्योति, बांभण बइठा छइ पहिरिय घोति ।
कोड़ि तेत्रीसे देवता ॥
सजन कुटंब तिहां अति घणा साथ, माय बाप परणाविया ।
तिहां तुम्हे दीधा छइ दाहिणउ हाथ ॥ ३९ ॥

अरथ गरथ दीधा बहु साथि, ताति हु संउपी छइ ताहिरइ हाथि ।
मरण जीवन तुम्हां पाय तलइ ॥
पछइ बालपणइ अजी हम तुम्ह नेह, झटक छेह किम दाखियइ ।
मेरे समाण दुःख छइ एह ॥ स० ॥ ४० ॥

पारीय संवर पहरीया चीर, हसि करि बोलीयड़ साहस धीर ।
काइ दुःख आणउ थे एवड़उ ॥
पछइ अथिर संसार म राचिज्यो कोइ, ए दुख मधु विंदूआ समउ ।
नरग तणा दुख दोहिला होइ ॥ स० ॥ ४१ ॥

रहुँ रहुँ केता तउ खरउ सुजाण, खिणि २ जोबन होइ छइ हाणि ।
वलि वलि माणस भव नही ॥
पछइ इण समइ कीजइ जी भोग विलास, गई वेला नवि पामीजइ ।
आश्रम चउथइ धर्म अभ्यासि ॥ स० ॥ ४२ ॥

तउ सुण नारि तणइ रंगि, राता छइ जेह ते किम माडिस्यइ ।
धर्म नइ नेह स्त्रीय नही ए राख्यसी ॥
चित हरिणइं दिखाडिस्यइ रूप, हाथ लागइ सीलनइ गमइ ।
पछइ अस्त्रीय भेवइ ते फिरइ संसार ॥ ४३ ॥
जेह नइ पातइ छइ पाप अपार, द्रिब बिहूणा ते फिरइ संसारि ।
कामनइ भोगते किम लहइ ॥
वसत नही २ फूल तबोल, चित्त घरणी रूड़ी नहीं पछइ ।
अछित आदरइ धर्म नि टोल ॥ ४४ ॥
सरिखी जोड़ी नइ सारिखा वेस, भोग भला घर अछइ असेस ।
मिलीय प्रीति आपां बिहुँ जणां ॥
तो समउ को नहीं चतुर सुजाण, गुण बोलीको दम दहइ ।
सोलह सोनउ तुम्हे कांई कर उछाह ॥ ४५ ॥
तउ सुण भव अनंता भंम्या, नव नवी भांति कहीयन उपनी ।
जीवनी मंति विषय कषाय तेरो लण्या ॥
पछइ दोलिउ लीधउ जी माणपवउ जन्म, आरज कुल पाम्यउ नहीं ।
तिहां जीव अजीव घन जाणीयउ मर्म ॥ ४६ ॥

पछइ जइ गुण पामियउ आरज खेत्र, वाहीयउ कुगर तणो उपदेस।
हिंसा महि धर्म जाणीयउ ॥
पछइ पोखीया इन्द्रीयनइ अभिलाष, धर्म हेतइ हिंसा करइ ।
जीव दया धर्म सूत्रनी साखि ॥ ४७ ॥

अरिहत देवनइ सुगुरु सुसाध, जीव दया धर्म अवर उपाधि
जिणवर आणि ते निरमली ॥
पछइ तीन तत्र गृह हृदय मझारि, समकित समकित समउ न राखियउ।
ए धर्म्म कीयउ अंगीकार ॥ ४८ ॥

व्रत पच्चषाण नइ पालीया नेम, महुरत एक सामाइक सीम ।
पड़िकमणउ विहु कालनउ ॥
अठिम चउदसि पोसह साल, मन पसरंता निवारियइ विषय रस ।
छडियउ भव तणउ जाल ॥ ४९ ॥

कामणी जंपइजी वेकर जोड़, इम करतां तुम आवइ खोड़ि ।
अस्त्रीय पर्णी कोई परिहरइ ॥
पछइ लाधीय लिखमीय पाइम ठेलि, कठिन कदागृह काइ करइ ।
मोस्यु तउमाउइ छइ कपटना खेद ॥ ५० ॥

छांडि सामी तुम्हे मन तणा सोग, माणस भव तणा भोगवाउ भोग ।
कांइ भव आलइ नीगमइ ॥
पछइ इण समइ जीजइ जी जोवन तण उलाह, वेस हमारउ देखनइ पछइ ।
किम सहू स्वामी हुए वड़उ दाह दुख ॥ ५१ ॥

आछा चीर नइ चंदन ग्रोल, बीझणेवा उनइरा मतिरोल ।
सुख तंबोलइ पूरीयउ ॥
हेमनि किरण तिहां सीयड़ा उनीर, उन्हालउ रिति रूवड़ी ।
माहरी खंति पूरउ नणदरा वीर ॥ ५२ ॥
आणी पटोली पाटण जाय, नव रंग चूनड़ी ऊपरि चाय ।
रतन जड़ित ताहे बहु रखा ॥
नयण जे काजल मुखिहि तंबोल, माथइ टीकउ नवलावउ ।
सोल सिगार नइ करइ कलोल ॥ ५३ ॥
एहवा बोल मबोलि अयाण, महू नही राखउ ताहरी काण ।
मइ तं छडिय तिण वड़इ ॥
जीवीय जोवन अथिर संसार, धनि कुटंब सहूकार नउ ।
गृह-वास छाडि लेस्यां संजम भार ॥ ५४ ॥

अथिर संसार म राचि ज्योइ कोइ, विषय तणा फल पाड़वा होइ।
ब्रह्मदत्त नरग इहि म पट ॥
वनइए गतीमारी छइ बारह सउकी, सूर्यकतइ प्रिय विष दीयउ।
नरय गया तिहा पाड़इ चीस ॥ ५५ ॥
लोहीय मांस नइ हाडनउ पूर, काम कटक नइ रोम अकूर।
ए नरग निधान नी कोथली ॥
बारह सोत्र वहइ विसि दीसि, असुचि पणइ पिंड पूरीयउ।
पारके पुद्गले करइ ते सोम ॥ ५६ ॥
जे नर हूवा छइ नारि नइ हाथि, सरग न विघन हुवइ तिणिवार।
ए विष हालाहल सभी ॥
नारि वेसास करउ निज कोइ, वेससिया जे विरासीया।
जिणरखित माकंडी सुत जोइ ॥ ५७ ॥
दिवस घणा सची पुननी रास, घडी एक कीजइजी विषय अभ्यासि।
ते फल हेलइ निगमइ ॥
पछइ भगवंत भावी छइ परसो वाणि, कुडरी कतणी परि जोवीय,।
विषय भास विजो चतुर सुजाण ॥ ५८ ॥
नाह मइ छांडी छइ ताहरी आस, नीसरउ नेहनउ कीसउ वेसास।
भरि जोवन परिहरि एण संसार ॥
सगुणउ नही कोइ सा घण सोचा, केम लहइ सांसु रइ।
सुख नहि पीहरी होइ ॥ ५६ ॥
नारनी सहजइ चंचल जाति. जवडा नमइ राव दुपणी साव।
नरग निधान की उरड़ी ॥
भामनी संगति भव तणउ पूखइ, रसी कहइ किम विलसउ।
थापइ पर ···· ·········· दूर ॥ ६० ॥
सउ वन सेवत्री ठाढइ छइ आप, वेगि वोलावउ माहरउ वाप।
ऊदाजी देवरस्यउ कहइ ॥
सासवर सुमरा नी लोपीय कार, रोम भरी वोलइ वोलड़ा।
कुमर मना वउ कई छंडि रगउ प्राणी ॥ ६१ ॥
अनि दुख दाघी हुँ न जाणइ सार, भेदंती तव करइ पुकार।
नवलजरा घणी सभलउ ॥
पछइ वीनती करू बेकर जोड, कुमर मलामइ परिहरी।
कुण अपराव नइ किसी मुझ खोड़ी ॥ ६२ ॥

धर्म माडइ भलराजइ पुत्री, विणज व्यापार नइ घरतणउ सूत्र।
सीख सुणी जिनमत तणी।
छांडीथा अचेतनइ देहरा हाद, कुलमारग इण नोपीयउ।
पछइ जाइ गेसै देवइदास नइ पाट ॥ ६३ ॥

कोप चड्यउ तब भाखणराउ, वइरसो ल्यावीज्यो वेगि बोलाइ।
इण अगराव कीयउ घणउ।
पछइ अस्त्री परणी छाडी विण दोस, एह रीत रूडी नही राव।
दीय घरइ अति घणउ रोस ॥ ६४ ॥

वइरसी कुमर अरायउ तिणि ठाम, वोल बोलइ तिहां भाखर राव।
किसउ कुदाग्रह तूं करइ ॥
छोडि ए व्रत भोगवउ भोग, सेवउ तुम्हारउ कुल वडउ।
विरध पणइ करिय्यो धर्मनी जोग ॥ ६५ ॥

कुमर कहइ सुणउ भाखर राव, अंजली नीर मिण आउखउ जाइ,।
किसउ भरोसउ जीवनउ ॥
पछइ धन जोव्रन छइ अथिर संसार, जरा राखस तीनइ ग्रहइ।
धर्म विण को नहीं अवर आधार ॥ ६६ ॥

भरि जोवन छइ रूप निधान, गुण गरवीनइ चंपक वरिण।
इसी नंदवलि पूतली ॥
पछइ एहवी रम्भा नइ नवि तिजइ कोइ ॥ ६७ ॥

कारिमउ सगपण कारिमो नेह, अवसर आवीया दाखीवइ।
छेह इणि जुगि को कहीनउ नही ॥
पछइ केहनइ माइ नही केहना बाप, अंतकालइ सहू परिहरइ।
नरग पड्यउ दुख भोगवइ अप ॥ ६८ ॥

परि परिना तिहा वोलीया बोल, कुमर न भीजइजो हीयइ निटोल।
तउ राजा तिहा कोपीय ॥
वचन हमारउ करउ प्रमाण, बोधि ले नाखिस्या भाखसी माहि।
हिव किम छूटिस्यउ चतुर सुजाण ॥ ६९ ॥

ताजण ताडणा अति घणी होइ, धरम थकी चित चलइ न तोइ।
तउ रंगा दे स्यउ कहइ ॥
धर्म धुरिधर अछइ सुधीर, साहसीक सावउ आगलउ।
कलि छोडी वस्या महारथी ॥ ७० ॥

राणीय जाइनइ वीनवक राई, धर्म तणी काइ करउ अंतराय ।
ए वयरागइ पूरियन ।।
कोडि परिसहऊंइ तूं दिखइ, धर्म थकी चूकइ नही ।
व्रत लीधउ नवि खंडिसी एह । ७१ ।।

सनमुख सिख दीयउ माखर राउ, वइरसी तउ घरि आपणइ जाइ ।
तो समउ सूरउ कोइ नहीं ।।
अगनि बलइ तिहां जल तणाइ लागिम्हे, एहवा नर दीसइ घणा ।
सीचंता घी चित उलवी आगि ।। ७२ ।।

माइ कहइ वछ काइ दुख देह, निरस आहार तुं दिन दिन लेइ ।
विगइ सहू नइ परिहरी ।।
अति भणो माडिउ तइ हिवइ वाद, समभावउ समझइ नही ।
सरल पणइ अछइ धर्मनी आदि ।। ७३ ।।

कुमर करइ जब सरस आहार, चित चिंतवइ तव हुवइ विकार ।
तउ आतापण अति करइ ।।
उन्ही वेलू अनइ अगनि नइ वान, सूरत पइ सिरि आकरउ ।
इण परि भाजइ छइ मयण नउ माण ।। ७४ ।।

तप करि सोखीछइ आपणी देह, लोहीय मांस नइ हाडनउ नेह ।
विषय तणा वल भाजियउ ।
पछइ साम्हो उठियउ सिंघ सांसर, समर तणी घड़ि भाजिवा ।
पछइ स्त्री भरतार रहइ एक ठाम ।। ७५ ।।

तम्हरा मन तणी चालण हार, वचन तुम्हारउ हुँ करउ प्रमाण ।
तुम्हां विण अवर न वालहउ ।।
पछइ पहुडवड़ीट पडी देवी नइ चालती पाव, इणि पर तुम्ह सेवा करूं ।
पछइ विनय वहंती प्राकिम जाइ ।। ७६ ।।

नयण ले नीर झरइ असराल, जाणि करि उलहस्यउ पावस काल ।
चातक जिम प्रिय २ करइ ।।
श्रावक श्रावको रीस नइ रोस, पूरब करम छइ माहरो ।
पछइ दुख कीधा हुँ धउ तुम दोस ।। ७७ ।।
पछइ विपइ तणा किम किया संयोग, कइ सखी भोगव्य अनरथ नइ भोगि ।
कइ कीधा सील नी खंडणी ।।
पछइ सभी केतउ सीलनउ करिस उचार, तुम्हारा चारित लीधा थकी पछइ ।
षट मासे मुझ संजम भार ।। ७८ ।।

पछइ विषइ नइ वेरसी एकइ खेत्र, जुद्ध करी तव मंडीयउ खेत्र।
विड्ध बोलीधो आपणी ॥
पछइ व्यूह गति पाहि जीव सले छजेह; तिव सवरत छइ माहरो।
पछइ मयण भणे जीता विण देह ॥ ७६ ॥

पछइ रह २ मयण तूपरो आयाणि, मुझ सहिसा मम भडि सु' प्राण।
आदरइ नेम सरीखा सारही।
पछइ जब सामि देव्या प्रति पाल, तूं किमजी पिसु भनइ।
वयरागर जीतोजी मदन भूपाल ॥ ८० ॥

कंदर्प नाठो नइ मूकीय माण, इण समो को नहीं तुझ समाण।
तिलक हार मनावीयो ॥
पछइ श्रावक श्राविका दियइ आसीस, सासण सोभ चड़ावीयउ।
पछइ वयरागर जीविज्यो कोडि वरीस ॥ ८१ ॥

पछइ मात पिता वन पाड़िया मोह, बाहुण भई तिज्या स्त्री तणा भोग।
चित उदासहि वासीयउ ॥
पछइ अहि-निसि मांडवइ धर्म्म सूं प्रीति, रिवतिजी संसार नी।
पछइ वइरागर हुआ छइ पाप भय-भीत ॥ ८२ ॥

सु पछइ नगर नागोर छइ अतिहि अहि ठाण, जनमति गियोगि निरमल न भाण।
मोह तिमर घण फोडिवा ॥
पछइ दह दिसि पसरी धर्म नी ज्योति, जीव रिष्या षट कायनी।
पछइ सहस करणजी महि २ उद्योत ॥ ८३ ॥

पछइ सूत्र सिघात ना अर्थ अपार, श्रावक धर्म नइ सुव आचार।
सीवराजा धर्म सीचीयउ ॥
पाछइ प्रवचन वाण कला समाण, रिष रूपागर उल गय्या।
पछइ धर्म अधंम दीखावे साच ॥ ८४ ॥
पछइ साध सिरोमणि गुणह गंभीर, तेह तणी पाटि दे सागर धीर।
जयवंता दीयइ देसणा ॥
जीव अजीव तर्या भव पार, सत तवहराभी जिम विक्षारता पड़इ।
नवकलपी साधु करइ विहार ॥ ८५ ॥
पछइ मात पिता तसु करइ विचार, अनुमति मागिछइ वयरकुमार।
हूं भागउ भव थकी ॥
पछइ जइ तुम्ह मुझनइ दीयो उपदेस, पाय लागी तुम्ह स्वामिस्यउ।
पछइ जाइ नागीर नइ चारित्र लेसि ॥ ८६ ॥

उनमति मागीयउ वयरकुमार, वेगि पहुता नागोर मझार ।
महा महोत्सव कीधा अति घणा ।।
पछइ लोक मिल्या छइ ठामो ठाम, देवमुनिसर दीपिया ।
पछइ संजम लीवा छइ अति घणाइ माइ ।। ८७ ।।

संजम लीधउ छइ लील विलास, आचारिज राखीया आपणइ पासि ।
सूत्र विचार तिहा जोईया ।।
हिंसा धर्म कीधो निरधार, प्रवचन नी साखइ करइ ।
पछइ वयरागर थापीया आपणइ पाटि ।। ८८ ।।

पछइ सालभेइ किम छांडीया भोग, गय सुकमाल ते अंतगड़ जोइ ।
जिम रिधि छांडीय थावचइ ।।
नंदा सुघन्न उणगार, मेघ कुमर जग जाणियउ ।
पछइ त्पापरि कीधी छइ वयरकुमार ।। ८९ ।।

रास रच्यउ छइ मन तणइ रंगि, भाव धरी चित उलटइ अगि ।
सुगण माणस तुम्हे सांभलउ रास ।
भणता तेहनउ पातिक जाइ, कवियण इण परि उचरइ ।
श्री वयरागर वंदउ मन तणइ भावि ।। ९० ।।

।। इति वयरागर रास सम्पूर्ण ।।



पूज्य सिंघराज गणि भास

नारायण मुनि कृत

॥ राग सांरग, ढाल बिन्दलीनी ॥

श्री जिनवर चरण नमीजइ, गछ नायक गुण गाईजइ, श्री सहगुरु वंदीजइ ।
सिंघराज सुगुरु सुखकारी, प्रगट्या जग पर उपगारी ॥ श्री० ॥ १ ॥

नरभव नो लाहो लीजइ श्री सह०, संघवी वासा कुलिचंद, वीरमदे केरउ नंद ।
थया तेर (१३) वरस ना जाम, वयरागे लीणा ताम ॥ श्री० ॥ २ ॥

शिवजी गणि दीख्या दीधी, अति उत्तम करणी कीधी ॥ श्री० ॥
बहु भण्या गुण्या सुखदाई, संघ माहे सोह सवाई ॥ श्री० ॥ ३ ॥

सवत सतरइ चउवीसइ, आचार्य पद सुजगीस ॥ श्री ॥
गुण छत्तीसे करि गाजइ, तन संपद आठ विराजै ॥ श्री ॥ ४ ॥

शिवजी रिषी पाटि सोहइ, दरिसण मानव मन मोहइ ॥ श्री० ॥
मुख बोलइ सुललित वाणी, भवियण नै अमिय समाणी ॥ श्री० ॥ ५ ॥

वाचइ सिद्धान्त रसाल, विचै हेत जुगति सुविसाल ॥ श्री० ॥
दया दान सील तप दाखइ, वलि भाव भली परि भाखइ ॥ श्री० ॥ ६ ॥

धनि गामागर पुर तेह, जिहा विचरइ मुनिवर एह ॥ श्री ॥
धनि ते नर नारि सुजाण, नित वंदइ सुणै वखाण ॥ श्री ॥ ७ ॥

प्रतिलाभइ सुद्ध आहार, ते सफल करइ अवतार ॥ श्री ॥
जगजीवन पास वजीर, गीतारथ मुनिवर धीर ॥ श्री० ॥ ८ ॥

कुलमडण ए गुरु दीवो, संघराजजी गणि चिरजीवउ ॥ श्री० ॥
लांव्यां मांहि संघ उल्हास, मुनि नारायण कहो भास ॥ श्री ॥ ६ ॥

॥ इति भास संपूर्ण लिखत आ० सोहाग दे आ० सदा पठनार्थ ॥ श्री ॥ ५ ॥



पूज्य धर्म सिंघजी री भास

नेमचंद कृत

प्रणमुं श्री अरिहंतनै, वलि समरू सरसत्ति मुनीसर ।
मन मे हरष धाणी घणो, गुण गाऊं गछपति मुनीसर ।। १ ।।

सद गुर वांदो हे भाव सुं, जंबू गोयम सारिखा, विद्यानो भडांर मुनीसर।
सील सुदरसण जाणीयै, घना जिम व्रतधार मुनीसर ।। स० ।। २ ।।

नगर वीकाणो देस मे, देख्या इधक उल्हास मुनी० ।
मोटा मिंदर मालीया, जगसारै जस वास मुनि० ।। स० ।। ३ ।।

बछावत घन वंस मे, देख्यां इधक सरूप मुनी० ।
मुहतो वसै महिमा निलो, इधकै चित अनूप मुनी० ।। स० ।। ४ ।।

मुहता नैणसी मानिजै, सगलै जस सोभाग मुनी० ।
संग मुखी साहां सिरै, सहु मांहे सिरदार मुनी० ।। स० ।। ५ ।।

माता राजलदे उर धरया, सुत हरत ओकार मुनी० ।
घरइ हुवा वधामणा, गावै मंगलचार मुनी० ।। स० ।। ६ ।।

बाल पणै वैरागीय, सजम लेवा सूर मुनी० ।
बहोतर कला गुण आगला, नित नित चढतै नूर मुनी० ।। ७ ।।

पूज खेमकर्ण पाटवी, दीपै जेम दिणंद मुनी० ।
गच्छ गुजराती गहगरयो, जग में जाण जिणंद मुनी० ।। स० ।। ८ ।।

संवत सतरै सत्यासीयै रेयां नगर चोमास मुनी० ।
निज सेवक नेमो भणै, अविचल पूरो आस मुनी० ।। स० ।। ९ ।।

।। इति श्री पूज्य श्री श्री धर्मसिंघजी री भाव नेमीचंद कीधी ।।



अथ श्री पूज्य :

सुखानंदजी (सुखमलजी) रो सोलो लिख्यते

नेतसी कृत

सकल सोभागी हो सदगुर सेवीयैजी, गुण गीरवो गुणधार ।
मन सुध सेवो हो भवियण भावसुं जी, जंबू जिम व्रतधार ॥ स० ॥ १ ॥
पाच महाव्रत पाले प्रेम सु जी, पांच सुमति प्रतिपाल ।
तीन गुपत करि सदगुर सोभताजी, षट कायां रखवाल ॥ स० । २ ॥
बारे भेदे हो श्री गुर तप करैं जी, गुणे छत्रीस भंडार ।
नव विध ब्रह्मचर्य पाले निरमलोजी, क्षिमा तणो भंडार ॥ स० । ३ ॥
गोतम जिम हो सामी भरिया गुणेजी, बुधे अभयकुमार ।
सील गुणे करि सुदरसण जेहवाजी, किरियागत गणधार ॥ स० ॥ ४ ॥
पाट विराजै हो श्री धर्मसिंह तणैजी, श्री सुखमल सिरताज ।
गुणे आचारे हो रूप जीवा जिसाजी, उत्तम करणी आज ॥ स० ॥ ५ ॥
धन्य पिता हो कुंभकर्ण जाणियै जी, धन्य किस्तूर दे मान
पुत्र रतन जिण कूखे ऊपनाजी, वसुधा मांहि विख्यात ॥ स० ॥ ६ ॥
धन्य धन्य प्रथवी हो धन्य ते हीज धराजी, जिहां विचरे गच्छ-धार ।
अभिय समाणी हो वाणी जे सुणे जी, ते सुख पामे श्रीयकार ॥ स० ॥ ७ ॥
श्रावक आगम सुणि हरखै सहुजी, खरचै वित्त धरी खंत ।
जन्म सफल करि जाणै आपणोजी, परमाणंद पावंत ॥ स० ॥ ८ ॥
अविचल साहिब प्रतपो अम्ह तणोजी, प्रतपो जिम रवि-चंद ।
करजोड़ी हो स्थिवर नेतसी भनैजी, ध्रू जिम अचल मुणिंद ॥ स० ॥ ९ ॥

॥ इति सोलो संपूर्णम् ॥

॥ ढाल–रामचंद के बाग दोय नीबु पाकाजी लो अहो दोय नीबु पाकाजी लो ए देसी ॥

समरूं सरसति मात नैं, गावु गच्छ राया लो, अहो० ।
सदगुर श्री सुखमल्लजी, प्रणमुं नित पाया लो अहो० ॥ १ ॥

साधु समुदाय पट्टावली

वांदु श्री चौवीसमा वर्द्धमान, पामी निर्मल केवल ज्ञान।
शासन-नायक पुरुष प्रधान, मोकुं दीजिये संपति दान ॥ १ ॥

कातिक वदि अमावस जाण, बहोतर वरसां रो आउ प्रमाण।
जगनायक जिन जग के भाण, पावा पुरिये पहुँते निरवाण ॥ २ ॥

वरस बारा पछे गौतम स्वामी, मुगति गए सारे सब काम।
पाटे वीर ने सुधर्म (१) स्वामी, वीस वरस पाछे शिवपुर धाम ॥ ३ ॥

जंबू स्वामी (२) केवल पाय, चौसठ वरस पछे मुगतियें जाय।
प्रभव (३) विराज्या वीर ने पाट, वरस प्रमाण न लिखियो पाट ॥ ४ ॥

श्री सिज्जंभव (४), मनक रा तात, जेहनी जग मे अविचल वात।
वीर थी पचहोतर मे वरस, देवलोक गया साता सरस ॥ ५ ॥

पाट पाचवे (५) जसोभद्र, एक सो अडतालीस वरसे भद्र।
सभूतविजयजी (६) वरस सो एक, उपरा छपन ही अतिरेक ॥ ६ ॥

भद्रबाहुजी (७) सातमे पाट, तेहना कीधा सूत्र ना थाट।
सितर उपरां वरस सो एक, वीर निर्वाण सुं गया देवलोक ॥ ७ ॥

थूलभद्र शीलें (८) अधकाई, दोयसै पनरा वरसां पाछे स्वर्गां जाई।
आर्य (९) महागिरी मुनिराय, नवमें पाट जन सुखदाय ॥ ८ ॥

वीर निर्वाण थी वरस सो दोय, ऊपर अधिका पैंतालीस जोय।
दसमे पाट थया बल (१०) सीह, दोयसें असी वरसें अबीह ॥ ९ ॥

शान्ताचारज ११ इग्यार मे जाण, तीनसै छतीस हि वरस प्रमाण।
१२ श्यामाचार्य युग-प्रधान, पन्नवणा ना कर्त्ता जाण ॥ १० ॥

तीन सै बहोत्तर वरसां सीम, वीर वचनां तणी साधी नीम।
तेरमें सांडलाचारज जाण, च्यारसय षट वरसा रो माण ॥ ११ ॥

जिनधर्म सूरि साधु महंत(१४)च्यार सै चौपन वरसा जंत।
च्यारसै सित्तरै वरसां माण, संवत चलायो वहु गुण जाण ॥ १२ ॥

आर्य समुद्र(१५)पांचसौ आठ, वरसा थयां कीयो धर्म नो ठाठ।
(१६)नदिल वासै पाचसौ अडयाल, वीर वचनां री राखी पाल ॥ १३ ॥

नाग हस्ती छः सौ(१७)चौताल, वीर निर्वाण सु ं कीवो काल।
रेवति जिन वचने परतीति,(१८)अठार सातसय वरसां लगि रीति ॥ १४ ॥

खदिल सातमय सित्तर वर्ष(१९)सीह गिरी(२०)वीस में उत्कर्ष।
आठसौ अठारा वरसां नो मान, तेहने पाट श्रीमंत गुणखान(२१) ॥ १५ ॥

श्री मत आठसौ वरस अड़याल, वीर निर्वाण थी थया दयाल।
नागार्जुन वावीस मे थाय(२२)आठसे पच्यतंर वरस विहाय ॥ १६ ॥

गोविन्द आठसे सितंतरै (२३)भूत दिन(२४)नवसय वैयालीसै खरे।
लोह त्यागी गुरु गुण नहिं राण(२५)नवसय अड़तालीस वरस सुजाण ॥ १७ ॥

दुप गणी दुकर तप कार(२६),नवसौ पचहत्ररि वरस उदार।
श्री देवर्द्धिगणी सूत्र कार(२७)नवसय असीये वरसा सार ॥ १८ ॥

सूत्र लिख्या जिन वचन उद्धार, तेह थी वर्त्तै छै धर्म विचार।
सत्य वचन वादी सतवीस, सरधा शुद्ध जिसा जगदीश ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

उपर वरस वीसे गया, बारा काली थाय।
लोक थया मित्थामती, पिण धर्म रह्यो ठहराय ॥ १ ॥

सुध श्रद्धा मे परूपणा, नवि छोड़ी मुनिराय।
दुकाल तणी आपद घणी, फरसना मांहि सिदाय ॥ २ ॥

तिणां गण्यां ना नामए पूर्वज लिखिया लेख।
मैं भाखूं तुम सामलो, कहुँ छुं पानो देख ॥ ३ ॥

गुरु चौरासी गच्छ थस्ता, समाचारी मे फेर।
अपणे २ उपाश्रये, श्रावक कीधा हेर ॥ ४ ॥

करामात की केइ किया, श्रावक कुल आचार।
नाम धरावे श्रावगी, सो दीसे विवहार ॥ ५ ॥

श्रद्धा समकित नी हुसे, ते लहसे भवपार।
दुषम आरो पंचमो. दोहिलो संजम भार ॥ ६ ॥

वर्षं प्रमाण तो एहनो, लिखीयो दीसै नांहि।
पर-शासन वर्ते वीरनो, कह्यौ सूत्र भगवती मांहि ॥ ७ ॥

साधु बिना शासन नही, एतो निश्चय जान।
छद्गाण वड़िया जिन कह्या, समायकी शुद्ध ध्यान ॥ ८ ॥

॥ ढाल-२ हिरण्य गर्भ राजा ए दशी ॥

वीर भद्र शंकर भद्रजी, जसभद्र ने वीर सेण।
निरियामसेण मुनि जससेण गुणसेण ॥
हरखसेण जयसेणजी, जीवरक्षक जगमाल।
देव ऋषि भीमसेण ऋषि, कर्मसी ऋषि उजमाल ॥ १ ॥

चालीस में पाट राज ऋषीश्वर सार।
देवसेण शंकरसेण ४२ लक्ष्मी-लाभ गुणधार ४३ ॥
राय ऋषि ४४ पदम ऋषि ४५ हरिशर्म ४६ सुखकार।
कुशलप्रभ कहिये ४६ उमण ऋषि अवधार ४८ ॥ २ ॥

जयसेण ४९ विजा ऋषि ५० देवचंद दिलधार ५१।
सूरसेण ५२ महासिंघजी ५३ महासेण व्रतधार ५४ ॥
जयराज ५५ राजसेणजी ५६ मित्रसेण ५७ विजयसिंह ५८।
शिवराज ५९ लालजी ६० ज्ञानजी ६१ सदा अबीह ॥ ३ ॥

भूना ऋषि ६२ रूपजी ६३ जीव ऋषि ६४ मुनिराय।
तेजराग ६५ कुंवरजी ६६ जीवराज सुखदाय ॥
जींवराज तणा शिष्य धनजी जी धर्म धारी।
तेहना शिष्य रामजी तस शिष श्यामजी सुखकारी ॥ ४ ॥

उदय भाण जी तस शिश एवं परंपराये जाण।
ढुंढ्या नाम वजीयो तेहनो सुणो वखाण ॥ ५ ॥

सवत पनरै-सय अधिक इगतीसे वरस।
वजरंग गच्छ त्यागी लवजी साधु सरस ॥
गुजरात ने लोके ढुंढ्या नाम दरस।
कहिकै बतलाया यां मन मान्यो जस ॥ ६ ॥
लवजी शिष सोमजी कानजी ताराचंद।
जोगराज वालोजी हरिदास अमंद ॥
हरिदासजी विचरिया हरख सुं हिन्दु-सुथान।
पंजाब लाहोरं काल कियो शुभ ध्यान ॥ ७ ॥

हरसायाजी परमुख सीख थया सुविनीत ।
हरीदासजी परंपरा चालै साधुनी रीत ॥
धर्मदासजी गुज़राती मालव देसे आय ।
बहुजन समझाथा सौ चेला तस थाय ॥ ८ ॥

धनोजी तसु शिष्य मारवाड़ में आय ।
भूधरजी शिष्य कीधा सांचा सूत्र भणाय ॥
भूधरजी रा शिष्य च्यार थया सुविशेष ।
रघुपत ने जयतसी जयमलजी श्री कुशलेश ॥ ९ ॥

रघुपति शिष भीषम सरधा थई विपरीत ।
भीषम मत चाल्यो छोड़ी दान दया री रीत ॥
हिवे संवत पनरासी छासटें नगर पीपाड़ ।
तेजराजी रा शिष्य छ थया करणीधार ॥ १० ॥

सरधाने परूपणा गुरु नी पाकी धारी ।
संजमी थई विचर्या करणी दुकर-कारी ॥
१अमीपाल २मयपाल ३हरजी ने ४जीवराज ।
५गिरधर ने ६हरोजी ए षट साधु सकाज ॥ ११ ॥

जीवराज महाऋषि तस शिष धनजी सामी ।
लालचन्दजी दूजा ते पण हुवा जाग में नामी ॥
धनजी शिष रामजी तस शिष अमरेश ।
लालचन्दजी तणा शिष दीपचन्द सुविशेष ॥ १२ ॥

धनजी तणा शिष बालचन्द कहिवाय ।
शीतलजी तास शिष मेवाड़े विचराय ॥
धनजी शिष्य सामोजी हरकिसन तस सीस ।
कुरु देसे विचरिया संजम थाय जगीस ॥ १३ ॥

धनजी रा शिष्य विसनोजी वैरागी ।
मनजी जी तास शिष्य तस शिष्य नथमलजी गुण राजी ।
हरजी जी तणा शिष गुलाबचन्द गुण धाम ।
फरसराम खेतसी हाडोती विश्राम ॥ १४ ॥
गिरधरजी रा शिष मेवाड़े, बहु विचरंत ।
दयालजी पीथोजी, छोटो पीथोजी संत ॥
सर्व बावीस नीं संज्ञा सुणियें छै साक्षात
सरधाणे साचा दया धरम दिखात ॥ १५ ॥

हिंसा धर्म न माने सरधा परूपणा सार ।
करणी मे धोचा ए छदमस्थ विन्हार ॥
जीत आचार बतावे तो नही दूषण कोय ।
केवली ने भोलावें तो भी आराधक होय ॥ १६ ॥

अपणो मत थापे नाम केवली नो लेवे ।
ते भारी करमी परभव में दुख वेवें ॥
ए साघु पाटावली पढे सुणे नर नारि ।
सबही सुख पायें दुरगति दूर निवारि ॥ १७ ॥

॥ इति श्री महाबीशन् साधु समुदाय पट्टावली संपूर्णम् ॥



श्री पूज्यजी श्री मनजी को सज्झाय

॥ ढाल–छकाया री ॥

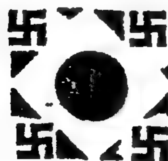
गुणघर लागु जी पाया रे जी पुज्यजी पुनी सारघ ही मातायस्या जी ॥ जीणराय ॥१॥
बुघ देज्यो मुझ माय २ जी पुज्यजी गुण गाउ गीरयाँ तणा ॥ जी. ॥ २ ॥
सर जोधाणा इगाय जी पु. गाव चोकड़ी दीपतो ॥ जी. ॥ ३ ॥
भसजीम वक जीण लोकजी पु. जीवराजैजी सुखीया भस ॥ जी. ॥ ४ ॥
जीवादेजी तस घरी नारी २ पु. तास कुखल्या ऊपन्या ॥ जी. ॥ ५ ॥
समत पच्याणवांरे सालै जी पु. पुतर रतन जीण जनमीया ॥ जी. ॥ ६ ॥
पुन्ये उदकरे आय जी पु. गुर बीसनाजी पधारीया ॥ जी. ॥ ७ ॥
मनजी जी बंदण जाय २ जी पु. वाणी सुणी बरागीया ॥ जी ॥ ८ ॥
बरस तेरा उनमाने जी पु पाच महाव्रत आदरया ॥ जी. ॥ ९ ॥
घन थारो अवतार २ जी पु. घनजी श्री बीसनाजी गुर मिल्या ॥ जी. ॥ १० ॥
समत ब···· ·········ला रसाल जी पु. पुज्य घनजी जी सु आय मिल्या जी. ॥११॥
धिनोजी कीयो भरपुरे जी पु. भणेजी गुणी पीडत हुवा ॥ जी. ॥ १२ ॥
करता उग्र वीहार २ जी पु. गावा तो नगरां विचरता जी मुनीराय ॥ १३ ॥
ग्यान रो कीयो अदोत जी पु. घणा जी जीवा ने प्रतबोदीयाजी ॥ जी. ॥ १४ ॥
तीनु ही गुपते नीध्यान २ जी पु. पांच सुमते सदा शोभताजी जी. ॥ १५ ॥
छकाया रिखपाल २ जी पु. पाप अठारा टालीया जी ॥ जी. ॥ १६ ॥
सूरवीर गुण खाण २ जी पु. गुण सताइस सोभता जी ॥ जी. ॥ १७ ॥
लीयो नीरदोषण आहार २ जी पु. दोष बयालीस टालताजी ॥ जी. ॥ १८ ॥
बतीस आगम रा जी जाण २ जी पु. समत परमत ओलख्योजी ॥ जी. ॥ १९ ॥
बीकानेरे करी नें चौमास २ जी पु भागचन्दजी आग पधारीया जी ॥जी.॥ २० ॥

थानेकरो कीयो जी वीचार २ जी पु. धर्मचन्दजी देनी पली आगरया जी ॥जी.॥२१॥
समत नीनाणु वार साले २ जी पु. जैपुर नगर पधारिया जी ॥ जी. । २२ ॥
भाया बाया हरख अपार २ जी पु. भला ही पधारया जैपुर सरमें जी ॥जी ॥ २३ ॥
वांचै पूज्यजी सरसै वखाण २ जी पु. कंठे वीराजै सुरसुती जी ॥ जी. ॥ २४ ॥
समत छठारार साले २ जी पु जैन धर्म परीसो हुवो जी ॥ जी ॥ २५ ॥
रही थारा संजम री लाज २ पु. बागा म वासो थे भर्यो जी ॥ जी. ॥ २६ ॥
थांक पुने प्रसादे २ जी पु. राजा रामसींग साता दीइ जी ॥ जी. ॥ २७ ॥
सया जी परीसा अनेक २ जी पु. धरम ध्यान डीडता रह्या जी ॥ जी. ॥ २८ ॥
रह्या पुज्यजी च्यारुजी मास जी पु. भायो प्रसरामजी वीनत्र जी ॥जी.॥ २९ ॥
पधारो पुजै जैपुर माही जी पु. जैन धर्म थीर राखीयो जी ॥ जी. ॥ ३० ॥
पधार्या पुजसी जैपुर माही जी पु जैन धरम थीरचा हुई जी ॥ जी. ॥ ३१ ॥
धर्म रो घणो जी अदोत २ जी पु. चौसंघ मे आणंद हुवाजी ॥ जी. ॥ ३२ ॥
सुत्ररां रा घणाजी भंडार जी पु सीख सीषणी न सतोषीया जी ॥ जी. ॥ ३३ ॥
घणा जीवा प्रतपालजी पु. सुत्र वंचाया वो घणाजी ॥ जी. ॥ ३४ ॥
नों बाड़े व्रत वीरमचार जी पु सील संजम करी दीपताजी ॥ जी. ॥ ३५ ॥
काती सुद तीजै न सेष जी पु अरथ देता वेदना उपनी ॥ जी. ॥ ३६ ।
उलटी वेदन अपार जी पु. तीन दिवस वेदन रही जी ॥ जी. ॥ ३७ ॥
खुद्या नही लागी लीगार जी पु. संथारा रो सजै कीयो जी । जी. ॥ ३८ ॥
सुकर पचं अधराते जी पु. स्वामी जी ओसर देखीयो जी ॥ जी ॥ ३९ ॥
पढचा पुरब दीसे आप जी पु. स्वामी जी सथारो करावोयो जी ॥ जी. ॥ ४० ॥
जावो जीव तीभीचार जी पु. च्यारे दीवोस सथारो रह्या जी ॥ जी. ॥ ४१ ॥
रह्यो नवकार नो ध्यान पु० मुखसु बारू बार उचरो जी ॥ जी. ॥ ४२ ॥
सयारा रो घणोजी अदोत जी पु धन धन हुवा च्यारू खुट मैं जी ॥ जी. ॥ ४३ ॥
दरसण को अधको जी चाव जी पु. भाया बायां लीधी आखड़ी ॥ जी ॥ ४४ ॥
एक पहर चौवीहार जी पु अंत समै साता घणी जी ॥ जी ॥ ४५ ॥
अंत समै तीणवार जी पु सहसैथ मुखपतीय सवारता । जी ॥ ४६ ।
नमी जी मंगलवार जी पु. दीन साढ पहर आइयो जी ॥ जी. ॥ ४७ ॥
पता पुजजी अमर वीभाग जी पु. चौसठ वरस संजम पालीयो ॥ जी. ॥ ४८ ॥

तीनु व थीवर सुजाण-जी पु. वरस अठंतर सफाला हुग्रा ।। जी. ।। ४६ ।।
सीष थारा घणां जी वनीत जी पु. स्वामी नाथूराम जी दीपता ।। जी. ।। ५० ।।
वीनोजी कीयो भरपूर जी पु. वीयावच कर लावो लियो ।। जी. ।। ५१ ।।
कदेयन लोपीजी कार जी पु. कलप वीरष ज्युं आराधीया ।। जी ।। ५२ ।।
धन थारी सीषणी जी सार जी पु. म्हाकंवर जी मोटी सती जी ।। जी. ।। ५३ ।
बैठा थारा चरणा रे पास जी पु. सुत्र सुणाय सरणा दीया जी ।। जी० ।। ५४ ।।
धन थाको अवतार जी पु. सिष सीषणी आसा दीपता जी ।। जी. ।। ५५ ।।
समत उगणीस्या रे साली जी पु. मगसर बुद सातमली जी ।। जी. ।। ५६ ।।
वार सही सोमवार जी पु. जैपुर नगर भखाणीया जी ।। जी. ।। ५७ ।।
बाईजी सरूपा जैता साथे जी पु. दोन्यां तो मिले गुण गाइया जी ।। जी. ।। ५८ ।।
हुं छुं थारा चरणारी दास २ जी पु. थांरा गुण सु म्हारो मन रंजयो ।। जी. ।। ५६ ।।
पूजजी रा गुण छै अनेक जी पु बुद सारू गुण गायया जी ।। जी ।। ६० ।।
आदको ओछोजी कवाय जी पु, मीछया दोषण होज्यो तीहनो ।। जी. ।। ६१ ।।
वरत्यो छै जी जै जैकार जी पु. आनंद उदत उगम भयो ।। जी. ।। ६२ ।।

।। इति श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री पुज्यजी की सीइज्या समतं ।।

।। लिखत बाई सरुपां श्री श्री श्री श्री पुज्यजी जी श्री श्री श्री श्री श्री म्हासती जी री चेली । लिखतु सवाई जैपर मध्ये ।। श्री श्री श्री ।।



पूज्य श्री नाथूरामजी रो चउढालीयो

कवियरण कृत

शान्ति जिनेसर समरियै, शांति सदा सुखकार ।
विघन निवारण जगत मे, अड़वडियां आधार ॥ १ ॥

अहनिशि प्रभु ने ध्याइयै, मन वच दृढ करि काय ।
इह भव परभव सुख हुवै, भव ना पातिक जाय ॥ २ ॥

धन धन ए प्रभु सोलमो, संत सुधारण काज ।
मन वंछित फल पूरवै, आपै शिव नो राज ॥ ३ ॥

वरदाई श्रुत देवता, आपे अविरल वाण ।
गुणवंत ना गुण गावतां, थायै जनम प्रमाण ॥ ४ ॥

पंचम आरै भरत में, नाथूरामजी मुनिराय ।
किण विध संजम आदर्यो, ते सुणज्यो चितलाय ॥ ५ ॥

॥ ढाल--सोरठ देश मझार ए देशी ॥

जंबू द्वीप मझार, भरत क्षेत्र सुखकार वाला रे ।
तिण माहे देश ढुंढाहड़ दीपतो ॥ १ ॥

देश वड़ो श्रीकार, ऋद्धि तणो भंडार वाला रे ।
नगरी पचार अतिरलिया मणी ॥ २ ॥

लोक वसै तिण मांहि, सुखिया मन उछाह वाला रे ।
सेठ सेनापति मंत्रवी अति भलारि ॥ ३ ॥

माने जिनवर आण, व्रतधारी गुण खाण, वाला रे ।
साधु नी सेवा नित प्रति साचवै ॥ ४ ॥

तिण नगरी रूपचन्द, रूपे पूनम रो चन्द, वाला रे ।
घरणी तेहनें रूपादे भली ॥ ५ ॥

वड़ जातीयें कहाय, सहू श्रावगी मन भाय, वाला रे ।
पूरव पुण्यें सेठ सुख भोगवे ॥ ६ ॥

नारी उदर थई आस, पूरण थया नवमास, वाला रे ।
सुस…… …… पुत्र जनमीयो ॥ ७ ॥

न्याती गोत्र मीली ताम, भूवा आवी तिण ठाम, वाला रे ।
नाम दियो नाथूरामजी ॥ ८ ॥

बालक वधतो जाय, बीज चंद्रमा कहाय, वाला रे ।
अनुक्रमे वर्ष थयो हिवे आठनो ॥ ९ ॥

भणावा मूक्यो पोसाल, पढ़ियो बालक ततकाल, वाला रे ।
बहु विद्या इम बालक सीखवी ॥ १० ।

सहु बालक सिरदार, बुद्धि तणो भण्डार, वाला रे ।
ईण पर वरस तेरमो आवियो ॥ ११ ॥

व्यवसाये दिन जाय, काल व्यतिक्रम थाय, वाला रे ।
पहली ढालज इम ढलती कही ॥ १२ ॥

॥ दूहा ॥

इण अवसर मुनिरायजी, विचरंता तिणवार ।
मनजी पूज पधारिया, नगरी पचार मझार ॥ १ ॥

परषद आवी वांदवा, सहू मिलै नर नार ।
रूपचंद घरणी सहित, साथे फरजन सार ॥ २ ॥

दीधी तीन प्रदिक्षणा, लुलि लुलि लागा पाय ।
साधु नो दर्शन देखतां, आणंद अंग न माय ॥ ३ ॥

आज दिवस भल ऊगीयो, दूधे बूठा मेह ।
मनना मनोरथ सहू फल्या, इण मे नही संदेह ॥ ४ ॥

मनजी देवे देशना, मीठी अमृत वाणि ।
जेहवी साकर सेलड़ी, सुणतां परम कल्याण ॥ ५ ॥

॥ ढाल-२ वधावानी दशी ॥

देशना सुणि अभिराम हो गुण ना रागी, रूपचंद सेठनो डीकरो वीनवे ।
मुझ हियड़ै तुम वाणी हो गुणना रागी, भीजी भेदाणी हो तुम्हनें कहुँ हिवे ॥ १ ॥

धन्य पिता तुम्ह कहियै हो गुणना रागी, धन तुम मायड़ी जीण कूखे जनमिया ।
चारित्र पात्र जिहान हो गुणना रागी, मन वच काया मुनिवर वस किया ॥ २ ॥

अष्ट प्रवचन धारो हो गुणना रागी, दश विधयनि धर्म मुनिवर आदरचो ।
नव विध ब्रह्मचर्य धारी हो गुणना रागी, उत्कृष्टो तप पूजजी मन धरचो ॥ ३ ॥

क्रोध मान माया लोभ हो गुणना रागी, च्यारे कषाय छंडी क्षिमा आदरी ।
आठे मद सहु जीता हो गुणना रागी, दोष रहित मुनिवर गउ-गोचरी ॥ ४ ॥

पूजजी री जाऊं बलिहारी हो गुणना रागी, तुम गुण कहता पार आवै नही ।
एक करूं अरदास हो गुणना रागी, सांभलजो पूज मुझ मन ए सही ॥ ५ ॥

समकित रतन उदार हो गुणना रागी, आपीजे मुझ सीलनो आखड़ी ।
जाव जीव ब्रह्मचार हो गुणना रागी, कद ही न छंडूं हो हीरानी गांठड़ी ॥ ६ ॥

सगलीं परषदा मांहि हो गुणना रागी, नाथूराम जी ब्रह्मव्रत धारियो ।
सहु जन देवै स्याबाश हो गुणना रागी, दुक्कर व्रत ए बालक भल लीयो ॥ ७ ॥

वंदी गुरु जीना पाय हो गुणना रागी, आपणें गेह आया मननी रली ।
सामायक नित नेम हो गुणना रागी, मात पिता नी हो सेवा करै वलि वलि ॥ ८ ॥

सामायक नित नेम हो गुणना रागी, मात पिता परलोक सिधाविया ।
कारज कर भली रीत हो गुणना रागी, लौकिक जसना नगारा घुराविया ॥ ९ ॥

मोह तणी गति भारी हो गुणना रागी, सितर कोडा कोड़ी नी थिति कही ।
धन जे जीता मोह, फंद हो गुणना रागी, इम मन चिंतवे नाथूरामजी सही ॥ १० ॥

छंडूं तृण जिम आथ हो गुणना रागी, अहिल गमे छै हो मुझ दीह रातड़ी ।
ए संसार असार हो गुणना रागी, धर्म विहूणी हो लेखै किम घड़ी ॥ ११ ॥

हिवै लेस्यू संयम भारहो गुणना रागी, मनजी पूज्य हो विचरै मरुधरै ।
बीकानेर शहीजै हो गुणना रागी, नाथूरामजी आवै तिण अवसरै ॥ १२ ॥

बीजी ढाल रसाल हो, गुणना रागी, साभलजो भविजन उलट धरी ।
छंडी विकथा प्रमाद हो गुणना रागी, कवियण जुगते ए जोडज करी ॥ १३ ॥

॥ दूहा ॥

ग्राम नगर पुर लंघता, निरखै बीकानेर ।
मन मे अति हरखित थयो, गुरुजी ने वांदू सवेर ॥ १ ॥

हाथ जोड़ि वंदना करी, बैठा सीस नमाय ।
सदगुरु नी सुणि देशना, आणद अंग न माय ॥ २ ॥

मुनिवर सुणज्यो वातड़ी, तुम्ह नै कहुं कर जोड ।
भवसागर ए बीहा मणो, संयम लेवा मन कोड़ ॥ ३ ॥

॥ ढाल-३ वना रा गीत नी ॥

थे छो पूज जी गुणां री जी खान २ मुझने तारी जै ।
हाजी मुनि संजम आपिये जी ॥ म्हांरा राज ॥
गुरु जी थे परम दयाल २ महिर करीने ।
हांजी मुनिचरणे राखिये जी ॥ म्हां० ॥ १ ॥

कहुं छु पूजजी चरणारो दास (२) शरण तुम्हारै ।
हाजी मुनि हूं हिवै आवियो जी ॥ म्हा० ॥
मुझ मन साधुजी नो वेस (२) लगन लगी छै ।
हाजी मुनि चितडो उमाहियो जी ॥ म्हां० ॥ २ ॥

नित प्रति सारूं तुम्ह सेव (२) वयण न लोपूं ।
हाजी मुनि कदही आपरो जी ॥ म्हा० ॥
अरज करूं जी वारु वार (२) ढील न करीजे ।
हाजि पूज इण ही बात रो जी ॥ म्हा० ॥ ३ ॥

मनजी पूज अवसर जाण (२) दृढ मत देखी ।
हांजी मुनि सहु संघ ने कहै जी ॥ म्हां० ॥
तिण अवसर तिण वार (२) उदेचन्द बाठये ।
हाजी मुनि महोच्छव करावियो जी ॥ म्हां० ॥ ४ ॥

घुड़ला रे घूघर माल (२) हसती सिणगारै ।
हाजी मुनि सखरा जुगति सु जी ॥ म्हा० ॥
रथ पायक सझ कराय (२) नर नारी आवै ।
हांजी मुनि बहुला भाव सु जी ॥ म्हा० ॥ ५ ॥

वाजित्र विविध प्रकार (२) गीतड़ला गवीजै ।
हांजी मुनि चढ़ता भाव राजी ॥ म्हां० ॥
सदगुरु विराज्या छै वाग (२) बहु समुदाये ।
हाजी मुनि आवै तिहां पाधरा जा ॥ म्हा० ॥ ६ ॥

सदगुरु प्रणमै जी पाय (२) वंदना करी ने ।
हाजी मुनि नाथूरामजी कहै जी ॥ म्हां० ॥
दीजे गुरुजी दीक्षा वड़ वेग (२) संघ नी साखै तो ।
हाजी मनी संयम ग्रहे जी ॥ म्हां० ॥ ७ ॥

सतरै सईकारै वर्ष (२) महीनो कही जै ।
हांजी वाला मृगशिर मास नो जी ॥ म्हां० ॥

शुभ वेला शुभ तिथवार (२) चढत परिणामे ।
हांजी मुनि वेस लियो साधरो जी ॥ म्हां० ॥ ८ ॥

सदगुरु दीनो माथे हाथ (२) सचित्त त्यागी जै ।
हांजी , मुनि पातिक छांडीयें जी ॥ म्हां० ॥
पच महाव्रत भार (२) षट काया जीवा ।
हांजी मुनि अभयदान दीजियें जी ॥ म्हां० ॥ ८ ॥

हिवे मनजी करैय विहार (२) अंग तो इग्यारें ।
हाजी मुनि सीखें सदा जी ॥ म्हा० ॥
मुनिवर बुद्धि ना भंडार (२) सदगुरु संगे ।
हांजी मुनि आगम सीखें तदा जी ॥ म्हां० ॥ १० ॥

तीजी ए ढाल वखाण (२) सरस संवधे ।
हांजी मुनि जुगते ए करी जी ॥ म्हां० ॥
सुणतां ए मुनिवर वात (२) चितडो उमंगे ।
हांजी मुनिव्रत ए आदरी जी ॥ म्हां० ॥ ११ ॥

॥ दूहा ॥

मनजी पूज रे पाटवी, शिष्य वडो सुविनीत ।
गुरु नो विनय साचवे, सहु जन सेती प्रीति ॥ १ ॥

तप किरिया करता वली, देता बहु उपदेश ।
जिनवर प्रवचन पालता, छाडी सर्व कलेश ॥ २ ॥

देश नगर ने ग्राम मे, विचरंता मुनिराय ।
भव्य जीव निस्तारता, तरण तारण ऋषिराय ॥ ३ ॥

॥ ढाल-४ सीयालो हे भले आवीयो ए देशी ॥

मनजी पूज रे पाटवी सखरा सोहे हो नाथूरामजी आज कै ।
रूप क्रांति दीपें घणी वाणी ताहरी हो जाणे मेघ नो गाज के ॥ १ ॥

पूजजी रै जाऊ वाला वारणे ॥ आंकणी ॥
साध अनें वलि साधवी समुदाय हो पूजजी रे बहु थाट कै ।
संघ मांहे अति दीपता बड़ भागी हो पूज मनजी रै पाटके ॥ पू. । २ ॥

पूज्य जी कै शिष्य सारा सोहता, केइक तपसी हो घणा ज्ञान भंडार कै ।
शिष्य इग्याराही सोहता कोइ करै हो क्षिमां गुण धार कै ॥ पू. ॥ ३ ॥

जांरै तो पाटे विराजिया माखरा सोहै हो श्री लक्ष्मीचंदजी इह कै।
अमरचंदजी साहवरामजी रुघपति तपसी हो सोहै शिष्य कै॥ पू.।४॥

शिष्य शाखा करि सोमता, दीपै छै ढोलो हो भलो कच्छा आज के।
आरज्या तो पूजजी के दीपतां, सांहा मतीयां आत्मा काज के॥ पू.॥ ५॥

घणा वरस संजम पालियो, काया भूसर हो तपस्या कीधी जाणकै।
संवत १८४६ अठारै गुणचास नैं. स्वामी धारै हो अणसण पचखाण कै। पू.। ६।

क ति वदि दशमी दिनैं, पूज घुरिया हो वाला जीत निसाण कै।
संथारो पोहर दोय नो, स्वामी पहुँता हो वाला अमर विमाण कै॥ पू.॥ ७॥

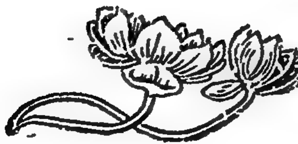
वरस अठारा में धारीयो, संयम पाल्यो हो स्वामी वरस पचास कै।
आऊखो अड़सट वरस नो, मैं गाया हो स्वामी हर्ष उल्लासकै॥ पू.॥ ८॥

धन रूपचंदजी नो डीकरो, धन माता हो रूपादे सुजाणकै।
धन धन वंस वड़जात नै साधु मोटा हो ज्यारो नाव प्रमाणकै॥ पू.॥ ९॥

पूज्य तणा गुण गाइया, सत्तेयें हो वाला च्यारेह ढालकै।
सुणस्यै जे नर वांचस्यै, घर घर थास्यै हो वाला मंगल मालकै॥ पू। १०॥

सरस कथा मुनिराजनी, कर जोडि हो कहै कवियण एमकै।
आछो अधिको जे भाषियो, मिथ्या दुक्कड़ हो मुझनै होज्यो प्रेमकै॥ पू.॥ ११॥

॥ इति श्री नाथूरामजी रो चउढा लीयो सम्पूर्णम्॥



पूज्य श्री हरजीमलजी की सज्झाय

वसंत कृत

॥ दूहा ॥

चरम जणेसर वीनउं, लागु गणेधर पाय।
साध सवे कु परणमु, गुण गाउ चितलाय ॥ १ ॥

कैर अणसण आराधना, त्रिविधि जीव खमाय।
घणा करम कीया पातला, श्री हरजीमल ऋषराय ॥ २ ॥

॥ ढाल—पूज्य-पधारोजी नगरी अम-तणी ए देसी ॥

राजमहल म जी थे जनमीया, सरावगी कुल अवतार मुनीसर।
पिता रूपचन्दजी के घर अवतरया, कुख रूपादेजी मांइ ॥ मुनी. ॥
उतकसटीजी करणी थे करी ॥ १ ॥

गोधा जाति कहीजे थाहरी, थे आया कोट माहि। मु०।
धरम पायो जी श्री जिनराज को, सरावग का वरत धार ॥ मु० ॥ २ ॥

सीखी सामाइक मन आणद थयो, थे धारी लीधी छकाय। मु०।
हाड हाड की जी मिजी रची गई, कोई पुण्य तणै परसाद। मु० ॥ मु० ॥ ३ ॥

उमर हुई जी वरस छत्तीस(३६)की, थे आया सांगानेर। मु०।
वाणी सुणी पूज्य मनजी जी गुर तणी, मन उपज्यो वैराग ॥ मु० ॥ ४ ॥

हाथ जोडी नै जी ऊभा रह्या, लीनु संजम भार। मु०।
समत सतरा सै साल पच्यसीये,(१७८५)जेठ महीना मांहि ॥ मु० ॥ ५ ॥

पांच महाव्रत जी थे आदरया, पालै पांच आचार। मु०।
सुमते गुप्ती नी जी बहुली खपकरि, गुण सत्ताईस भडार ॥ मु० ॥ ६ ॥

क्रोध मान घणो कीयो पतलो, विगथा दीनी निवार। मु०।
सूत्र सिद्धांत जी ऊपर चित धर्यो, दिन दिन चढता भाव ॥ मु० ॥ ७ ॥

माया लोभ ने जी थे वस कीयो, ज्ञान ज ध्यान लगाय। मु०।
तप तप्या जी थे घणा दीपता, कहता न आवै पार ॥ मु० ॥ ८ ॥

गामां नगरां माहि विचरता, करता उग्र विहार। मु०।
संवत अठारा सै साल उगणीस(१८१९)के, थे कीयो बीकानेर चौमास ॥मु०॥९॥

बीकानेर सूं जी थे चालीया, आया जैपुर माही । मु०।
तपस्या करी ने जी करम उडाइया, थां कीया इकतर वास ॥ मु० ॥ १० ॥

सैंतीस(३७)वरसजी संजम पालीयो, उनमान महीना च्यार । मु०।
वेदना उपजी आय सरीर मे, भोजन की रुचि नांहि ॥ मु० ॥ ११ ॥

सिख सीखणी जी घणा सुवनीत छै, पूजी नाथुरामजी विनगत । मु०।
कलप वीरख जेम अरावीया, थाकी सेवा करी भरीपूरी ॥ मु० ॥ १२ ॥

॥ दूहा ॥

परथम ढालपुरी थई, संजम गुण इधकार।
ओरुं भी कुछी कहण कुं, मो मन हरीख अपार ॥ १ ॥

किण विध संथारो कीयो, किण विध परठी काय।
किण विधि आलोयण करी, ते सुणज्यो चितलाय ॥ २ ॥

सामी वेदन उपजी भारी, नाथूरामजी एम विचारी।
स्वामी वरीया सथ रा की आई, काया दन दोइय पहली वोसराइ ॥ १ ॥

अब का नही ढील लगाउ, शिष्य सिषण्या नैर बुलाउं।
चचुरविध संघ मिल वेगा आया, साख्य पचा की उच्चरायो ॥ २ ॥

भादरवा बुदी दोजी थिरवारो, परगट कीयो हरजीमलजी संथारो।
पांचु पद न वंदना किद्धी, तीनुं आहार की सोगत लीनी ॥ ३ ॥

मेरा मित्री भाव रखाउ, सरब जीवा जोण खमाओ।
मेरा वैर विरोध सब टलीया, जाई करमा सेती अड़ीया ॥ ४ ॥

स्वामी हुवा जी संथारा क सामा, दिन दिन चढता परणामैं।
अब फलीया मनोरथ माहरा, अब कारज सरणी सारा ॥ ५ ॥

सामी राति दिवस सुख साता, एतो वैठा करै छै वाता।
हूतो मन मैं घणो होस्यूं राजी, चोथा आहार की सोगन आसी ॥ ६ ॥

हरजीमलजी संथारो कीनो, सुणीयो गामा नगरी मझारा।
ए नो चलीया दरसण नै आवै, जान सोगन आप करावै ॥ ७ ॥

व्रत आखडी वेला तेला, ऊपवास हूवा घणेरा ।
माया बायां नै हरख अपारो, स्वामी धन ताहारो अवतारो ॥ ८ ॥

मुन बरस तेहतरी आया, आपणा मुख सु सब नै खमाया ।
स्यामी जिण धरम नै जी दीपायो, मंतो गुण बंतरा गुण गाया ॥ ९ ॥

स्वामी काया सु जोध कीनो, सुमता रूपयो रस पीनो ।
आलोयन दन हूवा तीयारी, यातो मोटी बात विचारी ॥ १० ॥

नवकार मत्र सुणावो, मुन सरण आणी दिरावो ।
सथार पइन्नु बंचावो, मुन सूत्र सिद्धांत सुणावो ॥ ११ ॥

खिमा समसेर सभाइ, अब ज्ञान की ढाल बणाई ।
अब सुमता बाग उठाइ, घोड़ा नाखी दिया रण माही ॥ १२ ॥

ऊनमान महीना अढाइ, ऋष करमां सु करी लड़ाई ।
अब समे पछाड़ी की आई, चोथो आहार दियो वोमराई ॥ १३ ॥

सूवा पहर तणु चोव्याहारो, च्यारु सिघ खडा तिण करो ।
नाडी तूटी न चल खाइ, सरणा देताइ हुचकी आई ॥ १४ ॥

हस छोड चल्यो या काया, मुनीवर देवलोका सिद्धाया ।
संवत अठारा मे साल ब ईस (१८२२) काती बुदी चोद बार दीत । १५ ॥

हरजी मलजी गुण भंडारो, सवाई जपुर नगर मझारो ।
दीन पोण पहर रह्यो सारो, जदी सिद्धी थ ो सथारो ॥ १६ ॥

मोटा मुनीवर नो सरणो चाहु, ब लि गरभा वास न आउ ।
इम बोल वसन वचारी, याकी चरण की बलिहारी ॥ १७ ॥

उछो इधको अ खर कोइ कहिउ, मुन मीछाम दुकडत होई ।
बनणा करूं सिर नामी, मेरी सुणीज्यो श्रीमदर स्यामी ॥ १८ ॥

॥ इति श्री हरजीमलजी की सज्याय सम्पूर्ण ॥

॥ वीकानेर मध्ये लीतं काती सुदी १ संवत १८२७ ॥



तीन टोला में :

भोजराजजी का निष्क-लंक होना

चतर चोमास आइया, तीनु टोला भारी ।
गुण गरवा का खम्या नहीं, जदे आल दीया छै भारी । १ ॥

सामीदास कह हूँ पीडत छु, हुँ राख छइ भारी ।
जदे लोकां मे हुई खुवारो, दोष लगायो भारी ॥ २ ॥

भोजराजजी साचा हूवा, खीमा कीइ छै भारी ।
कुड़ा आल मै देर भोल्या, जिण मारग छै भारी ॥ ३ ॥

साचा सतगुर जाण मै. निरणो कीनो जाय ।
साशा नै साचा कीया, झूठा कै ववी रुषाय ॥ ४ ॥

श्री पूज्यजी नाथूरामजी गुर सायर, छइ भोजराजजी भारी ।
चोथा वरत को कलस चढायो, सगले करी सरदारी ॥ ५ ॥

भाया मलै कर आइया, नीरणो कीधो सारै ।
हाथा दसकत माड ने, पूज्यजी नै जाण्यो भारी ॥ ६ ॥

भाया मिल करै इम कहे, पूज्यजी करो वीहार ।
भोजराज जी साचा हुवा, झूठा हुवा खुवार ॥ ७ ॥

॥ इति ॥



श्री भागचंदजी की सज्झाय

॥ दूहा ॥

चरण कमल सदगुरु तणा, प्रणमुं वे कर जोड़ ।
वुद्धि दीजो मुझ सरसती, वेग करुं हुँ जोड़ ॥ १ ॥

भागचंदजी मुनिवर तणा, गुण गाऊं अतिसार ।
सावधान थई सामलो, आलस अंग नीवार ॥ २ ॥

॥ ढाल-इलायची पुत्र का चोढाल्या की ॥

बुचावास मइं जनमीयाजी, जनम्या रो परमाण जी विरागी ।
धन्य नइ अजवा बाई री कूखि नइ जी, जन्म्यां छै पुत्र रतन जी विरागी ।
भागचन्दजी विरागियाजी ॥ १ ॥

हिमराजजी पिता भलाजी पुत्त लिइ नइ सार जी । वि. ।
बाप बेटो बइहु आवीयाजी, ढोली सहर मझार जी ॥ वि. ॥ २ ॥

पीण परणाम उदास छइ जी, जाण्यो अथिर संसार जी । वि. ।
पिण सदगुरु कोइक मिलइ जी, ल्यों महे संजम भार जी ॥ वि. ॥ ३ ॥

हेमराजजी भागचंदजी आवीया, बिठा छइ वड तलइ हिठ जी । वि ।
जतने सै नानग.ासजी आवीया, पूछइ छइ मत तणी बात जी ॥ वि. ॥ ४ ॥

तब नानगदासजी इम भणइ, चालां हमारे लार जी । वि. ।
गुर मेलु थाने मोटका जी, वेगा लो संजम भार जी ॥ वि. ॥ ५ ॥

हिमराजजी भागचन्दजी ऊठीयाजी, आया पुज पमनजी जी रे पास जी । वि. ।
पूजजी देखी हरखिया जी, पूछइ दीपचदजी ने बात जी ॥ वि. ॥ ६ ॥

वलता दीपचंदजी इम भणइजी, दीखा देवा जोग जी । वि. ।
बाला सा वइ में संजम आदरइजी, भलो मिल्यो सुजोग जी ॥ वि. ॥ ७ ॥

वय अनुमानइ वारै वरस नी जी, लीवो सजम भार जी । वि. ।
पूजजी दिखा दिइ करी जी, कीधो उग्र विहार जी ।। वि. ।। ८ ।।

पांच महाव्रत आदर्‍या जी, पाचु मेर समान जी । वि. ।
पाच सुमति कर सोभताजी, तीन गुपति निवान जी ।। वि. ।। ९ ।।

पाप अठारै टालीया जी, छ काया रख पाल जी । वि. ।
गुण सतावीस सोभता जो, संजम पालै खुमाल जी ।। वि. ।। १० ।।

दोष वयालीस टालनइ जी, ले निरदूषण आहार जी । वि. ।
वावीस परीषह अंग सहइ जी, करि नव-कल्पी विहार जी ।। वि ।। ११ ।।

सूरवीर धीरा घणा जी, सरल सभाववंतजी । वि ।
सीह तणी परइ साहसी जी, भागचंदजी गुणवंत जी ।। वि. ।। १२ ।।

सूत्र सिद्धांत भण्या घणाजी, वाचइ सरस बखाण जी । वि. ।
कंठ विराजइ सरसती जी, बोलइ इमरत्त वाण जी ।। वि. ।। १३ ।।

कुंभ तो वांध्या जल रहइ जी, जल विना कुंभ न होइ जी । वि. ।
ग्यान वांध्या मन रहइ जी, गुरु विना ज्ञान न होइ जी ।। वि. ।। १४ ।।

कागद छोटो गुण घणा जी, मोयते लिखीया न जाय जी । वि. ।
कागद तो विणसइ सही जी, गुण तो विणसइ नाय जी ।। वि. ।। १५ ।।

।। दूहा ।।

प्रथम ढाल पूरी थई, संजम गुण अधिकार ।
पिण आरो गुण कहण को, मन हरख अपार ।। १ ।।

केम संथारो आदर्‍यो, किण पर पहोता पार ।
किण पर कीया खमावणा, तो सुणजो अधिकार ।। २ ।।

।। राग–सारंग तथा मल्हार देसी ।।

जी हो भागचंदजी भागइ वडा जी हो गुण तणा भंडार ।
जी हो ऊनालइ लइ आतापना जी हो वरस सात लगइ सार ।। १ ।।
चतुर नर सुणजो गुण अधिकार ।। आंकणी ।।

जी हो सीयालइ पण आतापना जी हो पछेवड़ी राखी जिण एक ।
जी हो पांच विगइ त्यागण कीयो जी हो वरस पाच विशेष ।। च ।। २ ।।

जी हो सावण भादवइ जाण जी, जी हो पण सरव रस को त्याग ।
जी हो आहार लीयो लुखा भाव सु' जी हो लोल पणो नही लिगार ।। च ।। ३ ।।

जी हो उणो दरी कीधी घणी जी जी हो यथा सगत पचखाण ।
जी हो स्वाजीते तपसी दीसइ घणा जी, अन्नतर थोड़ा जाण ।। च. ।। ४ ।।

जी हो उग्र वीहार कीयो जी हुां, जी हो परसण पूछण आय ।
जी हो जी का सदेह सांमी टालीया जी हो उतर दीघो सार ।। च. ।। ५ ।।

वतीस आगम अवणधाया, जी हो संस्कृत्यादिक आदि ।
जी हो स्वमत परमत ओलखी जी हो, देव गुरा रे पहसाद ।। च. ।। ६ ।।

जो हो वरस गुणचासमो आविया जी हो तव म (न मे) कीधो जी विचार ।
जी हो काज सवारू' हुवै आपणा जी हो संजम लीया माहरो सार ।। च. ।। ७ ।।

जी हो लीखाणा लेखण आददेइ जी हो अटमरण को नेम ।
जी हो वसत्र पात्र आदि देइ जी हो पोतइ राखण को नेम ।। च. ।। ८ ।।

जी हो नाथूरामजी नै भोलाइयोजी जी हो हो थ्यानक केरा भार सरब ।
जी हो गुर गुर भायांरा साख सु' जीहो सीख पोथ भोलाइ ।। च. ।। ९ ।।

जी हो कदाचित आउ वध तो हुवै जी हो भोगवु' पदारथ लेस ।
जी हो जाव जीव निसचो कीयो जी हो ममता नही लवलेश ।। च. ।। १० ।।

बोढ महीना पेहला सही जी हो मुख सु' कहायो जी आप ।
जी हो सरब जीव सु खाम सही जी हो मन नही संताप ।। च. ।। ११ ।।

जी हो श्रावद्धर खमावणा कीयो जीहो सल राख्यो नही जी लगार ।
जी हो आलोइन दी निशल्य हुवा जी हो सूत्त वाचै नो ए सार ।। च. ।। १२ ।।

जी हो मागसर सुदि दशमी दिनइ जी हो दिन रहयो घड़ी दोय ।
जी हो संथारो जद आदर्यो जी हो चउविहार कीयो सोय ।। च. ।। १३ ।।

जी हो साझ पडी दिन आथम्यो जी हो रात अर्द्ध प्रमाण ।
जी हो सामी सथारो सीस ही सीझीयो जी हो पहोता अमर विमाण ।।च ।। १४ ।।

जी हो वरस अड़तीस चारित पालियो जी हो सरब आयु गुण पचास
जी हा काज समारया सामी आपणा जी हो धन जीणानी उरजास । च. । १५ ।

जी हो पूज मनजी जी गुर भला जी हो दीधी दीक्षा जिण सार ।
जी हो गुण कटै ताइ वरणमउ' जी हो गुण रो अंत न पार ।। च. ।। १६ ।।

जी हो नाथूरामजी गुर भाई भला जी हो विनय कियो भरपूर ।
जी हो वेयावच्च नो लाहो लीयो जी हो निश दिन रह्या जी हजूर ॥ च. । १७ ॥

जी हो जीभ एक गुण छइ घणा जी हो मुख सु, कह्या न जाय ।
जी हो सागर में पाणी घणो जी हो घाघर मा न [समाय ॥ च. ॥ १८ ।

जी हो समत अठारै तीड़ोत्तरे जी हो चैत मास मझार ।
जी हो बद छठवार सनीसरे जी हो गुण गाया मैं सार ॥ च. ॥ १९ ॥

॥ इति श्री भागचंदजी की सझाय समत्तं ॥

॥ प्रति–अभय जैन ग्रंथालय, वीकानेर पत्र २ न० ७६५७ पंक्ति १५ प्रति पंक्ति अक्षर ३२ ॥



अथ श्री पूज्य सबलदासजी | रामचन्द्र रचित

॥ दूहा ॥

श्री जिन पंकज प्रणमी करी, वृद्धमान जगि-चन्द।
गौतमादि गणधर नम्या, होवत श्रेष्ट आनन्द ॥ १ ॥

सतगुरु ना गुण वर्णमुं, गुर मोटा महाराज ।
गुर उपगारी परम गुणी, देवे संजम साज ॥ २ ॥

गुर कारीगर सम कह्या, धन्य श्रीपूज्य सबलेश ।
गुण वतिया कथिया जावे नही, कहुँ गुण लवलेश ॥ ३ ॥

गुर मोटा मेरु सम(।), कहता न आवे पार।
गुरु देवना गुण वर्णमुं, सांभलज्यो नर नार ॥ ४ ॥

॥ ढाल-१ अंजिणा ना रास नी देसी ॥

इण जंबूद्वीप ना भरत में, मुरधर देश अति सुखकार तो ।
गढ सुभटपुर दीपतो, चवदेशो गाम चमालीस लार तो ॥ १ ॥

गुणवंत ना गुण साभलो ॥ आंकणी ॥
होजी पिछिम दिसे जी जाणिये, पोकर्ण सहर जाणे प्रसिद्ध तो ।
छतीस पूण तिण मांहे वसे, जाणे हरि-प्रिया वास तिहां हिज किद्ध तो ॥गु॥२॥

तिण माहे श्रेष्टि जी दीपतो, आनन्दरामजी हेतसु नाम तो ।
ओस वंशीजी तसु जानीये, लूणीया जात वणूं अभिराम तो ॥ गु. ॥ ३ ॥

तस घर सुन्दर भारय्या, रूप चातुर्य्य पणो श्रीकार तो ।
पून्यवंत प्राणी हो अवतरयो, तिण उदरे लीयो छै अवतार तो ॥ गु. ॥ ४ ॥

अठारै सौ गुणतिस मे, जन्म्या हे तिज भाद्रव मास तो ।
सुभ घड़ी सुभ मुहुरतें, अति घणो हर्ष हुवो हुलास तो ॥ गु. ॥ ५ ॥

जथा जोग्य महोछव करी, सबलदासजी नामज दिद्ध तो।
मंगल गावे हो गोरड़ी घर साह खरचे हे अति रिद्ध तो ॥ गु. ॥ ६ ॥

॥ दूहा ॥

बालचन्द जिम वधत दिन, तिम वद्धन कुमार।
बोले सुधारस अति घण, कृत्य-पुण्य वहुलार ॥ १ ॥
माता प्रेक्षी रीझवे, लेत बाल उछरंग।
मन हूंस अनि पूरवे, कबहिक लेत उत्तंग ॥ २ ॥

॥ ढाल-२ ईडर आंबा आंबली रे इडर दाडिम दाख-ए देसी ॥

दिने दिन वधे कुमारजो रे, बालक घणुं सुखमाल।
केइक वर्ष निकस्यां थकां रे, मात पिता कियो काल।
चतुर नर सांभलज्यो गुण ग्राम ॥ १ ॥
आप भूवा पासे रहचा रे, वालो विनां रे माय।
भूवा लाडय अति करे रे, तुम्ह भणावानि मन मांहे थाय ॥ च. ॥ २ ॥
जोधांणै संघवी वंश मे रे, भूवा नी परणी बाल ।
भूवा कहे तुम्ह उहा जई भणो रे, आप आया जोधाणै चाल ॥ च. ॥ ३ ॥
जोधाणै आया भणवा भणी रे, सतगुर मिलीयाजी ताम।
पूज्य आसकणंजी ने इम कहे रे, हुं सारसुं म्हारा काम ॥ च. ॥ ४ ॥
मुनीश्वर हुं लेसुं संजम भार ॥
तब मुनीश्वर इम उच्चरे रे, मत करो ढील लिगार।
ओ संसार छे कारमो रे, थे लेवो संजम भार ॥ च ॥ ५ ॥
घणे हठ सु आग्या ग्रही रे, इगतालीसे मिगसर मास।
सुद तीज सजम आदर्यो रे, बूचकलो रियां रे पास ॥ च. ॥ ६ ॥
विनो वियावच नित साचवे रे, गुर ऊपर बहुलो राग।
गुरा री मरजी प्रमाणे रहे रे, भणवा नो घणो लाग ॥ च. ॥ ७ ॥
भणी गुणी पिंडत हुवा रे, गुर आग्या लीधी ताम।
गुर आग्या हुवा थका रे, विचरे गामानु ग्रांम ॥ च. ॥ ८ ॥
मुनीश्वर धन्य धन्य तुम अवतार ॥
घणां चउमासा जुदा किया रे, गाम नगर ने माय।
मिथ्यात्व तिमर मेटचो घणो रे, घणा श्रावक श्राविका थाय ॥ मु. ॥ ९ ॥

जस कीरत महिमा घणी रे, धन्य धन्य करे बहु लोग।
सबलदासजी स्वामी दीपता र, छोडया छता भोग ॥ मु. ॥ १० ॥

समत अठारे बहोतरे रे, पूज्य आसकर्णजी कीधो काल।
स्वाम सबलदासजी ताकीद सु, आया जोधाणै चाल ॥ मु. ॥ ११ ॥

॥ ढाल–३ सुरसागर वरुदे भरयो ए देसी ॥

स्वामि सबलदासजी पधारिया हो मुनिवर जोधाणै रे माय।
नर नारी आगम सुणी हो भवियण, हरखित मन माहे थाय ॥
धन्य धन्य ए मुनि हो पूज्य सबलदासजी अणगार ॥ आंकणी ॥
समत अठारे बहोतरे हो मु० पोस महीने रे माय।
चतुर विध संघ हरख सु हो मु० दीधी चादर ओढाय ॥ ध. ॥ २ ॥

पूज्य दीपे च्यारु संघ मे हो पुजजी, जिम तारा विचै-चन्द।
देखत दरसण आपनो हो मु० ऊपजे परम आनन्द ॥ ध. ॥ ३ ॥

कानि कांनि सु आवी वीनती हो मु० जोवे घणाइ वाट।
आप जावो जिण जायगा हो मु० हुवे घणोइ ज थाट ॥ ध. ॥ ४ ॥

आप बाल ब्रह्मचारी मोटा मुनि हो मु० निर लोभी निग्रथ।
क्रोध मान माया अल्पता हो मु० लीधो साचो पंथ ॥ ध ॥ ५ ॥

सिवभद्र आप जिसा मुनि हो मु० विरला जाणो कोय।
अन्य टोला ना साध साधवी हो मु० कहै वडा उतम पुरस जोय ॥ ध ॥ ६ ॥

॥ दूहा–सोरठो ॥

धू न सु करो वखांण, धर्म कथा कहो भलि।
करे त्याग पचखाण, नर नारी समझै घणा ॥ १ ॥

बहुजन जोवे वाट, पूज्य पधारे विचरता।
हुवे बहुलो थाट, धर्म उद्योत हुवे घणो ॥ २ ॥

॥ ढाल–४ भूंडी रे भूख अभागणी वाला खाणी नाम लाल रे ए देसी ॥

आप उपगार कियो घणो, दीयो घणा ने साज लाल रे।
घणा किया साध साधवी, रह्या धिघ ज्यु गाज लाल रे ॥ १ ॥

पूज्य सबलदासजी मुनि दीपता, गुणां तणो नही पार लाल रे।
आप घणा किया श्रावक श्रविका, आप किया कर्मा नु वार लाल रे। पू ॥२॥

आप कनै साधू दीपता, सब मोत्या नी माल लाल रे ।
विनो वियावच करै आपनो, भक्ति माहे रह्या चाल लाल रे ।। पू. ।। ३ ।।

आप चर्म चोमासो कीयो, तिमरी ग्राम मझार लाल रे ।
चातुर्मासे सुखे रह्या, जोधपुर ने कीधो विहार लाल रे ।। पू. ।। ४ ।।

पाली ना श्रावक श्राविका सांभलीयो छे एम लाल रे ।
पूज्य जोधाणे पधारिया, पाली पधारे नहिं केम लाल रे ।। पू. ।। ५ ।।

पाली सु आवी वीनती, पूज्यजी कीधो विहार लाल रे ।
सामा आया श्रावक श्राविका, पूज्य पधारया पाली मझार लाल रे ।। पू. ।। ६ ।।

चतुर्सिघ राजी हुवा, रह्या महीनो एक लाल रे ।
संाझतनी बांया मिल करी, पाली आई अनेक लाल रे ।। पू. ।। ७ ।।

विनती करे भाव सु, जोड़े दोनु हाथ लाल रे ।
सोझत आप पधारसो, मानो कृपानाथ लाल रे ।। पू ।। ८ ।

विनती बहु कीयां थका, मानि विनती सार लाल रे ।
बैसाख वद ६रस ४वेदनें, आया सोझत मझार लाल रे ।। पू. ।। ६ ।।

आखा तीजरा प्रभातने, विहार करण नो मन लाल रे ।
श्रावक श्राविका घणे हठ सु मनाव्यो अष्टमी नी दिन लाल रे ।। पू. ।। १० ।।

बैसाख सुद प्रथम नम ने, प्रभात ना कीनो आहार लाल रे ।
वखाण कियो माटी धूंन सु, काई असाता नही लिगार लाल रे ।। पू. ।। ११ ।।

आप आथण रा प्रकमणो कियो, पांचसो नि किनि सिझाय लाल रे ।
छोटा चेला ने सिझाय कराय ने, कहे मुग्ध प्रमादी थाव लाल रे ।। पू. ।। १२ ।।

आप सेन घरी सुखे करि, टुक एक पोढया आप लाल रे ।
कहे सिव आप क्यु उठीया, कहै छाति मे किंचित पोड़ा व्याप लाल रे । पू ।१३।

सरव साधु हाजर उभा, छाति दाव रह्या केक लाल रे ।
इतरेक बहु जोर सु, उबासी हुई एक लाल रे ।। पू. ।। १४ ।।

पाणी पाणी डील हुय गयो, सीतल हुय गयो गात लाल रे ।
आप उठया सो कारज करि, जाम एक गई रात लाल रे ।। पू. ।। १५ ।।

सागारी सथारो रयणी तणो, सदा छेले सासोसास लाल रे ।
आप निज-का कारज करि, कीयो स्वर्गपुरी मे वास लाल रे ।। पू. ।। १६ ।।

॥ ढाल पंचमी—म्हारो पिव ब्रह्मचारी ए देसी ॥

पूज्य सबलदासजी मे गुण भारी २, तो कहतां न आवे पारी रे । मुनिवर गुणवंता ।
बारे वरस ना संजम लीनो, तो षट काया ने दीनो रे ॥ पूज्यजी गुणवंता ॥ १ ॥

तेष्ट वरस तांइ संजम पाली, तो रह्या कर्म बिजने बाली रे । मु० ।
इधक चहोत्तर उंबर पाई २, तो थाणे विराज्या नहि काई रे ॥ पु० ॥ २ ॥

गुरु नी भक्ति किनी घणी २, तो पिंडत हुवा सास्त्र भणी रे । मु. ।
सुमत गुप्त नीका पाले, तो नाना मोटा दोष सर्व टाले रे ॥ मु. ॥ ३ ॥

आप विहार करो नव कल्प २, तो क्रोध मान माया तुमरे अल्प रे । मु. ।
संसार नो छोडयो वास २, तो मुक्ति वधूनी अति आस रे ॥ मु. ॥ ४ ॥

शाल सेन्या लेई लाल २, तो कर्मां सूं मांडी राड रे । मु. ।
किरिया कि कबाण किनि २, तो साचरी पूणच कर लीनि रे ॥ मु. ॥ ५ ॥

॥ अत्र सवईया प्रोक्त ॥

पंच महाव्रत पाले, नाना मोटा दोष टाले ।
तप कर कर्म गाले, मोटा उपगारी हे ॥
निरलोभी निग्रंथ, पूज्य लियो साचो पंथ ।
संजम पाले करि खंत, षटकाय आधारी हे ॥
देही मे हूं काढे सार, करमां सूं मांडी राड ।
भव जल तिरे पार, विस्स वेल जाणे नारी हे ॥
बारे भेदे तप करे, निंद्या मुख परहरे ।
'रामचंद' कहे एसा, सबलदासजी तूं वंदना हमारी हे ॥ १ ॥

पूज्य मोटा महाराज, कहतां पार न आवै ।
पूज्य मोटा महाराज, धर्म्म शुक्ल ध्यान ध्यावै ॥
पूज्य मोटा महाराज, सुमत गुप्त नीकां पालै ।
पूज्य मोटा महाराज, दोष सर्व दूर टालै ॥
पूज्य सबलदासजी में गुण घणा, अर्हंत अग्या चाले सही ।
'रामचंद' इण पर भणै, मोसुं कहणी आवै नही ॥ २ ॥

॥ ढाल—पेली—तेहिज पूर्वली ॥

समगत सेल झाल २, तो ग्यान घोड़े चढ्या लाल रे । मु ।
क्षिम्यां तरवार जाण २, तो इर्च्या निसाण रोप्यो आण रे ॥ पू. ॥ ६ ॥

धीर्य नी तो कीनी ढाल २, तो ध्यान कटारी कर झाल रे। मु.।
इसी सझाई लीनी लार २, तो गई कमां नी फोज हार रे ॥ पू ॥ ७ ॥

॥ इम कलश प्रोक्तम् ॥

पूज्य तणां गुण घणां धन्य मुनि सबलेश ए ।
गुण गाया मन भाया कह्या गुण लवलेश ए ॥ १ ॥

आचार्य गादी सेवीए जादी घरस सरस इगतीस ए ।
सुख कारक जगत तारक लह्या स्वर्ग सुख जगीस ए ॥ २ ॥

एह संबंध सुणी पुण्य जिव हुवे मन हुलास अति घणुं ।
सुगुरु ना गुण थुणे, वृध वधे तेह तणुं ॥ ३ ॥

सुगुरु भेटया दुःख मेटया, स्वामी वृधीचंदजी मुनिवर ।
तस सीस रामचन्द मन अनंद, कीनी गुण माला अति सुख करू ॥ ४ ॥

पंच ढाल अतिरसाल छति वात में उचरी ।
समत उगणीसें चोका वरसें महीपुर नगरे ए करी ॥ ५ ॥

कोइक भणसे कोइक सुणसे हिये हरष हुलासियें ।
दुख टलसें सुख मिलसें, सुगुरु ना गुण नित भासिये ॥ ६ ॥

॥ इति श्री पूज्यजी पर्म पूज्यजी श्री सबलदासजी ना गुण समापाम् थया ॥

॥ पिली (लिपी) कृत्वां स्वामिजो श्री श्री १०५ श्री वृद्धीचंदजी तत् शिक्ष लिपी कृत्वां रामचंद्र ॥



पूज्य हीराचन्दजी का गीत

कस्तूरचन्द रचित

चोवीसे जिनवर नमी, वले नमुं गणधार।
श्रण गाउं सतगुर तणा, सांभलजो नर नार॥

॥ ढाल-अलवेल्यानी देसी ॥

जंबु द्वीप रा भरत मे रे लाल, गांम बेराइ सार हो। भ.।
कांकरीया नरसिंघदासजी रे लाल, गुमांनांजी घर नार हो॥ भ.॥ १॥

पूज हीराचन्दजी दीपता रे लाल, जनम्या सवा नव मास हो। भ.।
तास कूखे आय उपना रे लाल।
ताराचन्द हीराचन्दजी रे लाल, दीधा नांम हूलास हो॥ भ.॥ पू.॥ २॥

अनुक्रमे मोटा हूवा रे लाल, आया जोधांणे मझार हो। भ.।
आसकरणजी मुनीवर भेटीया रे लाल, उपदेस सुण्यो तिण वार हो॥ भ.॥ ३॥

सुण उपदेस वेरागीया रे लाल, जाण्यां इथर ससार हो। भ.।
अग्या ले माजी तणी रे लाल, लीधो संजम भार हो॥ भ.॥ पू.॥ ४॥

समत (१८६५) अठारे पेसठे रे लाल, आसोज मास जास हो। भ.।
माजी पिण संजम लियो रे लाल, गीगांजी मासत्यां पास हो॥ भ.॥ पू.॥ ५॥

पाले संजम भली तरे रे लाल, गुर भगती में लीन हो। भ.।
पूजजी साथे जुगत सुं रे लाल, चोमासो पाली कीन हो॥ भ.॥ पू.॥ ६॥

चेनमल गेनमलजी रे लाल, काका आया पाली मझार हो। भ।
परिसा दिना भांत भांतरा रे लाल, आया चलीया नही तिण वार हो॥भ.॥पू.॥७

भाटी पिण झगडो करे रे लाल, दुख दीधो अपार हो। भ.।
श्रावक कासीद मेलीयो रे लाल, इंद्रां बाइ ने तिणवार हो॥ भ.॥ पू.॥ ८॥

सिंघी भाटी बोलाय ने रे लाल, करयो कागद तांम हो। भ।
राजी खुसी सुं दिनी आगन्या रे लाल, झगडा रो नही मारे कांम हो॥भ.॥९॥

कागल पूजजी वाचने रे लाल, पांम्या परम हूलास हो। भ ।
सुध संजम पालता रे लाल, सासत्र रो करे अभ्यास हो। भ. ॥ पू ॥ १० ॥

भणी गुणी गीतार्थ हूवा रे लाल, बहू सासत्र मे लीन हो। भ. ।
गुरयण मन राजी घणु रे लाल, सिष्य वडा प्रवीण हो ॥ भ. ॥ पू ॥ ११ ॥

सेवा करी भात भांत सु रे लाल, सात वरस निस दिस हो। भ. ।
सबलेसनी सेवा घणु करी रे लाल, पिण नही आणी मन रीस हो। भ. ॥ पू ॥ १२ ॥

॥ ढाल-२ दी इम धनो धन ॥

गुर भांयारी दीपे जोड़ी, माहो मांहे घणो प्यार हो लाल।
इर्षा खेदो करे नही कोइ, सराहे सहू संसार हो लाल ॥ १ ॥

सतगुर दीपे च्यारू सिघ मे, समत उगणीसे चोका मांही।
पो सुध वारस दिन हो लाल, पूज सबलेस ने पाट वीराज्या।
सहू कहे धन धन हो लाल ॥ स. ॥ २ ॥

आचारज गुण लायक भारी, सारि सिसट मझारी हो लाल।
खम सम दम ने गुण रा ग्राहीक, अल्प इच्छा धारी हो लाल ॥ स. ॥ ३ ॥

पंच महाव्रत रुडा पाले, टाले दोष बयाल हो लाल।
बावन अणाचार ने टाले, पाले पंच आचार हो लाल ॥ स. ॥ ४ ॥

विवध प्रकारे वाणी आखे, रिंजे बहू नर नारी हो लाल।
एक वार जिण श्रवणे सुणी, नही भुले उमर मझारी हो लाल ॥ स. ॥ ५ ॥

प्रसन अनेक प्रकार बतावो, जतावो नही लिगार हो लाल।
जथारथ देवो उत्तर, मान ने दीयो टाल हो लाल ॥ स. ॥ ६ ॥

धरम उद्योत जगत मे कीधो, लीधो जस असेस हो लाल।
देश दिसावर बहू विचरया, दीधो उपदेस वेस हो लाल ॥ स. ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

इम विचरतां पधारीया, जोधाणे, सेहर मझार।
नर नारी हरखत हूवा, देख्यो पूज तणो दीदार ॥ १ ॥

॥ ढाल-३ कागदियो लिखये ॥

समत उगणीने हो वरस सतरा मधेजी, कांइ चेत सुध एकम सार।
श्रावक श्रावका करे वीनती जी, कांइ कीजे शरीर उपचार।
वीनती मांनो हो पूज श्रावकां तणीजी ॥ १ ॥

ओषध उपचार हो करे अनि घणाजी, काइ राज वेद तिण वार ।
वेदनी करम हो उपसम नां हूवो जी, काइ जांणे करम-विकार ।। वी. ।। २ ।।

सिझाय तो करे हो पूज प्रभात रा जी, कांइ सारे आतम रो काज ।
खीम्या रस में हो पूज झीले रहयाजी, कांइ साधे मुगत रो साज ।। वी. ।। ३ ।।

साध साधवी श्रावक श्रावकाजी, कांइ उभा छे कर जोड़ ।
पुन्य सजोगे हो दरसण पांमीयोजी, कांइ सेवा करे धर कोड ।। वी. ।। ४ ।।

दिल रा दातार हो पूज हूवा घणाजी, काइ वसत्र पातर ने आहार ।
भांत भांत सु आप सतोषीयाजी, काइ कीरपानिध दयाल ।। वी. ।। ५ ।।

सीतल दीसटी हो सहू रे उपर जी, कांइ कोमल घणा प्रणाम ।
मीठा वचनां सु हो आप वतलावतीजी, नही कथ कदाग्रो कांम ।। वी. ।। ६ ।।

अन्य टोला रा हो साधने साधवी जी, कांइ करे तुमारा गुण ग्रांम ।
पूज कीसतूर हो चंदजी तुम सु वीनवे जी, काइ मेहर धरीजो साम ।। वी. ।। ७ ।।

।। दोहा ।।

इण रीते रहता थकां, वीता पनरे वरस ।
हिव छेहला वरस तणो, सुणो समास सरस ।। १ ।।

बतीसा काति मधे, सुध बीज रे दिने ।
ताप चढीयो आकरो, तिण थी कम हूवो अन ।। २ ।।

।। ढाल-४ थी रहो रहो वाल्हा ए देसी ।।

पूज फुरमायो साधां भणी, अन रो घाटो पडेह लाल रे ।
तिण कारण थाने कहां, साधां ने समाचार देह लाल रे ।। १ ।।

सतगुर स्यानी दीपता, श्रावक कागद दीयां थकां आया साधुजी तिणवार लाल रे ।
हाथ जोड़ वनणा करी, हरख्या पूज अपार लाल रे ।। स. ।। २ ।।

सुखे समाधे रहतां थकां, पोस वद बीज रे दिन लाल रे ।
पोते आलोवणा करी च्यारू सिंघ कहे धन धन लाल रे ।। स. ।। ३ ।।

सिख्या दीधी च्यारू सिंघ ने, सगलो प्रमांण कीध लाल रे ।
उपवास पिण कीयो पूजजी, दूजे दिने पारणो लीध लाल रे ।। स. ।। ४ ।।

पीरचंद हरखचंदजी, हाजर वे कर जोड़ लाल रे ।
सूरजमल भांनीरामजी, करे सेवा घर कोड लाल रे । स. ॥ ५ ॥

दयाचंद तत्पर घणु ं, प्रताप सेवा में लीन लाल रे ।
जसराज पिण हाजर खड़ो, विघ विघ भक्ती कीन लाल रे ॥ स. ॥ ६ ॥

सोले ठांणे साघ जी, आरज्यां गुण पचास लाल रे ।
भात भात भगती करी, आंणी हरख हुलास लाल रे ॥ स. ॥ ७ ॥

रात पोहरो रहे सासतो, श्रावक पिण तयार लाल रे ।
भक्ति करे भांत भांत सु ं, मंड रह्यो मेलो अपार लाल रे ॥ स. ॥ ८ ॥

अन्न छुटो सातम दिने, दुधनो लेवे आहार लाल रे ।
च्यारू ं सिघ अरजी करे, अब करावो सथार लाल रे ॥ स. ॥ ९ ॥

पूज फुरमायो जुगत सु ं वरते मन विसेष लाल रे ।
ताकीदी करो मति, करसा अवसर देख लाल रे ॥ स. ॥ १० ॥

एकम दिने श्री पूजजी, श्रीमुख बोल एम लाल रे ।
अब जावां छा मैं सही, थे राखजो माहो मांहे प्रेम लाल रे ॥ स. ॥ ११ ॥

सथारो करसा अमे, च्यारू ं सिघ आयो तिवार लाल रे ।
संथारो कीघ श्री पूजजी, खमाया वारंवार लाल रे ॥ स. ॥ १२ ॥

ध्यान घरे नवकारनो सासत्र सुणे वारंवार लाल रे ।
सूरत सोभे श्रीपूजजी, हरखे देखी दीदार लाल रे ॥ स ॥ १३ ॥

तीज दिने श्री पूजरे, किचीत हूव के सास लाल रे ।
दोपारा ढलता थकां, कीयो स्वर्ग पुरी में वास लाल रे ॥ स. ॥ १४ ॥

उगणीसे बतीसा मघे, माह वद दसम जास लाल रे ।
पूज कीसतूरचंदजी इम कहे हूँ तो सत गुरे केरो दास लाल रे ॥ स. ॥ १५ ॥

॥ कलश ॥

संथार पोहर सोले आयो, पोहर एक चोवीहार ए ।
पूज हीराचन्दजी धन्य जग मे, कीनो खेवो पार ए ॥ १ ॥

प्रष्ण उत्तर अनेक दीघा, लीघो जस अपार ए ।
पूज सबलेस नो पाट दीपायो, घन घन घन कहे नर नार ए ॥ २ ॥

अडसठ (६८) वरस दीख्या पाली, अठाइ (२८) वरस पूज पद धार ए।
बतीसा (३२) में सदगत पाम्यां ज्यांरो नांव लियां निस्तार ॥ ३ ॥

सतावना (५७) में जनम पाया, पेसठे (६५) मे जोग धार ए ।
छिहतर (७६) वरस सरब आऊखो, ज्यांरो जस करे नर नार ए। ४ ॥

॥ इति संपूरण छै ॥

मोतीचंदजी खजांची संग्रह पत्र २



श्री कल्याणजी गीत ।

॥ राग गोपालदास गीत की ढाल छाहुली ॥

श्री गछपति नागोरीयां , नमइ वाधइ आणंद पूरतउ ।
जिण सासण माहे तप्या , दिन २ दीपइ अधिक पडूरतउ ॥ १ ॥
गछपति श्री कल्याणजी , प्रगट्यउ नवपंउ माहि नाम तउ।
सिष सिषा करि सोभता , दिन २ वाधइ अविहउ वान तउ ॥ २ ॥
आचारय पदवी भोगवी , वर्ष सइतीस तणइ परमाणि तउ ।
सकल सिद्धांत अभ्यासीया , क्रिया सागर बुधि निध्यान तउ ॥ गछ. ॥ ३ ॥
महीयल विचरइ मल्हपता , पहुता देस लोहउर मझारि तउ ।
श्री संघ सहु हरषति हुया , दइ उपदेस करइ उपगार तउ॥ गछ. ॥ ४ ॥
मल्लजी उभो वीनवइ , विनय सहित अजल पट जोडितउ ।
चत्रुमासउ इहां करउ , हम मन केरउ पूरउ कोडतउ ॥ गछ ॥ ५ ॥
वलता श्री पुज्य इम कहइ . सुख सदा इण पारेवारतउ ।
साध साधवीना वृंद छइ , दि आदेस करत ससारतउ ॥ गच्छ. ॥ ६ ॥
तिण अवसरि तेणइ समइ , सरीर आबाधा हुई सम कालतउ ।
मन मोटइ चोखइ चितइ , पंच महाव्रत करि करवाल तउ ॥ ७ ॥
मन माहि धीर पणउ धरी , पहरिइ गइ सील सनाह तउ ।
आपण पइ अणसण कीयो , बइसाष सुदि दुतीजा सुविसाल तउ ॥ ८ ॥
मुनि जोधा वणवीरजी , नेमी दास सहति सहु साध तउ ॥
हमनइ कुण इत्र लाव स्यउ , द्यउ आदेस करउ परसाद तउ ॥ गछ. ॥ ९ ॥
सिख सिषी प्रति इम कहइ , मनि अणदो हम करि लवलेस तउ ।
श्री त्रयरजी गछपति , पूज कल्याण तणइ आदेश तउ ॥ गछ ॥ १० ॥
चत्रुविध संघ खमाईयो , खांमी छइ सहुय जीव राशि तउ ।
देव विमांण तिहा आवीया , जय २ कार करइ सुर आस तउ ॥ गछ. ॥ ११ ॥
जासक जीत वजस जगत , प्रम पत्र केरइ पायतउ ।
झुझि वूझि हूआ जीतहथ , पहती सरग गनाय वजाय तउ ॥ गछ. ॥ १२ ॥

श्री संघ कागल मोकल्या , संघवी सह सकल रइ हाथितउ ।
कागल वाच्था वेगसुं , मनि अणदोह हुयउ तिणवार तउ ।। गछ ।। १३ ।।
गछ नायक नागोरीयां , पूज्य कल्याण तणउ परिवार ।
साध इक्यासी(८१)गुणनिलउ, एक सउसइतालीस (१४७) साधवी सार तउ गछ.१४
वस सूरांणां सोभता , चूहडमलत्र तीजउ जास तउ ।
चत्रु विध सघ सुहावणउ , पूज्य कल्याणजी रइ नाम उल्हास तउ । गछ. । १५ ।
समत सोलय इक्यासीय (१६८१) गद गद सर गायो गुण ग्यानतउ ।
ननर जोधांणा माहि थुण्यउ , मन वचन तुम्ह चलणे ध्यान तउ ।। गछ. ।। १६ ।।

।। इति श्री कल्याणजी गीतं ।।



बका ऋषि भास

सरसति सामिणि मनि घरी जी, वीर जिन लागु पाय ।
साधतणा गुण गाइ सु जी, हईयड़ लइ हरख अपार ॥ १ ॥
गुणगता बकजी धन २ तोरी माय, धन मानव जे पाये नमइ जी ।
आणदि गुण गाय ॥ २ ॥
सोभागी बकजी धन धन तोरी माय वइरागी योगी सघन ।
अबाला मनि वरघन मन जीवन बकजी धन धन तोरी माय ॥ ३ ॥
उस वंसि कुलि अवतरिया जी साह भीमसीअ मल्हार ।
मात इंद्राणी उरि धरा विउ अर चतुर सुजाण ॥ गु. ॥ ४ ।
वीर वचन श्रवणे सुणी जी मनि घरी हरख अपार ।
मात पिता नइ वीनवउं, अम्हे लेनु संयम भार ॥ गु ॥ ५ ॥
घरम घरी घर त्रर भगइ जी सिद्धांत सार पन्यास ।
तस हाथइ संजम लीउंजी, कुंअर एह उती आस ॥ गु. ॥ ६ ॥
इंघाड़ी संजम धारी भलाजी, हरप सारखं सारपइ हि राज ।
व्रधमान वांणी खरी जी, सारि भवीयण काज ॥ गु. ॥ ७ ॥

॥ ढाल ॥

अरिहंत ध्यान रदइ घरइ ए भाविइ सुं, जेणइ जीत च्यारि कषाय रे ।
समता रस माहि भीलता ए भाविइसुं, जेहेइ अंगि नही परमाद रे ।
धन २ मुनि वांदीइ ॥ ८ ॥ १ ॥

साध ठकराई एहवी माभलु ए भावड सुं, वकजो दीठड़इ आणद थाइ रे ।
धन धन जेणइ जीत्या च्यार कषाइ र ॥ ४

धन ए मनि वही योग रूप घोडिइ चड़ि सुखिमा खड़ग हथीआर रे ।
अरिहंत आण छत्र घरइ ए भावि सुं, षट जीव दया परवार रे ।
धन धन ए मुनि वादिइ ॥ ३ ॥

समति गुपति दोइ मुंद्रडीए भावि सुं, रुड़ी मोहिछइ बकजी नइ हाथि रे ।
पंच महाव्रत से जड़ी ए भावि सुं, चालइ संयम श्री नइ साथि रे ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥

उस वंस कुलि सारजी रे उसाह, भीमजी कुल अजूआलीउ रे ।
मात इंद्राणी मल्हारजी रे बकजी, भलइ जनम्या तरण तारण नरू रे ॥ १ ॥
धन नगर ते गामजी रे जिहां, एहवा रे साध पाउ धारीआ रे ॥ २ ॥
ते नर नारी धनजी रे जे अइसा रे, साध गुण रदइ धरिइ रे ॥ ३ ॥
आणइ संयम नुं ध्यानजी रे २, आणंदइ बकजी बोलइ रे ।
बोलड़ा सोहमणा रे ॥ ४ ॥
वासण प्रणमइ पाइ जी रे २, अमह नइ भवि २ सरण रूड़ा ।
साधनउ रे ॥ ५ ॥

॥ इति १ बकारपि नी भास समाप्तः ॥ छ ॥ श्री ॥



पूज्य गंगारामजी रो संथारो

नवलचन्द मुनि कृत

॥ दूहा ॥

श्री पारश्वनाथजी नित नमु, सरस्वत लागु पाय।
गुरु देवा किरपा करो, आसा पूरण थाय॥ १॥

पूज्य श्री गंगरांमजी, करी संथारो सार।
धर्म दिपायो अति घणो, ते सुणज्यो विस्तार॥ २॥

॥ ढाल लावणी ॥

समत अठारै वरस वासठै, पोस मास माई।
वद दसम दिन दिख्या लीनी, दिल आनंद ठाई॥ १॥

करी ज्या करणी अति भारी। टेर।
करी संथारो धर्म दीपायो, समता मन लाई।
ढुंढाड देस मै दिख्या लिनी, मारवाड आई।
समाइक आदे अंग इग्यारै, भणियां चित लाई॥ क० ॥ २॥

वत्तीसी तो पूरी वाची, उपांग चित लाई।
बखांण री तो कला, ज अधक्कि सुणतां दिल आई॥ क० ॥ ३॥

पूज्य श्री श्रीचन्दजी, ज्यारी क्रिया भारी।
वोल चाल रा घणां थोकडा, सीख्या तिण वारी॥ क० ॥ ४॥

गुरु देवां री करी चाकरी, मन मैं द्रिढताई।
गुरु देवां करी'ज किरपा, दिवी पीडताई॥ क० ॥ ५॥

पूज्य श्री श्री श्रीचन्दजी, ज्या का गुण भारी।
करी संथारो समता लीनी, ममता हद मारी॥ क० ॥ ६॥

गुरु देवां री मरजी ऐसी, कही अब ना जाई।
गुरु देवन की मरजी सेती, सब वाता थाई॥ क० ॥ ७॥

किण वात री मन मै नही, सब आनंद थाई ।
गुरु देवा मरजी कर कहियो, सुज सब घो भाई ॥ क० ॥ ८ ॥

देस प्रदेसां विचरया मुनिवर, आरत नही काई ।
सिख आपरे वनीत मारो, सब मै अधिकाई ॥ क० ॥ ९ ॥

संजम पाल्यो भली तरै से, ग्यान घांन मांहि ।
वुध्य तणां सागर श्री पूज्यजी मन मै थिर जाई ॥ क० ॥ १० ॥

उपगारा नो घणा पूज्यजी, दया तो दिल माहि ।
चाव घणो मन ग्यांन देवण रो, वाई भाई ताई ॥ क० ॥ ११ ॥

समत उगणीसा नव कै साल मै, समता मन लाई ।
मृगसिर महीने उठीज वेदन, रह्या ग्यान माई ॥ क० ॥ १२ ॥

कमर नी तो वेदन थोडी, अन अरुचताई ।
पोह'ज काढ दियो पुज्य सुख सै, महा मास आई ॥ क० ॥ १३ ॥

महा सुद तीज नै सब वोसराया, भांडोंपगरणाई ।
वाया माया केरी सीख सुं, ममता नही काई ॥ क० ॥ १४ ॥

महा सुद चोथ री रात, पूज्य कै मन मै ए आई ।
सिष्य दोनु उभा करै वीनती, अब अवसर पाई ॥ क० ॥ १५ ॥

चंदणपाल आदेस वाचै, इम वैठा छै भाई ।
श्री मुख सेती इम फुरमायो, अब अवसर आई ॥ क० ॥ १६ ॥

प्रभव मै अति है सुखदाई, जिन धरम ने चित लाई ।
आउखो अथिर जीवा ने कीवी सुजसताई ॥ क० ॥ १७ ॥

जाव जीव तीनूं ही आहार का, त्याग मुंनै भाई ।
अनंत सिधांरी साख करी नै, काया वोसराई ॥ क० ॥ १८ ॥

श्री मुख सेती कीयो संथारो, सावचेत माही ।
सर्व जीव सु खिमत खामणा, समता मन ल्याई ॥ क० ॥ १९ ॥

सिष दोनुं हद कीवी चाकरी, त्रिकरण सुध लाई ।
सूरवीर दोनूंई मुनिवर, तप संजम माई ॥ क० ॥ २० ॥

बसत पंचमी सूरज उगालै, सिध सर्व आई ।
सर्व सीध सु खीमत खामणां, गुरु दिल आई ॥ क० ॥ २१ ।

सीख सीखणी परमाया करी ज्यौ, दया तो दिल लाई ।
सुख सपत को साह ज्या देवो, तुम जाव जावतांई ॥ क० ॥ २२ ॥

आप गुणे करने हृद पूरां, कहु कहां तांई ।
मन वचन काया बहुसूरा, जिन समरण मांही ॥ क० ॥ २३ ॥

पाखड मत नै बहुत हठायो, चरचा कै मांई ।
खंड खंड कर दुर उछाल्यो, दिली सहर मांही ॥ क० । २४ ॥

रीत रीत कर भाव भेद सुं, तैसा तुं लाई ।
जिन मत केरो धर्म दीपायो, जावा जीवतांई ॥ क. ॥ २५ ॥

रवीवार उर वसंत पांचमी, चोथै पोहर माई ।
काल करी मुनी स्वर्ग पहुतां, धन धन जग मांई ॥ क० ॥ २६ ॥

समत उगणीसै नव कै साल मै, चेत माम मांही ।
नवलचन्द मुनि जोड़ करी है, सुण्यां सु जसताई । क० ॥ २७ ॥

आछो इधको कह्यो होय तो ॥



'तपस्वी भागचन्दजी' निर्वाण

॥ दूहा ॥

गुण गावु सतगुर तणा आणंद इधको थाय ।
अलगी जावो आपदा, मन वछत फल पाय ॥ १ ॥

मुझ ग्यानी गुर ना सम, साधु जी वीरला होय ।
ग्यानी देवां इम कह्यो, आरावीक कोई जोय ॥ २ ॥

सुध मन न सुध भावना, टाली मबनो खेद ।
तपसी भागचन्द जी तणा, गुण गावा मन उमेद ॥ ३ ॥

जंबु दीप रा भरत खैत्र मे, नगर निशंण मारी ।
सुखीया ने मुखीया सा सरोमणी, श्री मलुकचदजी री इधकाई जी ॥ भज. ॥ ४ ॥

भज भव आता भव भागचन्द जी, जग जेह ना जस भारी जी ।
कुलभूषण ने बुधवंत कहीजे, माता बरजा दे जो थारा जी ॥ भज. ॥ ५ ॥

समत अठारे वरस तेरा के, आया छै कुल उजवाली जी ।
मा बद चोदस मुल नखत रा, जनम्या छै सुरज उगाली जी ॥ भज. ॥ ६ ॥

हरख वधादा गावे छै गोरी, हरखी छै नगरी सारी जी ॥ भज. ॥
जीम २ नरख तीम हरख, देखु सूरत थारी जी ॥ भज. ॥ ७ ॥

अठारे से साल पचास, दीखया री दील मैं आई जी ।
मैर किसनगढ़ जाय जुवास्यो, भोजराजजी यर भाई जी ॥ भज. ॥ ८ ॥

चोथे भुगत मे सजम लीनो, पोस सुद इग्यारस जांणी जी ।
सेणी सीरावकां बैन तमारी दीनी आग्या लो पथ नीखाणी जी ॥ भज. ॥ ९ ॥

दीख्या लेने परमाद न कीनो, दीनो छै ध्यान लगाई जी ।
अनंत असाधतो लोक जाणी नै, न गणी नेडी सगाई जी ॥ भज. ॥ १० ॥

सामी न कीया चेला न चेली, ठेनी छै ममता वडाई जी ।
उभय (म)काल मैं पडकमणो कीनो, मेटा छै करम जड़ाई जी ॥ भज. ॥ ११ ॥

जीण भगता जीण आग्या पाली, टाल्या छै दोप वयालीस जी ।
असुजतो आहार न वस्त्र पातर, न लीनी सुरत सभालो जी ।' भज. ॥ १२ ॥

वरस पचासा थे तप कायो, भज भजन जीणरायो जी ।
वेला न तेला वास इकतर, पारणो पोर वधाई जी ॥ भज ॥ १३ ॥

॥ दूहा ॥

भागचद जी भरत मे समझाया घणा नर नार ।
पोसा पडकमण वीधसुं, चवदे नेम चीतार ॥ १ ॥

वरस पचासा था कीयो, चोथमगत चोवीहार ।
वेलैं वेलैं पारणो, चोमासा निरधार ॥ २ ॥

जोधनेर था कीया, चोमास उगणीस ।
फिर २ गावा वीचराया पुगी मनह जगीस ॥ ३ ॥

चरम चोमासो पुजजी, हरसोलो मे आप ।
दसमीकालक गुण्या घणा, अनंत चोवीसी रोजाप ॥ ४ ॥

जग जुना श्री पुजजी, मीगसर मास वीहार ।
गुर भायी रायचन्दजी (तणा) मीलवा (मन) उमेद अपार ॥ ५ ॥

॥ ढाल—काची कली अनार की ॥

चारुं साध भला पर रे हा, मीलाया चरण लाग । मेरा पुजजी ।
मिल २ सुख पुछीयो रे हा, घन घडी धन भाग ॥ मेरा पुजजी ॥ १ ॥

रेणवाल रलीयामणी रे हा, जयां वसे धरमो लोक । मेरा पुजजी ।
आवै जावै साधजी रे हा, भलो मीलायो संजोग ॥ मेरा पुजजी ॥ २ ॥

तपसी उठया गोचरी रे हा, पोर आया परमांण । मेरा पुजजी ।
हरख धरी न हाथ सु रे हा, वांटो आहार सुजाण ॥ मेरा पुजजी ॥ ३ ॥

सीधाडे रा साध नै रे हा, इष्ट घणा गुणवंत । मेरा पुजजी ।
श्री संघ नै जीम लागता रे हा गोतम न भगवन्त ॥ मेरा पुजजी ॥ ४ ॥

गुणता दसमीकालका रे हा, आठ सात दस बंध । मेरा पुजजी ।
अनंत चोवीसी जीण जय रे हा, क्याटा करम ना फंद ॥ मेरा पुजजी ॥ ५ ॥

सास रोग न जो गती रे हा, आण पुची छै वार । मेरा पुजजी ।
उगणीस सेना मीगसर रे हा, सुध तेरस सोमवार ॥ मेरा पुजजी ॥ ६ ॥

था उठी न अवसर रे हा, तपसी तणो नीरवाण । मेरा पुजजी ।
जिहां जाय जिहां जीवने रे हा, होज्यो कोड कल्याण ॥ मेरा पुजजी ॥ ७ ॥
दोखी दुसमण आपदा रे हा, टोला मोरी पीड । मेरा पुजजी ।
अमर करो आप सम रे हा, होय ज्यो मोरी भीड ॥ मेरा पुजजी ॥ ८ ॥

॥ इति तपसीजी रो दुढालो समाप्त ॥

॥ इति श्री सपुरण ॥



श्री नीलापतिजी का चौढालिया

नानकदास रचित

॥ दोहा ॥

श्री जिन चरण प्रणाम कर, सतगुरु चर्णां मनाय।
गुणवत ना गुण गांवसुं, सुणतां पातिक जाय ॥ १ ॥

पंचमे आरे मेहि अछे, साध सती गुणवान।
एक एक थि अधिकता, तपस्या ग्यान प्रमांन ॥ २ ॥

क्रिया क्रिया मुख सुं कहें, तजे न इन्द्री स्वाद।
अंक विना बिन्दी घरचा, लहे न अनुभव वाद ॥ ३ ॥

खिमा सहित तमस्या करे, सोही उत्तम जाण।
एक संख दूधे भरचो, तिम सोहे गुणवांन ॥ ४ ॥

गिरुवाना गुण गावतां, जीभ पवितर थाय।
पाणी सुं जिम धोवतां मेल वस्त्र ना जाय ॥ ५ ॥

श्री सतगुरु आदि सको, चरण नमाउं सीस।
ग्यान द्रसन चरित्र की, करज्यो मुज बगसीस ॥ ६ ॥

॥ ढाल-१ अरणक मुनिवर चाल्या गोचरी ए चाली में ॥

इण जबू दिपे खेतर भरथ मे, जंगलदेस मंझारो जी।
सहर संनाम ओसवाल वंस मे, ऊजल कुल अवतारो जी ॥

नीलापतजी जनमे भरथ मे, [ए देसी] उत्तम कुल अवतारो जी।
गली रोवाने सोभा तेहनी, मुख मुख जय जय कारो जी ॥ नीला ॥ १ ॥

तपसी मुनीश्वर करनी आपरी, मुख से कही न जावे जी।
अल्प ग्यान कुछ बुधी मद छै, गुण सायर ने मावे जी ॥ नीला ॥ २ ॥

माता कानुं पीता मोरसीघ, उपज्या कवर अनुंपो जी।
समत अठारां साल बहोतरे, माघ महीने सरूपो जी ॥ नीला. ॥ ३ ॥

अनुक्रमे जोवन वयें पामिया, मात पिता ना सुविनीतो जी।
इन्द्रि जाग्रत भइ परणाविया, भोगे भोगणु नीतो जी ।। नीला. ।। ४ ।।

आरज वणज सुध विवहार छे, कीरत जस अपारो जी।
धर्म नी रिख्या को सिल बहु विदे, हरखत एहिज वातो जी ।। नीला. ।। ५ ।।

पोसा पडिकमणा समाहि बहु विदे,तपस्या से लव लाइ जी।
चेला तेला अठाई पंद्रथा, वीस तीस विवताई जी ।। नीला. ।। ६ ।।

इत्या(या)दी तपस्या बहु कीनी, उपना वेराग सवेगो जी।
कुटम्ब कबिला नारी ही बदुवा, सब हीं मत क्ली पेख्यो जी ।। नीला. ।। ७ ।।

तन धन जोवन देख्यो कारमो, अनुमत ले तिहां चाल्यो जी।
अनुकरमे बहुत आनन्द से, दिली सहर मंझारो जी ।। नीला. ।। ८ ।।

लोकी लोकेत्तर बहु राखता, वित्यो काल ही अथो जी।
अमर मुनि पे संझ (ज)म आदरयो, वरस छियालीस पछो जी ।। नीला. ।। ९ ।।

ढाल पहिली इण पर वरणवी, आगे घणो विसतारो जी।
हाथ जोड़ी ने 'नानक' वीनवे, पल पल तेहनो आधारो जी ।। नीला. ।। १० ।।

॥ दोहा ॥

रोग सोग विजोगता, आई उपजे कोय।
कायर मन में चितवे, धर्म किया क्या होय ।। १ ।।

सूरा समदिष्टी इम जाणसइ, पुदगल अथिर प्रमांण।
करणी येसी कीजीये, चढे काज निरवांण ।। २ ।।

अमरसिंघ माहाराजजी, तेज पुंज दिदार।
श्री रामबखस सिस हे तेहना, ग्यान द्रसन ना धार ।। ३ ।।

तपसी महा मुनिंद ने, तिण पासे दिख्या लीन।
त्याग वयराग में लीलता, तप संजम खप कीन ।। ४ ।।

।। ढाल--२ चेतन नर चेतज्यो नीको नरभव पाम्यो रे, ए चाली में ।।

लाय लगी संसार मे रे, दाझ ही रहया बहु लोंग।
करणी एमी कीजीये रे, अमरा पद जे भोग ।। १ ।।

सुभागी मुनिवरो, करणी भल कीनी रे।
तप कर काया सोसवी, सुर पदवी लीनी रे सु. ।। २ ।।

समत, उनीसे ह, उनीही महरे, फागुण मास मंझार।
दिख्या मोहछव तिहां कीयो रे, ते संसारी विवहार ॥ सु. ॥ ३ ॥

संजम ले इम चितवे रे, अल्प आउखा जाण।
करणी यसी कीजीये रे, जलदी होय निरवाण ॥ सु. ॥ ४ ॥

खिण खिण निंदे आतमा रे, संसार थकी रह उदास।
एक दिने करे पारणा रे, एक दिन करे उपवास ॥ सुभा. ॥ ५ ॥

त्याग किया दरवां तणा रे, रसना ने वस आण।
कडाई नां नीपना त्याग छे रे, परमानन्दी ज ण ॥ सुभा. ॥ ६ ॥

सात दरव उपरान्त ना रे, सर्व कीयो अप्रमाण।
ओषद भेषद राखने रे, जाव जीव पछखाण ॥ सुभा. ॥ ७ ॥

गामां, नगरां विचरतां रे, करता उग्र विहार।
अनुक्रमेहि चोमासे किये रे, ते सुणज्यो विसतार ॥ सुभा. ॥ ८ ॥

एक चोमासा अलवर कियो रे, नागोर एक ही जाण।
जेपुर जोधपुर केक कियो रे, स्यालकोट एकहि मान ॥ सुभा ॥ ९ ॥

एक सोनाम माहि कीयो रे, दोय जलिंदर जाण।
अमरसर में दोहि कीयो रे, एक हि नाभे मान । सुभा. ॥ १० ॥

पट्याले में छह जाणज्यो रे, जालागढ़ माहि एक।
झंडियाले में एक हि कीयो रे, तीन हि कोटले देख ॥ सुभा. ॥ ११ ॥

एक सहर दिली कीयो रे, एक वड़ोद ही जाण।
रोहतक में एक ही कीयो रे उत्तम पुरस परधान ॥ सुभा. ॥ १२ ॥

सर्व चोमासे जाणज्यो रे पच्चीसहि परमाण।
तपस्या कीनो बहु विधे रे, ते सुणज्यो चतुर सुजाण ॥ सुभा. ॥ १३ ॥

ढाल दूसरी इम कही रे, तप संजम मे ही ध्यान।
कर जोड़ी नानक कहे रे, कीजे ते परमाण ॥ सुभा. ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

कचण तजणा सहल हे, उर नारी का नेह।
मान वड़ाई ईरशा, दुरलभ तजणा एह ॥ १ ॥

क्रोध मान माया तणा, कीवा ते सकेत।
पांचे इन्द्री वस करी, वोले भिग्धु हेत ॥ २ ॥

बलिहारी गुरु देवनी, कीधा मोहे निहाल ।
पासे आवे ज्यो चान के, देगे शिवपुर घाल ।। ३ ।।
तप जप कर काया सोसवी, ते सुणज्यो अधिकार ।
सझाय ध्यान मे लाल रह, करते उग्र विहार ।। ४ ।।

।। ढाल--लाल नणदल रा विरा जरा धीरा ।।

ते पासे ज्यो आवे चल के, भासे वचन महिठां ।
संथोक देयकर करे हाजरी करे देखही अण दिठां ।।
नीलापत माहाराज जिणां ने आतम कारज सारचा ।
कीया सरणा भवियण पार उतारचा ।। ए चाली मे ।। १ ।।
एक थोकडा अलवर कीना, नागोर माही एकी ।
जोधपुर मे एक हि कीना, उत्तम पुरस विवेकी ।। नीला. ।। २ ।।
जेपुर मांहि एक थोकड़ा, स्यालकोट एक साझा ।
जलिन्द्र माहि दोय कीना, एक सोनाम विराजा ।। नीला. ।। ३ ।।
छइ थोकड़े पटियाले मे, दोय अमरसर सारा ।
नाभे मेहि एक थोकड़ा, उत्तम पुरस हुलसारा ।। नीला. ।। ४ ।।
नालागढ मे एक हि कीना, एक जंडियाले राज्या ।
तीन कोटले मांहि कीना, उत्तम पुरस बहु गाज्या ।। नीला. ।। ५ ।।
दिली मे उपवास कीना, मास खमण तप धारा ।
पारण कीना अपणे हाथे, दिल में बहु हुलसारा ।। नीला. ।। ६ ।।
चोमासे में लाया खाणा, दिन चालीसइ सारा ।
असी दिन तपस्या मे लागा, ज्ञान ध्यान का सहारा ।। नीला. ।। ७ ।।
बडोद में हि तपस्या कीनी, मास खमण तप माइ ।
इकीस मे दिन वेदन उपनी, मन मे बहुत कड़ाई ।। नीला. ।। ८ ।।
सूरवीर होय क्रम दल काटे, पार पुछावण भारा ।
इकतीस मे दिन कीया पारणा, चित मे विग्रह धारा ।। नीला. ।। ९ ।।
छतीस दिन हि पारणा केरा चोरासी तप उसारा ।
विचरत विचरत दिली आया, तप जप हीं का धारा ।। नीला. ।। १० ।।
वेले-वेले कीया पारणा लगाण सर्ग हि टाल्या ।
रोगी गिल्याण की करे, चाकरी क्रोधादिक बहु पाल्या ।। नीला ।। ११ ।।

विचरत विचरत रोहतक आया, कीया चोमासा भाग ।
बतीस दिन तो पारणा केरा, अठयासी तप ही करारा ॥ नीला. ॥ १२ ।

बीस तीस हि और बतीसे, ते कछु पार न आता ।
घाट वाद ज्यो इण में भाख्या, ते मिछामि दुकडं लाता ॥ नीला. ॥ १३ ॥

ढाल तीसरी इण पर भाखी, सझाय ध्यान का सहारा ।
कर जोड़ी ने नानक बोले, गुरु चरणा का प्यारा ॥ नीला. ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

विचरत विचरत आविया, आसी निगम मंझार ।
मन में वेरागज ऊपनो, संसार दुखां ना द्वार ॥ १ ॥

सर्व साध बुलाय के, इम बोले माहा भाग ।
वेले वेले पारणा, जाव जीव कीया त्याग ॥ २ ॥

विंजण का ते सरवथा, जाव जीव पछखाण ।
लगावण कोहि न लावणा देव गुरु की आण ॥ ३ ॥

तप जप खप करके भरी, कम्माइ की खेप ।
आगे ते काया सोसवी, ते विवरो तु देख ॥ ४ ॥

॥ ढाल--४ धन प्रभुरामजी, धन परणाम जी ए देसी में ॥

धन तपसी सामजी, धन परणामजी, धन्न तुमारो कुल वास वे ।
धन तुज तातजी, धन तुज मातजी, लोक करे परसस वे ॥ धन. ॥ १ ॥

आतम कारज सार लीया हे, काडया बहुतेरा माल वे ।
सझाय ध्यान मे जोग तेहना, संजम मांहि लाल वे ॥ धन. ॥ २ ॥

पये रुपी खीचड़ी रोटी तकर अवुहार वे ।
ओषद भेपद टाली न ते, कीधा सर्व परिहार वे ॥ धन. ॥ ३ ॥

विचरत विचरत आइयो ते, झंगलदेस मझार वे ।
पाटलपुर माहि कीया चोमासा, मन माहि अति ही हुलार वे ॥ धन. ॥ ४ ॥

तपस्या कीनी वहुती तीया तेहना करू हु विखाण वे ।
अनमानते ही पारणा कीना, दिन ही तीस प्रमाण वे ॥ ध. ॥ ५ ॥

नव्ये हि दिन तपस्या हि वीता, अनमान प्रमाण जाण वे ।
सजाय ध्यान में उद्यम वहुला, काटी कर्मा नी वाण वे ॥ ध. ॥ ६ ॥

विचरत विचरत आइया ते, सहर सनाम मंझार वे।
तन मांहि ते वेदना ऊपनी सहते चित्त उदार वे ॥ ध. ॥ ७ ॥

एक थोकड़ा तपस्या वहुली, दिल मांहि अति हि हुलास वे।
विऊसग दिन दिन परते, आतम ध्यान परगास वे ॥ ध. ॥ ८ ॥

चाल भुजंगी संचरते करते बहु उपगार वे।
विनती वहुली चोमासा केरी, कोटरूपुर हि पगधार वे ॥ ध. ॥ ६ ॥

तीन महीना तपस्या अनमाने, महिना हि पारण धार वे।
सझाय ध्यान में प्राक्रम फोड़े, आतम कारज सार वे ॥ ध. ॥ १० ॥

सेषकाल हि विचरत आये, लुध्याणे सहर मंझार वे।
पंच प्रमेष्ठी हृदे तेहने, तीन लोक मा सार वे ॥ ध. ॥ ११ ॥

पाच सुमत हि तीन गुपत ना, करते जतन अपार वे।
नवकार की माला वीस अनुमाने, पाले पच आचार वे ॥ ध. ॥ १२ ॥

इम करत वेदना हि तन मे, उपनी वहुत कराल वे।
ग्यान ध्यान हि खड़ग से छेदे, तन में बहुत खुसाल वे ॥ ध. ॥ १३ ॥

पाणी जतन हि तृषा वहु काटे, साधु विनवे वारम्वार वे।
सामी कृपा कीजे, अबु पीजे, कछु नाही दरकार वे ॥ ध. ॥ १४ ॥

छठ छठ पारणा करते निरन्तर, वेला तेला बहुवार वे।
पारणा करते पहर अनुमाने, लाभालाभ संमचार वे ॥ ध. ॥ १५ ॥

बहुती वेदना उपनी हि जाणी, करते संलेखणा सार वे।
क्रोध मान माया को त्यागे, उवधी वसत्र हार वे ॥ ध ॥ १६ ॥

तपस्या कीनी सरीर मोसव्या, कीनी अठाई सार वे।
पारणा कीना सम नही प्रगम्या, पचख दिया संथार वे ॥ ध ॥ १७ ॥

रात्यु रात हि तार कि फेरियां, जुड़ गया लोक अनेक वे।
हुइ प्रभात गुरुदेव इम बोले, कीधा काहि विवेक वे ॥ ध. ॥ १८ ॥

सामी आपने क्या फरवाहे, ए संसारी माण वे।
पिछे हस्या मति करज्यो भाई, शुभ मंडी हि मसण वे ॥ ध ॥ १९ ॥

रात दिवस गय गेम-गेम करे मुनी नां दीदार वे।
पचखाण करावे आपणा मुख से, लोका ने हितकार वे ॥ धन. ॥ २० ॥

वामण वणिया कायत खत्री, रोडा सुद सुनार वे।
द्रसण करवे चाह वहुतेरी, पामे नहीय उवार वे ॥ धन. ॥ २१ ॥

हिन्दु मुललमान हाकम ठाकुर, त्याग हि वहुत करन्त वे ।
चवदा साधु गुरा अजी ने, हाजरी माहि रहंत वे ।। धन ।। २२ ।।

चत हित लायकर करे वियावच, चवदे हि साध हितकार वे ।
गुराजी का चर्णा माहि हाजर खड़े, नाहि लगावे वार वे ।। धन. ।। २३

करी उदिरणा अरि दल कोप्यो, सनमुख ललकारया सूर वे ।
मार झडाझड सेना भगाइ, घुर कियो वहु पूर वे ।। धन. ।। २४ ।।

सूरवीर सीस झूझे, ग्यान द्रसण खड़ग धार वे ।
रोका थोकी कर हे नीवेड़ा, नहि उधार लिगार वे ।। धन. ।। २५ ।।

ए लोक आछा प्रलोक वछा, मन मे नहि हे लिगार वे ।
मरण भय जीवण नी असना, काम भोग सु चित निवार वे ।। धन. ।। २६ ।

परमेष्टी का ध्यान मुख माहि, ज्ञान घोड़े असवार वे ।
सूरा जेम चड्यो रण मांहि, सुरखी आइ तिरवार वे । धन. ।। २७ ।।

समंत उनीसे च्यारहि चाली, कसन पख फागुण सार वे ।
तिथि चउदस सुभ वेलाये, वरत्या जय जय कार वे । धन. ।। २८ ।।

साधरमी भाई हुए एकेठा, बहुत कीया रसाण वे ।
करि जलुस विमाण उठाया, चले अघाड़ी नसाण वे ।। धन. ।। २९ ।।

घोड़ा वगी असवार पालखी, उठ रही जाणकार वे ।
ढोल नगारा निफरी वीणा, सरणाइ वहु सार वे ।। धन. ।। ३० ।।

माल उपरे खरचे वहु तेरा, साल दुसाला असी च्यार वे ।
जाचक मुख से जय जय बोले, ए संसारी विवहार वे ।। धन. ।। ३१ ।।

धर्म इसमें नहि जाणना चौथी ढाल ही इम भाष वे ।
मानकचंद कहे कर जोड़ी, गुरु चरणा की अभिलाष वे ।। धन. ।। ३२ ।।

॥ कलश ॥

इम कहा लग गाउं, पार न पाउं, ज्ञान गुण भंडार ये ।
देवलोक सिधाया, तेज सवाया, पाम्या भोग उदार ये ।।

अमरसींघ महाराया, धर्म दीपाया, रामवकस गुणघार ये ।
तपसी तपीया, ग्यान गुण जपीया, हरका नाम उदार ये ।। १ ।।

गुरदेव मोटा, लीया ओटा, श्री मयाराम गुण सार ये ।
त्रीलोक सहारा, गुरु अति प्यारा, ओर नहि आधार ये ।।

गुरुदेव पासे, नानकदासे, जोडी दिली मंझार ये ।
समत उनीसे, साल पेंतालीसे कातिक पख सुद सार ये ॥ २ ॥

गुर हिरदय वसीया इण भव खुसियां, सूर तपे बहु प्यार ये ।
मोह प्रमादी, इन्द्री स्वादि, पुरो धर्म नही धार ये ॥

गुरु भक्ति भरिया, पेट मे नहि जरीया, वार एम परकास ये ।
चोढाला वणाइ, श्रदकी उछिगाइ, मिछाम दुकडु वारू वार ये ॥ ३ ॥

॥ चोढालियो संपूरण ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥

॥ श्री अभयजैन ग्रन्थालय प्रति नं० ७६५५ पत्र २ प्रथम पत्र एक तरफ लिखा-
पंक्ति २८, २७, १८, प्रति पंक्ति अक्षर ६० लगभग ॥



श्री मूलांजी की सज्झाय

वसंत रचित

सरसति सामणि वीनवु, लागु गुरां के पाय।
बुद्धि दीजो मुझ निरमली, मेरा जीव खुसी होय जाय ।। १ ।।
हो सामी गुण गावु सतीयां तणा ।। टेर ।।

श्री मंधर प्रभुजी ने नमु, वादु मे वारूंवार।
माहा विदेह में विचरो केवली, प्रभु विहरमान जिनराय हो ।। सा. ।। २ ।।

चरम जिनेसर वीनवुंजी, चोवीसमा जिनराय।
गोतम सुधरमा पाय लागनें, हुं तो सकल साध खमाय हो ।। सा. ।। ३ ।।

संमत सतर निवासीव जी, मूल नक्षत्र माहि।
कुल दीपक बाई हुई जी, मूलाजी सुख दाहि हो ।। सा. ।। ४ ।।

पिता सरूपचन्दजी तिण समें, फूलांजी थांकी माय।
घर में रंग वधावणा, वरत्या जय जयकार हो ।। सा. ।। ५ ।।

सोम दृष्ट प्रकृत भलीजी, बाई बडा सुविनीत।
सामायिक पो [सो] करे, एक दया धर्म पर चित्त हो ।। सा. । ६ ।।

अनोपाजी आइ आरज्या जी, करता उग्र विहार।
चोमासे ऊपर पधारिया, काइ फतेपुर मझार हो ।। सा. ।। ७ ।।

च्यार महीना सेवा करी, मन में रही घणी धीर।
दिक्षा अब मन आवसी, जाणे मीसरी खीर हो ।। सा. ।। ८ ।।

पड़कमणो धारी लियो जी, संजम ऊपर घणो चाय।
बोल चाल सीख्या घणा, आज्ञा दो मेरी माय हो ।। सा. ।। ९ ।। गु. ।।

बाई मन में चीतवे जी, मैं काढी दीक्षा की वात।
मेरो वडो भाई पर देश में, मेरा सासरिया मिथ्यात हो ।। सा. ।। १० ।।

क्युंकर होस्यु हुं आरज्या जी, मन में रहे दलगीर।
नाज पाणी भावे नही, मने आज्ञा द्यो मेरा वीर हो ।। सा. ।। ११ ।।

आज्ञा दीनी घणी हरख सुं जी, साथै सब पर वार।
मगसर वद दिन दूज नै, बाई लीधो संजम भार हो ॥ सा. ॥ १२ ॥

समत अठारा सै दस कै साल में जी, बाया भाया की पचखाण अपार।
दीक्षा ले हुइ आरज्या, अब कीधो छै वोहार हो ॥ सा. ॥ १३ ॥

पांच वरस रह्या देस में जी, बाकी बीकानेर।
चोमासो उतरया पछै आया जेपुर सेहर हो ॥ सा. ॥ १४ ॥

सेषकाल जेपुर रह्या जी, कोटै नै कीयो विहार।
गावां म नगरा वीचरता, चोमासो सेरगढ मझार हो ॥ सा. ॥ १५ ॥

एक चोमासो कोटै कीयो जी वीषम जुर उपनी देह।
तपस्या मांडी आकरी ज्युर तुट गइ तप प्रभाव तेह हो ॥ सा. ॥ १६ ॥

विहार करी नै आवीया जी, फागी कीयो चोमास।
तिवाड़ी की आज्ञा नही, कीसनगढ चोमासो वीमास हो ॥ सा. ॥ १७ ॥

आठ चौमासा होय गया जी, करतां उग्र विहार।
समत अठारा सै (इक्कीस में) पधारया बीकानेर मझार हो ॥ सा. गु. ॥ १८ ॥

दरसण कियां हरजी कमलजी तणो जी, मन में हुंति खुस्याल।
समत अठारा से बीस में नाथूराम जी कीयो चोमास हो ॥ सा, गु. ॥ १९ ॥

हाथ जोड ऊभी रही, सामी मेरो तपस्या ऊपर भाव।
आज्ञा मागु पग वांद नै, मेरी अरज सुणो चित चाव हो ॥ सा. गु. ॥ २० ॥

तपस्या करया सुख ऊपजे जी, मन में हरखज आण।
आज्ञा हुई गुर गुरणी तणी, बेलै बेलै कीया पचखाण हो । सा. ॥ २१ ॥

अब तेलै तेलै करु पारणो जी, उपज्यो घणो उच्छाह।
हुकम हुवो गुर गुरणी तणो, घोडा नांख दिया रिण मांहि हो ॥ सा. ॥ २२ ॥

सूरा चढ संग्राम में जी, फिर पाछा मत जोय।
काया सेती जुध करु मेरी रा झड़ाफड़ होय हो ॥ सा. ॥ २३ ॥

मेरी काया को बल घटयो नही जी, मन में लहर उठी आण।
पांच पांच कीयो पारणो धार विगै पचखाण हो ॥ सा. ॥ २४ ॥

तप करटारी ले हाथ में जी क्षमा तणी समसेर।
बैरी ऊपर ऊतरू करम काट करु चकचूर हो ॥ सा. ॥ २५ ॥

तप कर लाहो लीयो जी, बाकी नहीं घट मांहि।
लोही मास सूकी गयो, मेरा खड़ खड़ बाजै हाड हो ॥ सा. ॥ २६ ॥

थां सरखा गुर गुरणी मिल्या जी, सहर मिल्यो बीका[ने]र।
आरज खेत्र में संथारो करुं, मेरा अवसर छै इण वेर हो ॥ सा. ॥ २७ ॥

अब काया में बाकी नहीं, अर मनबल रह्यौ अखूट।
करुं संथारो हर्ष चाव सुं, एक घाव एक टूक हो ॥ सा. ॥ २८ ॥

वारु वार करुं वीनती जी, ढील न करो लिगार।
जिम सुख होवे तिम करो, च्यारुं तीरथ हरख अपार हो ॥ सा. ॥ २९ ॥

वरस इग्यारा संजम पालियो जी, साधु तणो आचार।
आसोज सुदी एकादसी, कीयो संथारो तिविहार हो ॥ सा. ॥ ३० ॥

गुर गुरणी की पाली आगन्या जी, चतरविध संघ खमाय।
वारुवार वंदना करू, सर्व जीवा जोत खमाय हो ॥ सा. ॥ ३१ ॥

संजम पाल्यों निरमलो जी, तपस्या करी अपार।
सतरा दिन अणसण कीयो, सात पहर चौविहार हो ॥ सा ॥ ३२ ॥

कियो संथारो दीपतो जी, हरपत हुवो बहु सहर।
काती बदी दिन दवावसी, संथारो सीझ्यो पिछले पहर हो ॥ सा ॥ ३२ ॥

सती मरोमणी साधवी जी, जाको कीयो जी वखाण।
जो नर नारी सांभलो, घर होवे आणंद कीलाण हो ॥ सा, ॥ ३४ ॥

सतीयां ना गुण गावतांजी, मन में आणंद थाय।
दुख दारिद्र दूर टलै, थाने सोच चिंता मिट जाय हो ॥ सा. ॥ ३५ ॥

हुं पंचमें काल को मानवीजी, मेरी बुध सार कहिवाय।
दूपण लागो आखर पद जोड़ता मोनें वकसोला जिणराय ही ॥ सा. ॥ ३६ ॥

समत अठारा इकोस में जी, काती सुदि चवदस प्रमाण।
जोड़ कर जैपुर सहर में, इम गावै वसंत जाण हो ॥ सा. गु. ॥ ३७ ॥

॥ इति श्री मुलाजी की सिझाय सम्पूर्ण ॥

लिखतं .... पठनार्थम् ॥ वीकानेर मध्यं ॥
अभयजैन ग्रंथाल्य, बीकानेर प्रति पत्र २ नं० ७६६१ पंक्ति १३, अक्षर ३५ अंतिम पृष्ठ पंक्ति ४

महासती मयाजी का संथार

मनसाराय रचित

॥ दूहा ॥

देश ढुंढाड़े दीपतो, ढुंधु नगर ज जाण ।
जनम तो तिहां लियो, तेहनो कहुं हिवे नाम ॥ १ ॥
धन पिता सुखरामजी, धन वीरादेजी माय ।
पुत्री रतन तिण जनमिया, सफल कीयो अवतार ॥ २ ॥
मयाजी मोटा हुवा, करी सगाई व्याव ।
परण पाय नै आवीया, सावड़दा क माय ॥ ३ ॥
कतो एक काल संसारना, भोगवीया सुख सार ।
बीजोग पड्यो भरतार-नो, तब जाण्यो अथर संसार ॥ ४ ॥
रंभाजी पधारीया, सुण जांको उपदेश ।
वेरागें मन वालीयो, लेसुं संभ्रम भेष ॥ ५ ॥
बलता रंभाजी इम कहे, ज्युं तुमनै सुख थाय ।
ढील मत करो दीख्या तणी, खीण लाखीणी जाय ॥ ६ ॥
गोपीपरम जाय ने, लीधो संजम भार ।
पांच महावरत आदस्या, पाले पंच आचार ॥ ७ ॥
समाई पड़क मणो सीख ने, सीख्या बोल नै चाल ।
सूत्र सिद्धांत घणा भण्या, श्री रंभाजी के पास ॥ ८ ॥
मयाजी मोटी सती, लीजे नित प्रतें नाम ।
करणी तो दुकर की, दरसण सेती काम ॥ ९ ॥

॥ ढाल-- कागलीयो लिख भेजु हो संगु कोइ नहीं--ए देसी ॥

पहिली श्री अरिहंत देव आराधिस्यों, वलि गुणधर लागुं जी पाय ।
पूज [1]श्री नाथूरामजी नें वांदने, पछे सुमरो सारद माय ॥
मयाजी सतीजी संथारो कीयो भावसुं ॥ १ ॥

---

1 भोजराजजो B प्रति ।

एक तो अरज सुणी जो प्रभु माहरी, म्हारी कीजो बुध परकास ।
मयाजी सतीजी तणां गुण गायस्यो, हुँ नी मनवर हरख उलास ॥ म० ॥ २ ॥

१पूज श्री नथमलजी का भोजराजजी, स्वामी घणा सुनर का जाण ।
घणां तो साधां में सामीजी दीपता, स्वामी सखरो करें वखाण ॥ म० ॥ ३ ॥

शील संतोष खिमा करि शोभता, नही राग दोष अहकार ।
क्रोध लोभ स्वामी जी के नही वसें, स्वामी वहुत गुणां का भंडार ॥ म० ॥ ४ ॥

जप तप संयम करणी में राचिया, घणी मीठी ज्यांकी वाण ।
अनेक गुणां करि स्वामीजी विराजिया, कवि कालो करेजी वखाण ॥ म० ॥ ४ ॥

पूज्य श्री नथमलजी का पाटवी, श्री भोजराजजी जाण ।
घणा सूतर का स्वामी जाण छै, सखरा करै छै वखाण ॥ म० ॥ ॥ ५ ॥

दूधु तो नगर सुखी सु वसै, जठै राज करै श्री जीवणसिंघ ।
पिरजा तो लोक घणा सुखीया वसें, ज्या के कदेन पडै कोई भंग ॥ म० ॥ ६ ॥

मयाजी महासती का पिता सुखरामजी अरु वीरादेजी माता को नाम ।
ज्यांकी कूख मे महासती अवतर्या, पायो उत्तम कुल शुभ ठाम ॥ म० ॥ ७ ॥

बाई हो भतीजा सतीजी के दीपता, अर भोजायां की जोड़ ।
ओर कुटुंब सती जी के छै घणु, कुण करै सती जी की होड ॥ म० ॥ ८ ॥

केतायक वरस भुगत्या गृहवास मे, रह्या ससार ने सनमुख ।
रम्भाजी सती की देसना सुणी करी, जाण्या गृह का सुखां ने दुख ॥ म० ॥ ९ ॥

आगे अनंती सत्यां हुई मोटकी, ज्यांका गुण को नही छे पार ।
पांचमा काल में सती त्याग न कीयो, कोई ममता न आणी लिगार ॥म०॥१०॥

अथिर संसार तजी ने नीसर्या, सती लीयो छै संजम भार ।
पंच महाव्रत धार्या सती निरमला, सती पालै छै पच आचार ॥ म० ॥ ११ ॥

पंच सुमति ही धारी अति भली, काइ तीन गुपति उर धारि ।
बाईस परिस्या सहिया सती अति खरा, सती सताइस गुणां का धार ॥म०॥१२॥

घणां तो साधां में पूजजी अति दीपता, खम्या तणा भंडार ।
सर्भा(य)ध्यान में मन लाग रह्यो, ग्रंथ लिख्यो तीन लाख ॥ म० ॥ १३ ॥

शील संतोष विनो करी शोभता, नहीं राग द्वेष अहंकार ।
क्रोध लोभ पूजजी रै नही बसै स्वामी बहुत गुणां का भंडार ॥ म० ॥ १४ ॥

---

१ पद्यांक ३ से ५ तक B प्रति मे यहां नही है । पर आगे ४ पद्य B प्रति से पद्याङ्क सह उद्धृत करते है :—

जप तप संयम करणी में राचिया, घणी मीठी ज्याकी वाण।
अनेक गुणां करि स्वामीजी विराजिया, कवि किहां लग करें वखाण ॥म०॥ १५ ॥

१वेला तो तेला सतीजी घणा किया, वासां री तो गणती नांय।
वास तो सतरा लगता कीया. अठारा भी इम जाण ॥ म० ॥ १६ ॥

अठाई तो सती सतरा करी, वोर वोली घणी जाण।
तपस्या तो कीधी सुध भाव सुं कहतां न आवे पार ॥ म० ॥ १७ ॥

बारै भेद की सती तपस्या करी, ओर षट आवश्यक आचार।
संजम पाल्यो सती रूड़ी रीत सुं, मतो करके बहुत विचार ॥ म० ॥ १८ ॥

नव वाड सहित सती शील पालियो, धर्म पाल्यो छै दस प्रकार।
आरति रुद्र ध्यान सती परहरचा, नहीं लोपी छै जिणजी री कार ॥म०॥ १९ ॥

विकथा तो च्यार सती करी नहीं, सती राख्यो छै उजल भाव।
पांच पदां को सती समरण कीयो, मुगत जावण रो कीयोजी उपाव ॥म०॥२०॥

घणां तो जीवां ने सती समोधीया, सती दीयो छै सुध उपदेस।
सूत्र अनुसारे महासती भाखियो, जेह मे कूड़ नहीं लवलेश ॥ म० ॥ २१ ॥

वतीस वरस सती रह्या रीत सुं, पाल्यो साधां तणो आचार।
अंत समा में सती सावधान हुवा, सती कर दीयो खेवो पार ॥ म० ॥ २२ ॥

आऊखा की थित नेड़ी जाणी करी, सती मन मांहे कीयो उपचार।
१ पोथी पाना सूं ममता उतर गई, सती मगनांजी ने दीयो जलाय ॥म०॥ २३ ॥
सरणो तो लीयो छै श्री अरिहत देवरो, दूजो सरणो श्री सिद्ध समरथ।
तीजो तो सरणो श्री केवल भाषित धर्म को, चोथो सरणो श्री साध निग्रंथ ॥२४

मन वच काय महासती सरणा लिया, पछै पांचुं पदां ने खिमाय।
समचे सर्व जीव महासती खिमाय करी, सती वैर भाव वोसराय ॥ म० ॥ २५ ॥
इण विध स्युं महासती करी छै अराधना, तजि सबही विषय कषाय।
पूर्वे व्रत लेइया जे आलोय करी, सती निसल्य आराधिक सुद्ध थाय ॥म०॥ २६ ॥

द्वितीय श्रावण बद छठ मंगलवारी दिने, सती संथारो कियो तिविहार।
दिन दिन परिणाम सती का चढता रह्या, चित चलीयो नहीय लिगार ॥म०॥२७

संयम पालिबो जग में कठण छै, कोई जिसी खांडा की धार।
धन्य धन्य संसार में साध साधवी, धर्म पालै छै निरतीचार ॥म०॥ २८ ॥

---

१ पद्यांक १३-१४-A प्रति मे नही है। २ तीनूं आहार का सती त्यागन किया, सती लाभ लियो छै लार B प्रति।

१इण पंचम आरा में वीतराग संजम छै नहीं, श्री आगम अनुसार जांणि ।
सराग संजम ही अगाऊ भाखियो, श्री जिनवर कह्यो छै वखाण ॥ म० ॥ २९ ॥

२गुर पुंज भोजराजजी मन वस्या, सेवा कीनी भरपूर ।
विनो भाव सती कीनो घणो, थे तो कदेही न लोपी कार ॥ म० ॥ ३० ॥

साधजी श्री सामीजी गोरधनदासजी, रह्या चोमांसें जी ३वनेरी गांम ।
मयांजी महासती को सथारो सुणी करी, आया ४दूधावतो नगरी माह ॥म०॥३१॥

५मयाजी सतीजी मुख सु इम कहै, मगनाजी लीछमाजी उरा बुलाय ।
पूजजी रा सीखा न थे मानजो, म्हारी आगन्या छै वारूं वार ॥ म० ॥ ३२ ॥

प्रात दोपहरें संज्या केस मे, स्वामी देवै छै धर्म उपदेश ।
तीनु वखत में हो वाणी वागरी, सुण्या सब मिट जाय क्लेश ॥ म० ॥ ३३ ॥

मयाजी महासतीजी के सिषण्यां दोय सही, ज्यांका मगनाजी लछमाजी नाम ।
सेवा तो करै छै सत्यां गुरणी तणी, ज्याका घणा सुद्ध परिणाम ॥म०॥ ३४ ॥

तपस्या के पारणे सत्यां तप करै, तप करै बहुत प्रकार ।
मन वच काय सत्या का निर्मला, सत्यां लेवै छै शुद्ध आहार ॥म०। ३५ ॥

दोनूं ही सिषण्यां के अंग आलस नही, नही सेवै कोई परमाद ।
चारित्र पाले सत्यां सुद्ध भाव सु, श्री गुरणीजी तणै प्रसाद ॥ म० ॥ ३६ ॥

गांव गांव का हो श्रावक आविया, महासतीजी का दरसण काज ।
वंदना तो करकै जी साता पूछकै, वांहां तो सारचा छै आतम काज ॥म०॥ ३७ ॥

कोई तो लीयो छै शील शुद्ध भाव सु, कोई रात्रि भोजन रा त्याग ।
कोई तो पचखाण कर्या छै कंद मूल का, कोई छोडया छै वैगण साग ॥म०॥३८॥

इण ही रीत सु श्रावकां करी आखडी, केयां वास वेलो तेलो ठाण ।
महिमा तो हुई छै जग मे अत घणी, परभाव महासती को जाण ॥म०॥ ३९ ॥

इह कलिजुग मे उत्तम प्राणी थोड़ला भणा, घणा दुष्ट दुराचारी जाण ।
भली तो बात मुख माहि नहीं नीसरै, ज्याकी माठी पड़गई वाण ॥ म० ॥ ४० ॥

कोई तो गुण ग्राम करे छै, धन्य धन्य करैं, कोई निंदा करैं घर जाय ।
दोन्यां सु ही सती को सम भाव छै, कोई राग द्वेष नही लाय ॥ म० ॥ ४१ ॥

---

१ यह गाथा B प्रति की है । २ यह गाथा B प्रति की है । ३ जोबनेर, B प्रति
४ दूधूक माय, B प्रति । ५ यह गाथा B प्रति की है ।

जो कोई साधां की निंदा मुख आणसी, सो तो मर नै दुरगति जाय ।
गुणवंत पुरषां नै सदा भला जाणसी, सो तो सुर्ग तणा सुख पाय ॥ म० ॥ ४२ ॥

दान शील तप भावना भायसी, चित राखसी धर्म के मांह ।
अंत समै जो सथारो कोई धारसी, सो तो निश्चै ही सीवपुर जाय१ ॥ ४३ ॥

जो कोई नर नारी सती का गुण गावसी, कोई पढसी सुणसी देई कांन ।
जनम जनम का भव दुख मेटसी, सो तो पासी अवचल थान ॥ ४४ ॥

संवत अठारे सै त्रेसठि के समैं, सुद आसोज शान्ते शति जाण ।
मास अढाई संथारे सती थिर रह्या, पछै पहुँता छै अमर विमाण ॥ ४५ ॥

केइक भवा के महासती आंतरै, सती जासी मुकति मझार ।
दोई कर जोड़ी नै मनसुख कालो इम भणैं, म्हारी वन्दना होज्यो वारंवार ॥४६ ॥

॥ कलश ॥

धन धन जिनेश्वर धन सो गणधर, जिन येह दया धर्म थापियो ।
ज्यांहा होय हिंसा जीव केरी, सोही मार्ग उथापियो ॥ ४७ ॥

धन धन महूरत धन घडी, धन्य धन्य वार सु वार है ।
धन्य धन्य मयाजो महासती, तिण सफल कियो अवतार है ॥ ४८ ॥

॥ दूहा ॥

ज्ञानवान की यह दसा, गुण को करै वखाण ।
अवगुण सुं न्यारा रहै, सोही चतुर सुजाण ॥ ४९ ॥

दया भाव उर सरलता, राग दोष नही कीन ।
मध्यस्थ भाव रहै सदा, सो जाणै परवीन ॥ ५० ॥

अठारै सै त्रेसठि शुक्ल, आसोज दसे अभिराम ।
चन्द्रवार शुभ जोड़ यह, कीन्ही मनसाराम ॥ ५१ ॥

जो सतया का गुण करै, सुमरै आठै ही जाय ।
ताको मनसाराम की, यथा योग्य परणाम ॥ ५२ ॥

(१) इती श्री महासतीजी श्री मयाजी अर्जिका संथारा की गुणमाला जपड़ी सम्पूर्ण ।. लिखतं फतेचन्द लछमाजी पठनार्थम् ॥ (A प्रति)

(२) इति श्री मयाजी का संथारा की ढाल सम्पूर्ण ॥

---

१ सुरपत थाय–B प्रति,

लिखंते चान्दकंवरजी री पोती चेली लिखीयो चंपाकंवरजी री चेली गट्टाजो लीखंते भूल चूक रही हो सो तीस मीछाम दोषणु। फागण उतरती एकम रे दिन लिखंते।।

A प्रति-अभय जैन ग्रन्थालय, बीकानेर प्रति नं० ७६५३ पत्र ३ पंक्ति १४ अक्षर ३२ प्रति पक्ति। अंतिम पृष्ठे पं० १२ प्रथम दोहा ६ फिर पद्य ४४।

B प्रति-अभयजैन ग्रन्थालय बीकानेर प्रति नं० ७६५८ पत्र ५ पंक्ति १०-१२-१२ प्रशस्ति भिन्नाक्षरे :

(५ वें पत्र के) अंतिम पृष्ठ में कूंपड़ी की सम्झाय लिखी है।



श्री वसन्तोजी सती संथारा

आसकरण रचित

॥ दूहा ॥

सारद मात मया करो, मांगूं अविचल वाय।
सतगुरु पाय नमी करी, तन मन अति हुलसाय ॥ १॥

महावीर भगवंत नें, समोसरण के मांहि।
द्वादस परषद के विषै, धुण वांणी वरसाय ॥ २ ॥

सावण जिम घन वरसवो न गिणे ठांम कुठांम।
तैसें जिणवर दिव्य धुन, भवि पामै विश्राम ॥ ३ ॥

जिनवाणी इह गंग सम, वीर हिमालय जाण।
दुख दोहग दूरे करै, देवै शिवपुर थान ॥ ४॥

जिनवाणी में नीसरी, तीन रतन परधान।
दरसण ज्ञान चरित्र युत, पहुंचे शिवपुर थान ॥ ५ ॥

एह वचन भगवंत को, सुणिनें जीव अपार।
केइ महाव्रत आदरै, केइ श्रावक व्रत बार ॥ ६ ॥

चारित्र अंते केलवै, संथारो शुभ ध्यांन।
तेह कथन हिव वरणवुं सुणिजो भवि दे कांन ॥ ७ ॥

॥ ढाल-धीज करै सीता सती रे लाल-ए देसी ॥

भाव धरी भवियण सुणो रे लाल, विकथा निंदा टाल रे सोभागी।
गुणवंत ना गुण गावतां रे लाल, बांधे करमांनी पाल रे सोभागी॥ भा.॥१॥

अंतै अणसण आदरी रे लाल, समता भाव विसाल रे सो.।
अनिक पुत्र दंडकी हुआ रे लाल, वलै अैवंती सुकमाल रे सो. ॥ भा. ॥ २ ॥

सकोसल कात्तिक मुनी रे लाल, खंदक गज सुकमाल रे सो.।
इत्यादिक मुनीसरु रे लाल, टाल्या कर्म ना साल रे सो. ॥ भा. ॥ ३ ॥

अनंता जीव मुकतें गया रे लाल, वलें अनंता जांण रे सो. ।
सिध हुआ सम भाव सों रे लाल, इम जिन वचन प्रमांण रे सो । भा ॥ ४ ॥

बावीस परीसा जिण कह्या रे लाल, क्षुध्या प्रवल वखाण रे सो. ।
मरण समो भय नवि कह्यो रे लाल, कायर को दुख खाण रे सो ॥ भा ॥ ५ ॥

जीतव अण सम जाणता रे लाल, सूर पुरुष संसार रे सो. ।
मरण तणा भय नवि करे रे लाल, पूजा पामे अपार रे सो. । भा. ॥ ६ ॥

मन रूपी घोड़ा कह्या रे लाल, ज्ञान की दीधी लगाम रे सो ।
तप तेगा हाथें लिया रे लाल, प्रथम हण्या रिपु काम रे सो. ॥ भा. ॥ ७ ॥

अष्ट कर्म रिपु मारके रे लाल, केवल दरसण पाय रे सो. ।
जन्म जरादिक रोग नें रे लाल, जलांजलि दरसाय रे सो. ॥ भा. ॥ ८ ॥

वरतमान की वारता रे लाल, सुणजो भविदे कान रे सो ।
जिन शासण में सूरियां रे लाल, कीया संथारा शुभ ध्यान रे सो. ॥ भा. ॥ ९ ॥

इण ही जंवू दीप में रे लाल, भरत खेत्र इह जाण रे सो. ।
सांथा ग्राम सुहामणो रे लाल, वन उपवन सहनांण रे सो. । भा. ॥ १० ॥

टोडरमल्ल ब्राह्मण वसे रे लाल, तसु पतनी वहु रूप रे सो. ।
नाम विरजावती जांणजो रे लाल, भागवती है अनूप रे सो. ॥ भा ॥ ११ ॥

तास कूख में ऊपनी रे लाल, वसंतो गुण खांण रे सो. ।
अनुक्रम दीख्या आदरी रे लाल, चारित बहु गुण वाण रे सो. ॥ भा. ॥ १२ ॥

गुरणी साथे विचरती रे लाल, ग्राम नगरपुर मांहि रे सो ।
गुर गुरणी चित भावसों रे लाल, देख देख हुलसाय रे सो. ॥ भा ॥ १३ ॥

देसाटण करतां हुवा रे लाल, आवी नगर महाण रे सो. ।
आरज देस सोवीर में रे लाल, आगरा नगर सुथान रे सो ॥ भा. ॥ १४ ॥

श्री वसंतोजी सती रे लाल, तपस्या कीधी भरपूर रे सो. ।
अंते अनसण आदरयो रे लाल, कर्म करण चकचूर रे सो. ॥ भा. ॥ १५ ॥

संवत अठारे नवासीये रे लाल, श्रावण सुद रविवार रे सो ।
च्यार संघ तिहां आवियो रे लाल, जस गावे नर नार रे सो. ॥ भा. ॥ १६ ॥

हाथ जोड़ वहु भावसो रे लाल, कीया संथारा वहु भाव रे सो. ।
श्रीमधर वंदण तणा रे लाल, मन माहि अति चाव रे सो. ॥ भा. ॥ १७ ॥

पूज्य श्री नैणसुखजी रे लाल, खम सम दम गुणवंत रे सो. ।
'संथारा पइन्ना' वांचिया रे लाल, जिम भाख्यो भगवंत रे सो. ॥ भा. ॥ १८ ॥

नर नारी रीझा घणा रे लाल, सुण सुण उणरा व्याखाण रे सो ।
संघ चार नितप्रत सुणे रे लाल, देई नै बहुमान रे सो. ॥ भा. ॥ १९ ॥

वसंतो बहु भाव सो रे लाल, सुणे कथा चित लाय रे सो. ।
समता रस में झूलती रे लाल, तन मन अति हुलसाय रे सो. ॥ भा. ॥ २० ॥

धन जननी विरजापती रे लाल, जनक टोडरमल धन्न रे सो ।
फूलांजी के परवार में रे लाल, हुई वसंतो रतन्न रे सो. ॥ भा. ॥ २१ ॥

भाद्रव सुदि द्वुतिया दिने रे लाल, तृतीय प्रहर के मांहि रे सो. ।
चन्द्रवार अति दीपतो रे लाल, लाभ चउघडिया ताहि रे सो. ॥ भा. ॥ २२ ॥

काल कियो तिण अवसरे रे लाल, हुआ नर नारी वृंद रे सो. ।
निहरण कर्म उछाह सों रे लाल, जस वाड्यो जिम चन्द रे सो. ॥ भा. ॥ २३ ॥

सुभगति मे पहुँती सती रे लाल, करणी तणे परिमाण रे सो. ।
किरिया निरफल नवि हुवे रे लाल, इम भाख्यो भगवाण रे सो. ॥ भा. ॥ २४ ॥

इम करणी जे आदरै रे लाल, धन्न तिके नर नार रे सो. ।
मानस भव सफला करे रे लाल, पामे भवोदधि पार रे सो. ॥ भा. ॥ २५ ॥

कर कर किरिया आकरी रे लाल, पाम्यो अविचल राज रे सो. ।
'आसकरण' इम वीनवे रे लाल, सो मेरे सिरताज रे सो. ॥ भा. ॥ २६ ॥

॥ इति सम्पूर्ण सं० १८८६ पोह वदि ४ ॥

श्री अभयजैन ग्रन्थालय, बीकानेर प्रति सं० ७६५४ पत्र २ अक्षर सुन्दर तत्कालीन प्रति पंक्ति १० प्रति पंक्ति अक्षर ३८ अन्त में ३ पंक्ति छोटे अक्षर में लिख के पूर्ण किया ।



महासती चतरूजी सज्झाय

हरखबाई

चतरूजी मोटा सतां सार्या आतम काज।
सुख साता री आद सैंस्यो, जाय लायो शिवराज ॥ १ ॥

जप तप कीधो आ अत घणो जस बधो मत पार।
देई जाणी कारमी, तुरत दीवी छुटकाय ॥ २ ॥

गांव नगर मां जलिस्यां(या)जी, सभी कुल अवतार।
सरूपचन्द माम दे माता, जाया सती सरदार ॥ चतरूजी धन थारो अ ॥ १ ॥

बालपण लीला करी जी, सुख वलस्या सासार।
लगुवें मा गुरुम भेटीया जी, पामी सभग सार ॥ च. ध. ॥ २ ॥

कम वराग ऊपनो जी, कम नीकल्या छुटकाय।
गुणवंत गुरणीजी भेटीया जी, लीधो छै संजम भार ॥ च. ध. ॥ ३ ॥

मासत्याजी मोटा सत्याजी, अमरुजी मारा(ज)।
वो सागर मा डुबता जी, काड लीया ततकाल ॥ च. ध. ॥ ४ ॥

पढ गुण नै पडत हुवा जी, बाच्या सुत्र सार।
बुध प्रमल प्रगट थयाजी, मोजा वार हुतका(र) ॥ च. ध. ॥ ५ ॥

चतरूजी मोटा सत्याजी, पल्यो पांच आचार।
दोष बयालीस टाल नेजी, लीधो छै सुजतो आहार ॥ च ध ॥ ६ ॥

गांवा मगरां विचरता जी, कीयो घणो उपगार।
सगत गटी देइ तणी जो, ठाणा विराज्या गढ माय ॥ च. ध. ॥ ७ ॥

जण दन सु तप आदरयो जी, नरतर उपवास।
छठ आठमा कीया गणा जी, दोय पोर नीराधार ॥ च. ध. ॥ ८ ॥

ध्यान साज्भा करता घणा जी, आठ पर दन रात।
बोल चाल सीखांवताजी सुणता चत लगार ॥ च. ध. ॥ ९ ॥

काती वुध दसमन जी लर कर मन मांय।
तीनु आहार त्यागीयाजी, पोर पाछली रात॥ च. ध.॥ १०॥

हाथ जोडी इम वीनवजी, चनणाजी महाराज।
कियो हमारो मांनज्यो जी अरज राखो माहाराज॥ च. ध.॥ ११॥

पो फाटी दिन उगीयो जी वापुज माहाराजी।
मुखासथा मेन वजी वात बडी छ वसतार॥ च. ध॥ १२॥

सतीया मुख सु इन कववजी, सामलजो माराज।
आप नीद फुरमावस्यो जी, हुं करदेस्यु चोवी(हा)र॥ च. ध.॥ १३॥

साख चनरवध सींग तणीजी संथारा का पाठ।
अमेदमलजी इम मणजी, करम कटण को साज॥ च. ध.॥ १४॥

सुणी न पधारीया मासत्याजी माराज।
कुचामण सु आइयाजी ढील न कीधो लगार॥ च. ध.॥ १५॥

गुर बाना सेवा करजी चित मन सुध लगार।
बड़ी सखणी जमाजी कयाजी क्षमीजी घणा सुवनीत॥ च. ध.॥ १६॥

वाया मल तपस्या करीजी, आठम चठ लगार।
बाई रतना त्याग दीयाजी संथारा ताई तीनु आहार॥ च. ध.॥ १७॥

मागसर सुद बारस दनजी मद रात रनो भार।
अणसण कर मुगत गया वरत्या छ जजकार॥ च. ध.॥ १८॥

पूरो आऊखो पाइयोजी वरसतरे प(न)माय।
वरस चोतीस संजम पालीयोजी कर दीयो खेवो पार॥ च. ध.॥ १९॥

देव वजावै दुधवीजी बोलै वेकर जोड़।
को सता तुम सु करधो हुवा हमारा नाथ॥ च. ध.॥ २०॥

दान सील तप भावना जी सोपुर मारग चर।
हरख बाई वीनवजी .... ॥ च. ध.॥ २१॥

॥ इति॥



सती पद्मणी

सरसत् सामण वीनउं, अर मांगु एक पसाव।
गुण गावां सतीया तणा, मारै हिवड हरष अपार ॥ १ ॥

उजल दतीउ नार, सतीयां मोटो सती।
कलि मे राख्यो छै नाम, सती सरोवण बाई पद्मणी ॥ २ ॥

श्री पुज आया हु नगर में, नगर नगीने मझार।
रतलन पदमल चाली वांदवा, अरतीजी बाई करमेती साथ ॥ ३ ॥

बीकानेर री वाटड़ी, अर उड़ै भीणी हो खेह।
अर मैला होसी हो कापड़ा, निरमल थासी हो देह ॥ ४ ॥

तीन प्रदखिणा वांद्या, वांद्या वाद्या विवेक।
सरावग सहु हरष हुआ अर पुगी उरो मन री हुंआस ॥ ५ ॥

अर गली गली नेतसी फिरे अर माग खाटी हो छाछ।
आज मारै पदमण बाई पावणी, सरस बाई रै हो साथ ॥ ६ ॥

सासु आया उपास रै, अर बहु थे मारै घर आव।
मारै घर छै बहु परावणा अर थे मारै जीमण आव ॥ ६ ॥

धरम करो बहु थारो, पांचे तिथियां उपवास।
ऊनो पाणी हो पावस्यां, आठम चवदस उपवास ॥ ८ ॥

रतलन कहे पदमण सुणो, अर सुणो बाई पदमल वात।
थारो घर छै मीछाती, थानै हुसी सताप ॥ ९ ॥

पदमल कहे रतनल सुणो अर सुण बाई रतनल वात।
सांले सगट सहु टल जाइ, मीछात्यां रे केही वात। १० ॥

नैलाइ सासु घर ले गई, सुप्यो घर नोउ भार।
घर वर छ बहु थायरै, अर जीमरयां थारै हु हाथ ॥ ११ ॥

पूत खिलाऊं जसी तणा वल नेतसी तणा खीलाय ।
मारै जाया सासू ना खेलै, ण एण भोले न भूल ।। १२ ।।

साते ता (ले) सती जड़ी सती ने परीसा उण ।
जेठ कहै बहू दोहिली, अर वांई होर खाट ।। १३ ।।

सुसरो सूतो हो मालीयै, सासू सूता पट साल ।
नेतसी सूतो मालीयै, अर सती बैठी छै पास ।। १४ ।।

वातांइ भोलाइयो, जीती रइ आइ छै नीद ।
देवता आइ ऊभो रह्यो सती तु हुइ निचीत ।। १५ ।।

आ वेला सती ताहरी अर ऊपर आवी डाहो डाक ।
साते डागला हो डाकीया, डाकी लोहटीया नी भीत ।। १६ ।।

कुतरो तो भोस्यो नहीं, गसडात मील्यो नांहि सील तणै परसाद ।
जीतरे आई उपासरे, सुंट वाई वार उघाड़ ।। १७ ।।

बार खोल मांही लियह, वुठी रुपी हरे ।
खरसाहा जालीयो दीयो, व्यचाइ बीकाहु नेरे ।। १८ ।।

तीन तुरी पलाणीया, पचाइ बीकाइनेरे ।
भोजायां पाइ पड़ै अर वीरो कर छै जुहार ।। १९ ।।

दोइ घड़ी राते पाछली, अर झिरमिर परसैहु मेह ।
जितरै नेतसी जागीयो, सती नही उण पास ।। २० ।।

साते डागला हु सोजीया, अर सोजी लोहाडा नी भीत ।
इदणा वीदणा हो सोदीया, ते सराय सोगांदी री हाट ।। २१ ।।

सोरीयो वावलराम कहै, फट मारा पूत कपूत ।
सती गया घर सील सुं, अर मागो थारा घर रो हो सूत ।। २२ ।।

साह नेतसी कागद मोकलो, साहा जीवराज ते व्यर जुहार ।
सती आई घर थाहरै, अर मारो कुण हुआल ।। २३ ।।

साह जीवराज कागद मोकल्यो, अर नेतसी तोय रे जुहार ।
सती आई घर माहरे, अर थे मन घरो वेराग ।। २४ ।।

अर उजल देतीहु नार सतीयां मोटी सती ।
अर कालि में राख्यो नाम, सतीइ सरोअण वाइ पदम लणी ।। २५ ।।

|| सती सती सम्पूर्ण ||